राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान–सम्पादक
डा. पद्मधर पाठक
(निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

ग्रन्थाङ्क 21

# बाँकीदास री ख्यात

सम्पादक
पं. नरोत्तमदास स्वामी, एम.ए.

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur
2017

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक
डा. पद्मधर पाठक
(निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

ग्रन्थाङ्क 21

# बाँकीदास री ख्यात

सम्पादक
पं. नरोत्तमदास स्वामी, एम.ए.

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur
2017

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक
डा. पद्मधर पाठक
(निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

ग्रन्थाङ्क 21

# बाँकीदास री ख्यात

सम्पादक
पं. नरोत्तमदास स्वामी, एम.ए.

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur



2017

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक
डा. पद्मधर पाठक
(निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

ग्रन्थाङ्क 21

# बाँकीदास री ख्यात

सम्पादक
पं. नरोत्तमदास स्वामी, एम.ए.

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

2017

| | | |
|---|---|---|
| प्रथमावृत्ति | – | 1956; 750 प्रतियां |
| द्वितीयावृत्ति | – | 1989; 500 प्रतियां |
| तृतीयावृत्ति | – | 2017; 500 प्रतियां |

मूल्य ₹ 145.00

# निदेशकीय

महाकवि बाँकीदास कवि एवं इतिहासकार के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। राजस्थानी साहित्य क्षेत्र में इनके द्वारा लिखित ख्यात ''बाँकीदास री ख्यात'' के नाम से पुरातन ग्रन्थमाला का प्रथम संस्करण सन् 1956 तथा द्वितीय संस्करण 1989 में प्रकाशित करवाया गया था।

ख्यात में उपलब्ध राजपूताना के विभिन्न राजाओं तथा ओहदेदारों आदि के संबंध में उल्लेखित सन्दर्भ राजस्थान के इतिहास एवं राजस्थानी विषय के जिज्ञासु शोध अध्येताओं एवं पाठकों के लिए उपयोगी रहे हैं। इसी के दृष्टिगत विभाग द्वारा ''बाँकीदास री ख्यात'' का तृतीय संस्करण प्रकाशित कर शोध जगत के समक्ष प्रस्तुत करते हुए, मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है।

**वि.सं. 2074, कार्तिक पंचमी**

**10 अक्टूबर, 2017**

**डॉ. वसुमती शर्मा**
**निदेशक (कार्य.)**
**राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान**
**जोधपुर**

# विषयानुक्रम



—o—

# प्रकाशकीय

कविराजा बाँकीदास (ई. १७७१-१८३३) बड़े प्रतिभाशाली एवं निर्भीक व्यक्ति थे। उनका यह गुण उनकी प्रत्येक रचना में पाया जाता है। डिंगल और पिंगल में लिखी गई उनकी अनेक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं और आज भी शोधार्थियों को उनके अप्रकाशित पद आदि पाण्डुलिपियों में प्राप्त होते रहते हैं।

प्रस्तुत ख्यात मूलतः २७७६ ऐतिहासिक घटनाओं की संक्षिप्त नोंध है। कालक्रम की दृष्टि से यद्यपि इन्हें एक सिलसिले में नहीं बांधा जा सकता है, पर कविराजा ने समकालीन घटनाओं पर टिप्पणियां लिखने में किसी का दबाव स्वीकार नहीं किया, इसलिये कटु-सत्य कहने में उन्हें प्रभावित करना शायद तत्कालीन नरेशों के भी बस की बात नहीं थी। अशक्त हो चले राजपूत राजाओं, मराठों का पतन एवं अंग्रेजों की बढ़ती शक्ति पर उनके छोटे-छोटे वाक्य बड़े स्पष्ट एवं कहीं-कहीं व्यंग्यात्मक भी हैं। राजपूत घरानों के इतिहास के अतिरिक्त धर्म, भूगोल, साहित्य, रीति-रिवाज़ आदि पर भी प्रकाश डाला गया है। मन की मौज के अनुसार वे तथ्य संकलित करते रहे।

ख्यात का प्रथम संस्करण ई. १९५६ में प्रतिष्ठान के तत्कालीन सम्मान्य संचालक मुनि जिनविजय के प्रधानसम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ था।

पाठकों की रुचि के अनुरूप द्वितीय संस्करण उनके हाथों में उपलब्ध कराते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। इससे इसकी उपयोगिता भी सिद्ध होती है।

संतोषजनक मुद्रण के लिए सिटीजन प्रिण्टर्स, जोधपुर एवं प्रूफ-शोधन के लिए विभाग के श्री रामनिवास शर्मा का सहयोग सर्वथा प्रशंसनीय है।

संवत् २०४६ भाद्रपद शुक्ल गणेश चतुर्थी
सितम्बर ४, १९८९

पद्मधर पाठक
निदेशक

# प्रधान सम्पादकीय वक्तव्य

चारण-कवियों का हमारे इतिहास में विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन कवियों ने अपनी ओजमई वाणी से सदा ही हमारा मार्ग-प्रदर्शन किया है। चारणों में हजारों कुशल साहित्यकार हो गये हैं, जिन्होंने भिन्न-भिन्न विषयों पर रचना की है। चारणों का प्रसार मुख्यतः राजस्थान, मध्यभारत और गुजरात में हुआ है और इन्हीं देशों में चारण-साहित्य भी विशेष उपलब्ध होता है।

अपनी काव्य-प्रतिभा और उज्ज्वल चरित्र से चारण हमारी जनता में आदरणीय रहे हैं और समय-समय पर देश-सेवा में भी अद्भुत् उदाहरण प्रस्तुत करते रहे हैं। महाकवि दुरसा आढ़ा, ईसरदास बारहठ, बांकीदास, मुरारीदान, महाकवि सूर्यमल, कविराजा श्यामलदास और केसरीसिंह बारहठ आदि हमारे देश के प्रमुख चारण साहित्यकार माने जाते हैं।

बांकीदास हमारे देश के एक महान् कवि और इतिहासकार हो गये हैं। अपनी काव्य-प्रतिभा से ही उन्होंने एक निर्धन चारण-कुल में जन्म लेकर जोधपुर के राज्य-दरबार में सर्वोच्च सम्माननीय आसन प्राप्त किया था। महाकवि बांकीदास की काव्यात्मक रचनाएँ बांकीदास-ग्रन्थावली के नाम से तीन भागों में काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित हो चुकी हैं और इनके देखने पर कवि के काव्य-कौशल की सराहना करनी पड़ती है।

राजस्थान के निष्प्राण नरेशों ने ईस्ट इन्डिया कम्पनी की अधीनता बिना ही युद्ध के स्वीकार कर ली थी। बांकीदास एक राष्ट्रीय विचारों के कवि थे और इसलिये उन्होंने अपनी रचनाओं में राजस्थानी नरेशों को अंग्रेजी शासन स्वीकार करने के कारण प्रताड़ित किया था। "आयो अंगरेज मुलकरै ऊपर" शीर्षक महाकवि का गीत राजस्थान में बहुत प्रसिद्ध हो गया है और हाल ही में हुई खोज द्वारा महाकवि बांकीदास की अन्य राष्ट्रीय रचनाओं की जानकारी भी मिली है।

कवि होने के साथ ही बांकीदास एक इतिहासकार भी थे। प्राचीन काल में काव्य-लेखन इतिहास-लेखन से भिन्न नहीं समझा जाता था। यही कारण है कि प्राचीन काल के कई कवि इतिहासकार भी माने जाते हैं और कई इतिहास-ग्रन्थ पद्य में ही मिलते हैं। महाकवि सूर्यमल रचित "वंशभास्कर" नामक ऐतिहासिक काव्य-ग्रन्थ इस कथन का एक अच्छा उदाहरण है।

महाकवि बांकीदास की इतिहास-विषयक कृति "बांकीदासरी ख्यात" राजस्थानी गद्य में लिखी गई है। राजस्थान का पूर्ण क्रमिक इतिहास तैयार करने में यह रचना एक आधार-ग्रन्थ के रूप में सहायक हो सकती है। महाकवि बांकीदास को इतिहास का अच्छा ज्ञान था और समय-समय पर वे अपनी जानकारी को संक्षिप्त विवरण के रूप में लिपिबद्ध करते रहे थे।

राजस्थान के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्रीयुत् पं० नरोत्तमदासजी स्वामी ने "बांकीदासरी

ख्यात'' के विवरणों को क्रमबद्ध किया है। राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर (Rajasthan Oriental Research Institute) के उद्देश्यों में एक प्रधान उद्देश्य राजस्थान के प्राचीन साहित्य को प्रकाश में लाने का है। तदनुसार "राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला'' के अन्तर्गत इस ग्रन्थ को प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वद्ज्जनों के सम्मुख इस ग्रन्थरत्न को प्रस्तुत करते हुए हमें विशेष प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

**राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर,**
दीपावली पर्व, २०१३ वि०

**मुनि जिनविजय**
सम्मान्य संचालक

—oo—

# प्रस्तावना

## राजस्थानी भाषा का ऐतिहासिक गद्य-साहित्य और ख्यात

राजस्थानी में प्राचीन गद्य प्रभूत मात्रा में पाया जाता है। ऐतिहासिक गद्य उसका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है। प्राचीन ऐतिहासिक गद्य की ऐसी प्रचुरता असमिया को छोड़ कर भारतवर्ष की किसी आर्य-भाषा में नहीं मिलती। असमिया भारत की प्राच्यतम भाषा है तो राजस्थानी पाश्चात्य-तम।

राजस्थानी के ऐतिहासिक गद्य के अनेक रूप हैं, जैसे ख्यात, बात, वंसावळी, पीढियावळी, पट्टावळी, विगत, हकीगत, हाल, याद, वचनिका, दवावैत आदि। ख्यात इतिहास को कहते हैं। बात में किसी व्यक्ति या जाति या घटना या प्रसंग का संक्षिप्त इतिहास होता है। ख्यात बड़ी होती है और बात छोटी। वंशावळी और पीढियावळी में पीढियां दी जाती हैं, जिनके साथ में व्यक्तियों का संक्षिप्त या विस्तृत परिचय भी प्रायः रहता है। पट्टावळी में जागीरदारों के पट्टे अर्थात् जागीरों का विवरण रहता है। जैनों की पट्टावळियों में विविध गच्छों के पट्टधर आचार्यों की पीढियां और उनका संक्षिप्त परिचय होता है। विगत का अर्थ विवरण है। हकीगत और हाल में किसी घटना या प्रसंग का विस्तृत वर्णन होता है। याद. याददाश्त को कहते हैं। वचनिका और दवावैत ऐतिहासिक काव्य होते हैं। इनमें गद्य-वाक्यों के युग्म होते हैं जिनकी तुकें मिलती जाती हैं। वचनिका में साथ में पद्य भी मिश्रित होता है। सबसे प्राचीन वचनिका चारण शिवदास की बनाई हुई 'अचळदास खीचीरी वचनिका' है, जिसकी रचना सं० १४९० के लगभग हुई थी। दूसरी महत्त्वपूर्ण वचनिका खिड़िया शाखा के चारण जग्गा की बनाई हुई 'राव रतन महेसदासौतरी वचनिका' है, जिसका रचनाकाल सं० १७१५ के लगभग है।

विविध जातियों की वंशावळियां भाट, मथेण आदि लिखते रहे हैं। जैन वंशावळियों के १०–१५ बड़े-बड़े पोथे श्री अगरचन्द नाहटा के संग्रह में हैं। वच्छावत वंशावळी आदि कई वंशावळियां तो इतिहास के लिये बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। जैन श्रीपूज्य लोगों के 'दफ्तर' अर्थात् पत्र-संग्रह (Records) भी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक गद्य की कृतियां हैं।

विविध राज्यों की पीढ़ियावळियां प्राचीनकाल से लिखी जाती रही हैं पर उनमें से अधिकांश अब उपलब्ध नहीं हैं। ऐसी कुछ कृतियां बीकानेर के अनूप संस्कृत पुस्तकालय जैसे कई-एक संग्रहों में विद्यमान हैं।

सत्रहवीं शताब्दी में सम्राट् अकबर हुआ। उसे इतिहास से बड़ा प्रेम था। उसके शासन में इतिहास-लेखन को बहुत प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। राजपूत राजाओं को भी उसने प्रेरित किया और तब से राज्यों की ओर से नियमित ख्यातें लिखी जाने लगीं। इस समय उपलब्ध ख्यातें सत्रहवीं शताब्दी से ही आरम्भ होती हैं।

राजकीय ख्यातों के लेखक राजकीय कर्मचारी, पंचोली आदि लोग थे। पर कई व्यक्तियों ने स्वतन्त्र रूप से भी ख्यातें लिखीं। इनमें नैणसी, दयालदास और बांकीदास के नाम

विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। इनकी ख्यातों का महत्त्व ऐतिहासिक ही नहीं, किन्तु साहित्यिक भी है। तीनों ही कृतियां प्राचीन राजस्थानी गद्य की अत्यन्त प्रौढ़ और उत्कृष्ट रचनाएँ कही जा सकती हैं।

'ख्यात' के दो प्रकार किये जा सकते हैं—

(१) जिसमें सळंग या लगातार इतिहास हो, जैसे दयालदास की ख्यात।

(२) जिसमें अलग-अलग 'बातों' का संग्रह हो, जैसे नैणसी की ख्यात।

बांकीदास की ख्यात दूसरे प्रकार में अन्तर्भूत होती है, पर नैणसी की ख्यात से वह भिन्न प्रकार की है। नैणसी की ख्यात की 'बातें' बड़ी-बड़ी हैं, जो कई पृष्ठों तक चलती हैं। उनको क्रम से लगा देने से सळंग इतिहास बन जाता है। पर बांकीदास की 'बातें' छोटे-छोटे फुटकर नोटों के रूप में हैं। लेखक को जब जो बात नोट करने योग्य मिली, उसने तभी उसे नोट कर लिया। उनमें कोई क्रम नहीं है। क्रम से लगाने पर भी उससे शृङ्खलाबद्ध और सळंग इतिहास नहीं बनता। अधिकांश बातें दो - दो अथवा तीन-तीन पंक्तियों की ही हैं। पूरे पृष्ठ तक चलने वाली बातें कोई विरली ही हैं।

## बांकीदास

बांकीदास आसिया शाखा के चारण थे। चारणों के दो भेद काछेला (कच्छ के) और मारू (मारवाड़ के) हैं। आसिया मारू चारणों की एक शाखा है, जिसका आरम्भ आसा नामक व्यक्ति से हुआ। राजस्थान में बहुत पहले नाग जाति का राज्य था, जिसके स्मारक के रूप में नागौर, नागदा, नागादरी, नाग तालाब आदि नाम अभी तक चले आये हैं। आसिया चारण नागों के पोळ-पात (याचक) थे। नागों के बाद मारवाड़ में प्रतिहारों (पड़िहारों) का राज्य हुआ। आसिया पड़िहारों के पोळपात भी रहे। पड़िहारों के बाद राठौड़ मारवाड़ के स्वामी हुये। मारवाड़ के राव जोधा ने आसिया पूंजा को खाटावास गांव सासण में दिया। उसके कनिष्ठ पुत्र माला को सिवाणा के स्वामी राठौड़ देवीदास ने भांडियावास गांव दिया। माला की नवीं पीढ़ी में बांकीदास हुये।

१. पूंजो, २. मालो, ३. वैरसल, ४. भींनो, ५. खेतसी, ६. नाथो, ७. सूजो, ८. जगतीदांन, ९. फतैसिंघ, १० बांकीदास, ११ भारतदांन, १२. मुरारिदांन (जसवन्त जसोभूषण के कर्त्ता)।

कविराजा बांकीदास का जन्म भांडियावास गांव में सं० १८३८ में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पिता की देखरेख में हुई। सोलह वर्ष की अवस्था होने पर आगे शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से वे रामपुर के ठाकुर ऊदावत अर्जुनसिंह के पास गये। अर्जुनसिंह ने जोधपुर में उनकी शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया। बचपन में किये हुये अर्जुनसिंह के इस उपकार को वे कभी नहीं भूले। *

---

* एक दिन कविराजाजी महाराज मानसिंह के साथ हाथी पर चढ़े हुए जा रहे थे। मार्ग में अर्जुनसिंहजी मिले और उन्होंने पुरानी बातों की याद दिलाई। उस समय बांकीदास ने यह दोहा कहा—

माळी ग्रीखम मांय, पोख सुजळ द्रुम पाळियो।
जिण-रो जस किम जाय, फ़ूल पत्र वूठां हीं, प्रजा॥

संवत् १८६० में बांकीदास जोधपुर-नरेश महाराजा मानसिंह के गुरु नाथपंथी आयस देवनाथ के संपर्क में आये। उन्होंने बांकीदास को महाराजा के सामने उपस्थित किया। महाराजा उनकी विद्या और कवित्व-शक्ति को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें लाखपसाव पुरुस्कार दिया, जिसमें उन्हें दो गांव भी मिले। आगे चलकर महाराज ने उन्हें अपना 'भाषा-गुरु' बनाया। महाराज उनका बड़ा आदर करते थे। राजस्थान के अन्यान्य दरबारों में भी उनका अच्छा सम्मान था।

महाराजा के व्यवहार से प्रसन्न होकर बांकीदास ने 'अ-जाची' व्रत, अर्थात् महाराजा को छोड़कर और किसी से न मांगने का व्रत, ग्रहण कर लिया। एक बार उदयपुर के गुणग्राही महाराणा भीमसिंह ने उनको पुरुस्कृत करने के लिये अपने सरदारों को भेज कर बुलवाया पर उन्होंने क्षमा-प्रार्थना करली।

संवत् १८७० में जयपुर नरेश जगतसिंह के साथ आये हुए कविवर पद्माकर का बांकीदास के साथ शास्त्रार्थ हुआ, जिसमें बांकीदास जयी हुए।

बांकीदास का देहान्त सं० १८९० में सावण सुदी ३ को जोधपुर में हुआ। मातमपुर्सी के लिए महाराजा मानसिंह कविराजा के स्थान पर पधारे और उनके विषय में ये मरसिये कहे—

सद्-विद्या बहु साज, बांकी थी बांका वसू।
कर सूधी कवराज, आज कठी गो, आसिया।
विद्या कुळ विख्यात, राज-काज हर रहस-री।
बांका! तो विण वात, किण आगळ मन-री कहां?

(अनेक साजों वाली सुन्दर विद्या बांकीदास के कारण 'बांकी' थी। हे आसिया! हे कविराज! उसे 'सीधी' (अपनी बंकिमा से हीन) करके तू कहां चला गया?

कुल-विख्यात विद्या की, राजकार्य की, लालसा की और आनंद की मन की बातें, हे बांकीदास! आज तेरे बिना किसके आगे कहें?)

बांकीदास बड़ी स्वतन्त्र प्रकृति के और स्पष्ट वक्ता पुरुष थे। राजपूताने के राजाओं का बिना युद्ध के अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर लेना उनको बहुत अखरा और इसके लिये उनको उन्होंने बुरी तरह फटकारा। इस संबंध में उनका यह गीत बहुत प्रसिद्ध है—

आयो अंगरेज मुलक रै ऊपर, आहंस लीधा खैंच उरा।
धणियां मरे न दीधी धरती, धणियां ऊभां गई धरा॥
फौजां देख न कीधी फौजां, दोयण किया न खळां-डळां।
खवां खांच चूड़ै खावंद-रै उणहि-ज चूड़ै गयी यळा॥
छत्रपतियां लागी नहं छांणत, गढपतियां धर परी गुमी।
बळ नहं कियो बापड़ां बोतां, जोतां-जोतां गई जमी॥

दुय चत्र मास वादियो दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस ।
पूगो नहीं चाकरी पकड़ी, दीधो नहीं मड़ंठो देस ।।
वजियो भलो भरतपुर-वाळो, गाजै गजर धजर नभ-गोम ।
पैलां सिर साहब-रो पड़ियो, भड़ ऊभै नह दीधी भोम ।।
महि जातां. चींचातां महळां, अै दुय मरण-तणा अवसांण ।
राखो रे कींहिक रजपूती, मरद हिंदू की मुस्सळमांन ।।
पुर जोधांण, उदैपुर, जैपुर, पहु थांरा खूटा परियांण ।
आंकै गयी आवसी आंकै, वांकै आसल किया वखांण ।।

[अंग्रेज देश पर चढ़कर आया। उसने (सबके) पराक्रमों को खींच लिया। पृथ्वी के स्वामियों ने मरकर पृथ्वी को नहीं दिया। पृथ्वी तो उनके खड़े-खड़े ही, उनके जीते-जी ही (अंग्रेज के अधिकार में) चली गई।

अंग्रेज की फौजों को देखकर किसी ने फौजें नहीं सजायीं। शत्रुओं को टूक-टूक नहीं किया। विधवा स्त्री पूर्वपति के चूड़े को फोड़कर दूसरे के घर जाती है, पर यह पृथ्वी, पूर्व-पतियों के जो पूरे चूड़े पहने हुए थी, उन्हीं चूड़ों के साथ अंग्रेज के घर गई।

राजाओं को इसका दुःख नहीं लगा। गढ़पतियों की पृथ्वी गुम हो गई। संख्या में बहुत होते हुए भी ये बेचारे बने रहे, जरा भी बल नहीं दिखाया। उनके देखते-देखते पृथ्वी चली गई।

मराठा दो-चार मास लड़ा तो सही। उसकी भूमि भी चली गई। पर यह तो भावी का लेख था। पर उसने दासता तो नहीं स्वीकार की और न अपने हाथों अपना मराठा देश अंग्रेजों को सौंपा।

भरतपुर का राजा भी अच्छा लड़ा। तोपों की गर्जना हुई जिसकी धूम आकाश और पृथ्वी में छा गई। पहले अंग्रेज का सिर कटकर गिरा फिर उसका कटा। वीर ने खड़े-खड़े, जीते-जी, अपनी भूमि नहीं दी।

भूमि जा रही हो या कोई स्त्री संकट में चिल्ला रही हो — मरने के लिये ये दो अवसर हैं। अरे हिन्दू अथवा मुसलमान कोई तो मर्द बनो और राजपूती की रक्षा करो।

हे जोधपुर, उदयपुर और जयपुर के स्वामियों! तुम्हारा वंश समाप्त हुआ। भाग्य के अंकों (लेख) से गई हुई यह भूमि अब भाग्य के अंकों से ही वापिस आवेगी (तुम्हारे बल पर नहीं)। आसिया बांकीदास ने यह ठीक बात कही है।]

बांकीदास आशुकवि होने के साथ-साथ अनेक भाषाओं के ज्ञाता भी थे। राजस्थानी, ब्रजभाषा संस्कृत और फारसी के वे अच्छे विद्वान थे। इतिहास में उनकी बड़ी रुचि थी। वे इतिहास-सम्बन्धी विषयों का निरन्तर संग्रह करते रहते थे। 'बांकीदास-री ख्यात' उनके इसी इतिहास प्रेम का फल है।

एक बार ईरान का एक शाही सरदार भारतवर्ष की सैर करता हुआ जोधपुर पहुंचा। उसके साथ भारत सरकार का एक मुंशी भी था। उस सरदार ने जोधपुर नरेश से अर्ज करवाई कि आपके यहां इतिहास का अच्छा विद्वान हो तो मैं उससे मिलना चाहता हूं। महाराजा ने बांकीदास को उनके पास भेजा। सरदार उनसे बातचीत करके बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने महाराजा को कहलवाया कि इतिहास का ऐसा विद्वान मेरी दृष्टि में दूसरा नहीं आया; ईरान मेरी जन्मभूमि है, परन्तु ईरान के इतिहास का ज्ञान इनको मुझसे भी अधिक है।

बांकीदास की जीवनी से सम्बन्ध रखनेवाली अनेक कहानियां हैं, जिनमें कई-एक का संग्रह नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी, द्वारा प्रकाशित बांकीदास ग्रंथावली, भाग १-३, की प्रस्तावनाओं में किया गया है।

बांकीदास की कृतियों के नाम इस प्रकार हैं—

१ सूर-छतीसी, २ सीह-छतीसी, ३ सुपह-छतीसी, ४ सुजस-छतीसी, ५ सिधराव-छतीसी, ६ हमरोट छतीसी, ७ कुकवि-बतीसी, ८ विदुर-बतीसी, ९ धवलपचीसी, १० वचन-विवेक-पचीसी, ११ कृपण-पचीसी, १२ दातार-बावनी, १३ संतोष-बावनी, १४ कायर-बावनी, १५ वीर-विनोद, १६ भुरजाळ-भूषण, १७ जेहळ-जस-जड़ाव, १८ मोह-मर्दन, १९ नीतिमंजरी, २० चुगल-मुख-चपेटिका, २१ कृपण दर्पण, २२ बैसक-वार्ता, २३ वैस वार्ता, २४ मावड़िया-मिजाज, २५ कमाल-नखसिख और २६ गंगालहरी। ये २६ कृतियां बांकीदास ग्रंथावली के तीन भागों में प्रकाशित हो चुकी हैं। इनके अतिरिक्त इनकी निम्नलिखित अप्रकाशित रचनायें बताई जाती हैं—

१ कृष्णचंद्रिका, २ विरहचंद्रिका, ३ चमत्कारचंद्रिका, ४ चंद्र-दूषण-दर्पण, ५ मान-यशो-मंडन, ६ वैशाख-वार्ता-संग्रह, (ऋतु वर्णन), ७ महाभारत का अनुवाद, ८ प्रकीर्णक गीत, ९ रस और अलंकार का एक ग्रंथ, १० वृत्तरत्नाकर भाषा (छंदग्रंथ)।

पर इनका सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ ख्यात है, जो अब प्रकाशित हो रहा है।

## बांकीदास-री ख्यात

ख्यात में लगभग २००० बातों का संग्रह है। ये बातें छोटे-छोटे फुटकर नोटों के रूप में हैं। लेखक को जो कोई बात महत्त्वपूर्ण लगी, उसे उसने नोट कर लिया। अधिकांश बातें दो तीन अथवा चार पंक्तियों की हैं। दो-तीन पृष्ठों तक जाने वाली बातें कोई विरली ही हैं। ख्यात के सम्बन्ध में स्वर्गीय श्री ओझाजी लिखते हैं—

"पुस्तक बड़े महत्व की है।....ग्रंथ क्या है इतिहास का खजाना है। राजपूताना के तमाम राज्यों के इतिहास-सम्बन्धी अनेक रत्न उसमें भरे पड़े हैं।... उसमें राजपूताना के बहुधा प्रत्येक राज्य के राजाओं, सरदारों, मुत्सद्दियों आदि के सम्बन्ध की अनेक ऐसी बातें लिखी हैं जिनका अन्यत्र मिलना कठिन है। उसमें मुसलमानों, जैनों आदि के सम्बन्ध की भी बहुत सी बातें हैं। अनेक राज्यों और सरदारों के ठिकानों की वंशावलियां, सरदारों के वीरता के काम, राजाओं के ननिहाल, कुंवरों के ननिहाल

आदि का बहुत कुछ परिचय है। कौन-कौन से राजा कहां-कहां काम आये, यह भी विस्तार से लिखा है। अनेक राजाओं के जन्म और मृत्यु के संवत, मास, पक्ष, तिथि आदि दिये हैं।" [पुरोहित हरिनारायणजी के नाम ओझाजी का पत्र; बांकीदास-ग्रंथावली, भाग ३, की प्रस्तावना में प्रकाशित, पृष्ठ, ६-७]

इस प्रकार ख्यात-साहित्य में बांकीदास की ख्यात का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रामाणिकता की दृष्टि से वह राजस्थान की अन्यान्य सभी ख्यातों की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय है।

## प्रस्तुत संस्करण

नैणसी, दयालदास और बांकीदास की ख्यातें राजस्थानी भाषा की प्रथम कोटि की गद्य-रचनायें हैं। इतिहास की दृष्टि से भी वे अन्यान्य ख्यातों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। मेरी बहुत दिनों से इच्छा थी कि इन तीनों के सुसंपादित संस्करण प्रकाशित किये जायं। इस सम्बन्ध में कार्य का आरम्भ भी मैंने कर दिया था, पर वह पूरा नहीं हो सका। अब बांकीदास की ख्यात का यह संस्करण मुनि श्री जिनविजयजी की कृपा से पाठकों के सामने आ रहा है।

हर्ष की बात है कि बाकी दोनों ख्यातों का भी प्रकाशन-कार्य आरम्भ हो चुका है। नैणसी री ख्यात श्री बदरीप्रसाद साकरिया द्वारा संपादित होकर राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर के ही तत्त्वावधान में मुद्रित हो रही है। दयालदास की ख्यात का एक अंश मेरे माननीय मित्र डा० दशरथ शर्मा तथा मेरे भूतपूर्व शिष्य श्री दीनानाथ खत्री द्वारा संपादित होकर प्रकाशित हो चुका है। श्री खत्री ने बाकी अंश के बहुत बड़े भाग को भी संपादित कर डाला है और आशा है कि संपूर्ण ग्रंथ निकट भविष्य में ही प्रकाश में आ जायेगा।

बांकीदास की ख्यात से मेरा परिचय डाक्टर तासीतोरी के सूचीपत्र से तथा श्री ओझाजी के उल्लेखों से हुआ। जब मैंने ख्यात के संपादन का विचार ओझाजी पर प्रकट किया तो उन्होंने तुरन्त उसकी एक हस्तप्रति और उसकी अपनी प्रतिलिपि, दोनों मेरे हवाले कर दीं।

ओझाजी की यह हस्तप्रति मारवाड़ी लिपि में पतले पीले कागज पर लिखी हुई है। इसे जोधपुर के सुप्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय मुंशी देवीप्रसादजी ने उनको तय्यार करवाकर दी थी। इसी की प्रतिलिपि उन्होंने अपने उपयोग के लिए देवनागरी लिपि में करवाई थी। इस संस्करण का संपादन इसी प्रतिलिपि के आधार पर किया गया है। मूल हस्त-प्रति से भी आवश्यकतानुसार सहायता ली गई है।

बांकीदास ने ख्यात की इन बातों का संग्रह बिना किसी क्रम के किया है। उनसे कोई शृंखलाबद्ध वृत्तान्त नहीं बनता। एक ही व्यक्ति के सम्बन्ध की बातें अनेक भिन्न-भिन्न स्थानों पर आई हैं। कई-एक बातें पुनरावृत्त भी हुई हैं, अर्थात् दुबारा-तिबारा भी आ गई हैं। श्री ओझाजी के शब्दों में —

"परन्तु उसमें कोई क्रम नहीं है। एक बात मालवे की है तो दूसरी गुजरात की और तीसरी कच्छ की। इस प्रकार एक महासागर सा ग्रंथ है।" एक राज के ताल्लुक की बातें सौ-पचास जगह आ जाती हैं। [पुरोहित हरिनारायणजी के नाम ओझाजी का पत्र।]

क्रम के इस अभाव के कारण ग्रंथ की उपयोगिता बहुत कुछ नष्ट हो जाती है। किसी व्यक्ति के विषय में जानकारी प्राप्त करनी हो, उसे खोज निकालना सहज नहीं होता, इसके लिये सारा ग्रंथ टटोलना पड़ता है। ओझाजी ने बातों को क्रमबद्ध करना चाहा पर यह कार्य हो नहीं पाया। वे लिखते हैं—

"उसको क्रमबद्ध करना बड़े परिश्रम का काम है और अनेक पुस्तकें पास रखने से क्रमबद्ध हो सकता है। [उक्त पत्र]"

बातों को क्रमबद्ध करने के लिए वस्तुतः राजपूताने के समस्त राज्यों और ठिकानों के इतिहास की जानकारी अनिवार्य है। राजपूताना ही नहीं, मराठा, सिक्ख, मुसलमान, जैन आचार्य जैन श्रावक आदि के इतिहास का ज्ञान भी वैसा ही आवश्यक है।

ग्रंथ वास्तव में उपयोगी हो सके इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर संपादक ने ख्यात का संपादन करने के पूर्व बातों को क्रम से लगा देना अत्यन्त आवश्यक समझा। इतिहास का विद्वान न होने के कारण उसे पग-पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, पर उन पर विजय पाने का भरसक प्रयत्न किया गया। फिर भी कई स्थानों में गलतियां हुई हों, यह संभव है। अन्त में कुछ बातें ऐसी भी रह गईं जिनके ठीक स्थान का निर्णय नहीं हो पाया। उनको अन्त में फुटकर बातों में अस्पष्ट बातों का शीर्षक देकर रख दिया गया है।

ख्यात में अधिकांश बातें राजपूतों के इतिहास से सम्बन्ध रखती हैं। उनमें भी राठौड़ों से संबद्ध बातों की संख्या बहुत बड़ी है। क्रम लगाते समय सबसे पहले राजपूतों से संबद्ध सामान्य बातों को देकर फिर उनकी विविध शाखाओं के राज्यों को एक-एक करके लिया गया है। सबसे पहले राठौड़ों के जोधपुर राज्य को लिया गया है, फिर जोधपुर के ठिकानों को और फिर राठौड़ों के अन्यान्य राज्यों तथा ठिकानों को। राठौड़ों के पश्चात् गहलोतों, यादवों, कछवाहों, चौहाणों आदि राजपूतों की अन्यान्य शाखाओं को लिया गया है। राजपूतों के पश्चात् मराठों, सिखों, मुसलमानों और अंग्रेजों की बातों को स्थान दिया गया है। इसके पश्चात् ब्राह्मण तथा ओसवाल आदि जातियों और जैनों के गच्छों की बातें दी गई हैं। आगे धार्मिक, भौगोलिक, तथा प्रसिद्ध व्यक्ति और वस्तुओं की बातें देकर अन्त में फुटकर बातें-इस शीर्षक के नीचे नीति सम्बन्धी बातें, दूहा-गीत आदि कवितायें तथा अस्पष्ट और अधूरी बातों को रखा गया है।

ख्यात के साथ हिन्दी अनुवाद और अनुक्रमणिका Index देने का भी विचार था। अनुक्रमणिका वास्तव में बहुत आवश्यक थी। पर यह अनुक्रमणिका बहुत बड़ी होती, स्वयं ग्रंथ से भी बड़ी, क्योंकि ग्रंथ में आदि से अन्त तक व्यक्तियों और स्थानों की भरमार है। यह काम समय-सापेक्ष था। पुस्तक बहुत दिनों से प्रेस में पड़ी थी। ग्रंथमाला के संचालक मुनिजी

महाराज ग्रंथ को शीघ्र ही प्रकाशित कर देना चाहते थे। अतः वे अनुक्रमणिका के तय्यार होने तक ठहरने को राजी नहीं हुए।

इस संस्करण को तय्यार करने में मुझे अनेक दिशाओं से सहायता मिली। मेरे भूतपूर्व शिष्य और अब डूंगर कालेज (बीकानेर) के इतिहास-विभाग के अध्यक्ष, श्री नाथूराम खड़गावत तथा मेरे दूसरे भूतपूर्व शिष्य और अब फोर्ट हाईस्कूल (बीकानेर) के हिंदी और इतिहास के शिक्षक, श्री दीनानाथ खत्री ने ख्यात की सब बातों को अलग-अलग चिटों पर लिखा जिससे क्रम लगाने में सुविधा हुई। श्री अगरचंद नाहटा ने आरम्भ से ही इस संस्करण की तय्यारी में अभिरुचि ली। पुरातत्त्व मन्दिर के उत्साही सहायक श्री पुरुषोत्तम मेनारिया ने इसके प्रूफों को देखा है। सभी बन्धुओं का हृदय से आभार मानता हूँ।

यहां पर गुरुवर स्वर्गीय श्री ओझाजी तथा मुनि श्री जिनविजयजी के पुण्य नामों का स्मरण भी मैं आवश्यक समझता हूँ, जिनसे अपने साहित्यिक कार्य में, मैं निरन्तर प्रेरणा प्राप्त करता रहा हूँ और जिनकी कृपा के फलस्वरूप ही यह संस्करण प्रस्तुत और प्रकाशित हो सका है।

राजस्थान भारती पीठ,<br>
बीकानेर.<br>
बसन्तपंचमी, सं० २००९

नरोत्तमदास स्वामी

# बांकीदासरी ख्यात

## [१] राजपूतांरी वातां

१. धारा, उजोण, आबू परमारांरा उतन ।
जायल खीचियांरो उतन ।
नाडूल, सांभर चहुवाणांरा उतन ।
परवतसर दहियांरो उतन ।
टूंक-टोडो सोळंखियांरो उतन
मंडोवर पड़िहारांरो उतन ।
पाटण चावड़ांरो उतन ।
ढाको गौड़ांरो उतन ।
करणाटक, कुंकण, बगलाणो, कल्याणी
अणकी-टणकी राठौड़ांरा उतन ।
आसेरगढ टांकांरो उतन ।
खेड़ गोयलांरो उतन ।
नरवर कछवाहांरो उतन ।
दिल्ली तुंवरांरो उतन ।
भटनेर-तणोट बीजणोट, लोद्रवो,
भाटियांरो उतन ।
वासगढ खखांरो उतन ।
वांभणवाहो वारड़ांरो उतन ।
दुरमांझ बूंदी हाडांरो उतन ।
जाळोर सोनिगरांरो उतन ।
चित्तौड़ मोरियांरो उतन ।
थोहरगढ़ नै खागीर कावांरो उतन ।
मंडाहड़ वेरांरो उतन ।
हळवद-पाटडी झालांरा उतन ।
साझत पाटवो हुलांरो उतन ।
कणेचो गढ़ कालमांरो उतन ।
तारागढ गुडांरो उतन ।
जांगळू-रूण सांखलांरो उतन ।
बांधूगढ बाघेलांरो उतन ।

२. मांगळिया मेहाजीनूं पूजै । ईंदा चामुंडनूं पूजै ।
देवड़ा नागणेचियां पूजै । गोगादे गुसांईजीनूं पूजै ।

३. 'मलीनाथजीरा तेज-प्रतापसूं'' महेचा लिखै । 'महादेवजीरा प्रतापसूं'' सोढा लिखै 'लिखमीनाथजीरा प्रतापसूं'' भाटी लिखै ।

## [२] राठौड़ांरी वातां

### राठौड़ांरी खांपां

४. राठौड़ांरी खांपां लिखयते—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अयलाण १ | अहण २ | करनोत ३ | करमसोत ४ | कलावत ५ |
| कूंपावत | कोटेचा | कांधल | खापसा | खोखर १० |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गूजड़ | गूगक | गुडियाणा | गोगादे | चाचगदे | १५ |
| चाहड़दे | चांपावत | चालू | चैड़ी | छपनिया | २० |
| जांगी | जैतारणिया | जैतावत | डांगी | डंगी | २५ |
| ढोसींग | दरकड़ | देवराज | धवेचा | धांधक | ३० |
| धूहड़ | धूहड़िया | नालू | पाता | पूनावत | ३५ |
| पीथड़ | फीटक | बीड़ा | बूला | भादावत | ४० |
| मंडळा | मांडणोत | मुकट | मुंहड़ा | मूंडाळा | ४५ |
| मूळू | मेड़तिया | मैया | मोडासिया | राजग | ५० |
| राजपाल | रांदा | रूपा | लोला | वाघेल | ५५ |
| वाजा | वानर | बीकानेरिया | बीजा | वेगड़ | ६० |
| सतावत | समरद | सीमाळिया | सींध | सुपेहा | ६५ |
| सैंहटा | सोनवारिया | हथूंड़िया | सूंडर ६९* | | |

५. वाटड़ा १, दोटा २, कसूंबळिया ३, खीया ४, फळसूंडिया ५, धारविया ६, गांवाणेचा ७, अै खांपां राठौड़ांरै मांहे छै ।

६. राठौड़ांरी तेरह साखांरा गांव— धनसूरा १, जळखरिया २, अभैपुरा ३, कपाळिया ४, वेरवदा ५, कुरहां ६, वरिग्रोवस ७, जेवंत ८, वगळाणा ९, देण १०, वीर ११, अहर १२, पारक अथवा पारकर १३ ।*

७. सीहाजीरै फड़रा राठौड़ ज्यांरी विगत— धूहड़िया १, मोट २, धांधळ ३, महण ४, रांदा ५, आसल ६, वोला ७, पेथड़ ८, फीटक ९, कोटवो १०, मूंया ११, जमानाळू १२, आजड़ा १३, सींधळ १४, जोगल १५, वादर १६, हाथूंड़िया १७, उखोवा १८, जोरा १९, सोहड़ २०, चाचक २१, ऊहड़ २२, बेगड़ २३, डांगी २४, महड़ीसिया २५, मोहण २६, खींवसा २७, गुडाळ २८, खोखर २९, मूळा ३०, वाढेल ३१, हाडा ३२, सीमाळिया ३३, कीतपाळ ३४, छटाणिया ३५, वालाड़ा ३६, वरसूवाळिया ३७ ।*

८. राठौड़ांरै जगमोहण पितर थेद, पछै सायर पितर हुवो ।

९. आली १, मोहण २, उदैपुर ३, अै तीन ठिकाणा गुजरातमें राठौड़ांरा बाबागढ़ कनै है ।

## राठौड़ांरी पीढियां

१०. विजेचंदरो राजा जैचंद १, दळपांगळो कहाणो । वरदायीसेन २, सेन ३.

---

T * इनमें कई अेक नाम अशुद्ध हैं ।

सेतराम ४, सीहो ५, आसयान ६, धूहड़ ७, रायपाळ ८, कान्हर ९, जालणसी १०, छाडो ११, तीडो १२, सलखो १३, वीरमदे १४, चूंडो १५, रिड़मल १६, जोधो १७, सूजो १८, बाघो १९, गांगो २०, मालदे २१, उदैसिंघ २२, सूरसिंघ २३, गजसिंघ २४, जसवंतसिंघ २५, अजीतसिंघ २६, वखतसिह २७, विजैसिंह २८, गुमानसिंह २९, मानसिंघ ३० ।

## सीहोजी

११. पालीसूं सीहैजी कनवज जाय अन्हनूं टीको दियो, आप गोयंददाणी गढ वसायो । चालीस सासण दिया, वरस १७ राज कियो ।
पुरोहित साथ बेटा तीनूं पालीमें मिलिया ।

## आसथांन

१२. सीहाजीरै टीकै आसथानजी, खेड़ गोहिलांरै परणिया. पछै साला प्रतापसीनूं कह्यो—डाभी थांहरै वडा आसिया है, इणनूं काढ देवो. पछै काढ दिया. कितांक दिनां डाभी आसथानजीसूं आय मिलिया. डाभी डावा, गोहिल जीमणा. तळाई माथै मार खेड़ लिवी. डाभी-गोहिल जिण तळाई माथै मराणा उणरो नांव पापेळाई दियो, हमैं उणमें गेहूं हुवै छै ।

१३. आसथान सीहावत पाली काम आयो ।

१४. आसथानजी सीहावतरै गोयलाणी राज-लोक है······ साथ. बेटी ईंदी उछरंगदे, राणा बूढारी बेटी, दहिया जैमलनूं परणायी हुती, उणसूं अणवणत हुई, आसथानजीरा घरमें पैठी. जैमलरा बेटा-बेटी साथ लियां आयी ही, ऊ दहियो खेड़हीज मोटो हुयो. उण राठौड़रो वैर लियो. जिणसूं दहियो तेरै साखरो तिलक कहावै ।

१५. बहू ईंदी उछरंगदे, गोहिल जैमलनूं परणायी हुती, राणा बूढारी बेटी, जैमलसूं वणियो नहीं, जद आसथानजीरा घरमें पैठी ।

## धूहड़

१६. धूहड़ ईंदांरो भाणेज. आसथानजीरै टीकै. वे घड़ी······ पड़ियारसूं कियो. धूहड़नूं चहुवाणां मारियो ।

१७. आसथानजीरा धूहड़जी. धूहड़जीरा बेटांरी विगत—रायपाळ महिरेलण १. जोगाइत उडणो २. वेगड़ कटारमल ३. जाळू गजउछाळ ४. कीतपाळ अंतैउर-सिणगार ५. पेथड़ हाक-वंबाळ ६. कहाणो ।

१८. सारगधरीरी [illegible] काम आया ।

१९. राठौड़ जोपसारै बेटांरी विगत - सींधळ १. ऊहड़ २. जोवू ३. जोगो ४. राजग ५. मूळू ६ ।

## रायपाळ

२०. रायपाळ धूहड़रै टीकै. चहुवाणांरो भाणेज ।

२१. रायपाळ धूहड़ोतनूं चहुवाणां मारियो ।

२२. रायपाळ महिरेलणरा बेटांरी विगत - कान्हराव पाटवी १. केल्हण २. रांदो ३. सूंडो ४. मूंपो ५. वेहड़ ६. महणसी ७. थांथी ८ ।

२३. थांथीरै फिटक. केल्हणरो कोटेचो ।

## कन्ह

२४. कन्ह रायपाळरै टीकै. भाटियांरो भाणेज ।

२५. कन्हरै वहू देवड़ी सलखारी बेटी. बेटा तीन - भीमकरण १. जालणसी २. विजपाल ३ ।

दूहो– आधी धरती भीम आधी लोदरवै धणी ।
काकनदी छै सीम राठौड़ां नै भाटियां ।।

## जालणसी

२६. जालणसी देवड़ांरो भाणेज कन्हरायरै टीकै ।

२७. जालणसी धाटो मारियो, मुलतानरी चौथ लिवी ।

## छाडो

२८. छाडो जालणसीरै टीकै. गोहिलांरो भाणेजो ।
सोढा कनांसूं डंडमें घोड़ा लिया. भाटियांनूं पजाया ।

## तीडो

२९. तीडो छाडावत सातलरी मदत अलाउद्दीनसूं जंग कर काम आयो सिवांणै ।

३०. तीडा छाडावतरै तीन बेटा हुवा - कान्हड़दे १. त्रिभुवणसी २. सलखो ३ ।

३१. महेवा वगैरै देसांरो मालक. कान्हड़देनै मार मलीनाथजी खेड़रो राज लियो. कुंवरपदै ।

## सलखो

३२. तीडा छाडावतरै टीकै. हुलांरी भाणेज सलखो ।

३३. तीडारै टीकै चहुवाणांरो भाणेज. बहू पड़िहार रूपड़िया राणारी बेटी ।

३४. मलीनाथजीरै तीन भाई, चौथा आप, बहन अेक विमलांबाई, लोक वींवळीवाई कहै, घड़सी रावळनूं दीवी ।

३५. मालो, जैतमाल, पड़िहारांरा भाणेज. वीरम, सोभत, उमरकोटरो धणी सोढो जिणरा भाणेज ।

## मलीनाथ

३६. रावळ मलीनाथ जसड़ारो भाणेज हो. नाम मालो हो. जोगी रतन रावळ मलीनाथ कहे वतळायो. जदसूं मलीनाथ कहाणो ।

३७. मालो नै महेवारो पीर, रूपादेरी मा सोढी चँद्रावळ, जगमालरी मावसी, इणरी गोमती ।

३८. करड़ियो, कांबळी, हांसली, घोड़ा जोड़ो - अै वसतां वालै वदरै मलीनाथजीनूं डायजै दीवी रूपांदे परणाय ।

३९. हरखु सांखलो वगड़ी हुवो. मलीनाथजीरै परणियो. पोकरण गुढो डायजै दियो ।

४०. भाद्रेस माला रावळरी दियोड़ी है ।

## मलीनाथोत राठौड़

४१. मलीनाथरो जगमाल, जिणरा पोहकरणा ।

४२. जगमाल मालावतरै बेटो लांको, जिणरा वाड़मेरा राठौड़ ।

४३. महेवामें भाखर गायणो जठै कूंपा मलीनाथोतरो रहणो हुवो. कूंपारै मोलो हुवो ।

४४. कूंपारै वंसरा गायणेचा राठौड़ है ।

४५. गांवणेचा राठौड़ कूंपा मलीनाथोतरा है ।

## जैतमाल सलखावत

४६. जैतमाल सलखावतरै बारा बेटा, ज्यांमें १ खीमकरण प्रतापीक हुवो, जिण सोढांनूं मार अड़ताळीस गांव रा....रा दबाया ।

४७. जैतमाल बाराही बेटांनूं कह्यो - जगमाल मोनूं मारियो. वो वैर विसार दीज्यो नै हाफानै सिवाणैरी धाटी सूंपी. इग्यारै जणा जुदा - जुदा परदेसां जावज्यो. जिणसूं थांरा जुदा-जुदा ठिकाणा बंधसी ।

४८. जैतमाल [illegible] मलीनाथजी तेरै

तुंगा भांजिया जद उगमसी मलीनाथजीरी भीड़ आयो हुतो ।

## सोवत सलखावत

४९. सोवत सलखावत, जिणारै वंसरा सोहड़ ।

## वीरम सलखावत

५०. वीरमजी जोइयांसूं झगड़ो कर कांम आया जोइयावाटीमें ।
घोड़ी आण समाध धर असमाध उपाधी ।

५१. वीरम सोढांरो भांणेज. जोइयांरै वीठड़ै गयो उठै मराणो ।

५२. गोगादे १, देवराज २, जैसिंघ ३, वीजो ४, चुंडाव ५, पाची ६, - वीरमरा ।

## चूंडो वीरमओत

५३. चूंडो वीरमरै पाट, मांगालियांरो भांणेज, मंडोवर ले नागोर लियो, नागोर में चूंडापोळ करायी . लखीजंगळरो धणी जलाल खोखरनै भाटी केलण केहररै ......आय नागोर राड़ कीवी . चूंडोजी कांम आया ।

५४. चूंडोजी नागोर कांम आया, भाटी केलण खोखरसूं वेढ़ कर ।

५५. चूंडोजीरी बेटी हांसीबाई, रिड़मलजीरी सगी बहन, राणा लाखाने परणायी . भाणेज मोकल ।

५६. चूंडाजीनूं मार तुरकां नागोर लियो . पछै तुरकांनूं मार राणै लाखै नागोर रिड़मलजीनूं दीधो . जोधपुर सता चूंडावतरी ठाकुराई . नागोररै गांव मूंडवै राणै लाखै लाखासर तळाव नागोर करायो हो ।

## वीरमदेओत

५७. करमसी १, सहसमल २, केल्हो ३, - अै तीन गोगादे वीरमदेवोतरा बेटा ।

## सतो चूंडावत

५८. चूंडारै पाट सतो . दारू घणो पियै . राजरो काज भाई रणधीर चलावै । जठा पाछै टीको रिड़मलजीनूं दियो छरावासूं तेड़नै ।

५९. गांव बारी भहव दूदावतनूं सतराव चूंडावत दीधी ।

## रिड़मल चूंडावत

६०. राव रिड़मल चूंडारै टीकै, गहलोतांरो भाणेज . पीरोजखानसूं युद्ध कर राव रिड़मल मारिया ।

६१. लोला सोनगरारो बेटो सतो जिणनूं जोधाजीरी बेटी नूंदरबाई परणाय राव

रिड़मल सतानूं पाली दीवी . नाडूलरा सोनगरा धणलांसूं चढ जाय मारिया, अो वैर रिड़मलजी पोती परणाय वाढियो ।

६२. राव रिड़मल ४१ वार जैसळमेर मारियो जद भाटियां बेटी दिवी, रिड़मलजी-नूं राजा कहिया ।

६३. रावजी रिड़मल धणलासूं जाय नाडोळरा धणी सोनगरा सारा मार नाखिया. रावजी यां सोनगरांरै परणिया हुता . सोनगरो लालो रणधीररो . जैसळमेर परणीजण पधारिया जद लालानूं जोधपुर आण जोधाजीरी बाई परणायी. वैर भांगियो . पाली पटै दीवी ।

६४. संवत १५०० चैत वद ६ गढ चित्तौड़ ऊपर चूक कर राणं कूंभै मारियो राव रिड़मलनूं ।

६५. रिड़मलजीनूं चित्तौड़ माथै चूक कर मारिया सिसोदियै चूंडै लाखावत ।

६६. चूंडा लाखावत सामल होय नरवद सरावत चित्तौड़ माथै रिड़मलजीनूं चूक करायो ।

६७. भाटी सतो लूणकरणोत राव रिड़मलजीनूं चित्तौड़ चूक हुवो जद काम आयो ।

६८. सीवराज चूंडारो जिणरै वंसरा भीमोत कहीजै ।

## जोधो रिड़मलोत

६९. राव रिड़मलनूं चूक हुवै चित्तौड़ माथै. कंवर जोधोजी तळैटीसूं निसरिया, चूंडै लाखावत लारै लोक मेलियो, गजणरईरै घाटै वेढ हुई जठै प्रथीराज ईंदा वगेरै जोधाजीरा रजपूत काम आया ।

७०. राव जोधो रिड़मलरै पाट, देवड़ांरो भाणेज. संवत १४७२ रा वैसाख वद ४ बुधवाररो जनम, संवत १५१० जोधैजी राणारा थाणा उठाय धरती लिवी ।

७१. सोमेसर रावत लूणा कनैसूं घोड़ा लिया, गुसांईजीरा कहणासूं हरभू सांखलै जोधानूं जीमण कियो. कह्यो म्हारी गोठरा मूंग थारा पेट-में इत्तं जित्ती जमी पै घोड़ो फेरसो उवा जमी थारी रैसी . गूंदोच तांई घोड़ा फेरिया ।

७२. चोकड़ी विलाड़ासूं राणारा थाणा फटाया. सोजत लिवी ।

७३. रावजी जोधोजी कंवर नरवद सतावतरी लड़ाईमें घेठ नाव उभा हुवा ।

७४. जोधपुर वसायां पछै जोधोजी गयारी जात्रानूं चढिया, मारग में जहानापुररो मालक आय मिळियो. रावजी उणरी मदत किवी. बहलोलखांरो भाई सारंगखां मारियो, पछै गयारो कर दूर कियो ।

७५. संवत १५४५ जोधोजी देवलोकहुवा।

७६. रावजी जोधाजीरै तेरै बेटांरी विगत-सातलजी १, सूजोजी २, नींबो ३, करमसी ४, वीदो ५, वीको ६, भारमल ७, जोगो ८, दूदो ९, जगमाल १०, सिवराज ११, गोपालदास १२, वरसिंघ १३।

७७. वैरसलपुरा भटियाणी राव जोधाजीरी राणी जिणरै पुत्र तीन हुवा—करमसी १, रामपाळ २, वणवीर ३।

७८. रावजी जोधाजीरै राजलोक वैरसलपूरां भटियाणी जिणरै बेटा तीन करमसी १, रामपाळ २, वणवीर ३।

७९. सातल १, सूजो २, नींवो ३, हाडांरा भाणेज।

८०. वीदो १, वीको २, दोनूं सांखलांरा भाणेज।

८१. राव जोधाजीरै राणी हाडी कोडमदे जिण राणीसर तळाव करायो. संवत १५१५ जेठ सुद ११ जोधपुर वसायो।

## राव सातल जोधावत

८२. सातल जोधावत सातलमेर करायो।

८३. जोधाजीरै पाट सातल·······
सीसोदियाँसू सुख कियो. आवळ बावळै सीम किवी. रावजीरा वैरमें सोजत लिवी।

८४. सिरियाखानसूं कुसाणै सातल दूदे वेढ किवी. ओ तीजणियां छुडाय लिवीं. दूदेजी सिरियाखानरा हाथी घणा लूंटिया।

८५. सातलजी तीन वरस राज कियो. संवत १५४९ सातल काम आयो।

## नींबो जोधावत

८६. सोजत नींबै जोधावत वसायो. राणारा देसरी से उचळी सात बीसी जान आयी हुती जिके सोजतमें राखआं।

## राव सूजो

८७. राव सूजो जोधारै पाट. संवत १४९६ रा भादवा वद ८ रो जनम।

८८. संवत १५४८ में सोजतसूं आय जोधपुर पाट बैठा।

८९. सूजाजीरो संवत १४९६ रा भादवा वद ८ जनम. संवत १५४८ पाट बैठा. संवत १५७२ रा काती वद ९ राम कह्यो।

९०. मांगळिया राणावतांनूं हमीरोतरी बेटी सूजो जोधावत परणियो. सासरा

रो नाम सरवंगदेजी. ज्यांरा बेटांरी विगत—ऊदोजी १, पिरागजी २, सांगोजी ३ ।

९१. राव सूजारा बेटांरी विगत--वाघो १, पाटवी कंवर थकां देवलोक हुवो, ऊदो २, सेखो ३, देईदास ४, पिरागदास ५, सांगो ६, नरसो ७, तिलोकसी ८ ।

९२. सेखारै सहसमल ।

९३. देईदासरै अचलो १, हरराज २ ।

९४. नरारै गोइंद १, हमीर २ ।

९५. कंवर वाघो नरो भाटियांरा भाणेज ।

९६. सेखो देईदास चहुवांणारा भाणेज ।

९७. मांगळियाणी सरवदे राणा पातूरी बेटी जिणरा बेटा—ऊदो १, पिराग २, सांगो ३ ।

## कंवर वाघो

९८. संवत १५१४ रा वैसाख वद ७ वाघाजीरो जनम, संवत १५७१ सुरगवास कियो बाघैजी ।

९९. संवत १५१४ पोस वद ६ जनम वाघाजीरो, संवत १५७१ रा भादवा सुद १४ राम कह्यो ।

१००. कंवर वाघो सूजावत चितोड़ राणा रायमलरै परणियो हो ।

१०१. कंवर वाघो सूजावत राणा रायमलरै परणियो हो ।

१०२. कंवर वाघारा बेटांरी विगत--गांगो १, वीरमदे २, जेतसी ३, प्रतापसी ४, भीम ५ ।

## राव गांगो

१०३. राव गांगो वाघावत चहुवाणांरो भाणेज, वीरमदे वाघावतनूं सोजत दिवी गांगैजी, संवत १५४० वैसाख सुद ११ जनम गांगाजीरो, संवत १५८८ रा जेठ सुद ५ रामसरण जोधपुर हुवा ।

१०४. संवत १५८८ रा चैत सुद ११ राव गांगोजी कंवर मालदेजी फौज ले सोजत आया, वैद मुंहता रायमल खेतावतनूं मार वीरमदे कनांसूं सोजत ली, वैसाख सुद ४ राव गांगैजीरी मदत किवी ।

दूहो-गांगा त गवाळ, ऊगा हाई उर तणा ।
सोहै तो सुखपाळ, बडा प्रवाड़ा, वाघउत ।।

१०५. सोजत वैद मुंहतो रायमल वीरमदेजीरै चाकर, रावजी गांगैजी कंवर मालदेजी सोजत माथै गया जद रायमल कबंध हुवो, नेत्र भावसूं तरवार चली, बेटारा बटका किया, लाखी लोवड़ी ओढाड़ी जद घोड़ासूं जमी लोथ पड़ी, उण दिनरो ओखाणो—

मुंहता माटी मारका, घररा गिणै न पारका ।

१०६. गुजरातरो पातसाह उदैपुर ईडर ले लियो जद राव गांगो, राणो सांगो, वीरमदे दूदावत तीनूं ही मिल अहमदनगर जंग कर पातसाहनूं भाज ईडर ईडरिया राठोड़ांनुं दियो ।

१०७. रावजी गांगोजी, वीरमदे दूदावत, राणो सांगो ईडररा राजारी मदत ईडरनूं जावै. जद सांढयांरा राईका रावजीसूं अरज किवी—आप ईडरनूं पधारै हैं, कोटड़िया दौडै है, सो रावळी सांढयांरा रँगारा जाबता सारू सिरदारांरी आसामियां अठै राख, पधारजै. जद रावजी फुरमाया—थे कहो जिके ही अठै राखां, आं कह्यो—तेनारा गोगादे नेतसी खेतसी महावतियांनूं सांढांरा जाबतानूं राखजै. जद आं गोगादेओतांनूं देसमें राख रावजी ईडररी मदत पधारिया. किताईक दिनां कोटड़ियां सांढियां लिवी. राईका तेनै गया, जद तेनै ढोल वाजियो. सारा गोगादे घोड़ा चढनै आया घोड़ो जीण कराय नेतसी अमल ले सूतो जद अेक राईको बोलियो—

पीपारां पीधो मेहारै घूंटलवाळी ।

अरथ—पीपा राईकारा बेटां-पोतरां सांढांरो दूध पीधो, मेहरो बेटो घूंटलवाळै पग समेट सूतो. पछै नेतसी भायां-भड़ां सहित सांढांरी वार चढियो. कोटड़िया रामाजी मारनै सांढां पाछी आणी. तेनारै तळै पाणी पाय दोड़ कराय राईकांनूं दूध पायो. उण समैरा हींडोळा—

सांढा लोप सोइंतरो, जांघी सांईरी सांध ।
चढि महीरा नेतसी, रातो तरगस बांध ।।

नळी कटाड़ूं नीली लप, घी अमापियो खाय ।
हाथ वैंतरै आंतरै, अै कोटड़िया जाय ।।

खेतो पूछै नेतसी, नीळो घोड़ो काय ?
गया ईडररी चाकरी, दियो ईडररै राव ।।

उरळी चारो राइकां, म्हारा भालारी छांह ।
जो जासी तो आणसूं, बाबा मेहारी बांह ।

१०८. सेखोजी गांगोजी एक दिन भरणामें भीर बांट जळछांटारो खेल कियो. भाजणरी दोनांनूं परत. बोले-बोलै भारी हुवो. जद सेखोजी धूसल करणो विचारियो. आ खबर पाय रावजी गांगोजी सेखाजीनूं कह्यो--वरड़ ऊगी जिण जमीमें उवा थांहरी, भुरट जिणमें ऊगै उवा म्हारी. सेखाजीरै परधान ऊहड़ हरदास आ बात मानी नहीं ।

दूहो—अेक वचन हरदास, ऊहड़ मन आणै नहीं ।
गाँगौ सगळो ग्रास, कै सेखै सौ सामठो ।।

१०९. सेखैंजी नागोरी खान दोलतियो जिणनूं मारवाड़ माथै आणियो. गांगोजी फौज ले सामा गया. सेवकी वेढ हुई. दरिया जोरा हाथी फौजांरै आगै हो. रावजीरा हाथरो तीर लागो. ऊ भागो. दोलतियो ही भागो. सेखो काम आयो. देईदास निसरियो, संवत १५८६ रा मिगसर सुद १ आ वेढ हुई. पचास पठाण काम आया. हाथी दोलतियारा घणा लूंटाणा. रावजीरो उमराव किसनो चांपावत पूरै लोहै पड़ियो. रजपूत पांच आपरा काम आया. इणनूं रावजी थुनाड़ो दियो. घावां उपड़ियो. दिनां पनरा रामसरण हुवो ।

११०. सेखा सूजावतरै वंसरा राठोड़ मुसलमान हुवा. हाडोतीमें नाहरगढरो धणी नवाब वाजै है ।

१११. चाँद-बावड़ीसूं राव गांगोजी तीर चलायो हो सू गोळ में जाय पड़ियो है ।

११२. सीकरी राणा सांगारी हार हुई जद सारांही कही—राव गांगो सामल होतो तो राणारी फतै होती ।

११३. संवत १५८८ रा जेठ सुद ५ सुरगवास कियो रावजी श्री गांगैजी ।

११४. संवत १५८८ रा जेठ वद ५ राव गांगोजी देवलोक हुवा ।

११५. राव गांगाजीरी राजलोक सीसोदणी उत्तमदे राणा उदैसिंघरो बहन पीहररो नांव पदमावती ज्यां पदमसर तळाव करायो जोधपुर ।

११६. राव गांगोजी देवलोक हुवा जद सीसोदणीजी पीहर हुता. पांच पोहर सत रहियो. भाई उदैसिंघ बळण न दिवी. पछै चित्तोड़ जूहर हुवो जद जूहरमें बळिया ।

११७. देवड़ी माणकदेजी पीहररो नांव पदमाबाई जिणरै बेटा तीन—मालदे १, वैरसल २, मानसिंघ ३ ।

११८. गांगोजीरी बेटी राय कंवरबाई चित्तोड़ विक्रमाईतनूं परणायो ।

११९. गांगाजीरी बेटी सोनबाई जेसळमेर रावळ लूणकरणनूं परणायो ।

## राव मालदे

१२०. राव मालदेजी संवत १५६८ रा पोस वद १ रो जनम. संवत १५८८ रा सावण सुद १५ पाट बैठा राव मालदेजी, संवत १५९२ रा माह वद २ नागोर खांनूं मारियो, नागोर लियो. संवत १५९४ रा असाढ वद ८ सिवाणो लियो, डूंगरसी जैतमाल कनांसूं. संवत १५९६ रावजी वीरा सींधलनूं मार भाद्राजण लिवी ।

१२१. संवत १५९८ बीकानेर लियो. कूंपोजी फौज ले गया हुता. चैत वद ५ जैतसी मारियो. संवत १५९८ चैत वद १२ रावजी पधारिया बीकानेर. जूंझणूं फतैपुर कूंपाजीनूं वधारामें दिया ।

१२२. पंचोळी अभो जांजावत मालदेजीरै कामेती ।

१२३. संवत १६०२ रावजी डूंगरसी हमीरोत कनांसूं लिवी फळोधी ।

१२४. संवत १६०८ रावजी पोहकरण लिवी ।

१२५. जैतैजी कूंपैजी वीरमदे दूदावतनूं मेड़तै रियासूं अजमेरसूं डोडवाणा मांहसूं वाली मांहसूं काढियो ।

१२६. बोला वीरमदेजी कह्यो—कूंपाजी ! अठांसूं तो आंहरो काढियो नहीं जासूं, मरसूं. कूंपैजी कह्यो—तो मारसां. जद जैतैजी कूंपाजीनूं कह्यो—वीरमदेनूं मारणो नहीं, वीरमदे वडो रजपूत है, जीवतो रयो तो कयांहिकनूं आण आपणो मरण सुधारसी ।

१२७. उठांसूं वीरमदे मांडवरा पातसाह कनै गयो. उण खरची दिवी पछै पूरबमें जाय सूर पातसाहनूं आणियो ।

१२८. सूर पातसाह आयो जद वसी सिरोही मेली. असी हजार घोड़ांसूं रावजी बाबरै जाय डेरा किया ।

दूहो—साह आलम सावाहियो, मालो अमळीमाण ।
तैं पातसाह क [illegible], [illegible] ।।

कूंपै कह्यो—

दूहो–तू ठाकर दीवाण तू, तो ऊभै सह कज्ज ।
राज सिधारो मालदे, करण मरण छळ लज्ज ।।

१२९. चांपो जैसो भैरूदासोत जलाल जलूकारो घोड़ो पातसाहरा मूंडा आगै लायो. पछै राव मालदेजी साथ पींपळोद गयो ।

१३०. भाटी सांकर सूरावत अजमेररो किलादार हुतो. अजमेररो गढ छूटो जद मरण मांडियो हो पिण चाकरां मरण दियो नहीं. असुर पातसाह जोधपुररो गढ लियो जद गढ माथै काम आयो, गढमें छतरी ।

१३१. राठोड़ रामसिंघ ऊहड़, राठोड़ सीकर जैतसिंघोत ऊदावत इत्यादिक गढ ऊपर काम आया ।

१३२. सूर पातसाह वरस १ जोधपुररै गढ रह्यो. संवत १६०१ पोस वद ५ देहरो पाड़ मसीत करायी ।

१३३. पछै गोकुळदास पाज बंधावी, तळावरी रांग भरायी ।

१३४. सूर पातसाह गयो मारवाड़सूं जद भीगैसर पांच हजार घोड़ा थाणो राख गयो, रावजी जोधपुर आया. थाणानूं वेढ करि उगमो. इतरा रावजीरै काम आया—राठोड़ ऊभो वरसिंघोत माणस ४०० सूं खेत रहियो, रावळ हाफो वरसिंघोत लोहै पर उपड़ियो, राठोड़ अभो हाफो माणस ८०० घोड़ांरा असवार ओठी पाळा महेवासूं साथ लाया हुता ।

१३५. जैसिंघ भैरूदास चांपावतरो लोहे पड़ उपड़ियो ।

१३६. सवत १६०० पातसाह सेरसाहसूं हार राव मालदेजी सिवाणारी भाखरां गया ।

१३७. संवत १६०३ सलेमसाह मुवो जद तुरक जोधपुररो गढ छोड खवासपुरै नसेदलीखां खवासखां कनै गया. मंडोवररा माळी गढमें आया, रावजीनूं खबर दिवी. रावजी जोधपुर पधारिया. पछै वरस सात रावजी मेड़तानूं लागा ।

१३८. संवत १६१० रा वैसाख वद २ मेड़ता ऊपर रावजी आया. मेड़तै कुंडळ तळाव माथै जैमल रावजीसूं राड़ किवी. जैमल वीरमदेवोत दैवजोगसूं जीतो. रावजीरा इत्ता ठावा मिनख काम आया—धनो भारमलोत बालो १, राठोड़ नगो भारमलोत बालो २, प्रथीराज जैतावत ३, राठोड़ जगमाल उदैकरण ४, राठोड़ सूजो जैतसिंघोत ५, सीहड़ पीथो जसवंत ६ ।

१३९. संवत १६१० रा असाढ वद १३ राठोड़ देईदास जैतावतनै कंवर चंदरसेणजीनूं मालदेजी मेड़ता माथै विदा किया. जैमलजीनूं काढ़ि मेड़तामें अमल कियो ।

१४०. संवत १६१३ हाजीखानसूं राजाजीरै अदावदी हुई जद राव मालदेजी आपरा उमराव हाजीखांरी मदत मेलिया ज्यांरी विगत—राठोड़ देवीदास जैतावत १, रावळ मेहराज हाफावत महेवारो धणी २, राठोड़ जगमाल वीरमदेवोत ३, राठोड़ जैतमाल जैसावत चांपो ४, लखमण भादावत ५—इत्यादिक डोढ़ हजार घोड़ांसूं मेलिया ।

१४१. संवत १६१३ फागण वद १२ हाजीखानसूं राणा उदैसिंघजीरै अदावदी हुई. हाजीखान पठाण हो. हाजीखान राव मालदेजीसूं सांधी. राव मालदेजी इतरा ठावा मिनख हाजीखानरी मदत मेलिया—राठोड़ देवीदास जैतावत १, राठोड़ रावळ मेघराज हाफावत २, राठोड़ जगमाल वीरमदेवोत ३, राठोड़ जैतमाल जैसावत ४, लखमण भादावत ५ ।

१४२. राणा उदैसिंघरा साथरी विगत—राठोड़ जैमल वीरमदेवोत, राव कल्याणमल वीकानेरियो, रावळ प्रताप वांसवाळारो, रावळ आसकरण डूंगरपुररो, रावळ तेजो देवळियारो, खैराडो रामो जाजपुररो धणी, राव रामचंद्र तोडरीरो धणी, सोलंकी राव सुरजण हाडो बूंदीरो धणी, राव दुरगो रामपुरारो धणी, राव नारायणदास ।

१४३. राणाजीरा साथरी विगत—राठोड़ जैमल वीरमदेवोत १, राव कल्याणमल वीकानेरियो २, रावळ प्रताप वांसवाळारो ३, रावळ आसकरण डूंगरपुररो ४, रावळ तेजो देवळियारो ५, खैराड़ो रामो जाजपुररो धणी ६, राव रामचंद्र तोडरीरो धणी ७, राव सुरजण बूंदीरो धणी ८, राव दुरगो रामपुरारो धणी ९, राव नारायणदास-इत्यादिक राणा कनै सिरदार अजमेरसूं कोस १२ हरमाड़ों गांव जठै राड़ मंडी. संवत १६१३ फागण वद १२. राणाजीरो उमराव वालीसो सूजो जसवंतोत राठोड़ देवीदास जैतावतरै हाथ रह्यो. जैतारणियो तेजसी डूंगरसी ऊदावतरो राणाजीरो उमराव आछी तरह काम आयो. खेत हाजीखानरै हाथ रह्यो ।

१४४. हाजीखान पठाणसूं संवत १६१३ रा फागण वद ९ राणै उदैसिंघ वेढ किवी जद ५०० सवारांसूं रावजीरा उमराव इता हाजीखां सामल हुवा—राठोड़ देईदास जैतावत१, राठोड़ जगमाल वीरमदेवोत२, राठोड़ जैतमाल जैतावत३,

ऊहड़ जैमल जैतसिंघोत४, राठोड़ प्रथीराज कूंपावत५, रावळ मेघराज हाफावत६, राठोड़ महेसदास घड़सिंघोत७, राठोड़ लेखमण भादावत ८।

१४५. हरमाड़े राणा उदैसिंघजीरो उमराव सूजो बाली हो जिणरै देईदास जैतावतरै हाथरी बरछी लागी. सूजो खेत पड़ियो. जैतारणियो तेजसी डूंगरसिंघोत राणाजीरै काम आयो. राणाजीरी फौज भागी. रावजीरो सींधल देदो रणधीर काम आयो।

१४६. संवत १६१३ रा फागण वद १२ अजमेरसूं कोस १२ हरमाड़ो जठै राड़ हुई। राणा उदैसिंघजीरो उमराव नाडूलाईरो घणी बालीसो सूजो जसवंतोत माराणो. राठोड़ देईदास जैतावतरै हाथ रह्यो. राठोड़ जैतारणियो तेजसी डूंगरसिंघोत राणाजीरो उमराव काम आयो. राणोजी जीता नहीं, खान जीतो।

१४७. रावजी साथै पहुंचावण जैपुर आया हुता उठै जासूसां खबर दीवी खान जीतो. रावजी मेड़ता माथै आवणरी त्यारी किवी जद जासूसां खबर दिवी— मेड़तो खाली है, जैमलरो कोई नहीं है मेड़तामें. संवत १६१३ रा फागण सुद १२ रावजी मेड़तै पधारिया. जैमलरा माणस बावरै गिररी समाळ केई दिन रहिया. रावजी हळ जोताय मेड़तियांरी जायगां पड़ाय नखायी।

१४८. रावजी जैतारण हुता. जैतारणसूं डोढ हजार घोड़ो हाजीखांरी मदत मेलियो हो. हाजीखान जीतो. अै समाचार रावजीसूं मालम कराया. रावजी मेड़तै पधारणरी त्यारी किवी जद जासूसां खबर दीवी—जैमलजीरो कोई आदमी मेड़तामें नहीं है. संवत १६१३ फागण सुद १३ मेड़तै पधारिया।

१४९. जैमलजीरा माणस गिररी बावरै संभळ केईक दिन रह्या।

१५०. हळ जोताय रावजी मेड़तियांरी जायगां पड़ायी।

१५१. संवत १६१४ मेड़तै मालकोटरी नींव दिरायी. संवत १६१६ मालकोट संपूरण वणियो जद राठोड़ देईदास जैतावतनूं साथ घणासूं मालकोट थाणै राखियो।

१५२. संवत १६१८ रा आसोज वदमें राठोड़ देईदास जैतावत, राठौड़ पतो नगावत जाळोरगढ लियो. मलिक बूढतखांनूं काढियो. आसोज सुद ५ कंवर चंदरसेण जाळोरगढ चढियो।

१५३. पछै जेमलजी बधनोरसूं जाय अकबर पातसाहरा उमराव मिरजा सरफुद्दीननूं पातसाही लसकर समेत मेड़तै मालदेजीरा साथ काम आणियो, संवत

१६१८ रा चैत सुद ५ रावजीरा साथसूं लड़ाई किवी. फतै मिरजारी हुई, रावजीरा उमराव काम आया ज्यांरी विगत-राठोड़ देईदास जैतावत १, राठोड़ महेस पचाइणोत करमसिंघोत २, मांगळियो वीरमदेव ३, राठोड़ भाखरसी डूंगरसिंघोत ४,.......५, राठोड़ गोइंद राणावत ६, राठोड़ अमरो रायावत ७, राठोड़ जैमल तेजसिंघोत ८, राठोड़ भाण भोजराजोत रूपो ९, राठोड़ महेस घड़सीहोत १०, राठोड़ पूरणमल प्रथीराजोत ११, राठोड़ भाखरसी जैतावत १२, राठोड़ ईसरदास राणा अखैराजोतरो १३, राठोड़ तेजसी सीहावत १४, राठोड़ पतो कूंपो महराजोतरो १५, राठोड़ सहसो रामावत १६, राठोड़ अमरो आसावत १७, राठोड़ अमरो रामावत १८, राठोड़ अचळो भाणोत १९, राठोड़ सांगो रणधीरोत २०, राठोड़ ईसरदास घड़सीहोत २१, राठोड़ रायसिंघ घड़सीहोत २२, भाटी तिलोकसी परवत आणंदोतरो २३, राठोड़ हमीर ऊदावतवालो २४, राठोड़ भीम दूदावत वालो २५, राठोड़ अखो जगमालोत २६, काक चांदाउतरो २७, राठोड़ जैतमाल पचायणोत मेड़तियो २८, भाटी पीथो अणंदोत २९, राठोड़ राणो जगनाथोत ३०, सांखलो तेजसी भोजावत ३१, राठोड़ प्रिथीराज ३२, सिंघण अखैराजरो ३३, चहुवाण जैतसी ३४, वीरम दूदावतरो ३५, मांगळियो देदो ३६, राठोड़ रणधीर रायमलोत ३७, जगमालजीरो चाकर आसामी ३८. आंरा रजपूत छव काम आया. मिरजारो साथ घणो काम आयो. खेत मिरजारै हाथ रयो. मेड़तो लियो।

१५४. रावजी कंवर चंद्रसेणजीनूं मेड़तै देवीदासजी कनै मेलियो. राठोड़ प्रथीराज कूंपावत १, सोनगरो मानसिंघ अखैराजोत २, राठोड़ सांवळदास ३ और ही उमराव कुंवरजीरै साथै मेलिया, दोय हजार घोड़ा साथै मेलिया।

१५५. रावजी कह्यो—वेढ करणरो छव हुवै तो वेढ कीज्यो, नहीं तो देवीदासजीनूं लेनै उरा आवज्यो. अै मेड़ते गया. पातसाही फौज सबळी देखी. आं डेरा पाछा किया, देवीदासजी मुरड़ मालकोटमें पैठा।

१५६. मुगलां मालकोट घेरियो. राठोड़ सांवळदास उदैसिंघोत मुगलां साथै पड़ियो. चाकर खाटमें घाल ले निसरिया. मुगल लारै चढिया. च्यार कोस माथै आय पड़िया. सांवळदास भली भांत काम आयो।

१५७. मालकोट घेरो मुगल नित ढोवा करै. रावजी नित देईदासजीनूं लिखै—थे तो थांरो नांव करो हो पिण म्हारी ठुकराई खोवो हो।

१५८. संवत १६१८ रा फागण बद घेरो लागो मालकोटरो. बुरज अेक सुरंगसूं उड़ियो. मुगल हल्ला ऊपर हल्ला करै. जद जैमलजीसूं सरफुद्दीन बात

करी . मालकोट बारैं देवीदासजी निसरिया. जैंमलजी सरफुद्दीन मालकोटरी पोल आगैं ऊभा देख रावजी देवीदासजीनूं दिवी हुती बांरा खिजमतदाररै कनै हुती अेक मुगल बंदूक लेण झूंबियो जद कड़ियाळी गैंडी मुगलरै माथै जड़ी . गैंडीरा लगणासूं नाकमें भेजी निसरी . मुगल मर गयो ।

१५९. ओ काम देख जैंमल सरफुद्दीननूं कह्यो—देवीदास जीवतो जोधपुर गयो तो रावजीनूं आपाँ ऊपर जरूर ले आवसी, इणनूं मार लेणो, आसल करो. सरफुद्दीन जैंमल फौज ले चढिया. गांव सातळिया वासैं जाय पोहता. आंरी फौंजरो नगारो आं गोइंददासजी सुण, घोड़ा ठामिया. संवत १६१८ रा चैत सुद १५ वेढ हुई. रावजीरी फौजरा इतरा काम आया—

| | |
|---|---|
| राठोड़ देईदास जैंतावत १. | राठोड़ भाखरसी जैंतावत २. |
| राठोड़ पूरणमल प्रथीराजोत ३. | राठोड़ जैंतसी उरजणपचायणोत ४. |
| राठोड़ सहसो उरजणोत ५. | राठोड़ ईसरदास राणावत ६. |
| राठोड़ पतो कूंपा महराजोतरो ७. | राठोड़ भाण भोजराजोत ८. |
| राठोड़ नेतसी सोदावत ९. | राठोड़ रामो भेरूंदासोत १०. |
| राठोड़ अचळो भाणोत ११. | राठोड़ गोइंददास राणावत १२. |
| राठोड़ अमरो रामावात १३. | राठोड़ सहसो रामावत १४. |
| जैंमल तेजसिंघोत १५. | राठोड़ भाखरसी डूंगरोत १६. |
| राठोड़ महेस पंचायणोत १७. | राठोड़ रणधीर रायसिंघोत १८. |
| राठोड़ महेस घड़सिंघोत १९. | राठोड़ ईसरदास घड़सिंघोत २०. |
| मांगळियो वीरम २१. | सांखलो तेजसी २२. |
| भाटी तिलोकसी २३. | भाटी पीथो २४. |
| खाती भानीदान २५. | बारट जालप २६. |
| राठोड़ सांगो रणधीरोत २७. | राठोड़ राजसी घड़सिंघोत २८. |
| राठोड़ राणो जगनाथोत २९. | भाटी पिरागदास भारमलोत ३०. |
| बारट जीवो ३१. | तुरक हमलो ३२. |

१६०. आ वेढ हुवां पछै रावजी मेड़ता माथै कटक कियो नहीं ।

१६१. संवत १६१८ रा चैत सुद १५ राठोड़ जैंमल मिरजै सरफुद्दीन गांव सातळियावास रावजी मालदेजीरी फौजसूं जंग कियो. राठोड़ देईदास जैंतावत वगेरै रावजीरा घणा उमराव माराणा ।

१६२. देवीदास जैंतावत कनै घोड़ा पांचसैं हुता नै जैंमल कनै मिरजा सरफुद्दीन कनै घणी फौज हुती. देवीदास रुस्तम ज्यूं जंग कर काम आयो ।

१६३. श्रा बेढ हुवां पछै मेड़ता माथै रावजी कटक कियो नहीं ।

१६४. संवत १६१९ रा काती सुद १५ राव मालदेजी देवलोक हुवा. इण राड़ हुवां पछै श्राठवें महीनै राव मालदेजी देवलोक हुवा ।

१६५. राव चंदरसेणजी रै भाइयांसूं श्रणवरणत रही जिणसूं मेड़तारो नांव न लियो ।

१६६. सरफुद्दीन दिली गयो. जैमलरो बेटो वीठळदास मेड़तारी जागीरी मुजब घोड़ा रजपूत ले पातसाह श्रकबररी चाकरीमें गयो ।

१६७.

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सांभर | १ | सोजत | २ | मेड़ता | ३ | खाटू | ४ | वधनौर | ५ |
| लाडणू | ६ | रायपुर | ७ | भाद्राजूण | ८ | नागोर | ९ | सिवाणो | १० |
| लोहगढ | ११ | जेखळ | १२ | बीकानेर | १३ | भीनमाल | १४ | पोहकरण | १५ |
| बाढमेर | १६ | रैवासो | १७ | कासली | १८ | जोजावर | १९ | जोळी | २० |
| लारणो | २१ | नाडोळ | २२ | फळोधी | २३ | सांचोर | २४ | डीडवाणो | २५ |
| चाटसू | २६ | फतैपुर | २७ | श्रमरसर | २८ | समेंईगाम | २९ | बावड़ | ३० |
| वणवीरपुर | ३१ | टूंकटोडो | ३२ | श्रजमेर | ३३ | जाजपुर | ३४ | उदैपुर | ३५ |
| भारांदो | ३६ | | | | | | | | |

—इत्ता ठिकाणा राव मालदेजी लिया ।

१६८. संवत १६१९ रा काती सुदी १२ जोधपुर राव मालदेजी देवलोक हुवा । जोधपुर, सोजत, पोहकरण राव चंद्रसेनरै, फळोधी उदैसिंघरै, सिवाणा रायमलरै रह्या ।

## राणियां और संतान

१६९. उमादे भटियाणी रावळ लूणकरणरी बेटी जिणनै संवत १५९३ रा वैसाख वद ४ राव मालदेजी जेसळमेर जाय परणिया । संवत १५९५ श्रजमेर मांहे रूसणो हुवो । संवत १६०४ रामकंवरनै देसोटो हुवो जद साथे गया । संवत १६१५ रा काती सुद १५ रावजी लारै बळी । केळवै रायजीरी बसी मांहे ।

१७०. कछवाही लाछळदे, भटियाणी उमादे—श्रां दोनां रावजी मालदेजी लारै सत कियो, मेवाड़रै गांव केळवै । उमादेजी लाछळदेरो बेटो राम जिणनूं स्राप दियो ।

१७१. सरूपदे भाली मोटा राजारी मा जिण तळाव करायो. संवत १६१५ माह वद ५ प्रतिस्टा किवी. नांव सरूपसागर. लोक वहूजीरो तळाव कहै ।

१७२. सरूपदे भाली चंद्रसेणजीरी मा चंद्रसेणजोने स्राप दियो— "तैं मोनूं राजरा वंदोवस्त वासतै रावजीसूं बळण न दिवी सो थारो राज मत रहे जो रावजी लारै सतमें न बळी ।"

१७३. पातररा पेटरा दोय-महेम १, डुंगरसी २ ।

१७४. ओळगणंरा बेटा आठ-तिलोकसी १, जैमल २, लखमीदास ३, रूपसिंघ ४, तेजसिंघ ५, ठाकरसी ६, ईसरदास ७, नेतसी ८ ।

१७५. राठोड़ रायमल राव मालदेरो, सो बूंदीरा धणी हाडा राव सुरजनरी बेटी परिणयो ।

१७६. देहरो राव सुरजण जिणरी बेटी रतनकंवर रायमल मालदेओत परणियो ।

१७७. रायमल राव मालदेओतरा बेटांरी विगत-कल्याणदास १, प्रतापसी २, कान्ह ३, बळभद्र ४, सांवळदास ५ ।

१७८. संवत १६६४ सिवाणै कलो रायमलोत राणियांरी जमर कर भात जणांसू काम आयो. माधो पातसारी डोढी पूगो ।

१७९. कल्याणदास रायमलोत लाहोरमें अेकसदी पातसाही चाकरनूं मार सिवाणै चढियो. पातसाह मोटा राजानूं आग्या दिवी- उणनूं मारो जद सिवाणा माथै गया कंवर भोपत १, कंवर जैतसिंघ २,................ ३, रावळ मेघराज ४, राठोड़ वैरसल प्रथीराजोत ५, महसंदखां आवारो ६-इत्यादिक घणा साथै हा ।

१८०. परबतसिंघ देवड़ो मेहाजळोत राव कलारो भाई कल्याणदासजी रातीवासो दियो जद माराणो ।

१८१. खींची गणेसदास कला रायमलोतरो माथो काटियो ।

उरळी चारो राइका, म्हारा भालारी छांहि ।
जो जासी तो आणसूं वावा मेहारी बांहि ।।

१८२. कलाजीरा हिंडोळा-

काणाणै काढै नीपजै, सिवाणै भरीजै भोग ।
काकै भतीजै मारियो, कोठा गहुबारै लोभ ।।
रातो वागो पहरियां, कंवळी मूंछारो माण ।
ज्यां दीठो त्यां सालसी, रायमलरो कल्याण ।।

१८३. रतनसी राव मालदेरो. संवत १५८९ रा आसोज सुद ८ जनम. रतनसीरा बेटांरी विगत-सादूल १, सुरताण २, सुंदरदास ३, जैतसी ४, दळपत ५, नाथो ६, पंचायण ७ ।

१८४. महेस राव मालदेरो, टीपू पातररो बेटो. मानो गूगो रोहिलै रहतो जिणरी बेटी टीपू. महेसदासरै बेटा तीन-रामदास १, दूदो २, कल्याणदास ३ ।

## पुत्रियां

१८५. राजकंवरी बाई बूंदी हाडा सुरताणनूं परणायी हुती. रावजी आपरी हाडीनूं मारी. हाडै बाईनूं मारी. जदसूं परणीजण परणावणरी अटक हुई ।

१८६. बाई पोहपावती डूंगरपुर रावळ आसकरणनै परणायी हुती. उवा रावळजी साथै बळी ।

१८७. हांसबाई कछवाहा लूणकरणनै परणायी, बेटो जायो मनोहर राव. सजनीबाई रावळ हरराजनूं जेसळमेर परणायी. बेटो भीम रावळ, इंद्रावतीबाई गवाळेर राजा कछवाहा आसकरणनूं परणायी ।

१८८. बाई वाल्हबाई ऊमरकोटरा सोढा रायसलनूं परणायी. पछै जोधपुर आयी, सांवत कुवो पटै ।

१८९. बाई कनकां गुजरातरा पातसाह सुरताण महमदनूं परणायी, पातसाह मुवो जद जेसळमेर सजनां बाई कनै आय रही ।

१९०. रतनावती बाई हाजीखांनूं परणायी. हाजीखां मुवो जद चंद्रसेणजीरा विखा मांहे आयी थी. पछै मोटा राजाजीरै जोधपुर ओज आयी. संवत १६४९ मुयी पछै नागोर मेली, उठै गुमटी है ।

१९१. लालबाई सूर पातसाहनूं परणायी ।

१९२. अमरसररा सेखावतांरी भाणेजी, राव रामारी बहन जसोदाबाई नागोरी खाननूं परणायी ।

१९३. मानसिंह गांगावतसूं हसती दीठी जिणसूं हाडी द्रोपदी महल ऊपरै कढाय मारी ।

१९४. पातररी बेटी रुखमावती पातसाह अकबरनूं परणायी. लखमी बाहरली ओळगण नगा भारमलोतरै घरमें बैठी. नगा लारै बळी ।

## राव चंद्रसेण

१९५. संवत १५८९ रा सावण सुद ८ चन्द्रसेणरो जनम. संवत १६१८ रा पोस सुद ६ मालदेरै टीकै बैठा. संवत १६३७ रा माह सुद ७ सरियायरी गाळमें राज देवलोक हुवो ।

१९६. संवत १६१८ लोहावट चन्द्रसेणजीरै नै उदैसिंहजीरै वेढ हुई. रावळ मेघराज हा····वतरा हाथरी बरछी उदैसिंहजीरै लागी जद कलोजीसूं उदैसिंघजी अकबर कनै गया. गवाळेर कनै समखळी ठिकाणै पटो पायो ।

१९७. मोटा राजारै हाथरी बरछी चन्द्रसेणजीरै लागी. रावळ मेघराजरै हाथरी बरछी मोटा राजारै लागी लोहावटरै खेत ।

१९८. मोटा राजारै सामै खंवै वरछी लागी. घोड़ो पड़ियो. जद खींची................रै घोड़ै साहणी नादै उपाड़ि चढाय काढिया ।

'जोगा ऊपन्न जूवटो ऊदो वेलै आल'

१९९. जोगो सादाउत्त मांडणोत राजाजीरै काम आयो ।

२००. नागोर पातसाह अकबर जद मोटाराजा नै राव चंद्रसेणजी अेक हुवा, रसाभास मेटियो. मोटो राजा नै कंवर रामसिंघ अकबर कनै रह्या. चन्द्रसेणजी भादराजूण गया. कंवर उगरसेण बूंदी गयो ।

२०१. संवत १६१८ रा पोस सुद ९ राव चन्दरसेणजी अकबररो उमराव खानजहां जिणनूं जाळोर सूंपियो ।

२०२. संवत १६२० रा जेठ सुद १२ राव राम पातसाह अकबर उमराव हसनकुलीखांनूं जोधपुर राव चंदरसेणजी माथै लायो, रावजी कनांसूं सोजत इण राव रामनूं दिरायी ।

२०३. संवत सौळासै बीस १६२० रा चैत वद ४ राव राम हुसेनकलीनूं आण पाली मारी. सोनगरो मानसिंघ अखैराजोत निकळियो सो उदैपुर गयो ।

२०४. संवत १६२२ रा मिगसर वद ४ राव चंदरसेण हसनकुलीखांनूं गढ जोधपुर सूंपियो ।
संवत १६३२ राव चंद्रसेणरा रजपूतां सहबाजखांनै सिवाणारो गढ सूंपियो ।

२०५. राव चंद्रसेणरी वहू सीसोदणी सूरजनदे राणा उदैसिंघजीरी बेटी सोजतरै गांव सिवराड़ हुती. पंचोळी नेतो भंडारी मनो कनै हुता. मोटाराजारी वहू कछवाही मनरंगदे कुंवरजी सूरजसिंघजीरी मा सिवराड़ सीसोदणीजीनै लैण आया. सीसोदणीजी जोधपुर आया. पछै मथुराजीं पधारिया ।

२०६. राव चंदरसेणरा बेटा दोय-आसकरण १, रामसिंघ २ निरवंस गया. उगरसेण चंदरसेणोतरो वंस रह्यो ।

२०७. उगरसेणरा बेटांरी विगत-करमसेन १, कल्याणदास २, कान्ह ३, करमसेणरै पटो अेक बार सोजत..........हो. दिखणमें पठाण खानजहांसूं मामलो हुवो जठै करमसेण काम आयो ।

२०८. करमसेण ऊगरसेणोतरा बेटांरी विगत-किसनसिंघ१, स्यामसिंघ२, राजसिंघ३, कुसळसिंघ ४, बळभद्र ५, मुकनदास ६, हरराम ७, रामसिंह ८, मोहणदास ९, गिरधर १०, धरमसेन ११, जगनाथ १२ ।

२०९. सीसोदणी सुरजणदेरो बेटो आसकरण संवत १६३७ रा माह सुदमें राव चंदरसेणरै टीकै बैठो।

२१०. संवत १६३९ रा चैत सुद २ सारण गांवमें भाई उगरसेण कटारी चलायी. आसकरण माराणो.……सत कियो, उणहीज दिन आसकरण रावरै रजपूत सेखै सांकरोत उगरसेणरा हाथसूं कटारी जड़की उगरसेणरै चलायी. आसकरण पहलां उगरसेण मुवो।

२११. कंवर रामसिंघ नरूको ……राजारो भाणेज।

२१२. पातसाह अकबर काबलमें जद रायसिंघ चंदरसेणोतनूं सोजत दीवी।

२१३. रामसिंघ चंदरसेणोत काम आयो, तीन राणियां सती हुई सोजतरा तळाव बेपैलाव ऊपर संवत १६३७ रा मगसर वद ३—कछवाही राजा आसकरणरी बेटी १, सोनगिरी भाण अखैराजोतरी बेटी २।

२१४. संवत १६३६ भादराजण आय राव चंदरसेणजी विखा मांहे देवड़ा विजा हरराजोतनूं परणायी जोमैतीबाई।

२१५. चंदरसेणजीरी बेटी आसकंवरीबाई कछवाहा माननूं परणायी।

२१६. बेटी रुखमावती बाई पातसाह अकबरनूं डोलो मेलियो।

२१७. संवत १६२६ रा पोस सुद ६ चंदरसेणजी आपरी बेटी करमैतीबाई राणा उदैसिंघनै परणायी।

२१८. करमैतीबाई राणा उदैसिंघजीनूं परणायी।

२१९. ……… ……… खां नागोरीनूं परणाई धनबाई।

## राजा उदैसिंघ

२२०. संवत १५९४ रा माह सुद १३ रवि राजा उदैसिंघरो जनम।

२२१. संवत १६२७ रा सावण सुद १५ उदैसिंघजी अकबररै चाकर रह्या।

२२२. मोटे राजाजी १६ आदमियां समेत मैणा हरराजियानुं जोधपुरगढ माथै मारियो. संवत १६४२ रा जेठ मांहे जद सुरजमल खीमाउतरै गोडै ठरड़ो लागो. सोजत मोटाराजाजीनूं हुई जद वगड़ी बाघ प्रथीराजोतनूं पातसाहजीरी दियोड़ी हुती नै कंटाळियो भोपत देईदासोतरै हुतो।

२२३. संवत १६४१ मोटै राजा राव सुरताण सिरोहीरो धणी जिण माथै पेसकसी पीरोजी लाख दोय नै घोड़ा १३ ठहराया।

२२४. नवा पेटै अैलमें बाई राठोड़ किसनां देवड़ा सामंतसी नोगाद्रिया नै देवड़ो सामदास सूजावत देवड़ा प्रिथीराजरो भाई ओळिया राठोड़ भोपत पातावत. ऊहड़ गोपालदास साथै जोधपुर मेलिया ।

२२५. संवत १६४० नबाब खानखां मोटाराजा उदैसिंघ राजपीपळा वेढ हुई. गुजराततरो पातसाह मुदफरनूं भांज गुजरात दिली करै घाली. संवत १६४१ राजपीपळा मुदफर पातसाह भागो खानखां आगै जद मोटा राजाजीरा चाकर भाटी सादूळ मानावत गोइंददासजीना भाई सोरासूं बळियो ।

२२६. समाड़ली पटै भाई अमल किया जद गूजरांसूं वेढ हुई राजाजीरा दोय मनख माराणा. समाड़ली सोभानूं सीकदार कियो ।

२२७. पलासळो १, गूजरावास २, धुणालो ३, जोगावास ४, भिटोरो खुरद ५, बुटैला ६, हाफत ७, कोटड़ो ८, जाइजो ९, रीसाणियो १०—अै गांव दस सोजतरा कला करणराजोतरा दियोड़ा चारणांनूं मोटै राजा उथापिया जद बारट अखै सांकर आढै दुरसै धरणो कियो. अखै दुरसै गळै घाली ।

२२८. वाहड़वा १, रहतड़ी २, बोरतड़ी ३, सुगालियो ४, गोधावस ५, अेवली ६, खारिया ७, गिरवरियो ८, आकड़ावस ९, वासणी १०, गोडांग ११, भिणावणो १२—अै गांव बामणांरा उथापिया ।

२२९. संवत १६५१ रा असाढ सुद १५ राजा उदैसिंघजी लाहोर देवलोक हुवा । पातसाह अकबर नाव बैठ सतियांनूं देखवा आयो जिण पहलां लांपो दियो. पातसाह. कंवर सूरजसिंघजीनूं बीजाहीनूं दिलासा दिवी. कयो, सरब काज कर पछै म्हां कनै आवो ।

सोळैसै इक्काणवै, सुद पूनम आसाढ ।
देवलोक ऊदो गयो, गंगहरो अवगाढ ।।

## राणियां

२३०. बडी बहू सोळंकणीजी सावंतसीजीरी बेटी, सोळंकियांनूं वैर भागो जद परणियो मोटोराजाजी ।

२३१. कछवाहा राजा आसकरणरी बेटी बजरंगदेजी मोटोराजा परणियो ज्यांरा पुत्र सुरजसिंघजी हुवा ।

## पुत्र

२३२. मोटाराजा उदैसिंघरै बेटा सूरसिंघ १, अखैराज २, भगवानदास ३, नरहरदास ४, सगतसिंघ ५, भोपत ६, दळपत ७, जैतसिंघ ८, किसनसिंघ ९, जसवंतसिंघ १०.

केसोदास ११, रामसिंघ १२, पूरणमल १३, सोळै सिरदार ।

२३३. भगवानदास भोपत सीसोदियांरा भाणेज ।

२३४. राजा उदैसिंघजीरो कंवर भोपत जिणनूं मसूदै परमार सादूळरै बेटै मारियो. राजा मानरै ओ मामारो बेटो भाई जिणसूं मान महाराज सूरजसिंघजीसूं कही वैर भंजायो. सादूळरी बेटी महाराज सूरजसिंघजी परणिया. पंवारजी महाराज साथै बळिया ।

२३५. मोटाराजारो नरहरदास जिणरा बेटांरी विगत--कल्याणदास १, जगनाथ २ ।

२३६. संवत १६१४ आसोज वदी ४ जनम भगवानदासरो. संवत १६१५ रा काती सुद १२ मुवो ।

२३७. मोटाराजारो भगवानदास जिणरा बेटांरी विगत—गोइंददास १,गोपाळदास२, बळराम ३, अचळदास ४ ।

२३८. मोटाराजारो मोहणदास जिणरा बेटांरी विगत—प्रतापसिंघ १, सबळसिंघ २, सादूलसिंघ ३, संवत १६२८ जनम. संवत १६६७ कटारी खाय मुवो ।

२३९. सेखावतांरो भाणेज अखैराज समावळी थकी खीचीवाड़ामें काम आयो ।

२४०. सगतसिंघ भाटियांरो भाणेज ।

२४१. जैतसिंघ, माधोसिंघ, मोवणदात, कीरतसिंघ—च्यारूं अमरसररा सेखावतांरा भाणेज ।

२४२. माधोसिंघ मोटाराजारो जिणरा बेटांरी विगत—केसरीसिंघ १, महासिंघ २, बिहारीदास ३, संवत १६३२ काती वद ५ जनम ।

२४३. मोटाराजारो जैतसिंघ. जिणरा बेटांरी विगत—हरिसिंघ १, अमरो २, कनीराम ३, पेमसिंघ ४, भावसिंघ ५, राजसिंघ ६, गोवरधन ७, विजैसिंघ ८ ।

२४४. दळपत मोटाराजारो जिणरा बेटांरी विगत—महेसदास १, कनीराम २, राजसिंघ ३, जसवंत ४, प्रतापसिंघ ५, जुझारसिंघ ६ ।

२४५. संवत १६५४ राठोड़ दळपत मोटाराजारो लाहोर थो. कुरखेत सूधो दोड़ियो बुंदेला रणधवळ वांसै. भाटी गोइंददासजी भुलायो बुंदेलो हाथ न आयो ।

२४६. इत्ता राठोड़ साथ हुता राठोड़ भगवानदासजीरै राठोड़ दळपत राजावत १, किसनसिंघ राजावत २, राव सगतसिंघरी साथ भाटी गोइंददास मानावत ।

२४७. संवत १६६७रा पोस सुद ११ राठोड़ भगवानदास मोटाराजारो बेटो जिणरा वैरमें बुंदेलो दळसाह राजा हरधवळरो बेटो, इतरां मिल मारियो ।

२४८. राठोड़ गोइंददास भगवानदासोत, राठोड़ राघोदास नरहरदासोत, राठोड़ भोजराज नराणदासोत, राठोड़ जगनाथ कल्याणदासोत, राठोड़ भगवानदास वाघोत, हुल मेघराज भांडावत, राठोड़ केसवदास दिखणी ।

२४९. मोटाराजारी बेटी कमळावतीबाई मऊरा खीची राव गोपाळदासनूं परणायी ।

२५०. प्राणमतीबाई डूंगरपुररो रावळ सहसमल जिणरो बेटो करमसी जिणनूं परणायी ।

२५१. दळपतजीरी बहन किसनावतीबाई कछवाहा रूपसी वैरागररो बेटो तिलोकसी जिणनूं परणायी ।

२५२. चावडांरो भाणेजी रुखमावतीबाई कछवाहा राजा महासिंघनूं परणायी ।

२५३. भाटी सूरजमल लूणकरणोतरी बेटी राणी सजनांबाई जिणरी बेटी राजकंवर भाण सगतावतनूं परणायी ।

२५४. संतोखदेजीरी दूजी बेटी सतभामाबाई हळवद झाला चंदरसेणनूं परणायी ।

२५५. कछवाहा राजा रामसिंघनूं परणायी सोळंकणीजीरी बेटी तीन ।

२५६. रंभावतीबाई भाटी खेतसी मालदेओतनूं परणायी । धनबाई.........नूं ।

२५७. रूपकंवर बाई ग्वाळेर परणायी. बेटो नरहरदास ।

२५८. कछवाही राजावत ग्वाळेररा राजा आसकरणरी बेटी मनरंगदेजी ज्यांरा बेटा सूरजसिंघजी, किसनसिंघजी, बेटी बाई माना पातसाह साहजहांरी मा ।

२५९. संवत १६४४..................मानीबाई साहजादा जहांगीरनूं परणायी ।

## राजा सूरसिंघजी

२६०. संवत १६२७ रा वैसाख वद ७ रो जनम सूरजसिंघजीरो, संवत १६५७ रा असाढ वद ११ लाहोर पाट बैठा, संवत १६७६ रा भादवा सुद ८ राम कह्यो दिखणमें महकररै थाणै ।

२६१. संवत १६२७ रा वैसाख वद ६ फळोधी सूरजसिंघजीरो जनम. संवत १६२६ सावण वद ७ राजा सूरजसिंघजीरो जनम. संवत १६५१ असाढ सुद १५ सूरजसिंघजीनूं लाहोर डेरां टीको दियो ।

२६२. संवत १६६८ पातसाहरी फौज दिखण माथै जावै, सारा राजा, नबाब भेळा जद महाराज सूरजसिंघजीरो उमराव भाटी जोगणीदास गोइंददासोत जिणनूं कछवाहा राजा मानसिंघजीरा उमरावरै हाथी सूंडसूं पकड़ घोड़ासूं उतार मोरोकर दांतांमें पोयोड़ी कटारी वाही, हाथीरै कुंभाथळ लागी, जोगणीदास मुवो ।

२६३. ओ हाथी राजा मान महाराज सूरजसिंघजीरै मेलियो. ओ हाथी पछै महाराज सूरजसिंघजी उदैपुरमें साहजादा खुरमनै दियो ।

२६४. ओ हाथी राजा मान राजा सूरजसिंघजीरी निजर कियो. किताईक वरसां पछै ओ हाथी उदैपुरमें साहजादा खुरमरी निजर सूरजसिंघजी कियो ।

२६५. चतुरभुज सेखा राणा प्रताप प्रतापोतरो जिणनूं संवत १६६९ सिवाणारो गांव फरमावस गांवा छवसूं वरस अेक रह्यो जोधाणनाथ दियो ।

२६६. संवत १६७१ उदैपुर राणाजीरी मुहिम महाराज सूरजसिंघजी साथै हुता राठोड़ प्रथीराज बलूओत वैर दहियो मोवंणदास राव रतन हाडारो चाकर घरे जांवतो मारियो इतरा सिरदारां मिल ज्यांरी विगत—राठोड़ पिरागदास मानसिंघोत काम आयो प्रथीराजजीरी भीरा, नरहरदास भाणोत, चांपो वीठळदास गोपाळदासोत ।

२६७. धांधल पचायण सूरसिंघजीनूं जहर न दियो, आप पियो ।

२६८. पचायणरै ईसरदास, ईसरदासरै मनोहरदास, मनोहरदासरै बेटा तीन—अेक गोवंददास जिणरा फरू, दूजो उदैकरण जिणरा साल, तीजो केसवदास जिणरा मोकळावस ।

२६९. संवत १६७६ रा सुकल पक्खमें दिखणमें महिकररा डेरां सूरजसिंघजी देवलोक हुवा ।

२७०. संवत १६७६ रा भादवा सुद दिखणमें महकररै थाणै सूरजसिंघजी देवलोक हुवा ।

## राणियां और संतान

२७१. महाराज सूरजसिंघजी लाहोररा डेरां कछवाहा दुरजणसाळरी बेटी सोभागदेजी परणिया. पीहररो नाम किसनावतीबाई ।

२७२. संवत १६८० रा फागण सुद ९ गोधूळीक सावै परवेजनूं परणायी ।

२७३. सेखावत दुरजणसाळरी बेटी किसनावतीबाई सासरारो नाम सोभागदेजी ज्यांरां बेटा महाराज गजसिंघजी संवत १६५३ रा काती सुद ८ जनम लाहोरमें हुवो ।

२७४. बेटी बाई मनभावती साहजादा परवेजनूं परणायी, कछवाहा दुरजणसाळरा दोहिता महाराज गजसिंघजी ।

२७५. महाराज सूरजसिंघजीरो राजलोक डूंगरपुररा रावळ सहसमलरी बेटी पीहररो नांव जसोदा, सासरारो नांव सुरताणदे ज्यांरो बेटो सबळसिंघजी । संवत १६६८ रो जनम. संवत १७०३ रा फागण वद ३ राम कह्यो ।

२७६. बहूजी श्रहाड़ी सुरताणदेजी रावळ सहसमलरी बेटी ज्यांरा बेटा सबळसिंघजी ।

२७७. राजा सबळसिंघजी सूरसिंघोत महाराज गजसिंघजीरा छोटा भाई है, अेक हज़ारी मनसब, वरस ३९ री ऊमर हुई ।

२७८. सांगा परमाररी दोहिती बाई आसीकंवरी चतरंगदेजीरी बेटी कछवाहा राजा भावसिंघ मानसिंघोतनूं परणायी ।

२७९. भाटी सहसमल मालदेवोतरी बेटी पारबतीबाई अमोलखदेजी ज्यांरी बेटी अगावतीबाई कछवाहा राजा बड़ा जैसिंघजीनूं परणायी ।

२८०. भाटी केलण गोयंददासरी बेटी जोगणीदासरी बहन सुजाणदेजी महाराज सूरजसिंघजी परणिया साळवळी ।

## राजा गजसिंघजी

२८१. महाराज गजसिंघजी संवत १६५२ रा काती सुद ८ ब्रहसपति जनम. संवत १६७६ आसोज सुद १० पाट बैठा बुरहानपुरमें. संवत १६९४ जेठ सुद ३ रवि राम कह्यो आगरे हवेली जमनारै उपकंठ ।

२८२. संवत १६५२ रा काती सुद ८ राजा गजसिंघजीरो जनम ।

२८३. संवत १६७६ बिरहानपुर नबाब खानखां महाराज गजसिंघजीनूं टीको दियो. आगरासूं पातसाह जहांगीर सपद माला साथै बिरहानपुर मेलियो हो ।

२८४. संवत १६७६ पातसाह जहांगीर आगराथी टीको बुरहानपुर मेलियो महाराज गजसिंघजीनैं ।

२८५. संवत १६७७ अबर चंपू महकर घेरा दियो. महाराजा गजसिंघजी आछा हुआ ।

२८६. संवत १६७८ खुरम आयो जद अबर चंपूसूं वात ठहरी. वरस दोय विग्रह रह्यो ।

२८७. संवत १६८१ रा काती सुद १५ महाराज गजसिंघजी सीसोदिया भीम अमरसिंघोतनूं जंगमें मारियो ।

२८८. संवत १६८१ काती सुद १५ हाजीपुर पटणै गंगा ऊपर साहजादा खुरमथी वेढ हुई. महाराज गजसिंघजी सीसोदिया भीमनूं मारियो. भीमरा इत्ता काम आया--सीसोदियो मानसिंघ भाणावत, कूंपावत कछरो. जसवंत सादूळोतरो २ जैतारणियो हरिदासरीयोत ३ - राठौड़ राघोदास घावै पड़ियो बळूओत जैतारणियो भीम कल्याणदासोत सीसोदियो गोकळदास भाणावत अै घावै पड़िया ज्यांनूं महाराज गजसिंघजी उपड़ाया जतन कर जिवाया ।

२८९. संवत १६८४ रा असाढ वद ८ फतैपुर कनै सीसराधीरी गढी भेळी. गजसिंघजीरै साथ जद इतरा राठौड़ काम आया. नवाब सिरदारखान पातसाही फौजरो

मालक हुतो. राठोड़ भगवानदास वाघोत १, राठौड़ गोकळदास विसनदासोत २, जैतारणियो दयालदास कल्याणदासोत ३ वगेरै ।

२९०. हाडा इण ठोड़ घणा काम आया नै संवत १६८४ रा असाढ बद ८ फतैपुर कनै सीसराळी गढी हुती ।

२९१. श्री महाराजाधिराजजी श्रीगजसिंहजी महाराज कंवर श्रीजसवंतसिंघजी वचनातु आसोप कोटा पत राठौड़ गजसिंघजी दीसे सुप्रसाद वांचजो. अठारा समाचार भला छै. थारा........।

२९२. महाराजरी गुणपचास वरसरी ऊमर हुई, चौईस बरस राज कियो ।

## राणियां

२९३. संवत १६६३ कछवाहा राजा जगरूपरी बेटी कलियाणदेजी टोडै जाय परणिया महाराजकंवार गजसिंघजी पैलो व्याव ।

२९४. टौडै पधार परणिया. कलियाणदेजी नाम

२९५. संवत १६६३ असोपालवैंरो विहुं महाराज सूरसिंघजी भाटी गोइंददास मानावतनूं दिया. इणहीज बरस तोडै कछवाहा राजा जगनाथरै राजा गजसिंघजी परणिया. सीतळारी पीड़ा घणी हुई. गोइंददास मानावतरो बेटो मोहणदास कंवरजी माथै उंवाराणो. कंवरजी बचिया, मोहणदास मुवो ।

२९६. महाराजकंवर गजसिंघजी तोडै कछवाहांरै परणियो. उठै सीतळा निसरी सू सीळ सावण आपड़िया जद गोइंददास मानावतरो बेटो मोवणदास कुंवरजी माथै तोडै उंवाराणो. कंवरजीरै सीतळा आछी तरैसूं तूठी. मोवणदास मुवो।

२९७. कछवाहा राजा मानसिंघ भावसिंघ मानसिंघोत बेटी सूरजदे महाराज गजसिंघजी आंबेर जाय परणिया जिका आगरै महाराज साथै बळी ।

२९८. संवत १६६९ माह वद ५ कंवर गजसिंघजी जेसळमेर परणीजण पधारिया. भाटी गोइंददास साथै हुवो ।

२९९. चहुवाण अमरतदे सिखरा महकरणोतरी बेटी संवत १६६४ गांव खेजड़ली पधार परणिया महाराजा गजसिंघजी ।

३००. चहुवाण सिखरा महकरणोतरी बेटी अमरतदे संवत १६६४ गांव खेजड़ली पधार परणिया महाराज गजसिंघजी ।

३०१. चहुवाण सिखरो महकरणोत महाराज गजसिंघजीरो सुसरो ।

३०२. वहू सीसोदणी परतापदेजो रुकमावतीबाई भाण सगतावतरी बेटी संवत १६६४ मथुराजी व्याव हुवो. नानै भाबुआरै राजा केसौदास मारू परणायी गजसिंघजीनूं संवत १६७९ जोधपुर राणीपदो पायो मगसर ५ महाराज जसवंतसिंघजी ।

३०३. संवत १६७९ रा भादवामें सीसोदणी परतापदेजी कंवर जसवंतसिंघजीरी मा जिणनूं राणीपदो दियो जोधपुर पधारनै महाराज गजसिंघजी ।

३०४. वाघेलो बांधूगढरो धणी राजा अमरसिंघ महाराज गजसिंघजीरी चंद्रकंवर परणियो ।

३०५. रीवां मुकंदपुररा राजा वाघेला.... जिण राजा वीरसिंघदेव वाघेला जिणरो राजा वीरभद्ररो राजा विक्रमादित्यरो अमरसिंघ महाराज गजसिंघजीरी बेटी परणियो जोधपुर ।

३०६ अनारो१, देसो २—अै दोनूं बहनां महाराज गजसिंघजीरी मरजीरी....सिवी ।

## जसवंतसिंघजी

३०७. महाराज जसवंतसिंघजीरो जनम बुरहानपुर हवेली. संवत् १६८३ रा माह वद ४ बुरहानपुररो जनम महाराज जसवंतसिंघजीरो ।

३०८. महाराजकंवार जसवंतसिंघजी बूंदी राव चत्रसाळजीरी बेटी परणिया. दूजै दिन महाराज गजसिंघजी देवलोक हुवा.कंवरजी बूंदीसूं परबारा आगरै गया ।

३०९. पातसाहनूं खबर हुई—जसू आया. जद साहजादा मुरादबखसनूं डेरै मेलनै मातमपुरसी करायी. फुरमाया साहजहां—आछी सायत जोय हजूर आवो. संवत् १६९४ रा असाढ सुद ४ सोमवार पातसाह उमराव दोय डोढी तांई मेलिया उणां ले जाय पावां लगाया.श्री पातसाहजी महाराजनूं छातीसूं लगाय दिलासा दिवी. सिरपाव मोतियांरी माळा दे सदामदरो मनसब दे देसरी सीख दीवी ।

३१०. संवत् १६९५ रा असाढ वद ७ जोधपुररो टीको पायो जसवंतसिंघजी ।

३११. संवत् १६९४ रा असाढ वद ७ टीको पायो महाराज श्री जसवंतसिंघजी ।

३१२. आगरै साहजहां आपरै हाथसूं महाराज जसवंतसिंघजीनूं टीको दियो ।

३१३. आगरै साहजहां पातसाह महाराज जसवंतसिंघजीनूं टीको दियो जद उमरावांनूं सिरपाव दियो ज्यारी विगत—

३१४. राठोड़ राजसिंघ खीमावतनै १,राठोड़ रतन राजसिंघोतनै २, राठोड़ भावसिंघ कान्होतनै ३,राठोड़ वीठळ गोपालदासोतनै ४,राठोड़ सुन्दरदास रायसिंघोतनै ५, रावळ [illegible] ६, राठोड़ [illegible] ७, राठोड़

वनमाळीदासनै ८, आढा किसना दुरसावतनै ९, राठोड़ गोवरधन चांदावत कूंपा १०—आं दस आदमियांनै ।

३१५. संवत् १६९७ रा फागणमें चांपो महेसदास सूरजमलोत प्रधान हुतो महाराज श्री जसवंतसिंघजीरै ।

३१६. महाराज जसवंतसिंघजी लोहार्इरा डेरां संवत् १६९८ रा आसोज सुद १० बाईस घोड़ा चारणांनूं नै सिरदारांनूं दिया, दोय लाख-पसाव दिया, अेक लालस खेतसीनूं, दूजेरो आढा किसनानूं ।

३१७. श्री महाराजाजीरो साथ ले मुहणोत सुंदरदास चांपावत लखधीर विठळदासोत गांव सींधलांरै...... ........सींधल बाघ आदमी ४०० सूं गांव......................... .

३१८. संवत् १७०१ रा पोस सुद ७ महाराजा श्रीजसवंतसिंघजीरै ज्वर निपट जोर कियो . पातसाह साहजहां कूंपावत राजसिंघ खीमावतनूं हाथी जै जीतवा दियो हो सो हाथी महाराजा दान दियो. ब्रिग रामदास दिखणी हर्म चाटसू रहै जिणनूं रुपिया १०००) ऊपर दिया. पछै रातरै समै सीतळा देखायी दिवी ।

३१९. रावळ मनोहरदास मुवो संवत् १७०६ रा काती सुद १५ जद पातसाहजी ।

३२०. संवत् १७०६ रा फागण सुद २ जसवंतसिंघजी पहोकरणवासी महारावळ सबळसिंघ महाराजाजीरी फौज मांहे हुतो . रोजीना पचास रुपिया पावतो. सारा सवार डोढ हजार अढाई हजार फोजमें पाळा हुता ।

३२१. संवत् १७०६ रा असाढ वद ३ जोधपुरसूं फौज पोहकरण माथै विदा किवी. राठोड़ गोपाळदास सुंदरदासोत मेड़तियो १, राठोड़ वीठळदास सुंदरदासोत मेड़तियो २, वीठळदास गोपाळदासोत चांपो ३, नारखान राजसिंघोत कूंपो४, भँडारी जगनाथ ५, मुणोयत नैणसी ६, सिंगवी प्रताप ।

३२२. रावळ सबळसिंघ जेसळमेररा उमराव भाटी पोहकरण किला मांहे हुता ज्यांनूं वात कर काढ दिया . दरबाररो अमल करायो . भाटियांरा जण। अढाईसै गढ मांहे हुता ज्यां मांहसूं तेरै जणा काम आया पड़ाव रहिया हुता जिके दूजा निसरिया ।

३२३. राठोड़ सुजाणसिंघ केहरसिंघोतरो रजपूत भाटी रुघ......... चांपा अमरा सुरजनोतरा रजपूत काम आया. संवत् १७०६ रा आसोज सुद १५ पोहकरणमें अमल हुवो जसवंतसिंघ महाराजरो ।

३२४. सहर उजेण संवत् १७१४ रा वैसाख वद ९ सुक्र ओरंगजेब मुरादबखससूं महाराज जसवंतसिंघजी जंग कियो ।

३२५. तोपखानारो मालक कासमखान औ ......... महाराजा जसवंतसिंघजी साथै विदा किया उजैण थाणै ।

३२६. हिंदुआंरी विगत-हाडो मुकनदास, गोड अरजुण, भीम राठौड़, रतन महेसदासोत सूरजमलोत, सीसोदियो राजा अमरसिंघ, भीम अमरसिंघोतरो सीसोदियो, सुजाणसिंघ अमरसिंघोत-इत्यादिक बाईस आसामियां महाराजरै साथै किवी पातसाह साहजहां ।

३२७. १२४२ आसामीदार काम आया ज्यांरा राजपूत ७०१ काम आया. ३०० घोड़ा वढिया. अेक हाथी माराणो. राठौड़ सुजाणसिंघ केहरसिंघोत घावै पड़ उपाड़ियो. रजपूत १२ मुंहता सूंधा काम आया ।

३२८. ठाकुर च्यार तथा सात पैला उपाड़िया भाटी रुघनाथ १, राठौड़ महासिंघ जगनाथोत २, राठौड़ रायसल केसरीसिंघोत ३ इत्यादिक ।

३२९. राठौड़ द्वारकादास बळूओत सीसोदिया रायसिंघरो चाकर काम आयो ।

३३०. जैतारणियो बळराम दयालदासोत, आसकरण बळरामोत, कुंभकरण बळरामोत वीरमदे मुकनदासोत, सुंदरदास वेणीदासोत, करमसोत प्रथीराज, दळपतोत प्रमुख आंधल किसनो नारणोत, भाटी रतन भीम प्रयागदासोतरो, सोनगरो जगतसिंघ रायसिंघोत पड़ि उपड़ियो उजीण. पिरोयत दळपत मनोहरदासोत, ऊहड़ नैवराज उरजणोत, मेड़तियो गोपीनाथ गोकळदासोत, गरीबदास सुजाणसिंघोत. मुरारीदास गोयंददासोत प्रमुख. खींची जोगीदास. कलावत, पड़ियार सादो भीमावत, चारण जगमाल, जूंजाणियो नारण वाघावत, भायल रामसिंघ कचरावत नै देदो सांवळोत इत्यादिक उजैण काम आया. १३० घायल हुवा तीर नै गोळीसूं ।

३३१. चांपावत वीठळदास गोपालदासोत, भीम वीठळदासोत, वीजो हरीदासोत, दयाळदास सूरजमलोत, किसनसिंघोत, खेतसिंघोत अै उजैण काम आया ।

३३२. राठौड़ रतन महेसदासोत साथै इतरा उजैण काम आया-राठौड़ साहबखां कुंभकरण वाघोतरो जैतो, चहुवाण वीठळ किसनदासोत, चहुवाण कूंभो ईसरदासोत, चहुवाण अमरदास नै भगवानदास सादूळ सावंतसीहोतरा, भाटी कुंभकरण सुरताण रामोतरो केलण, भाटी अजो केलण, राठौड़ गिरधरदास किसनदासोत गांगो, गहलोत पचायण हरदासोत, राठौड़ नरहरदास बीकानेर, राठौड़ गोपीनाथ राव सगतसिंघरो पोतो, राठौड़ वेणीदास राजसिंघ सूरज-मलोतरो चांपो, राठौड़ दुवारकादास बळू गोपाळदासोतरो चांपो राठौड़ भावसिंघ मेड़तियो जमलोत, मांडल नाथारा बेटा तीन-सांगो १ रतनसी २,

रूपसी ३, बारट जसो वेणीदासोत, सोनगरो वीरमदे, कछवाहो स्यामसिंघ राजावत, राठोड़ हरीराम लखमावत, मुंहतो सांवळदास रूपसीरो, पड़िहार धनराज, थोरी भूरियो, दमामी गुणो।

३३३. औरंगजेब साहसुजा सामो गयो. महाराज जसवंतसिंघजी साथ हुता. छानैं साहसुजासूं मिलिया. साहसुजा कह्यो म्हे भाई भाई काले साथै जोधपुर पधारो. औरंगजेबरै नै साहसुजारै जंग हुवो. पातसाही लसकररा डेरा लूटनै महाराज मारवाड़नूं पधारिया. मारगमें पातसाही सहर मालू लूटिया।

३३४. साहसुजानूं जीत पातसाह दिली आय रायसिंघनूं जोधपुर लिख दियो. माहराजा सामी फौज मेली. रायसिंघनूं मारवाड़में आवण न दियो. आ बात सुण औरंगजेब मनमें कोप कियो।

३३५. हुरमखानो लूट इकवीस पालत बीज बाहणरा भरि महाराज डेरै आणी।

३३६. राठोड़ रणछोड़दास गोइंददासोत महाराजा श्रीजसवंतसिंघजीरी तरफसूं नेबोजी अधम और गोइंदराय साहजादा मुहम्मद मुअज्जिमरी तरफसूं राजगढ सिवा कनै गया. सिवै सिवारी मा रणछोड़दासजीरै हाथ सिवारो बेटो संभाजी बरस ११ में महाराजरो बोल लेसूंपियो।

३३७. काती सुद ३ रा राजगढसूं सिवै विदा किया. तीनसै असवार संभाजी साथै. राठोड़ रणछोड़दासजीनूं घोड़ो सिरपाव दियो. दुगदुगियां न लिवी. अेक घोड़ो, अेक सिरपाव, अेक दुगदुगी खोजा अधमनूं दियो, इत्तरो ही समाधान गोइंदरायरो कियो. मिगसर वद ५ रवि औरंगाबाद आया. संभानूं महाराजरा पावां लगायो. मिगसर वद ६ सोम महाराज साहजादासूं मुलाजमत करायी तरै पांच हजारियांमें संभानूं ऊभो राखियो, सिरपाव दियो पांचहजारीरो मनसब दियो. महाराजरी कचहड़ी नजदीक संभारो डेरो हुवो।

३३८. मिगसर वद १२ रवि साहजादै संभानूं विदा कियो. घोड़ा २, कपड़ो, दुगदुगी १, पुणचियांरो जोड़ो १ संभाजीनूं इत्ता दिया. कटारी जड़ावरी १, दुगदुगी अेक ७२००) री, थान नव कपड़ो सेवानूं भेजियो, राठोड़ रणछोड़दास गोइंददासोत संभाजी साथै भेजियो. दिन आठ संभाजी औरंगाबादमें रह्यो.

३३९. महाराज श्रीजसवंतसिंघजी लाहोररा डेरा संवत १७२३ रा पोस वद ८ राठोड़ श्रीआसकरणजीनूं मया कर देस सूंब्रो दियो. इत्ती चीजां हजुर इनायत किवी-सोनारी साकत घोड़ो १, सिरपाव वासो १, बधारारो हुकम कियो. पंचोळी केसरीसिंघजी आसकरणजी मिल मारवाड़रो काम करै।

३४०. संवत् १७३० महाराजनूं काबुलनूं विदा किया पठाण माथै सुजातखां नवाब महाराजरी ताबीतमें ।

३४१. संवत् १७३० रा फागण सुद ५ सोमवार पठाणसूं राड़ हुई. सुजातखां काम आयो. महाराजरो ही लोक काम आयो. फतै महाराजरी हुई ।

३४२. औरंगजेब खिताब दियो गस्त जसवंतसिंघ महाराजा दुवारः. मेड़तिया गोपालदास सुन्दरदासोतनूं जंगनग नामा हाथी, चांपा हाथी, कूंपा गोवरधन चांदावतनूं रणजीत हाथी-जुमलै तीन हाथी सिरदारां तीननै जसवंतसिंघजी अेक दिन दिया ।

३४३. मुलतानरा डेरां बनारसीदास जैनीनै महाराज जसवंतसिंघजी आग्या किवी-अध्यातम ग्रंथ वणाव ।

३४४. महाराज जसवंतसिंघजी लिखतां सही श्री परब्रमजीरी छै ।

३४५. महाराज जसवंतसिंघजी राजा सबळसिंघजी सूरजसिंघोत ज्यांरी बेटी संवत १७०७ रा काती वद ५ देवळियै परणाथी जद हथणी चंबेली डायजै दिवी ।

३४६. संवत् १७३५ रा पोस वद १० महाराज जसवंतसिंघजी देवलोक हुवा. बीस गायणियां नै राणी चन्द्रावतजी रामपुरारा राव अमरसिंघरी बेटी मंडोवर जाय सत कियो जोधपुरसूं ।

३४७. संवत् १७३५ रा चैत वद ५ अजीतसिंघजीरो जनम. दुरगदास आसकरणोत १, चांपावत महासिंघ २, मेड़तियो मोहकमसिंघ जगावत ३, रूपो ऊदावत ४, पिरागदास भोजराज वीदावत ५-अै दिलीसूं मारवाड़में आया ।

३४८. संवत् १७३५ सैंताळीस सरदार दिली काम आया. संवत् १७३६ रा भादवा वद ११ राजसिंघ मेड़तियो सेख सादूळनूं मारियो. मेड़तो लियो ।

## राणियां और संतान

३४९. महाराज जसवंतसिंघजीरै राजलोकांरी विगत - बहूजी श्री भटियाणीजी नांव जसरूपदेजी रावळ मनोहरदासरी बेटी, पीहररो नांव पेमकंवर. संवत् १६९३ रा वैसाख सुद १२ घड़ी आठ रात गयां जेसळमेर पधार परणिया कंवरपदे ।

३५०. महाराज जसवंतसिंघजीरै राजलोक भटियाणी जसरूपदेजी रावळ मनोहर-दासरी बेटी ।

३५१. संवत् १६९८ रामपुरै परणिया राव चांदारी बेटी कसमीरदेजी चंद्रावत. गांगैळाव फूटो हो सो मां फेर बंधायो ।

३५२. वहूजी भटियाणीजी वाछ्ळदेजीं रावळ कलारी बेटी रामकंवरबाई संवत१६९८ जेसळमेर जाय परणिया, रावळ भीम ब्याव कियो गोइंददासजी साथै ब्यावमें हुता ।

३५३. सोनगरा जसवंतरी बेटी मनसुखदेजी भागवतीबाई संवत् १६९८ मणियारी पधार परणिया. बेटी अमरसिंघजी ।

३५४. संवत् १६९१ रा चैतवद ७ गढसूं उतर अमरसिंघजी पटो पायो वडैद जठै पधारिया ।

३५५. वाघेला सांगारी बेटी वाघेली कसूंबदेजी सोभा सीकदाररै घरै परणिया. जोधपुर डोळो आयो थो. ज्यांका गढी तळाव नवो बंधायो ।

३५६. नरूकी केसरदेजी चंदरभाणजीरी बेटी संवत् १६७९ रै असाढ गांव पनवाड़ परणिया, परवेज साथ जातां, संवत् १७३५ पोस वद १० जोधपुर सती हुवा ।

३५७. कछवाहा राजा भावसिंघजीरी बेटी सूरजदेजी राजा जैसिंघजी ब्याव कियो. आंबेर जाय परणिया. आगरै सहगवन कियो राजाजी साथ संवत १६९४ रा जेठ सुद ३ ।

३५८. सेखावतजी खंडेलारा अतरंगदे सासरारो नांव, जानकंवर बाई पीहररो नांव, राजा वरसिंघ दुवारकादासोतरी बेटी महाराज जसवंतसिंघजीरी राजलोक, कंवर प्रथीसिंघजीरी मा. ज्यां तळाव खणायो, बंधाय नांव जानसागर. कोई लोग सेखावतजीरो तळाव कहै ।

३५९. वहूजी श्री हाडीजी नाम जसवंतदेजी राव चत्रसाळरी बेटी संवत् १६९४ रा जेठ सुद २ सनी बूंदी पधार परणिया. जेठ सुद ३ महाराज गजसिंघजी देवलोक हुवा. पीहररो नांव कोमकंवरी ।

३६०. वहूजी हाडी जसवंतदे चत्रसाळ बूंदीरा रावरी बेटी संवत् १७२६ रा वैसाख सुद १३ राणीपदो पायो औरंगाबाद में ।

३६१. चहुवाण जगरूपदेजी दयालदास सिखरावतरी बेटी संवत्१६९७ रा फागण सुद ३ लाहोर जातां डोळो आयो, विलाड़ै परणिया ।

३६२. वहूजी चहुवाणजी चहुवाण दयालदास सिखरावतरी बेटी पातांरी भाणेज नाम जगरुपदेजी पीहररो नांव रायकंवरी संवत् १६९७ रा फागण सुद ३ लाहोर पधारतां गांव बिलाड़ै डोळो आयो परणिया ।

३६३. वहूजी गोड जसरदे मनोहरदासरी बेटी संवत् १७०६ रा फागण वद २ राजा वीठळदास ब्याव कियो गढ रणथंभोर ।

३६४. कछवाही अतिरंगदे वीरसिंहरी बेटी संवत् १७०६ रा जेठ सुद ८ परणिया खंडेलै जाय मेड़ताथी।

३६५. कंवर प्रथीसिंघ राजा जसवंतसिंघ राजा गजसिंघोतरो दिली देवलोक हुवो. राठोड़ जुझारसिंघ दलपतोतरो जिणरी हवेली कनै दाग पड़ियो।

३६६. कंवरजी प्रथीसिंघजी जसवंतसिंघोत दिली देवलोक हुवा. राठोड़ जुझारसिंघ दळपतोत जिणरी हवेली कनै दाग दिराणो. गोड़जी सत कियो. सत करतां फुरमाया--महाराजसूं मालम कीजो. आगरै महाराज गजसिंघजी माथै जायगां करायी..........म्हारै ही जायगां करावै।

३६७. कंवरजीरै थड़ै सेवा करणनै व्यास सोभो रहियो।

३६८. गोड़जी सत करतां फुरमाया—महाराजसूं मालम कीजो मांहरै अठै जायगां करावै महाराज गजसिंघजी माथै आगरै जायगां करायी जिसी।

३६९. कंवरजीरै थड़ै व्यास सोभो सेवा करणनूं रह्यो।

३७०. दळथंभणजी नरूकांरा भाणेज महाराज जसवंतसिंघजीरा बेटा।

३७१. हिंगळाजजीसूं रिधसिधपुरी सन्यासी हररामपुरीरो चेलो काबुल आयो. मालम करायी, पांच वरस मैं हिंगळाजरा चरणां तप कियो; माईरी अग्या हुई समाध लेनै जसवंतसिंघरै कंवर होय, नवकोटीरो राज कर; जैसूं मोनै समाध दिराड़ो. महाराज ठावा आदमी मेल समाध दिराड़ी, भंडारो करायो. इण कह्यो—राणी जादवके पेट आऊंगा, महाराज हमारा मुख न देखै, म्हे महाराजका मुख न देखूं. संवत् १७३५ रा भादवा वद ९ सन्यासी दुपहररी समाध कावलमें लिवी. बभूतरो गोळो, माल १, पोथी १ सूंपी. कह्यो—हूं मांग लेसूं।

## अजीतसिंघ

३७२. दिली सरदार दुरगादासजी वगेरा पेसोरसूं आया ज्यां कनै तीन सौ च्यार सो लोक हुतो. ज्यां माथै तीस हजार घोड़ो ले सीदी आयो।

३७३. दुरगादासजी दिलीसूं आपरी वसी साथ ले विखारी त्यारी करी. सिरोही वीसलपुर गया।

दूहो—दुरगो लड़्यो दिली दळां, जद आयो जोधार।
वांसै ले माणस वसी, विखो कियो तिण वार॥

३७४. असूदखां अजमेर जिणसूं सोनग वीटळदासोत सिसोदिया भींवसिंघ राणा राजसिंघरो बेटो जिणांरी मारफत वातचीत करी—म्हांरो गोर कीजै. जद राजाजीरा बेटांरै नै सोनगजीरै मुनसबरी वात ठहरती ही. संवत १७३८

आसोज सुद ७ गांव खुदळोतै सोनगजी राम कह्यो गोड़ सती हुई. वात यूंहीज रही ।

३७५. संवत १७३८ में डीडवाणारी पेसकसी ले चांपावत अजबसिंघ वीठळदासोत मकराणो लूटियो. काती वद १४ सहर मेड़तो लूटियो. दिन दोय ईंदावड़ रिया ।

३७६. असदखांरो बेटो इकतारखां नै सिरदारखां पातसाही फौज ले आया. लड़ाई किताईक सिरदारां सहित अजबसिंघ वीठळदासोत काम आयो. काती सुद १ वार सोम ।

३७७. इण झगड़ामें तीन चारण काम आया. मेड़तिया सिरदार तीन काम आया. अजबसिंघजी सूधां पांच चांपावत काम आया. जुमलै राठोड़ इग्यारै काम आया ।

३७८. चांपावत उदैसिंघ लखधीर वीठळदासोत नै करणोत खींवकरण आसकरणोत नै मेड़तियो मोकमसिंघ कल्याणमलोत—आं संवत १७३८ रा कातीमें मांडल मारिनै कासमखां दिखण जातो हो जिणसूं रोळो कियो ।

३७९. संवत १७४३ रा वैसाख वद ५ सिरोहीरै गांव पालड़ी महाराज अजीतसिंघजीनूं पधराया. सारां दरसण कियो. चांपो उदैसिंघ लखधीरोत पांवां लागो. बीजो ही साथ पांवां लागो ।

३८०. संवत १७४३ रा आसोजमें राठोड़ दुरगदास आसकरणोत दिखणसूं मारवाड़में आयो नै भोमिया जमीदार थापां मिजमानी मेली. नै घोड़ा नजर किया नै पातसाही मुलक लूटिया. आगरासूं वीस कोस आंतरै हंसाररो मुलक लूटियो ।

३८१. जेठ सुद ५ मालपुरै सइयद कुतब थो. सामो आय लड़ियो. सइयदरा आदमी काम आया. पछै पगां लागो ।

३८२. संवत १७४३ रा आसोज सुद १ गांव रतनथळ सइयदांसूं लड़ाई हुई सो सइयद मारिया राठोड़ां ।

३८३. संवत १७४४ रा सावण सुद १० भींवरळाई आय वाडमेर अकबररा बेटा सुलतान साहजादारै पगां लागा घर बैठा रया ।

३८४. पछै महाराज श्रीअजीतसिंघजी तलवड़ै मलीनाथजीरा दरसण पधारिया. पछै भींवरळाई काती वद १० पधारिया जद दुरगदास आसकरणोत सारा साथसूं सामो आय पगां लागो. सिरपाव दियो. पछै सला ठहरायी श्रीमहाराज पीपळोदरा पहाड़ पधार विराजो नें म्हां कनै साथ सांवठो छै, धरतीमें घोड़ो फेर आवां छां ।

३८५. संवत १७४४ रा काती वद १३ हाडो दुरजणसिंघजी, राठौड़ अखैराज, रतनो जोधो, राठौड़ दुरगदास आसकरणोत, चांपो मुकनदास - अै सोजत जोधा सुजाणसिंघ केहरीसिंघोत माथै गया. उण सहर गढ संवायो. मामलो कियो. केईक राजपूत काम आया ।

३८६. संवत १७४५ रा मिगसर वद ५ गूघरोटरा डेरां महाराजरा पगां दुरगदासजी लागा. दुरगदासनूं नै उदेसिंघनूं सिरपाव देनै काम सूंपियो. यां दोनांरा कामदार मेलिया काम करता ।

३८७. संवत १७४५ रा फागण वद ८ जाळोररी पेसकसी लैणनूं राठोड़ तेजकरण दुरगदासोतनूं नै राठोड़ राजसिंघ अखैराजोतनूं मेलिया. गांव सारणासूं कूच करता दीवान कमालखांरी फौजसूं मामलो हुवो ।

३८८. चंद्रावतासूं राठोड़ अखैराज रतन महेसोतरो जिणरै वैर हुतो सूं महियारिया पूरणदासनूं मेलने चंद्रावतां कनासूं दोय सगाई दिरायी नै केईक रुपिया दिराया अखैराजजी महाराज साहब संवत् १७४४ चैत सुद ५ ।

३८९. रानाड़ीरा सिरदाररो बेटो केहरसिंघ तुरकाणीमें जोधपुर कनांसूं चौथ लिवी. सायद—

केहर चौथ जोधपुर कीवी ।

३९०. जोधपुर व्यास हरकिसन हरवंसरो तुरकाणी तुरकांसूं मिळियोड़ो हो सांचोरा गिरधर रुघनाथरो चाकर दोय सपी मनसवरो ।

३९१. संवत् १७६५ सावण वदि ११ महरावखां जोधपुरनूं अजमेरनूं कूच करै ।

३९२. श्रीजी गढ पधार संवत् १७६५ रा सावण वद १२ सिंघासण विराजिया. राजा सवाई जैसिंघजी टीको कर मोतियांरा आखा चेंठिया, हाथी-घोड़ा नजर किया. बीजां ही नजर किवी.

३९३. सूरसागररा महल सवाई जैसिंघजीरा डेरा. ब्रमकुंड दुरगदासजी आसकरणोतरो डेरो ।

३९४. संवत् १७६५ रा काती सुद १ आठ हजार कड़ाजूझ सिपाही घोड़ा सवार हो सइयद गैरतखां हसनखां हुसेनखां सहे आया. पहोर तांई राड़ हुई. तोपखानो घणोई सइयदरी साथै हुतो पिण फतै श्रीजीरी हुई. ठाकुर दुरगदासजी नरूको संगरामसिंघजी ।

३९५. मेड़तियै किल्याणसिंघ राजसिंघोत अरज किवी, राठोड़ हिंदूसिंघ अरज किवी. ठाकुर दुरगदासजी ही सामल रह्या, जद महाराज अजीतसिंघजी महरावखांनूं जीवतो जाबा दियो ।

३९६. भेळा हुआ. मता घणी हाथ आयी. च्यार कोस तांई तुरकांरी कतल किवी. कूंपो भींव सबळसीहोत काम आयो ।

३९७. महाराज अजीतसिंघजी जाळोर थकां तेजसिंघ आईदानोतनूं हरजी दिवी. जगनाथ आईदानोतनूं आहोर दिवी ।

३९८. दिली खींवसी भंडारीनूं महाराज अजीतसिंघजी लिखियो-गुजरातरा सोबारी खिलत पहलां तोनूं हवै नै उजीणरा सोबारी खिलत दोय घड़ी पछै भगतणके तो माहारो आछो लागे. भगतण जैसिंघजीरो नांव दियो हो ।

३९९. धायभाई वखतराय १, नानगराय २, खेरड़ो दलेलसिंघ ३, कहाहनीराय ४, अै च्यार ही अजीतसिंघरा चाकर अड़सीजीरा धावनिया ढेरिया हा ।

४००. बगड़ीरो धणी अरजुणसिंघ प्रतापसिंघोत अजीतसिंघजीसूं बदळियो. उदैसिंघ लखधीरोत बदळियो पालीरो धणी ।

४०१. आ खबर सूराचंदरा डेरां महाराज अजीतसिंघजी पाय चैत वद २ महाराज सूराचंदसूं चढिया - चैत वद ५ सवा पहर दिन चढिया, जोधपुर पधारिया. सूराचंदसूं जोधपुर कोस १२० ।

४०२. फरुंखसियर महाराज अजीतसिंघजीनूं गुजरातरो सूबो दियो जद भंडारी विजैराज सूबै रहियो. पछै महमदसाह अजीतसिंघजीनूं गुजरातरो सूबो दियो जद रुघनाथ आडो बैठो, अनोपसिंघ सूबै रहियो, अभैसिंघजीनूं गुजरात महमदसाह दिवी जद रतनसिंघ सूबै रहियो ।

४०३. महाराज श्रीअजीतसिंघजी नागोर मधि पधारिया जद राव इंदरसिंघजी, कंवर गोपाळसिंघजी हैदराबादको नवाबनूं जंग मुलमुलक जिणरै सामल हुता । कूंपावत प्रतापसिंघजी ककड़ावरा धणी भावसिंघजी रो पोतो तिण नागोर संभाळियो. हजूर राजी हुवा. नजराणो लै वाला पधारिया ।

४०४. महामाया हिंगळाज प्रसादात छत्रपति महाराजाधिराज महाराजा श्री अजीतसिंघ देव विजयते भानु तेज स्वरूपेण मही-मध्येषु राजते-अै आखर अजीतसिंघजीरी महोरमें ।

४०५. देवळियारा धणीरी बेटी कल्याणकंवर महाराज अजीतसिंघजीनूं परणायी. आ मुई जद इणरी छोटी बहन अनोपकंवर महाराज अजीतसिंघजी देवळियै पधार परणिया ।

४०६. देवळियै सीसोदिया रावल हरीसिंघरा बेटा कुंवर प्रिथीसिंघरी बेटी कल्याणकंवर महाराज अजीतसिंघजी देवलियै पधार परणिया ।

४०७. अभैसिंघजी १, बघतसिंघजी २, रामसिंघजी ३, अणंदसिंघजी ४, सोभागसिंघजी ५, प्रतापसिंघजी ६, रतनसिंघजी ७, रूपसिंघजी ८, सुरताणसिंघजी ९, उदोतसिंघजी १०, छत्रसिंघजी ११, किसोरसिंघजी १२, गांगोजी १३—इता महाराज अजीतसिंघजीरा कंवर हुवा ।

४०८. किसोरसिंघजीरी अेक माई बहन उदैपुर परणायी. रामसिंघजी बखतसिंघजीरै जंग हुवो जद रामसिंघजीरै सामल रह्या महाराज किसोरसिंघजी ।

४०९. महाराज बखतसिंघजी राजाधिराज कहावै. किसोरसिंघजी तेगबहादुर कहावै ।

४१०. महाराज अजीतसिंघरी बेटी सूरजकंवरबाई सवाई जैसिंघजीनूं परणायी, सोभागकंवरबाई राणा जगतसिंघजीरा कंवर प्रतापसिंघजीनूं परणायी. इंद्रकंवर····परणायी. कुळकंवरबाई जैसळमेर रावल अखैराजजीनूं परणायी ।

## अभैसिंघ

४११. नबाब सेर बुलंदखां काळीरा कोट कनै डेरा किया ।

४१२. आठ हजार सवार, दस हज़ार सवार प्यादल नबाब कनै हुता. छोटी-मोटी नवसै तोप नबाब कनै हुती ।

४१३. आसोज सुद ७ कोचर पालड़ी महाराज अभैसिंघजी बखतसिंघजी डेरा कर मोरचा पांच सहरनूं नै भदरनूं लगाया. च्यार मोरचा अभैसिंघजीरी फौजरा, अेक मोरचो महाराजा बखतसिंघजीरी फौजरो ।

४१४. महाराज अभैसिंघजीरी फौजरै अेक मोरचै ठाकुर अभैकरणजी महासिंघजी नै जीवणी मिसल भागीरथदासजी ।

४१५. दूजै मोरचै सेरसिंघ सिरदारसिंघोत, प्रतापसिंघ भीमोत. डावी मिसलनै पुरोहित केसरीसिंघजी ।

४१६. तीजै मोरचै मारोठरो नै चौरासीरो साथ नै भंडारी विजैराजजी ।

४१७. मोरचै चौथै गुजराती सिपाही नै भंडारी रतनसिंघ ।

४१८. राजाधिराजरी फौजरै मोरचै नागोररा सिरदार नै पंचोळी लालो ।

४१९. भदरमें नबाबरो कबीलो हुतो. सो अेक बीबीरै गोळो लागो. आसोज सुदी १० सनीवार, वडो फजर हो. नबाब सेरसिंघ सिरदारसिंघोतरा मोरचा माथै आयो. जद अभैकरणजी नै चांपावत करण राजसिंघोत दौड़नै सेरसिंघजीरै मोरचै आया. उठै वेढ हुई. तीनसै आदमी मियांरा काम आया ।

४२०. चांपावत करण राजसिंघोत १, मेड़तियो भोमसिंघ कुसळसिंघोत २, पुरोहित केसरीसिंघ ३, जोधो हरीसिंघ जोगीदासोत ४, धांधल भगवानदास ५।

४२१. ठाकर अभैकरणजी पूरा लोहां पाड़िया. महाराज डेरा मोरचांसूं अळगा हुता. सो आ खबर आयी. तिण सायत श्रीमहाराज अभैसिंघजी वखतसिंघजी असवार होय कटकरी अगाड़ी तांई पधारिया. इतै अरज मालम हुई, राड़ हो चूकी. जद घोड़ा चलायासूं मियां मियां पूर उठै राखी आगै तो पांचल ऊभो रह्यो. चौड़ै आयो नहीं. जद दोनूं साहिब ईसवररो नाम लेनै लूटता तोपखाना सामा घोड़ा उठाया सो तोपखाना लोप तरवारां भीळिया. अेक पोहर भीक वागो. मियांरै साथ मनसबदार हाथियांरा सवार हुता जिके इता काम आया—आबद अलीखां १, जमलुदीखां २, सइयद कायम ३, पठाण तरीनखां ४, सेख अलैयार ५, थानसिंघ ६, दुरजणसिंघ ७, अेकहजारी ८. तीनसै सिपाही नवाबरा और काम आया. नवाबरा इतरा घायल हुवा—सेख मुजायद १, सेख जमादी अलीखां २, आगा महमदरो बेटो ३. और सिपाही पनरै सै घायल हुवा. नवाबरो तोपखानो खोस लियो. नवाब भाज अेक मसीतरै ओलै ऊभो रह्यो . महाराजरी असमानी फतै हुई।

४२२. महाराज वखतसिंघरै बीस तीर लागा ज्यांमें तीन तीर नो च्यार आंगळ बैठा बीजा सिलहमें रह्या. गोळी अेक, गोळो अेक लागो. श्रीरामजीरा प्रतापसूं खैर हुई. असवारीरा घोड़ारै दस तीर लागा. अेक भाटकै लागो।

४२३. नबाब नास सैर मांय गयो. दूजै दिन सेख मुजायदनूं वात गरै महाराजा अभैसिंघजी कनै मेलियो. कह्यो—महाराजा फुरमावै सू करूं, दरबार फुरमाया—तोपखानो सारो छोड जा. यूं हीज हुवो. संवत् १७८७ आसोज सुद १२ महाराजरो भंडो रुपियो अहमदावादमें।

४२४. राजाधिराज जंग कियो पछै महाराज अभैसिंघ जैसिंघरै सुलह हुई. हरमाड़ासूं कूच कियां पछै जिता रुपिया जैसिंघजीरै खरच पड़िया उता देणा किया महाराज अभैसिंघजी उवां रुपयांमें भंडारी रतनसिंघनूं नै भंडारी मनरूपनूं ओळमें सूंपियां।

४२५. हरमाड़ासूं कूच हुवो पछै जिता रुपया जैसिंघरै खरच पड़िया उवै देणा कर भंडारी रतनचंदनूं अभैसिंघजी ओळमें दियो।

४२६. अभैसिंघजी वखतसिंघजी गुजरात पधारिया जद कुहोहणरै धणी उगरै अजबेस भाड़ीमें वोळावो कियो तमक वाणा कोळी।

४२७. मोकळसररै धणी वाळै उदैराज अभेसरी आग्यासूं कोटनादरा धणी भाटी फतैसिंघ समरावतनूं मारियो. अभेसरी आग्यासूं जद गुडारो राणो सूरजमल भाखरसिंघोत उदैराजरी मदत आयो हो ।

४२८. उदैराज खींवराज अखैराजोतरो सूरजमल भाखरसी साहिबखान ठाकुरसी ईसरदास उदैराज राणो सूरजमल मासियाळ भाई हुतो ।

४२९. सेरसिंघ मेड़तिया अहमदाबाद जावतां मारगमें कोळिआंनूं घोड़ा दिया. उवै दारू पीवण आया हा. दारू साथ नहीं जिणसूं वात उदारणनूं सेरसिंघजी घोड़ा कोळियांनूं दिया. कुसळसिंघजी महाराज अभैसिंघजीसूं मालम किवी-सेरसिंघ.........सिंघोतरा घोड़ा मारगमें खोस लिया. कूंपै कनीराम वात हुई ज्यूं मालम किवी. दरबारसूं घोड़ा सेरसिंघ सामा मेलिया ७५० ।

४३०. अहमदाबाद भदर माथै अभैसिंघजीरी फौज हल्लो कियो जद सेरसिंघ निराट आछो हुवो. जीवरखो भदर वाजै गुजरातमें ।

४३१. मेड़तिया सूरजमल सिरदारसिंघोत बखतसिंघजी कनासूं महाराज अभैसिंघजी मांग लिया गुजरातमें ।

४३२. अजमेररै गांव नामसूं महाराज अभैसिंघ ईसरीसिंघजीरै मिळाप हुवो जद भंडारी जैपुरसूं उठ जोधपुर आयो ।

४३३. नागोरसूं धाय पुसकरजी स्नान करणनूं आयी जद महाराज अभैसिंघजी फुरमाया-तूं अजमेर आव, हूं तो आगै छातीरो ढींब भराणो है सू हूं फोड़ूं. राजाधिराजरा भयसूं आ अजमेर न गयी ।।

४३४. बीकानेरसूं पवार अभेस पुरोहित जगूनूं.......मदनरूपजीनूं फरमाया कै मांहो-मांहरी ईरखा छोड़ अेकमन होय राजकाज करो, हमै म्हारा सरीररी सगती घटी है ।

४३५. महाराज अभैसिंघजी मिनख मारणरी सोगन पुसकरजीमें छानै लिवी थी ।

४३६. अभैसिंघजीनूं राजाधिराज कपटी कहता ।

४३७. जिण सरावसूं मांसरी बुध भिजोय साधां सराबरो वडो ही पियाक छक जावै उण सरावसूं सीसी भर दिलीरै पातसाह महाराजा अभैसिंघजीरी हजूरमें भेजी महाराज अेक घड़ी सारी सीसी पी लिवी ।

४३८. अभेसनूं गलीच विजय हूं जवरनूं नागोरी राम न्रप कहता ।

४३९. अभेसनूं गलीच फते हु ज घरनूं नागोरी राघव सदूळ कहता ।

४४०. अभैसरी आण काढता ।

४४१. महाराज अभैसिंघजीरै अजीत गज हाथी हो सो होदा मांहेसूं तकियो सूंडसूं उठाय लेतो ।

४४२. संवत् १७८० रा भादवा वदी ८ महाराज अभैसिंघजी कछवाहा राजा जैसिंघरी बेटी विचित्रकंवर परणिया ।

४४३. कछवाईजीनूं पटो सत्ताईस हजाररो दियो महाराज अभैसिंघजी ।

४४४. गुजरात पधारतां सिरोहीरै गांव पोसाळियै सिरोहीरा रावरी बेटीरो डोळो आयो, महाराज अभैसिंघजी परणियो ।

४४५. लाठीरा धणीरी बेटी बड़ी भाटियाणीजी महाराज अभैसिंघजी परणिया गुजरात पधारतां ।

## रामसिंघ

४४६. संवत् १८०५ महाराज रामसिंघजी पाट बैठा. संवत् १८२५ रामसिंघजी देवलोक हुवा ।

४४७. लदाणीरो धणी नरूको केसरीसिंघ ज्यांरा दोहिता कंवर रामसिंघजी. संवत् १७८७ रा भादवा वद १० जनम पहर जोधपुरमें ।

४४८. वखतसिंघजी रामसिंघजीरै छोटी-मोटी बाईस राड़ हुई ।

४४९. मेड़तै सेरसिंघजी काम आया. पछै नवमैं महीनै लोढांवस जालमसिंघजी काम आया. पछै छठै महीनै जोधपुर रामसिंघजी कनांसूं वखतसिंघजी लियो.

४५०. जीवण घसियारो १, वखतो साणी मेड़तिया सेरसिंघजीरो चाकर २, वींजियो ३ अमीरुव ४-अै रामसिंघजीरै मनीजता ।

४५१. जीवो घसियारो १, अमियो डूंब २, बखतो साहणी रियांरो चाकर ३, वींजियो ४- अै महाराज रामसिंघजीरै मानीजता ।

४५२. उदैपुरसूं टीको आयो जद जोधपुररा कामेतियांनूं कह्यो - जीवण घसियारा कह्यासूं राणोजी अमको लड़ाईरो हाथी अठै मेलै तो टीको लियां. कामेतियां नरूकीजीसूं मालम करि आपसूं मालम करी. माजी फुरमावे है टीको ले लेणो, हाथी पछै ही राणोजी मेल देसी. आ वात मान टीको ले लियो, किताईक महीनां माजीनूं कह्यो हाथी मंगाय दियो. यां कह्यो-उवैही देसपती है, यूं हाथी क्यूंकर मेलै ? जद .......... ।

४५३. राम निरप फुरमाया जीवण घसियारारी अरजसूं - राणो लड़ाईमें सेर अमको हाथी अठै मेलसी तो टीको म्हे राखसां राणाजीरो ।

४५४. जद नरूकीजी कहायो—हमै तो टीकारी सामगरी लिराय लेणी. पछै ऊ हाथी उदैपुरसूं नाठो जद नरूकीजीनूं कहायो—अमको हाथी उदैपुरसूं मंगाय दो. जद नरूकीजी.................... ।

४५५. उवैही राणा है, हाथी लड़ाईरो मेलसी नहीं. जद राम फुरमाया—मांटी मुवो तो पण रांडरो मच्छर मिटियो नहीं ।

४५६. जोधमल भंडारीरै गळै दोवड़रो टेपो देनै गुंजवर कंटी लै लिवी: उवां विंजियांनूं दिवी राम न्रप ।

४५७. महाराज ईसरीसिंघजीरी बेटी कछवाहीजी १, झळायरा राजावतजी २, चावड़जी ३, जाड़ेचीजी ४ – महाराज रामसिंघजीरै अै च्यार राणी ।

४५८. चावड़ीजी, राजावतजी, जाड़ेचीजी, कछवाहीजी – अै च्यार राणियां महाराज रामसिंघजीरै ।

४५९. झिलायरा राजावत ज्यांरै मनीजता महाराज ईसरीसिंघजीरी बेटी कछवाही-वजीरो आध कम हुतो ।

४६०. झिलायरा राजावतजीरो मान हुतो. कछवाहीजीरो मान नहीं हुतो रामरै ।

४६१. माधवेसरा राजावतांनूं कहिनै राजावतजीनूं जहर दिरायो ।

४६२. माधवेस झिलायवाळांनूं कह्यो—थांरी बेटीनूं जहर दे मारो तो म्हारी भतीजीरो मान करै महाराजा रामसिंघजी ।

## बखतसिंघजी

४६३. राजाधिराज नागोर लियो जद चवदै हजार घरांरी बसती हुती ।

४६४. राजाधिराज नागोर पधार पहलां पंचोळी लालानूं दिवाण कियो. पछै धायरा कह्यासूं सिंघवी सायमलनूं दिवाण कियो. पछै इण मुवा इणरो बेटो अमरचंद दिवाण कियो. अमरचंदनूं मार सिंघवी फतैचंदनूं दिवाण कियो ।

४६५. महाराज अभैसिंघजीनूं जळांजळी देण राजाधिराज नागोर समस तळाव पधारिया टेगण चढ़िया. किताईक कह्यो—राजाधिराज पाळा है, कितांईक कह्यो—राजाधिराज टेंगण सवार है ।

४६६. महाराज अभैसिंघजीनूं जळांजळी देण राजाधिराज नागोरमें समस तळाव है जठै पधारिया टेंगण सवार हुया. कितांक कह्यो—आप पाळा मत पधारो. कितां लोगां कही—टेंगण चढ समस राजाधिराज पधारिया ।

४६७. महाराज बखतसिंघजी जेसळमेर परणीजण पधारिया जद रावळ अखैसिंघनूं कह्यो— सिंघरै सिंयां थांहतै मामलो दियो है क न दियो है ? रावळजी

कही - मियां म्हां कनै मामलो लै जिसा है. महाराज फुरमाया अठै म्हारी फौज छव मास रहण दो तो मियांनू अबजी मसकां बांध आणां ।

४६८. सेरसिंघ मेड़तियो काम आयो जद राजाधिराजरै साळो तुंवर सिरदार भाज गयो. उणनू चाकरीसू राजाधिराज दूर कियो ।

४६९. संवत १८०८ महाराजा बखतसिंघजी जोधपुर लियो. मोकमसिंघ १, दोलतसिंघ २, लालसिंघ ३, दोनू चांपावत सूरजमल दुरजणसिंघोत जोधो ४, महेचो सिरदारसिंघ कानसिंघोत ५, भाटी महेसदास ६, करनोत जैतकरण महकरणोत ७, धायभाई देवकरण ८, भाटी सुजाणसिंघ ९, इत्यादिक गढ जोधपुररो राजाधिराजरी निजर कियो ।

४७०. जोधपुर पधार राजाधिराज फुरमायो—अभैकरणजी संसार नहीं जद सिणगारचोकी म्हारो आवणो हुवो ।

४७१. सत्तावन गांव झाड़ोदरा फतैपुररा नबाबरा महाराज बखतसिंघजी दबाया ।

४७२. जासनु जास याची—राजाधिराज जोधपुर ले फुरमायो—महि राजवी है ज्यांनू बाहर काढ आवो, रजपूतांरै परणाय देसां. मांरै वंसरा अजीतसिंघोत जोधा वाजसी ।

४७३. राजाधिराज गुजरातसू पधारियां पछै धाबड़ वडिदास तुरत हीज चलियो ।

४७४, प्रथम संवत १७९२ दिली पधारिया राजाधिराज. दूसरै फेरै संवत १८०४ दिली पधारिया ।

गगवाणारा गोरमें, सेल धमाधम खाय,
भोळी नणदळ है हाथ्यांरै होदै बखतो मारू जंग करै ।

४७५. नाथ जी महाराजसू राजाधिराज आपरै नै माधोसिंघजीरै विचै मसजत माथै बैसाया ।

४७६. राजाधिराज दिखण माथै जावणरी कमर बांधी किवी जद उजीणरै मुकाम सिरदार उठ गया हा. मु ...... राजाधिराज देवलोक हुवा ।

४७७. सिवरो मियां नूर महमद बोलियो—हिया मांहलो नादरसा आज मुवो ।

४७८. राजाधिराजरी मृत्यु सुण लखनऊरो धणी नबाब मंसूरअलीखां कह्यो—दिलीरो जोर घटियो, दिखणरो जोर बधियो हमै ।

४७९. राजाधिराज दिखण माथै चढिया जद उजैण इंदौररै मुकाम सिरदार उठ गया आतंकसू ।

४८०. जैसिंघजीरी ·········· राजाधिराज पांच घोड़ांसूं निसरिया ।

४८१. सिवसिंघ गांव मेवाड़रो भोमियो जिणनैं पनरै हजाररा पटासूं लोटोती दिवी राजाधिराज ।

४८२. जैसिंघजीसूं राय हुई जद सिवसिंघ आछो हुवो इण चाकरीसूं ।

४८३. लोटोतीरो सिरदार जोधो सेरसिंघ जिणरी नैं कविया करणीदानरी अरज बादरसिंघजी राजाधिराज पगे······लियो जद अरज किवी. ऊ सेरसिंघजीरी मानैं करणीदानरी न मानी ।

४८४. मूंडवै लाटा ओर ठौड़ कराया. लाटांरी ठोड़ खेत बागवानानूं राजाधिराज इनायत किया ।

४८५. गांव हेनाणें च्यार हजार बीघा जोड़ हुतो, राजाधिराज उनाम करायो ।

४८६. जोधपुर पांचमैं ताईका गरभणो – आ मरजाद राजाधिराज बांधी ।

४८७. कागसूं मूंडा खासा हाथीरी सवारी होकसूं राजाधिराजरी मरजी थी ।

४८८. खास रुपियारो सिक्को पातसाह राजाधिराजनूं इनायत कियो ।

४८९. बीकानेररो राजा गजसिंघजी जोधपुर रातानाडारा डेरासूं जेसळमेर परणीजण गया जद महाराजकंवार विजैसिंघजीनूं राजाधिराज साथै मेलिया ।

४९०. संवत १८१६ फागण सुद १ चांपावत देवीसिंघ महासिंघोत १, ऊदावत केसरीसिंघ अखतसिंघोत २, कूंपावत छतरसिंघ रामसिंघोत ३ – अै तीनूं सरदार धायभाई जगनाथ जोधपुर गढ ऊपर पकड़िया ।

४९१. सोळोतरै फागण सुद १ देवीसिंघ दिकांनूं पकड़िया ।

४९२. दूजा सिरदारां आतमारामजीनूं कांध दियो जद ससतर खोल दिया हुता. देवीसिंघजी ससतर समेत कांध दियो ।

४९३. जनानो पधारै है यूं कहनै सिरदारां वेळी लोहापोळ आड़ी दिवी सिरदारांनूं पकड़िया जद ।

४९४. सिरदारांनूं गढ माथै पकड़िया जद उमर भर गोवरधन पंचेस्वर बोलियो ।

४९५. सिरदारांनूं हाथ पड़ियो जद वै उचाकख थको डोढी पर गोइंददास बोलियो– निगै राखो, रोळ कांई करो हो दरबाररा आदमी होयनै ।

४९६. सिरदारांनूं पकड़ण हाथ पड़िया जद डोढी दावै उवाक थको बोलियो— रोळ कांई करो हो ?

४९७. देवीसिंघजी वगरै पकड़िया ज्यांनूं रस्सांसूं बांध भोजनसाळा हेटली ओरियां ज्यांमें घालिया. हाथां पगांमें बेड़ी तोखीर कड़ियां आयी नहीं जद कड़ियां मोटी घड़ाय आंरा हाथ-पगां मांह घाली ।

४९८. देवीसिंघरा हाथ धायभाई जगजी पकड़िया. कटार-तरवार खीची फतै खोस लिवी ।

४९९. देवीसिंघ प्रभुखांरा हाथ-पग लोहरा वंधणरी कड़ियां घड़ायी. पहलां आंनूं भोजनसाळा हेटली ओरियां मांहे राखिया हुता ।

५००. देवीसिंघ महासिंघोत नै पकड़ाणो जद बोलियो—मैं गढमें किवी जिसी गढ मोमें किवी ।

५०१. ऊदावत केहरसिंघरै गळामें भमरकड़ी रहती नित्य सेर पक्की खीचड़ी खातो. हमै पालकीखानो है जठै कैदमें हुतो. अठारोतरै देवलोक हुवो ।

५०२. ऊदावत केसरीसिंघजीरा गळामें भंवरकड़ी रहती. पालखीखानामें कैद रहता. सेर पक्कारी नित खीचड़ी खाता. संवत १८१८रै रामसरण हुवा ।

५०३. ऊदावत केहरसिंघरा गळारा तोखरी कड़ीरी सांकळ भुरसमें दिवी हुती ।

५०४. केहरसिंघ ऊदावतरै गळारी तोखरी कड़ी भुरसमें दिवी हुती ।

५०५. प्रथम तेईसै, पछै अठाईसै, तीजक फेर छतीसै, चौथा फेर तयांळीसै—जुमलै च्यार नाथजीदुवारै वडा महाराज पधारिया ।

५०६. अेक बार कोटारा महाराज गुमानसिंघजीसूं श्रीजी दुवारै मिलबो हुवो ।

५०७. संवत् १८३७ रा मिगसरमें चौबारी राड़ हुई नै संवत् १८३८ रा मिगसरमें अमरकोट रसद पहुंची सिंधियांसूं राड़ हुई ।

५०८. संवत् १८३० महाराज विजैसिंघजी गयारी गास मारी छोड़ी ।

५०९. लखणेऊरै धणी मनसूरअलीखां विजैसिंघजीनूं लिखियो—गुलाबरो अतर लिखतो मेलो तिणरै लगावजै नहीं अखरैरा अंतर लगावजै. यूं हीज कियो ।

५१०. बडा महाराज सूरजमल सोभागसिंघोतनै फुरमाया—भींवसिंघजी सहर अपणायो जद थारा वडेरा तो महाराज रामसिंघजी तो गेला रता ज्यांरो ही परी लाग न कियो म्हे तो सयाणा हां. इण अरज किवी—खानजादरा धड़ माथै माधोसिंघजी तो अै चरण खानाजाद छोड़सी नहीं ।

५११. राजाधिराजरै सात पलांरो बागो मांहे रहतो, अठयारै पलांरो ऊपर रहतो ।

५१२. महाराज विजैसिंघजीरै अठयारं पलांरो मांहे रहतो, इकवीस पलांरो ऊपर रहतो ।

५१३. अटळराज बखतसिंघजीनूं, अरजुण विजैसिंघजीनूं आतमाराम कहतो. श्री हजूर फरमावै—

> अर्ध-दग्ध-भटास्याज्या राज्ये राज्ञां मनीषिणा ।
> यथा त्यजंति विश्वेसो वैष्णवान् बहिरुज्ज्वलान् ॥

५१४. सेखावत किसनसिंघजीरी बेटी जैतकंवरबाई बडा महाराज परणिया ।

५१५. संवत् १८४९ रा असाढ वद महाराज विजैसिंहजी देवलोक हुवा ।

५१६. संवत् १८४९ रा असाढ सुद ८ महाराज भीमसिंघजी गढ दाखल हुआ ।

५१७. विजैसिंघजी महाराजरी प्रथम गायण, पछै खवास, पछै पासवान हुई गुलाबराय. गायणपणमें नाम सुणिया गोस्वामीजी दामोदरजी कनै गुलाबराय बावन ग्रन्थ महाप्रभु आचारज कृत सौ ग्रन्थ गोस्वामीजी कृत, संवत् १७२७ माह वद १३ श्रीजी चोखां कदमखंडी पधारिया सकटस्थ. कदमखंडी अनकोट हुओ. काती सुद १५ पाटोदीनूं पधारिया श्रीजी. च्यार महीना पाटोदी पाट माथै विराजिया, पाटोदीसूं सिरोहीनूं पधारिया श्रीजी गांव सरणांसूं पाछा पधारिया सो पुसकरजी होय मेवाड़ पधारिया, राणा राजसिंघरा भावसूं साठ वरस मुथरानाथजी बूंदी पधारिया. श्रीजी पधारिया पहलां सोळा वरसां द्वारकानाथजी मेवाड़में पधारिया. इण कारणसूं कांकरोळीरा गोस्वामीजी राणाजीरा गुर है. गोकुळनाथजी आंबेर पधारिया ।

५१८. महाराजा जालमसिंघ विजैसिंहोतरै वैजनाथजीरो इसट हुतो ।

५१९. नवानगररा महाजामनूं, हळवदरा राणानूं, ईडरा रावनूं, डूंगरपुर बांसवाहळारा रावळनूं जोधपुरसूं अेक सरीखो लिखावट ।

५२०. गांव जोधपुररा ७७. पोहकरणरा, २४६, सोजतरा ४४८, जाळोररा १४४, जेतारणरा ३८४, मेड़तारा ६२, फळोदिरा १४९, सिवाणारा ८४, सांचोररा महाराज सायबरै ।

५२१. मोटाराजा उदैसिंघजी, सवाई राजा सूरजसिंघजी, दळथंभण गजसिंघजी, धूंखलसिंघजी, अभैसिंघजी, राजाधिराज बखतसिंघ - आ पदवी थी ।

५२२. चूंडोजी मांगळियांरा भाणेज, रिड़मलजी सांखलांरा भाणेज, जोधोजी, भाटियांरा भाणेज, सूजोजी हाडांरा भाणेज, वाघोजी भाटियांरा भाणेज, गांगोजी सांचोरा चहुवाणांरा भाणेज, राव मालदेजी देवडांरा भाणेज, उदैसिंघजी झालांरा भाणेज, सूरजसिंघजी कछवाहांरा भाणेज, गजसिंघजी कछवाहांरा भाणेज, जसवंतसिंघजी [illegible] भाणेज, अजीतसिंघजी

जादवांरा भाणेज, बखतसिंघजी सांचोरा चहुवाणांरा भाणेज, विजैसिंघजी रावळोतांरा भांणेज, गुमानसिंघजी देवड़ांरा भाणेज, मानसिंघजी सांचोरा चहुवाणांरा भाणेज ।

# राठोड़ांरी खांपांरो इतिहास

## सींधल राठोड़

५२३. भाद्राजूणरो धणी भारमल सिंधल जिण सरवडी दीवी. भारमलरो रामो, रामारो सतो, सतारो वीरो. संवत् १५८६ वीरा सतावतनूं मार राव मालदेजी भाद्राजूण लियो ।

५२४. वीरारै वीसळदे, वीसळदेरै तजो जिण जाळोरीमें गांव मेहेड़ो वसायो ।

५२५. लांबिया भाद्राजण सींधलांरै हुती ।

५२६. जैतारणरो धणी सींधल नरसिंघ वीदावत सुपियारदे सांखळीरो धणी जिणरै वंसरा मेवाड़में है, सोळै गांवांमें है ।

५२७. गांव वालाणो डोडियाळ पारवती है जठै सींधाल वाघ गोपाळदासोत रहै छै. धरतीरो विगाड़ घणो करायो ।

५२८. सींधल रांपावत कंवळां वगेरै सोळा गांव जठै रहै जागीरदार थको. सींधल भाणावत वळाणा वगेरै बारह गांव ज्यांमें रैवै, सींधल लांकावत कीड़ोमाल वगेरै गांव वधनोरा मदारिया विचै आडावळारी तळहटी ज्यांमें रहै ।

५२९. संवत १७१२ वैसाख मांहे बाळो केसोदास जैतसिंघोत नै महेचो रावळ भारमल साथ करिनै सींधालां ऊपर आया. रावळ भारमल जगमालोत साथै सोढो अमरो भोजराजोत १, अमरो सुरताणोत २, सिसोदियो कभो ३, मनोहरदास भाखरसीहोत ४, किसनो ऊदावत ५, दळपत ६, बीजो ही साथ घणो हुतो ।

५३०. सींधल वाघो वीदावत, वीदो सूजावत, सूजो सीहावत कंवळां धणी ।

५३१. सींधल वाघो वीदारो, वीदो सूजारो, सूजो सीहारो, सीहो भांडारो गांव कंवळां. १,५००) रेख ।

५३२. सींधल सांवळदास मानसींहावतरो. गांव पावो, १०,०००) रेख ।

५३३. सींधल जसवंतसिंघ रायसिंघ मालावतरो. गांव कुहेळाव. ४,०००) रेख ।

५३४. सींधल केसरीसिंघ दूदा अमरावतरो. गांव जाखोड़ो. रेख ४,०००) ।

५३५. सायद—वाघरा घरां सिर आग वूठी १ ।
हुवो चितोड़सूं बियो हेलो २ ।
काटकी आभसूं वीज कवळै ३ ।

५३६. वड़ना मोरावास ऊहड अरजुन आसिया नेतानूं दियो ।

५३७. सलखो १, जैतमाल २, खीमकरण ३, रावत राणो ४, वैरसाल ५, राघोदास ६, भाखरसी ७, सूरजमल ८, पातो ९, रतनसिंघ १०, आसकरण ११, मनोहर १२, केसरसिंघ १३, बळू १४, खीमो १५, सवाई १६, देवसिंघ १७—नगररा रावतांरी पीढिया ।

५३८. तेजमाल सलखावतरो बेटो हाफो जिणरै वंसरा सिवणाचा कहावै. सिवणै राणो देवीदास वीजावत हाफारा वंसमें हुवो ।

५३९. राठोड़ वरियैचा मलीनाथरा पोतरा है ।

## महेचा

५४०. राव मंडळक जगमालोतरै तीन वेटा हुवा—रावळ भोजराज १ जिणरा महेचा, खेतसी २ जिणरा कोटड़ै, वांदियो ३ जिणरा जघोळिया ।

५४१. मेहवांरो राव भोजराज मंडळकोत रणखेत पड़ियो. सन्यासियां उठायो. ओ सन्यासी हुवो ।

५४२. वेगड़ो नरो खेतसी मंडळकोतरो जिण महेवो ले लियो नगर राज करै. रावळ भोजराजरी वेर सूराचंदरी . चहुवाण वेटानूं ले सूराचंद गयी ।

५४३. किताईक वरसां पछै रावळ भोजराज सन्यासी थको गुजरात सामासूं जमात ले आयो. नगरमें वेगड़ा नरानूं मारियो. महेवारो मालक वीदानै कियो ।

५४४. रावळ भोजराज मंडळकोत कठैईक सन्यासियां घावां उपाड़ियो. साजो हुवो जद सन्यासी हुवो. इणरी राणी सूराचंद गयी. राठोड़ वेगड़ै नरै खेतसी मंडळकोतरै महेवो खोस लियो. इणरो छोटो भाई रणधीर सिववाड़ी राज करै. रावळ भोजराज सन्यासी थकै जमात आण नगरमें वेगड़ा नरानूं मारियो. वैदा वीदानूं टीको दे महेवारो धणी कियो ।

५४५. संवत १६९१ माह मांहे पहलां जाळोररो गांव मोर सीम मारी पछै निवाई गांव सिवाणारो महेचां मारियो, माह वद ४. गायां १४०, भैंसां ३०, बैल ६३०, घोड़ी ८ ले गया. असवार ३०, पाळा ३० हुता ।

५४६. संवत १६९१ माहमें राठोड़ महेचै महेसदास जाळोररो गांव मोरसीम आयो. हजार माणस लेनै गांव मोरसीम बाळियो लूंटियो. धान घणो ले गया. पादरियै वेढ कीवी. जणा दस पादरियै काम आया. थोरी १५ महेचांरा मुवा तकै घायल हुवा. [illegible] मोरसीम लूंटियो ।

५४७. महेवो सूनो कियो जद राठोड़ देईदास पतारो सांवळदास सोढो अमरो भोज-राजोत मनोहर सादूळ भाखरसी, रावळ महेसदास भारमल इत्यादिक राजाजीरा देसरो विगाड़ करता।

५४८. संवत १६९१ रा जेठ मांहे राठोड़ देईदास, महेसदासरो भाई सांवळदास, सोढो अमरो सांडियां १२० वाळीसरथी ले गया।

५४९. महेचो चंद्रसेण वाघ कलावतरो राणा जगतसिंघरी चाकरीमें पटो हजार बारहरो पावै. वसी गांव काकर।

५५०. महेचो ईसरदास खेतसी जसवंतोतरो सात हजाररो पटो पावै. वसी गोडवाररै गांव मांडळ।

५५१. साठ गांव महेचांरै तीवड़ी लारै है. हमै सिरदार जैतसिंघ उमेदसिंघोत है।

५५२. ईदांरो गांव भालू महेचै रायमल उदैसिंघोत मारियो फागण सुदमें ईदो भानो गोपावत जणा च्यारसूं काम आयो. रायमलरै साथ पांचसौ आदमी हुता, भाटियांरो पिण लोक साथ हुतो. रावळै गया. ऊंट ४, छाळियां १००० महेचा ले गया।

## कोटड़िया

५५३. वेगड़ो नरो १, रणधीर २, दूदो ३, वरसिंह ४—अै च्यारू खेतसी मंडळकोतरा बेटा।

५५४. वेगड़ो नरो १, रणधीर २, दूदो ३, वरसिंघ ४—अैच्यारू राठोड़ खेतसी रावळ मंडळक जगमालोतरो जिणरा बेटा।

५५५. कोटड़ारा राणारी पीढी—रावळ मलीनाथ १, जगमाल २, राव मंडळक ३, राव तखतजी ४, रावत दूदो ५, रावत चांपो ६, राणो जैतसी ७, राणो वाघो ८, राणो रतनसिंघ ९, राणो भैरुंदास १०, राणो जोधो ११, राणो सूरो १२, राणो मळचंद १३, राणो उदैभाण १४, सिरदारसिंघ १५, मालदेव १६, धीरतसिंघ १७।

५५६. राठोड़ चांपै दूदावत सिववाड़ीसूं कोटड़ै राजसथान बांधियो. राठोड़ चांपो दूदो खेतसीहोतरो बेटो. सू वेगड़ो नरो माराणो जद नगरसूं भागो. इणरो काको रणधीर खेतसीहोत सिववाड़ी राज करतो हो उठै आयो. रणधीर दूदारो पेटियो कर दियो. अो चांपो सिववाड़ी रहै।

५५७. कितायक वरसां चांपै दूदावत रावळ वीदानूं कह्यो—म्हारै साथ सातवीस घोड़ारा सवार रजपूत मेल जद हूं कही—जे चांपा साथे जावो, अो कस है

कीजो. उठांसूं गांव खरीग जेसळमेररा रावळरी. घोड़ियां ही उठै पावै. सू रावळजी चांपै कही जूं हीज कियो. इण वाड़ी जाय रणधीरनूं मार सिववाड़ी ले लिवी वीदै रजपूतानूं कही—म्हारै कह्यां विना रणधीरनूं मारियो,मोनूं मूं दिखावजो मती. बै सातवीसी घोड़ां ही चांपारै वास वसिया ।

५५८. आगै पहाड़ माथै परमारांरो करायोड़ो पक्को कोट हो. अेक कोट मांहे वांधियोड़ो कुवो हो. अेक कोट नीचे पहाड़री जड़ां बांधियोड़ो कुवो हो. पछै परमारां माथै भाटी सीध देवराज कटक मेलियो जद ओ कोट पड़ाय नाखियो. वेरा बुराय दिया. चांपै ऊदावत सिववाड़ीसूं जाय आगला कोटरी नीम ऊपर तीन पड़कोटा कराया, तीन दरवाजा. तीनूं कुवा उघड़िया. नांव कोटड़ो दियो. रांज-ठोड़ कोटड़ो कियो ।

५५९. 'नवलखा-दुरंग-नरेस' वाघा कोटड़ियानूं कह्यो—जिणसूं जाणीजै है नवलखो दुरंग कोटड़ानूं कहै है ।

५६०. 'वाघ कुंअरां-वींद' वाघा कोटड़ियारै कुंअर सोढी ठकुराणी हती ।

५६१. पीपा राईकांरा बेटा-पोतरां सांढांरो दूध पीधो. मेहरो बेटो घूंटलवाळै पग समेट सूतो. पछै नेतसी भायां भड़ा सहित सांढांरी वार चढियो. कोटड़िया रामाजी मारनै सांढां पाछी आणी.ते नोर तळै पाणी पाय दोड़ कराय राईकांनूं दूध पायो. उण समैरा हींडोळा—

सांढो लोप सो इंतरो, गांधी सांइरी सांध ।
चड्ढि महीरा नेतसी, रातो तरगस वांध ।।
नळी कटाड़ूं नीळी लप, घी अमापियो खाय ।
हाथ-वैंतरै आंतरै, अै कोटड़िया जाय ।।
खेतो पूछै नेतसी, नीलो घोड़ो काय ।
ग्या ईडररी चाकरी, दियो ईडररै राव ।।

५६२. कितीक पीढियां कोटडै राणो दुरजणसाळ हुवो. जिणकनैसूं रावळ अखैसिंघ कोटड़ो ले लियो. दुरजणसाळ सीवाणैरी नाळ जाय रहियो. कोट नरेड़ो रावळ जेसलमेररै पड़ाव नाखियो ।

५६३. संवत् १८२१ रावळ मूलराजजी दुरजणसाळनूं कोटड़ो दियो पेसकसीरा रुपिया ठैरायनै ।

५६४. फौज जोधपुररी कोटड़ा माथै आयी उठांसूं हाकम आण दुरजणसाळ कोटड़ा मांयसूं जेसलमेररो हाकम काढ दियो. उण दिनसूं सींव जोधपुररा मुसद्दी हाकम रहियो ।

५६५. जैसलमेररै रावळ भींव रतनू धरमदास उधरण गांव दियो. नरो जिणनू कोटड़ियारा राणा भैरवदास कनै मेलियो वचन दे. भैरवदास भींव कनै आणियो. भींव भैरवदासनूं मारियो वडियाड़ारो ऊ नाम जेसलमेर हेटै घाळियो ।

५६६. कोटड़ियो जैसो १, राजसी २, नरहर ३, मेघराज ४, भाखरसी ५. भाखरसीरी बेटी गोमांबाई खीची गोवर्धनजीनूं परणायी ।

५६७. खीमा १, वासाड़ा २, दोट ३, फळसूंडिया ४, कसूंबली ५, धारविया ६—अै खांपा राठोड़ी महेवामें है धारवियो गांव कोटड़ारो है ।

५६८. बापड़ाऊरै ठिकाणे राठोड़ भीमैं रतनावत बाढमेर वसायो ॥

## जैतावत

५६९. राठोड़ अखैराज रणमलोत सींधल चरड़ानूं मार वगड़ी लीवी. चरड़ाजीरो थान कोटड़ी मांहे है. पहलां सांझ समै चिराक चरड़ाजीरै थान ले जावै पछै वगड़ीरा सिरदार आगै चिराक आणै. अजै आ रीत है ।

अकबररा दळ उळटिया, है घट आया हाल ।
छोटी छोटी लातणी, मोटी कीधी माल ।।

५७०. पचायण अखैराजोतरै जैतावत वगैरै नव बेटा हुवा ।

५७१. वगड़ीरा सिरदार उरजणसिंघजीनूं महाराज अजीतसिंघजी मरायो. मेवाड़में सगतावतांरा गांवांमें उरजणसिंघजी मुवा. पछै पहाड़सिंघ जनमियो. बीकम-कोहर मामालमें दरबाररा डरसूं भटियाणीजी पहाड़सिंघजी बैठा बेटानूं लेने देवगढ गया. पहाड़सिंघजी देवगढ मोटा हुवा. ठाकर राघोदास आगै मनाणा ।

५७२. उरजणसिंघजीरो वडो बेटो सामसिंघ जगावतांरै गांव वहमाली परणियो हुतो सो ऊ वहमाली जाय वसियो. वहमालीसूं वेगम गयो. उठै महाराज अजीतसिंघजी जहर देय मरायो ।

५७३. रामसिंघ उरजणसिंघरो भाई जिणनूं चूक कराय घाटामें मरायो. अजीतसिंघजी जैतारण कनै फूलमाल जठारो दाहिमो सलेमाबाद फरसरामदेवजीरो शिष्य नाम टीकमदास जिण आपरी वणायी साखां अेक दिन फरसरामदेवजीनूं सुणायी. जद आं कही-तूं तो तत्ववेत्ता हुवो जदसूं तत्ववेत्ता कहायो. टीकमदास

जैतारण आय भूतांरे थानकमें वसिया. लोकां कह्यो अठै भूत रहै है, आप अठै मत रहो. यां साखी सुणायी:—

गूंदी गोयंदरायकी, आंगण रही वणाय ।
आये संत अनंतके, भूत गये सब भाज ।।

उण दिनसूं जैतारण द्वारो बांधो ।

५७४. वगड़ीसूं विगड़ी सै वातां ।

५७५. वगड़ी जैताजी जैतापोळ करायी ।

## कूंपावत

५७६. महाराज अखैराजोतरै पुत्र कूंपो हुओ. सिवराव चडूंसूं महाराजजीरै रेणरो नांव कढा लियो. कूंपैजी बाईरो व्याव आछो कियो. जद माडै ही नांव प्रसिद्ध हुवो ।

५७७. कूंपा महराजोतरै बेटांरी विगत-प्रथीराज १, राम २, प्रतापसिंघ ३, मांडण ४, तिलोकसी ५, महेस ६, उदैसिंघ ७, ईसरदास ८, तेजसी ९ ।

५७८. प्रथीराजोतांरी भोम चापड़ामें. मांडणजीरा आसोप. तिलोकजीरा धणलै. महेसजीरा कंटाळियै सिरोपारी. उदैसिंघोत वसी, सीवा, चेळावस, ईसरदासोत माहड़ू चांडावळ. तेजसीहोत ईडररी धरतीमें है. रामाठा चांदेळाव रामावत ।

५७९. संवत् १५५९ रा मगसर सुद १० कूंपा महराजोतरो जनम. संवत् १६०० काम आयो ।

५८०. तेजसी कूंपावत अमुतियां सींधलां मारियो. तेजसी कूंपावतरा वैरमें मांडण कूंपावत सींधल सीहो मारियो. संवत् १६२७ मांडण कूंपावत सींधल सीहो भांडावत मारियो ।

५८१. कनीराम रामसिंघोत माथै सूरज आवतो जद गामतरै जावतो ।

५८२. आसोप दळपत कनीरामोत तळावरी पाळ ऊपर बंगलो करायो जिराणा भूमसूं नेड़ो ओ बंगलो करायो. पछै अेक वरस दळपत जीवियो ।

५८३. आसोप रंगसाळमें नाहरसिंघ राजसिंघोत गळियोड़ा अमलसूं बकड़ियां भराया दासियांनूं कहीनै ठकुराणियांनूं तेड़ी बेटा बेटियां सहित ।

५८४. पत्तो कूंपावत देईदास जैतावत भेळो मेड़तै काम आयो ।

५८५. पातारो हमीर रतन रतनरै बेटा तीन हुआ—मालो १, कलो २, जैमल ३. पातानूं [illegible] गांवसूं चोटाळो हुतो चोटाळासूं जाय [illegible] वसायी ।

५८६. राठोड़ उदैसिंघ कूंपावत जैमलजी पत्ताजी भेळो चित्तोड़ काम आयो ।

५८७. कंटाळियारै धणी किसनसिंघ कूंपावत आगानूर नबाबनूं मारियो ।

५८८. अमरसिंघ कूंपावत वणावीर सोळंकीनूं मार सिरियारी लीवी ।

५८९. कूंपावत महेसदास दलपतोत कांदा विना जीमतो नहीं ।

५९०. राठोड़ कूंपो किसनसिंघ जसवंत सादूळोतरो देवळ वणावीर माथै कटक कियो हुतो. सिरोहीरो राव अखैराज आयो हुतो. पछै राठोड़ किसनसिंघ, जैसो देवड़ो भैरूंरो सिकार गया हुता पूरणथा कोस च्यार आगै. पछै वणावीररै साथ आय आदमी तीस मारिया नै जणा वीस घायल किया. किसनसिंघ सादूळोत माराणो ।

## वासणी

५९१. रामसिंघ १, सिरदारसिंघ २, जोधसिंघ ३, अणंदसिंघ ४, कूंपो हरीसिंघ ।

## चांपावत

५९२. पोहकरणरा सिरदारांरी पीढियां लिखंते—रिड़मल १, चांपो २, भैरूंदास ३, जैसो ४, मांडण ५, गोपाळदास ६. वीठळदास ७, जोगीदास ८, भगवानदास ९, महासिंघ १०, देवीसिंघ ११, सबळसिंघ १२, सवाईसिंघ १३, सालमसिंघ १४ ।

५९३. चांपाजीरै बेटा दोय—भैरवदासजी १, सनतोजी २. करण रिड़मलोतरै बेटा दोय—लूणो १,नै माणकराव २. मेड़तारो गांव वीदावत खेतसिघोत चांपावतांरो जठासूं उठ गोकुळदास चांपावत ताळ भोपाळरा राव कनांसूं भागली पई पायी ।

५९४. चांपो गोपाळदास मांडणोत १, चांपो सूरजमळ जैतमाळोत २, राठोड़ ईसरदास ३ नींबावत—अै भाडवै काम आया ।

५९५. संवत् १६५८ चहुवाण वागड़िया मानवाद वालारो रावळ उग्रसेणजी ज्यांरो उमराव वागड़सूं छाड गया. पातसाह अकबररो चाकर रह्यो. पछै चांपावत सूरजमल जैतमालोत जिण बुरहानपुर अकबररा डेरा उठे ही मान हुतो आ माननूं मारियो, रावळ उग्रसेण राजी हुवो. वागड़में ब्राह्मणनूं कर लागतो सो सूरजमल छुडायो ।

५९६. हरनाथसिंघ १, अनोपसिंघ २, रूपसिंघ ३—अै तीन बेटा तेजसिंघ साईंदानोत चांपावतरा ।

५९७. चांपावत ठाकुर भगवानदासजी भीनमाल जमी माथै ऊभा थका श्रीवाराहजीरै माथै छत्र बांधता, इता प्रचंड हुता. हमै सेवग वाराहजीरो तिलक करै है नीसरणीरै तीजै पगोतियै चढनै ।

५९८. चांपावत तेजसिंघजीरै तीन बेटा हुवा—वडो बेटो हरनाथसिंवजी ज्यांरा आउवै बीजो बेटो अनोपसिंघ ज्यांरा भीमाळियै. तीजो बेटो रूपसिंघ ज्यांरा जाणियाणै वामसीण ।

५९९. हरनाथसिंघरा आउवै, अनोपसिंघरा वांतै भीमाळियै, रूपसिंघरा जाणियाणै वामसीण ।

६००. आउवै वखतावरसिंघजी खींची गोवरधनजो जगनाथोतरो दोहितो, माधोसिंघजी खेजड़लै किसनसिंघजी हठीसिंघोत जिणरो दोहितो, सिवसिंघ वहेड़ै राणावत उदैसिंघ सिरदारसिंघोत जिणरो दोहितो, जैतसिंघ सलारी चहुवाण प्रतापसिंघ चतुरभुजोत तिणरो दोहितो, कुसळसिंघ लवेरै भाटियांरो भाणजो, हरनाथसिंघ दांतै वारड़ांरो भाणेज ।

६०१. राणावत उदैसिंघरी बेटी अंबाबाई जोधांरी भाणेजी जैतसिंघ परणियो ।

६०२. वागलीरो धणी चांपावत जिणरी पीढियां–गोपाळदास १, खेमसिंघ २, नारखां ३, हरीसिंघ ४, कुसळदास ५, जालमसिंघ ६ ।

६०३. चांपावत जैतमाल जैसावतरै बेटा च्यार–रूपसिंघ १, भाण २, सूरजमल ३, सुरजण ४, भालगढ जेठतरी भाणजीरा ।

६०४. चार-परिया वगेरै ठिकाणा सूरजमसोत. वीजासणी नींबरै खारियै रूपसिंघोत. नींबली वातै सुरजणोत ।

६०५. हरसोळावरा सूरतसिंघ राम-उपासीक है. उणरी लुगायां वणाया ज्यांरा नांव सीतासर नै इण तळाव खिणाया जिणरो नांव रामसर ।

६०६. चांपावत सामसिंघ देवीसिंघोत बाईरो व्याव जैपुरमें कियो. बाई उणियारारा राव राजा भीमसिंघजीनूं परणायी. चारणांनूं त्याग दियो ।

## करनोत (समदड़ी)

६०७. समदड़ीरा सिरदारांरी पीढियां लिखंते–रणमल १, करन २, लूणकरण ३, वीदो ४, नींवो ५, आसकरण ६, दुरगदास ७, चैनकरण ८, मानकरण ९, इंदरकरण १०, सालमसिंघ ११ ।

६०८. राठोड़ करनो रिड़मलोत चवा देहरो करायो संवत् १५८५ माह वद ५–ईंडो चढायो, ब्रह्मभोज कियो, हजार गायां दिवी, धन घणो खरचियो ।

६०९. संवत् १७२१ महा दुर्भिख पड़ियो. आसकरण नींबावत धान घणो वांटियो. राठोड़ां धणनूं देसमें राखियो ।

६१०. संवत् १७२० गांव सालवे आसकरण नींबावत वेरो खणाय बंधायो ।

६११. दुरगदासजीरी मा नै खीमकरणजीरी मा सगी भुवा-भतीजी केलण भटियाणी ।

६१२. दुरगदास आसकरणोत केलियारै घरै सरणै रह्यो ।

६१३. दुरगदास आसकरणोतरी बेटी विनैकंवरबाई सलू बररा धणी रावत केसरीसिंघनू परणायी , दूजी बेटी दुरगदासजीरी कुसळबाई ।

६१४. दुरगदास १, तेजकरण २, अणंदकरण ३, रतनकरण ४ ।

६१५. दुरगदास आसकरणोतरी बेटी विनैकंवर सलूंबर रावत केहरसिंघजीनूं ……………दोहितो रावतलालजी ।

६१६. दूजी बेटी राजबाई साटोलै उमेदसिंघजीनूं परणाथी ।

६१७. करनोत रतनकरणरी बेटी धनबाई कुरावड़ कुंवर जालमसिंघ उरजणसिंघोतनू परणायी. दोहितो रावत जवानसिंघ ।

६१८. वहामीरो धणी करनोत रतनसिंघ जिणरी बेटी धनबाई कुरावड़ जालमसिंघ उरजणसिंघोतनूं परणायी. उण बाईरो बेटो रावत जवानसिंघ ।

६१९. रतनसिंघजीरी बेटी दूजी राजबाई साटोलै उमेदसिंघनूं परणायी ।

६२०. तुरकाणीमें दुरगदासजी जूनै वाहड़मेड़ रहै जद भामररा जाट सारा वाहड़मेररै गांव कवास धान नीपज्यो जद जितो हासलरो धान वाहड़मेररा धणीनै देता इतो ही ठाकरां दुरगदासजीनूं देता हा ।

६२१. उदैपुर राणा जैसिंघजीरै नै कंवर अमरसिंघजीरो अमेळ हुवो. कंवर उदैपुर बैठो. राणाजीनूं उदैपुरसूं काढ दिया. दस हजार रुपिया खरचीरा मेलिया सगा विधरा समचार लिख मेलिया. महाराज दुरगदासजी वगेरा उमरावांनूं मेलिया. इकलिंगजीरै देवरै कंवरनूं राणारा पगां लगायो . कंवर सागररी पैलां गयो नै राणाजीनूं उदैपुर बैसाणिया ।

६२२. बूंदीरा राव अनिरुधसिंघजीरै नै हाडा दुरजणसिंघजीरै आपसमें अमेळ हुवो दुरजणसिंघजी बाहर नीसर बूंदीरो विगाड़ करता हुता . दिखणसूं इण हीज. काम पातसाहसूं सीख किवी ।

६२३. राव अनिरुधसिंघजी बूंदी आया नै दुरगदास आसकरणोत अनिरुधसिंघजीरै पगां दुरजणसिंघजीनूं मेलिया. मेळ कराय दियो ।

६२४. राणाजी सादड़ी दुरगदास आसकरणोतनूं पटै दिवी ही. दुरगदासजी नव बहिन-बेटियांरा व्याह सादड़ी किया. चारणांनूं त्याग दे जस लियो ।

६२५. उदैपुर अमरसिंघरा घोड़ा लारै दुरगदास आसकरणोतरो घोड़ो चित्र बीचमें ।

६२६. अस्सी बरस तीन महीना अट्ठाईस दिन, इत्ती ऊमर दुरगदास आसावतरी हुई ।

६२७. वालर वारीरी ठिकाणै खींवकरण आसकरणोत गांव वसायो ।

६२८. तेजकरण मेहकरणजी दोनूं कानोड़रा सारंगदेओतरा भाणेज, अभैकरणजी राव चतुर्भुज चोहाणरा दोहिता. चैनकरणजी बीकमपुररै केलणांरा भाणेज ।

६२९. तेजकरणजी महेसकरणजी दोय कुंवर दुरगदासजी साथै मेवाड़में गया. अभैकरणजी महाराज जैसिंघजी कनै गया. चैनकरणजी समदड़ी हीज रह्या ।

६३०. भाखरजी १, करनजी१, कांधलजी ३, पातोजी ४-च्यारूं अेक माया भाई रिड़मलजीरा बेटा ।

## बालावत (मोकळसर)

६३१. रणमल १, भाखरजी २, वालोजी ३, भारमलजी ४, नगराजजी ५, जैतसी ६, केसोदासजी ७, माधोदासजी८, अखैराजजी ९, खीमराजजी १०, उदैराजजी११, नाथजी १२, लालजी १३, जवानसिंहजी १४ हमै मोकळसर धणी है ।

६३२. भाखरजी १, करनजी २, कांधलजी ३, पातोजी ४-च्यारूं अेक माया रिड़मलजीरा बेटा ।

६३३. मोकळसररै धणी वालै उदैराज खीमकरण अखैराजोतरै महाराज अभैसिंघजीरी आग्यासूं कीटनोदरो धणी भाटी फतैसिंघ अमरावत मारियो गुडारो राणो सूरजमल भाखरसी साहिबखानोतरी मदत लेनै ।

## वरसिंघोत

६३४. सोनगिरा खींवा सतावतरी बेटी चंपा जोधाजीरी राजलोक जिणरै बेटा दोय हुवा-दूदो १, वरसिंघ २ ।

६३५. रावजी जोधाजी आंनूं भेळो मेड़तारो परगनो दियो आगै सहर मेड़तो नहीं हुतो. आं मेड़तो वसायो ।

६३६. वरसिंघ कितायक वरसां दूदानूं काढ दियो. दूदो बीकानेरमें गयो. पछै वरसिंघ दुकाळमें पातसाही सहरमें संभर लूंटियो. अजमेर सूबै मांडवरा पातसाहरो चाकर मलूखां हुतो. उण बोल-कोल दे अजमेरमें वरसिंघनै पकड़ लियो. हुल जैतो सह लोल अजो काम आया. बीकानेरसूं दूदै बीकै आय वरसिंघनूं छुडायो ।

## ( झाबुओ )

६३७. जोधो १, वरसिंघ २, सीहो ३, जैसो ४, रामसिंघ ५, भींव ६, केसोदास ७ वडो रजपूत हुवो, केसोदास मारू कहायो ।

६३८. राठोड़ केसोदास भींवरो, भींव रामसिंघरो, रामसिंघ जैसारो, जैसो सीहारो, सीहो वरसिंघरो, वरसिंघ जोधारो, जोधो रिड़मलरो ।

६३९. केसोदास मारू कहाणो. जाबुवो नवो ठिकाणो खाटियो ।

६४०. जाबुवारा राजारी पीढियां लिखंते–केसोदास झब्बा नायकनूं मार झाबुवो लियो. झब्बा नायकरो बसायोड़ो जिणसूं झाबुवो कहायो ।

६४१. झाबुवो नवो राज खाटियो. केसोदासरो मोहणदास, मोहणदासरो राजसिंघ ।

६४२. सीकरी राड़ हुई जिण पहलै दिनरै राठोड़ जैसो सीहा वरसिंघोतरो राणा सांगारी चाकरीमें हुतो सू पचसूं मुवो ।

६४३. सांवळदास उदैसिंघरो, उदैसिंघ जैसारो, जैसो सीहारो, सीहो वरसिंघरो, सांवळदास देईदासजी सामल सरफुद्दीनसूं जंग कर राव मालदेजीरै काम आयो ।

६४४. कुसळगढरा धणी वरसिंघोत जोधा ज्यांरी पीढियां---जोधो १, वरसिंघ २, तेजसी ३, आसकरण ४, माल ५, राम ६, जसवंतसिंघ ७, अबरेला ८, अजबसिंघ ९, कीरतसिंघ १०, अचळसिंघ ११, भागोतसिंघ १२, जालमसिंध १३, हमीरसिंघ १४ हमैं कुसलगढ राज करै है ।

६४५. राठोड़ तेजसी वरसिंघोतरै भाई बेटै वड़ी रियां आयी. चाडसूं सरवण कछवाहांसूं वेढ हुई जद तेजसी काम आयो ।

६४६. राव जोधारो वरसिंघ, वरसिंघरो तेजसी, तेजसी रो सहसो. सहसानूं राव माळदेजी बडी रियां दिवी, वीरमदे दूदावत कनांसूं मेड़तो लियो जद ।

६४७. केसोदास १, करण २, महासिंघ ३, कुसळसिंघ ४, इंदरसिंघ ५, बहादुरसिंघ ६, भींवसिंघ ७, कुंवर प्रतापसिंघ ८–लखैसिंघोत जोधा है ।

६४८. राठोड़ खेतसी वरसिंघ जोधावतरो वडो रजपूत हुतो. सीकरी सांगा राणारै बाबरसूं वेढ हुई जद काम आयो. वीरमदे दूदावत नीसरियो ।

६४९. खेतसी वीरमदेरै साथ हुतो. राठोड़ ठाकुरसी कलारो, कलो खेतसीरो, खेतसी वरसिंघरो, वरसिंघ जोधारो. ठाकुरसी कलावत वडो रजपूत हुवो. सातळियावास सरफुद्दीनसूं जंग कर राठोड़ सांवळदास उदैसिंघोत राव माळदेजीरै काम आयो जद ठाकुरसी पूरै लोह पड़ियो. जैमल वीरमदेओत इणनूं उठायो. पछै वांसवाळै चाकर रह्यो. वांसवाळारै रावळ उग्रसेण चांपावत सूरजमल जैतमलोत साथै ठाकुरसीनूं मेलियो माना चहुवाणनूं मारणनूं सूरजमलजी मानानूं मारियो जद चहुवाण मानारी लात लागी. ठाकुरसी कलावत काम आयो ।

६५०. राठोड़ ठाकुरसी कलारो, कलो खेतसीरो, खेतसी वरसिंघरो, वरसिंघ राव जोधारो. ठाकुरसी वडो राजपूत हुवो. बांसवाळारै रावळ उग्रसेणजी चांपावत सूरजमल जैतमलोत साथ ठाकुरसीनूं मेलियो चहुवाण मानानूं मारण बुरहानपुर. सूरजमल माना चहुवाणनूं मारियो जद मानारी लात लागी ठाकुरसी कलावत मुवो।

## मेड़तिया (दूदावत)

### दूदो जोधावत

६५१. वरसिंघ मुवो मेड़ता सायर माथै आदमी जोधपुरसूं सातल जोधावतरा आय बैठा. वरसिंघरै बेटो सीहो महाकपूत. वरसिंघरी ठकुराणी सांखली सयाणी जिण बीकानेरसूं दूदानै तेड़ायो. इण आय अजमेररा सूबैदार सिरियाखांरा आदमी मेलिया जिके मेड़ता मांयसूं काढ दिया. मेड़तो आधो दूदै अपणायो नै आधो सीहा वरसिंघोतरो मेड़तो।

६५२. अजमेरसूं सिरियाखां दोड़ियो. देस उजाड़ियो. विगाड़ियो. दूदै अजमेर कनै जंग कर सिरियाखांनै मारियो. पहलां जंग कर सिरियाखांरा हाथी खोसिया हा।

वींझ नह भेटिया, नह मोल वणजिया।
.... .... .... .... ... लाछ दूदै लिया॥

६५३. दूदा जोधावतरै बेटा पांच हुवा—वीरमदे १, रतनसी २, रायमल ३, रायसल ४, पंचायण ५. रतनसी रायसल दोनांरै वंस रह्यो नहीं. पंचायणोत पचास जणा है।

### वीरमदे दूदावत

६५४. वीरमदेव दूदावत कनांसूं राव मालदेजी मेड़तो लियो. उण सलेमसाहनूं अरज लिखी. पातसाह आग्या किवी—वीरमदेनूं अठै भेज दे. जद वीरमदेव सलेमसारी हजूर गयो. बीकानेरियो किलाणमल ही उठै गयो. रावजीरी जबरीरी वातां सुणाणी. पातसाह वांनूं साथै ले आगरै आयो. रावजी अजमेर आया. पातसाह अजमेर नजदीक रामसर आयो. रावजी अजमेरसूं दोय कूच पाछा किया. पछै सलेमसाह डेरा किया. रावजी गररी डेरा किया जद पातसाहजी वीरमदेनूं कयो—तूं कहतो राव भाज जासी, सो तो राव जोरमें है. इण अरज किवी—राव भाज जासी, आप परतीत राखजे. पछै वारैद पतरां रावजीरी हजूर वीरमदे मेलियो. उण अरज किवी—

पातसाहरी फोज घणी, फतै होण ज्यूं नहीं, कूंपो जैतो झूठी अरज करै है. आ वात सुण कूंपाजी-जैताजीनूं विना पूछियां रावजी गुंगरोटरा पहाड़ांनूं रवाना हुवा ।

६५५. पछै कूंपाजी, जैताजी, पचायणजी, अखैराजजी, वीदाजी वगेरै रावजीरा उमरावां वीस हजार घोड़ांरी वाग उपाड़ संवत १६०० पातसाहसूं जंग कियो प्रभातरै समै. लरी नदीरै पार वेढ हुई. पांच हजार आदमी काम आया ।

६५६. वीरमदे पातसाहनूं ले जोधपुर गयो पछै हासम कासम खवास सइयद औरही उमराव मारवाड़में राख कूच कियो. बीकानेर किलाणमलनूं दियो, मेड़तो वीरमनूं दियो. संवत १५३४ रा मिगसर सुद १४ रो जनम. संवत १६०० रा काती वीरमदे मुवो ।

६५७. मांगळियो भादो वावड़ीरो वासी जिण राव मालदेजीरी निजर किया सिकारी कुत्ता जद भादारा बेटा देवो जिणनूं चाकरीमें राखियो देवानूं वधारियो संवत १५९४ रावजी जैतमलोत कनांसूं सिवाणो लियो जद मांगळिया देवारै हवालै कियो ।

६५८. देवो सिवाणै राम कह्यो--वीरमदे देवावत वडो सपूत हुवो. रावजी मेड़तो ले वीरम देवावतरै हवालै कियो. रावजीरी चाकरी नहीं करै जिणसूं वळूदा मायसूं वीदा वीरमोतनूं काढियो ।

६५९. वीरमदे रियां सहसा माथै आयो जद रड़ोदर थाणासूं कूंपो मेहराजोत १, राणो अखैराजोत चांपो, जैसो भैरूदासोत इत्यादीक रावजीरा उमराव सहसारी मदत आया. रियां परै कोस माथै जंग हुवो. रावजीरा चाकरांरी वारै बरछी वीरमदे खोस लीवी. दस वार छुरी कार घोड़ो रावजीरी फोजमें नाखियो वडो पोरख परगट कियो पिण वीरमदेरी फतै हुई नहीं ।

६६०. संवत १६२४ में उतियो अरजुन रायमलोत जैमल ईसरदासजी सामल चितोड़ काम आयो ।

६६१. वीरमदे दूदावत जिणांरै बेटांरी विगत—जैमल १, सारंगदे २, ईसर ३, कान ४, चांदो ५, मांडण ६, प्रथीराज ७, खेमकरण ८, जगमाल ९, प्रतापसिंघ १०, सेखो ११ ।

## जैमल वीरमदेओत

६६२. जैमल पातसाह अकबररै पगां लागो जद संवत १६१८ जैमलनूं मेड़तो दियो. साठ हजार घोड़ांसूं मिरजा सरफुदीननूं मददकार जैमल साथै मेलियो ।

६६३. हुळ रायसळ रामावत जैमलजीरो उमराव बारै गांवासूं गांव फालको पटै पावै, प्रथीराज जैतावत मेड़तै रणभोम पड़ियो. जैमलजीरै हाथ रहियो ।

६६४. हुळ रायसळरो भाणेज प्रिथीराजजी जिणमु आं भाणेज माथै छाया किवो, जैमलजी रिसाणा, हुल रावजीरै आय वसियो ।

६६५. अकबररी मा मक्का वगैरै मकां-सरीफ ज्यांरी ज्यारत करण गयी. पातसाह मिरजा सरफुद्दीननु साथै मेलियो. अेक पीर विलायतमें जिणरी ज्यारत सुहागवती करै, विधवा न करै. ज्यारत करण वासतै विधवा अन्य पुरखसूं अवध करि निका पढ लै. उण पीररी ज्यारत करणनूं अकबररी मा मिरजा सरफुद्दीन साथ निका पढी. दिली अकबररी मा पाछी आयी. जद आ वात सुणी अकबर फुरमायो—आगै तो सरफुद्दीन हमारा चाकर रहा, अब हमारा बाबा है ।

६६६. आ बात सरफुद्दीन किणीकै पास सुण लिवी. जठै हुतो जठांसूं वीटळदास जैमलोतनूं साथ ले भागो सो मेड़तै आयो. जैमळजीनूं कह्यो—म्हारा कबीला नागोर में है सो मंगाय लेणा. जद जैमळ आपरै बेटै सादूळनै नागोर मेलियो. सादूळ नागोर गयो, उठासूं मिरजारा कवीला ले मेड़तानूं रवानै हुवो. दोय सौ घोड़ांसूं नागोररो आमल आ पड़ियो. सादूळ झगड़ो कर काम आयो. मिरजारा कवीला मेड़तै आया. सादूळ चाळीस आदमियांसूं खेत रहियो ।

६६७. जैमल विचारियो—पातसाहसूं करी, हमै अठै रहणो नहीं. जद भाई बेटांनूं कह्यो—माणस लेनै थे वधनोरमें जावज्यो, हूं सरफुद्दीननूं पोंछावणनै जाऊं छूं. जैमल सिरोही तांई मिरजारै साथै गयो. पछै नागाणै आय मातारो दरसण कर मेवाड़में गयो ।

६६८. राणाजीसूं मिलियो. वधनोर, करैड़ो, कोठारियो-अै ठिकाणा राणाजी जैमलनूं दिया. संवत १६२४ रा चैत वद ११ अकबर चितोड़ लियो जद दोय सौ आदमियांसूं जैमल राणारै काम आयो ।

वीरतणै घर वीर, दोय णोपी हुई वाण ।
राव अहिरपुर राखियो, इक उदियापुर राण ।।

६६९. मेड़तियो सारंगदे वीरमदेओत बोबली दिसा गयो हो तैसूं मामलो हुवो जठै सोळंकियां मारियो. छोटा भाई मांडण समेत. उण वैरमें जैमलजी सोळंकियांरै परणिया. चांदै वीरमदेओत चितोड़ माथै नारायणदास सोळंकीनूं मारियो ।

६७०. जैमल वीरमदेश्रोतरा बेटांरी विगत—सादूळ १, वीठळदास २, माधोदास ३, सामदास ४, सुरताण ५, नरायणदास ६, केसोदास ७, रामदास ८, हरदास ९, कल्याणदास १०, द्वारकादास ११, गोइंददास १२, नरसिंघदास १३, मुकंददास १४।

६७१. वडी सोळंखणीजीरो बेटो सुळताणजी. जैमळजी छोटी सोळंखणीजीरा बेटा तीन-केसोदास १, माधोदास २, गोयंददास ३ जैमलजी. मांडवरै पातसाह राजा पदवी वीरमदे दूदावतनूं दीवी।

६७२. जगनाथ १, सांवळदास २, सूरदास ३, नाथो ४, वलराम ५ पांव बेटा गोयंददास जैमलोतरा।

६७३. जगनाथ१, सुंदरदास२, सांवळदास३-तीनूं राठोड़ गोइंददास जैमलोतरा बेटा।

## जगनाथोत मेड़तिया

६७४. मेड़तिया जगनाथ गोइंददासोतरै नव बेटा हुवा।

६७५. गोपीनाथ जगनाथोत राव इंदरसिंघजीनूं नागोर मांयसूं कंवर मोहकमसिंघ काढ दियो हुतो इण पाछो रावनूं नागोर वैसाणियो. रावजी नागोररा गांव दिया।

६७६. मेड़तियो भावसिंघ प्रयागदास जगनाथोत जिण वळाघणारा पातावत बारटनूं मातंगयण हाथी दियो।

६७७. नागोररा, मेड़तारा परबतसररा गांव जगनाथोतांरा है।

६७८. मेड़तियो गोपाळदास सुरताण जैमलोतरो, पातसाही चाकर, दिखणमें बीड़मी वेढमें काम आयो।

६७९. राठोड़ दुवारकादास जैमलोतमें राघा वडो मामलो कियो. आज पहलां किण-ही राठोड़ इसो न कियो संवत १६५५ पातसाहरै काम आयो।

६८०. राठोड़ केसोदास जैमलोत गोपाळदास साथै वीड़री लड़ाईमें काम आयो. आधो मेड़तो पटै हुतो।

६८१. राठोड़ गिरधरदास केसोदासोत जैमलोतरानूं पातसाह पदमावती पटै दिवी ही, परबतसर पटै हुवो. संवत १६८६ खानजहांरी वेढमें काम आयो।

६८२. किसनपुर मेड़तिया सुरताणोत वैरागिया सुखे वैरागिश्रांरै भेळा नहै जठै जावै पुण्यरो लेवै, पागमें मोरपंख राखै. राजावत सिश्रांनै परणावै, उणारै परणीजै. महंत सेवादासजी है गांव तांबापत्र है।

६८३. प्रथीसिंघ अखैंसिंघ दोनूं सामसिंघरा प्रथीसिंघरा खालड़ वोरावड नै अखैंसिंघरा वूढसू मानाणै ।

## मेड़तिया (घाणेराव)

६८४. वीरमदे १, प्रतापसिंघ २, गोपाळदास ३, किसनदास ४, दुरजणसिंघ ५, गोपीनाथ ६, सूरतसिंघ ७, प्रतापसिंघ ८, पदमसिंघ ९, किसनसिंघ १०, वीरमदे ११, दुरजणसिंघ १२, अजीतसिंघ १३, घाणेरावरा धणी ।

६८५. प्रतापसिंघ वीरमदेवोत मेड़तियानूं राणोजी पचास हजाररा पटासूं गांव जनोद मेवाड़रो दियो ।

६८६. वीरमदे दूदावतरो बेटो प्रतापसिंघ जिणनूं राणोजी पचास हजाररा पटासूं जनोद दीवी ।

६८७. प्रतापसिंघरै गोपाळदास, गोपाळदासरै किसनदास, किसनदासरै घाणेराव महल कराया ।

६८८. गांव घाणैरो ब्रामणांरो सासण हुतो अेक वास गूजरगोडांरो, अेक राजकुरांरो अेक वास गुंदचारो-जुमलै घाणेरै तीन वास हुता ।

६८९. गूजरगोड, राजगुर, गूंदेचा-आं तीन जातरा ब्रामणांरो गांव घाणीरो जठै किसनदास गोपाळदासोत महल कराया. घाणेराव गांवरो नांव परगट हुवो ।

६९०. किसनदास मेड़तियो आय रहियो जदसूं घाणेराव कहाणो ।

६९१. किसनदासरै दुरजनसिंघ, दुरजनसिंघरै गोपीनाथ, गोपीनाथरै सूरतसिंघ, सूरतसिंघरै प्रतापसिंघ, प्रतापसिंघरै पदमसिंघ, पदमसिंघरै किसनसिंघ, किसनसिंघरै वीरमदे, वीरमदेरै दुरजणसिंघ, दुरजणसिंघरै अजीतसिंघ ।

६९२. गोपीनाथजी रामपुरै चाकिया राणा अमरसिंघरी वारमें ।

६९३. राणै अमरसिंघ फोज देनै गोपीनाथ मेड़तियानूं सिरोही माथै विदा कियो, इण बहार गांव सिरोहीरा गोडवाड़ हेटै घालिया, सिरोहीरी मांडीरो दाण राणाजीरो ठैरायो. गोपीनाथरी पोतीरो संबंध रावरा कुंवरसूं हुवो ।

६९४. राणै अमरसिंघ ......घोड़ै चढिया मेड़तिया गोपीनाथ अरज किवी ।

६९५. राणो राजी हुवो ।

६९६. राठोड़ गोपीनाथरा बेटांरी विगत-सुरताणसिंघ १, अनोपसिंघ २, अभैराम ३, हबतसिंघ ४ ।

६९७. सूरतसिंघ १, मोहणसिंघ २, अभैराम ३, अनोपसिंघ ४-अे च्यार बेटा गोपीनाथरा ।

६९८. राणो अमरसिंघ तळाव फोड़ावतो हो. सुरताणसिंघ गोपीनाथोत अरज कर रखायो ।

६९९. महाराज अजीतसिंघजी कनै दिलो अभैराम गोपीनाथोतनूं राणो अमरसिंघजी उकील भेजियो. श्रो राणारो काम सुधार पाछो आयो . नो ......... ।

७००. राणो अभैरामसूं उदास हुवो मनमें जद सिसोदियो पूरावत कह्यो-अभैरामजो तो आपरी चाकरी पूगा है सूं वांसूं राजी रह्यो जोग है. जद राणोजी अभैरामजीसूं राजी हुवा ।

७०१. नारळाई सादड़रारा धणी कोठारियो गाम अभैराम गोपीनाथनूं राणै जैसिंघ दियो . राम राव मालदेरो जिणरा वंसरा जोधा ज्यांरै चाणोद हुई, तिका वां अनोपसिंघ गोपीनाथोतनूं दिनी ।

७०२. किसनसिंघ १, विसनसिंघ २, नाथूजी ३, खुमाणसिंघ ४, पहाड़सिंघ ५ -अै पांच बेटा पदमसिंघजीरै ।

## मेड़तिया (रियां)

७०३. रियांरा सिरदारांरी पीढियां लिखंते—जैमल १, माधोदास २, सुंदरदास ३, गोपाळदास ४, प्रतापसिंघ ५, अचळसिंघ ६, कुसळसिंघ ७, सिरदारसिंघ ८, सेरसिंघ ९, जालमसिंघ १०, अमानसिंघ ११, सादूळसिंघ १२, हमैं है, पहलां रियां इणरा पड़दादारै हुतो ।

७०४. सिरदारसिंघ १, सूरजमल २, जवानसिंघ ३, वखतावरसिंघ ४, विरदसिंघ ५, सिवनाथसिंघ ६, हमैं रियांरा धणी है ।

७०५. कुसळसिंघ १, सरदारसिंघ २, सूरजमल ३, जवानसिंघ ४, वखतावरसिंघ ५, विरदसिंघ ६, सिवनाथसिंघ ७-रियांरा सरदाररी पीढी ।

## मेड़तिया (आलणियावास)

७०६. सुंदरदास १, गोपाळदास २, प्रतापसिंघ ३, राजसिंघ ४, कल्याणसिंघ ५, रामसिंघ ६, पदमसिंघ ७, लखधीर ८, फकीरदास ९, भारतसिंघ १०, हणवंतसिंघ ११, अजीतसिंघ १२-आलणियावास ।

७०७. आलणियावासरा सिरदारांरी पीढियां-प्रतापसिंघ १, राजसिंघ २, कल्याण-सिंघ ३, रामसिंघ ४, पदमसिंघ ५, लखधीर ६, फकीरदास ७, भारतसिंघ ८, हणवंतसिंघ ९, अजीतसिंघ १०-हमैं आलणियावास भोगवै ।

७०८. आलणियावाससूं वारसरै दिन राजसिंघजी वगैरे माधोदासोत नै उदावत दोनूं खांपांरा सिरदार पुसकरजी तहव्वरखांसूं जंग करण चालिया. राजसिंघजी प्रतापसिंघोत रथ सवार हुवा. रजपूतां कही-घोड़ै असवार होयजे. आं कही—

म्हारो पेट दूखै है. पछै ऊदावत टळ परानूं चालिया. लोकां आंनूं कह्यो. हूं आईज वात वांछतो थो, ओ अवसाण तुरकांनूं मारि धर चाड धणीरी चाड गऊरी चाड पुसकरराज माथै मरणरो पुसकरराज मोनूं हीज दियो,सो पुसकर-राज म्हारी अरज मानी, घोड़ो लावो. राजसिंघजी घोड़ै सवार होय कह्यो पुसकर ! अेक म्हारी हमैं आ अरज, आपरा पाणीरो दरसण करि म्हारी लोथ पड़ै. पछै सरस्वतीरा नाळसूं वेढ सरु हुई, ब्रह्मघाट माथै जातां लोथां माधो-दासोतांरी पड़ी ।

७०९. माधोदासोत राजसिंघजी वगेरै नव सिरदार पुसकरजीरा ब्रह्मघाट माथै काम आया तहवरखांसूं जंग करीनै ।

७१०. आलणियावासरो धणी ईसरोत विजैसिंघ, छोटो भाई राजसिंघ. विजैसिंघजी मुवां पछै विजैसिंघजीरी ठकुराणी बजरंगदेजी मरदानी पोसाक कर सस्त्र वांध घोड़ै चढती. तुरकांणीमें वडो डंको रह्यो ।

७११. चमाळीस गांव आलणियावासरा नै चारसूं ढूंढाड़री अजारै दोनूं ठिकाणा लिया. सारो राज-काज बजरंगदेजी हाथां करता ।

७१२. आलणियावासरो चमाळीसो वानै हो बजरंगदेजीरै सात बरस छोड रह्यो, पछै बेटो हुवो ।

७१३. दुरगदासजीरै पटै मेड़तो जद आलणियावासरा चमाळीसारा रुपिया भरो. अै नटिया. पछै मेड़तासूं बजरंगदेजी चढिया. रियांरी नदीमें वेढ हुई. दुरग-दासजी भागा. बजरंगदेजी जीता—

दोय कोस दोरी दुरगेस ।

७१४. देवराजसिंघ आंनूं कळंक दे मारिया नै बजरंगदेजीरो बेटो ही मारियो. बज-रंगदेजी कह्यो—मोनूं थे झूठो कळंक दे मारी है तो राजसिंघ ! थारो नास होय, जो तैं साचो कळंक दे मोनूं मारी है तो थारो तार ही बिगड़जो मती ।

७१५. गांव माजी नागोररो तारकीनजीरा मुजावरांरै पातसाहरो दियो हुतो उठै विखामें माधोदासोत मेड़तिया सरणै हुता ।

## मेड़तिया (कुड़की)

७१६. वीरमदे १, जैमल २, माधोदास ३, सुंदरदास ४, गोपाळदास ५, प्रतापसिंघ ६, अचळसिंघ ७, कुसळसिंघ ८, सिरदारसिंघ ९, सेरसिंघ १०, अमानसिंघ ११, सादूळसिंघ १२, मेड़तिया कुड़कीरा धणियांरी पीढियां।

## मेड़तिया (कुचामण)

७१७. कुचामणरा सिरदारांरी पीढियां लिखंते—रिड़मल १, जोधो २, दूदो ३, वीरमदे ४, जैमल ५, गोईंददास ६, सांवळदास ७, रुघनाथसिंघ ८, किसोरसिंघ ९, जालमसिंघ १०, सोभागसिंघ ११, सूरजमल १२, सिवनाथसिंघ १३।

७१८. गीत कुचामणरा सिरदारांनूं बांकीदास कहे—
किसूं गणावे पीडियां ख्यात सारी कहे, दुनी प्रब प्रब प्रगट सुजस दीधो।
कदीही कियो नह रूसणो कुचामण, कुचामण साभ-ध्रम सदा कीधो ॥ १ ॥
सूजड़ै काळ न्रप विजपती सेवियो, सुख भरण गयो बियां कमधजां साथ।
लोह बळ मुरधरा-तणा केवळिया, सूंह ढूंढाड़ धर हूंत सिवनाथ ॥ २ ॥
काकियां जनमिया जिकां चाळां किया टूट रज-वट तिकां हूंत दाखी।
अबरकै रचे रणजीत फोजां अणी, रज करी सरी गत धणी राखी ॥ ३ ॥
दुग्रा रुघनाथ दूदाणरा दिवाकर, बार थारी भली थाळ वागो।
पहलही मान यह तणा लागो पगां. लगां ध्रम चक्र अभंग आभ लागो ॥ ४ ॥

७१९. संवत १७१५ रा मेड़तिया रुघनाथसिंघ सांवळदासोत ............कनांसूं मारोठ लिवी।

७२०. संवत १७१५ रुघनाथसिंघ सांवळदासोत गोडां कनांसूं मारोठ लिदी।

७२१. सबळसिंघ रुघनाथसिंघजीरो, सबळसिंघरो इंदरसिंघ, इंदरसिंघोत विजैसिंघोत मारोठ में है।

७२२. वीरमदेवोत भाटियां कनैसूं सराणो रुघनाथसिंघजी लियो. जागियाणो रूपसिंघजी लियो।

७२३. मेड़तिया रुघनाथसिंघोत हजूररी..................न चढै, ऊंटारै जावतै न चढै. घोड़ो चढ नै फरावै. हाथी चढ खवासी न करै ................।

७२४. रूपसी रुघावत रिमां-राह, आसाम कीध मारत अथाह।

७२५. रूपसिंघ १, केहरसिंघ २, अणदसिंघ ३, अमरसिंघ ४—अै रुघनाथसिंघ सांवळदासोतरा बेटा च्यार नरूकांरां भाणेज. सबळसिंघ १, विजैसिंघ २—अै दोय सेखावतांरा भाणेज।

७२६. मेड़तिया बनैसिंघोत महासिंघोत सगतसिंघोत मीठड़ीमें है।

७२७. मेड़तिया विसनदासोत ज्यांरै पहलां जाजपुर पटै रहियो पछै खेरवो पटै रहियो. पछै कोठ पटै पायी. ...... जैसिंघ भाणेज।

७२८. पुसकरजी कनै चांपावतांरो ठिकाणो वसी कड़ेल जठारो भाणेज सीकररो धणी देवसिंघ ।

७२९. मेड़तियांरै नागणेची ब्रह्माणी है, मीठी कोळी भोग लागै ।

## करमसोत

७३०. करमसी आपरी बहन भागावाई नागोररा खाननूं परणायी. साळा कटारीमें आसोप खींवसर दियो ।

७३१. राठोड़ करमसी आपरी बहन भागांवाई नागोरीखांनूं परणायी जद खान साळ कटारीमें आसोप खींवसर दिया ।

७३२. करमसी जोधावत लूणकरण वीकावतरी चाकरीमें रहतो. नारनोळरै गांव ढुसियै वेढ हुई सू करमसी लूणकरण साथै काम आयो ।

७३३. करमसी भलो राजपूत हुवो . लूणकरण वीकानेरिवारो चाकर हो . लूणकरण वीकावत नारनोळ ऊपर गयो जद भोमियासूं वेढ हुई . लूणकरण, कंवर प्रतापसिंघ, राठोड़ करमसी जोधावत गांव ढुसियै काम आया ।

७३४. मांगळियो भोज हमीरोत जिणरी बेटी दूलदे करमसी जोधावत परणियो . पचायण १, धनराज २, नारायण ३, पीथूराव ४–अै च्यार बेटा करमसीरै हुवा मांगळियांरा भाणेज ।

७३५. उदैकरण १, नारायण २, पचायण ३, पीथूराव ४, धनराज ५–अै पांच बेटा । करमसी जोधावत रा ।

७३६. करमसीरै टीको उदैकरणनूं हुवो . वरस ४० आसोप यांरै रही . सेवकी राव गांगाजीरै नागोरी खानसूं वेढ हुई . उदैकरण रावजीरै सामल नै हुवो जद रावजी आसोप जवत कीवी ।

७३७. उदैकरण करमसीरो जिणरै आसोप च्यार वरस रही . पछै रावजी गांगाजीरै नै नागोरी खानरै सेवकी वेढ हुई उदैकरण रावरी चाकरीमें न गयो . रावजी आसोप ले लिवी ।

७३८. उदैकरण करमसोतरो बेटो भानीदास मांगळिया वीरमरी चाकरीमें हो . वीरमदे साथै काम आयो ।

७३९. उदैकरणरो भवानीदास मांगळिया वीरमरो चाकर हुतो सो वीरम साथै काम आयो ।

७४०. भवानीदासरै राम, रामरै केसोदास, केसोदासरै आसदास ।

७४१. रामरै दयालदास, दयालदासरै बेटा तीन हुवा—लखमीदास १, कुंभो २, हरदास ३।

७४२. करमसोत कान्ह खीमावत सौयळां वाळांरै वडेरै पींपाड़ पटै पायी ही।

७४३. हमीर नरा सूजावतरो फळोधीरो धणी. गोपाळ नरा सूजावतरो पोकरणरो धणी।

७४४. पोहकरणां दोड़नै बिगाड़ करनै गांव बयाळीस नरावतां कनांसूं लिया।

७४५. गोइंद नरावत भाखर माथै पोहकरण कनै गढ करायो. नांव सातलमेर दियो हो. राव मालदेजी नरावतां कनांसूं पोहकरण लिवी जद सातलमेर पाड़ सातलमेररा कवाड़ांसूं पोहकरणरो कोट करायो।

७४६. नरांवतांरी बहन-बेटी सासरामें सातलमेरी कहीजै।

## ऊदावत

७४७. राव ऊदो सूजावत गांव लोटोती तळाव करायो नांव सूजैळाव दियो।

७४८. संवत १६१४ रा चैत वद ९ अजमेरसूं कासमखां फोज ले जैतारण माथै चढ़ियो. रतनसी खींवा ऊदावतरो जणा ३५ पैंतीससूं काम आयो।

७४९. कल्याणदास रतनसिंघ खीमावतरो जिणरा बेटांरी विगत—दयालदास १, भींव २, मुकनदास ३, वेणीदास ४।

७५०. दयालदासरा राव सुर भीव राड़ वगेरै भींवदासरा साराही धोळीमें. मुकनदासरा रस नींवाज।

७५१. मुकनदासरै बेटा दोय— मनीराम १, छोटो विजैराम २, जिण रास पटै पायी. पहलां रास जो धोळी।

७५२. पींपाड़ लाव माथै जगराम विजैरामोत पींपाड़ पटै पायी।

७५३. ऊदावत जगरामसिंघ पींपाड़, कुंअर कुसळ जगमालोत कोकलै, अमरसिंघ कुसळसिंघोत दहिया वडी, माधोसिंघ अमरसिंघोत देवगांव वगेरै. कल्याणसिंघ अमरसिंघोत ताल, दौलतसिंघ संभूसिंघ नीबाज मुवा, सुरताणसिंघ जोधपुर काम आयो।

७५४. सुभराम जगरामोत सीरो लियो, पींपाड़नै लिवी नहीं।

७५५. अमरसिंघ कुसळसिंघ जगरामोतरै सीरो छोड़ पींपाड़ लिवी. जगरामजी देवलोक हुवां पछै।

७५६. ऊदावत अमरसिंघजीरा वडो बेटो माधोसिंघजी वडो अडपदार हो. ऊ चलियां पछै कल्याणसिंघजी अमरसिंघोत नींबाजरो धणी हुवो।

७५७. अमरसिंघनूं हडोर तकियो जिणसूं माधोसिंघ अमरसिंघोत तकियो ले लियो विना दियां ही ।

७५८. ऊदावत अमरसिंघरी बेटी देऊबाई राजा उमेदसिंघजीनूं परणायी. उमेदसिंघजी जीवतां राम कही ।

७५९. अमरसिंघरी छोटी बेटी गुमानाबाई सायपुरै उदोतसिंघ उमेदसिंघोतनूं परणायी. उण नींबाज सत कियो ।

७६०. नींबाज मदन परमार विसनू-अरथ मन्दिर करायो जद खेजडलासूं भेसादरी मूरत आय विराजी ।

७६१. ऊदावत सुखसिंघ वखतसिंघोत केहरसिंघरै छोटे भाई राजा किशोरजीनूं मारिया ।

७६२. रास ऊदावत वखतसिंघोत महाराज किसोरसिंघजीनूं मारिया अजमेर में ।

## रतनोत जोधा (भाद्राजण)

७६३. राव मालदे १, रतनसी २, सादूळ ३, मुकनदास ४, उदैभाण ५, बिहारी-दास ६, वाघ ७, उदैराज ८, उमेदसिंघ ९, जालमसिंघ १०, वखतावरसिंघ ११-अँ भाद्राजणरा सिरदारांरी पीढियां ।

७६४. जोधा रतनसिंहोत गांव गोधरणसूं उठ मंडलां कनांसु भाद्राजण, सोनिगरा कनांसूं वालो, डूंगरोतां कनांसूं गांव भीवरी लीवी ।

## महेसदासोत जोधा (पाटोदी)

७६५. जोधा पाटोदीरा ज्यांरी पीढियां-राव मालदे १, महेसदास २, रामदास ३, गोइंददास ४, सबळसिंघ ५, दुरजणसिंघ ६, सूरजमल ७, जालमसिंघ ८, जवानसिंघ ९, भारतसिंघ १० ।

७६६. महेस मालदेवोतरो बेटो रामदास, रामदासरो गोइंददास, गोइंददासरो सबळसिंघ, सबळसिंघरो दुरजणसिंघ, दुरजणसिंघरो सूरजमल, सूरजमलरो जालमसिंघ, जालमसिंघरो जवानसिंघ, जवानसिंघरो भारतसिंघ-पाटोदीरा ।

७६७. राठोड़ जोगीदास रामदासोत महाराज गजसिंघजीरी आग्यासूं बूंदेलानूं दिल्ली में मारियो, रामसिंघ जोधारो वैर लियो. पाटोदीरा जोधांरो वडेरो जोगीदास ।

७६८. पाटोदी नथूसिंघ सूरजमलोत बागड़िया देवड़ांरो भाणेज, जालिमसिंघ सूरज-मलोत चावड़ारो भाणेज ।

७६९. नथूसिंघरी बेटी लाडूबाई जेसळमेर परणायी मूळराजजीनूं. बेटो मानसिंघ पाटोदी घोड़ासूं पड़ मुवो कंवरपदै. पाटोदी इणरी छत्री है ।

७७०. रावळ जैतमाल आगे दुरजणसिंघ जोधो भाज भाद्राजण गयो पाटोदी छोड़नै ।

७७१. जोधा सबळसिंघरै सात बेटा हुवा. पांच पाटोदी रहिया. दोय फळसूंड बसिया ।

७७२. महेसरो दूदो. दूदारा पोता घडसीरै वाड़ै रहै. महेसरो कल्याणदासरा पोतरा गांव सरवड़ी रहै ।

## रतनोत जोधा (दुगोली)

७७३. मोटा राजा उदैसिंघ १, जैतसिंघ २, हरिसिंघ ३, रतनसिंघ ४, किसनसिंघ ५, सावंतसिंघ ६, सिरदारसिंघ ७, राधोदास ८, ग्यानसिंघ ९, सिवनाथसिंघ १०, कंवर वखतावरसिंघ ११-जोधा दुगोली ज्यांरी पीढ़ियां ।

## गोयंददासोत जोधा (खैरवा)

७७४. खैरवारा धणियांरी पीढ़ियां लिखंते—राव मालदे १, राजा उदैसिंघ २, भगवानदास ३, गोइंददास ४, रणछोड़दास ५, भीम ६, प्रतापसिंघ ७, इंदरसिंघ ८, सवाईसिंघ ९, मानसिंघ १० ।

७७५. खैरवै प्रतापसिंघ भीमोतरी बेटी, इंदरसिंघरी बहन, देलवाड़ारो धणी राजा राघोदेव परणियो ।

७७६. जोधा केहरसिंघ नरसिंघदासोतरा बेटांरी विगत-इन्दरभाण १, चन्दरभाण २, गोपीनाथ ३, किसनदास ४, उरजण ५ ।

७७७. खाटू किसनदासोत. सामै उरजणोत. उमरकोटमें रसत घाली जद जोधा केहरसिंघोत छत्र सिरदार काम आया. इकतीस रजपूत काम आया. बयासी घावां उपड़िया ।

## पातावत

७७८. पातो जोगीदास चाखू पड़ियाळरो धणी मुकुनदास रामचंदोतरो बेटो महाराज वखतसिंघजीरी फोज फळोधी लागी जद महीना कोटमें लड़ियो पछै प्रोळां खोल महाराज रामसिंघजीरै काम आयो ।

७७९. जोगीदास छोटो भाई तिलोकसी काम आयो. रूपावत पाळीरो धणी जोधसिंघ महाराज रामसिंघजीरै काम आयो जोगीदासरै साथ ।

७८०. जोगीदास काम आयो. जोगीदास पातारा भाई-बेटा पूगळ गया. अमरकोट टाळपुर घेरो दियो जद रसद पहुंचावणनै जोगीदासरांनूं विदा किया. केहरसिंघोत रूपावतां पातां रसद उमरकोटमें घाली. जंग कर महाराजरी फतै कीवी जद जोगीदासरांनै सामै आया ।

७८१. जोधसिंघरो करनसिंघ, करनसिंघरो सिरदारसिंघ, पाळीरो धणी, झामट भीमसिंघजी महाराजरै काम आयो ।

७८२. कळावत जैतमळोत दोय वडा धड़ा पातावतांमें नै आं पछै तीन धड़ा—गांगावत, पातावत, पीथावत ।

७८३. गांगावतरो गांव नागोररी पट्टीमें ही है ।

### पाळी

७८४. जगतसिंह १, पेमसिंघ २, राजसिंघ ३, अखैराज ४, लखधीर ५, वीठळदास ६, गोपाळदास ७—पाळीरा सिरदारां री पीढी ।

### रोयट

७८५. रोयटरो धणी भगोतसिंघजी जिणरी बेटी अेक धुलै मेघसिंघ रुघनाथसिंघोत नूं परणायी. दूजी माहर परणायी. तीजी सामोद नाथावत अजीतसिंघ सुरतांणसिंघोतनूं परणायी. दोहितो रावळ बैरीसाल ।

७८६. महाराज विजैसिंघजी बूंदी परणिया जद रोयटरै धणी भगोतसिंघजी अस्सी घोड़ा भाटां—चारणांनूं दिया ।

७८७. राठोड़ रोयट दळपत गोपाळदासोतनूं महाराज गजसिंघजी दिवी. पछै कल्याणदास दळपतोतरै रोयट रही, सगतसिंघ आइदानोत धोभ छोडी, रोयट लिवी ।

## नागोर

### राठोड़ अमरसिंघ गजसिंघोत

७८८. संवत १६९१ रा पोस वद ९ साहजहां पातसाहरै पाय लागो—कुंवर अमरसिंघ गजसिंघोत ।

७८९. अढाई हजार मनसब अमरसिंघजीनूं दीनो. पांच परगना पातसाहजी दीना वडोदर रूणनूं १, आतरोदी २, सागोद ३, झोलाव ४, बाळपो ५ ।

| | |
|---|---|
| १,५०,०००) | में वडोद |
| ७०,०००) | सागोद |
| ३,७५,०००) | में झोळाव |
| १,६०,०००) | में आतरोदी |
| २०,०००) | बाळूपो |
| जुमलै ७,७५,०००) | |

जुमलै ७,७५,०००) रुपियांरी जागीर अमरसिंघजीनै इनायत हुई ।

७९०. राव अमरसिंघ गजसिंघोत पातसाहरो बखसी सालावतखां सादिक वारो बेटो मारियो ।

७९१. खलीलखां रावजीरै झटको कियो. हाथ ऊपर रावजीरै लागी. पछै गौड वीठळदासरै बेटै गौड अरजुण झटको कियो राव पड़ियो ।

७९२. संवत १७०१ रा सावण सुद ३ सैंद खांनजहां पातसाहरो मेलियो आगरै अमरसिंघरी हवेली माथै आयो. राठोड़ बळू भावसिंघ वगेरा काम आया ।

७९३. चांपो बळू गोपाळदासोत रजपूतां पांचांसू काम आयो. आगरै ठाकुराणी टाकणी सती हुई ।

७९४. कूंपो भावसिंघ कान्होत काम आयो राजपूतां नवसूं ।

७९५. चांपो भीनोकरण भोपतोतरो च्यार रजपूतांसूं काम आयो ।

७९६. बळूजी सामल राठोड़ सामसिंघ कान्होत कूंपो पातसाही दरबारमें अमरसिंघजीरै साथै काम आयो भावसिंघरो भाई ।

७९७. सोनगरो भोजराज जगनाथोत राव चत्रसालरो चाकर हुतो सो रावजी अमरसिंघजी रै काम आयो ।

७९८. सोनगरो नाथो मानावत काम आयो ।

७९९. भाटी गोइंददासजी नजदीक था पिण भेळा न होय सकिया. चहुवाण तिळोकसी मेहकरणोत अमरसिंघजीरै काम आयो ।

८००. मुंहतो जोधो वछावत अमरसिंघजीरै काम आयो ।

८०१. सोनगरो जगनाथ जसवंत भागसिंघोतरो काम आयो ।

८०२. जोधो केसरीसिंघ नरसिंघदास कलावतरो, बारट चावो-कूंपो गोयन्ददास खींवो मांडणोतरो काम आयो ।

## रायसिंघ

८०३. संवत १६८० असाढ सुद १० जनम. सं० १७०१ साहजहां पातसाह रायसिंघ अमरसिंघोतनूं टीको दियो ।

८०४. इंद्रसिंघजी ईसरीसिंघजी रायसिंघजीरै कुंवर दोय ।

## इन्द्रसिंघ

८०५. महाराज जसवन्तसिंघजी देवलोक हुवां पछै पातसाह औरंगजेब नागोररा राव इंद्रसिंघ रायसिंघोतनूं जोधपुर इनायत कियो. इणरी अवाई सुण सिरदारां

जोधपुर गढ सजियो—चांपावत सोनगजी, उदैसिंघजी जैतावत परताप-सिंघजी. सूरजमल ऊदावत, जोधो मुकंददास, कूंपावत हरिसिंघ, बालो प्रयाग-दास, ऊहड़ भगवानदास, किळैदार ईंदो रुघनाथ, पुरोहित अखैराज—इत्यादीक घणी आसामियां मिलनै गढ सजियो ।

८०६. इंद्रसिंघजी जोधपुर आया. विसटाळा फेर ललपत करी. साच-झूठ करी पट्टांरो लालच दिखाय पातसाहरो जोर दिखाय गढसूं सोनगजी वगेरा सिरदारांनूं उतार आप गढ चढिया. पछै सोनगजीरै डेरै कुंवरनै मेलियो ।

८०७. इंदरसिंघ रामसिंघोत पातसाह ओरंगजेबसूं कोल कियो हो—मोनूं जोधपुर दीजै, जोधपुर जाय राठोड़ सतरै कुबधी है ज्यांरा माथा काट अठै मेलस्यूं ।

दूहो— इंद्रसिंघ सोनंग कनै, दीनों कंवर पठाय ।
पख भाद्रव सुद पंचमी, वरस छतीसै ताय ।।

८०८. इंदरसिंघजी गढ ऊपर गया जद डोढी तांई इंदरसिंघजी सामा आया ।

८०९. संवत १७३६ रा भाद्रवा सुद ७ मंगळवार राव इंदरसिंघजी जोधपुररै गढ टीको लियो पछै राम भाटीनूं चूक कर मरायो ।

८१०. रावजी अजमेर पातसाहरा पांवां गया. राठोड़ांरी जोरावरीरा समाचार मालम किया ।

औरंगसा अजमेर गढ, आयो दूजी वार ।
जससुणिया जसराजरा, जुड़िया सौ जोधार ।।

८११. नाथावत व्यास देवदत्त सोजतरै गांव हुतो जठै रावजी आदमी मेलिया उवां जाय देवदत्तनूं कह्यो—रावजीरो हुकम है, बेड़ी पहर लै, व्यास बेड़ी पहरी नहीं. वाज काम आयो. जगतमें रावजीरो अपजस हुवो ।

८१२. नागोररा राव रामसिंघजी इंदरसिंघजीरै खास परवानां ऊपर लक्ष्मी दामो-दररो नाम लिखीजतो ।

८१३. इंदरसिंघ नागोररो कोटवाल रूघो मोहिळ कियो. विणजारी छती रूवारी खवास जिणरा घाघरारा नाड़ा मोहर बाधी रहती ।

८१४. पातसाह उदैपुर माथै गयो. दहबारी भेळी. कूंपावत उग्रसिंघ काम आयो. राणो राजसिंघ नास पहाड़ां गयो ।

८१५. राव इंदरसिंघजीनूं वधनोर थाणै पातसाह मेलियो ।

८१६. सत्यानंद सन्यासीरा दुखसूं रैत नागोररी दिली जाय पुकारी. इंदरसिंघजीरो मनसब जबत कियो. ओरंगजेब जद कूंपावत प्रतापसिंघ भावसिंघजीरो पोतो कंवर मोहकमसिंघनूं ले दिल्ली गयो. नागोररी साहिबी पगां राखी ।

८१७. आगै हुती जिका सिणगार चोकी ढवायनै नवी करायी. डोढीरो बारणो दिखण दिसामें करायो. जोधपुररी रय्यतनूं घणो दुख दियो. रावजी अनीत वरतायी. सोनगजी वगेरैरो क्यूं ही वटै नहीं. सिरदार छाड दुरगादासजी कनै गया आं कह्यो—नागोरी तरहदार है, हूं तो पहलांसूं ही जाण गयो, हमै सारा थोक भला करसां।

# वीकानेर

## वीको जोधावत

८१८. वीको जोधावत जांगळूरा सांखळांरो भाणेज।

८१९. राठोड़ वीका जोधावतरा बेटांरी विगत—लूणकरण १, घड़सी २, वीसो ३, नरो ४।

## लूणकरण वीकावत

८२०. ढुसियो गांव नारनोळ कनै है जठै लूणकरण वीकावत काम आयो।

८२१. उरजण सतावत बीका जोधावतरै काम आयो. मोहिळ मारियो।

८२२. सावंत उरजणरो वीकानेररा लूणकरणरै काम आयो।

## जैतसी

८२३. वीकानेरसूं सात कोस ऊपर सोहुवो गांव है जठै वीकानेररो धणी राव जैतसी लूणकरणोत कूंपा महराजोतरै हाथ रह्यो।

८२४. ठाकुरसी जैतसिंघोत गयी भोमरो वाळणहार हुवो वीकानेर।

८२५. राठोड़ ठाकुरसी जैतसीहोत लूणकरणोत जैतपुरसूं जाय तेलीसूं मिल निसरणियां लगाय राठां कनैसूं भटनेर लियो।

८२६. ठाकुरसी भटनेररा तेलीरो दिल हाथ लेनै सूतरा रस्सांरी नीसरणीसूं तेरह सो जणांसूं भटनेररै किळै चढियो. भाटियांनूं मार काढिया. भटनेर अपणाय लियो।

८२७. ठाकुरसी जैसळमेर परणिया हुता।

८२८. वीकानेरियै कल्याणमल जैतसिंघोत आपरा छोटा भाई ठाकुरसी जैतसिंघोतनूं जैतपुर ठिकाणो दियो।

८२९. ठाकुरसीरो बाघ अकबर आगै कुत्ता ज्यूं बाघनूं पकड़ आणियो।

८३०. ठाकुरसीजीरै बेटो बाघजी हुवो. अकबररी आग्यासूं बाघसूं बाथियां पड़ण कमर बांधी. बाघ कुत्ता ज्यूं हुय गयो. पातसाह घणो राजी हुवो।

८३१. मेड़तियो केसोदास सुरताणोत नबावनैं मार आगरै रायसिंघ कल्याणमलोतरै डेरै आयो. इण वाघ ठाकुरसिंघोतरै डेरै मेल दियो. वाघ केसोदास भेळा काम आय. यवनांसूं जंग करियो।

८३२. आं दोनांरा माथा कटाय आगरारै दरवाजै बंधाय पातसाह जावतानूं चौकीदार राखिया. पछै नारणोत बळभद्र राजा रायसिंघजीरा कह्यासूं दोनांरा माथांनू जमनारै तट दाग दियो।

८३३. पछै मेड़तियो केसोदास सुरताणोत आगरामें नबावनूं मार बाघरै सरणै आयो. वाघ केसोदास पातसाहरा सीखांसु जंग कर काम आया. आंरा माथा आगरारै दरवाजै टांकिया पातसाहरा हुकमसूं. माथां ऊपर चौकी बैठी पछै नारणोत बळभद्र माथांनूं दाग दियो जमनारै तट. प्रिथीराजजी कह्यो।

भाई जिके कहीजै बळभद्र जो...............

## राव कल्याणमल जैतसीहोत

८३४. राव कल्याणमल जैतसिंघोतरा बेटांरी विगत-रायसिंघ १, प्रथीराज २, सुरताण ३, रामसिंघ ४, गोपाळदास ५, भाण ६, राघवदास ७, अमरो ८।

८३५. बीकानेर राव कल्याणमलरै बेटांरी विगत - रायसिंघ १, प्रथीराज २, सुरताण ३, रामसिंघ ४, गोपाळदास ५, भाण ६, राघवदास ७, अमरो ८।

८३६. राठोड़ प्रथीराज कल्याणमलोतरैं हंसाररी बावनी पटै हुती. हमैं प्रथीराजोत उठै हीज रैवै है।

८३७. सं. १६३८ रा वैसाख सुद ३ सोमवार प्रथीराज कल्याणमलोत रूपक वेल नामे बणायो।

## राजा रायसिंघ कल्याणमलोत

८३८. ............विक्रमाख्यनृपस्य पुत्रः श्री लूणकर्णोऽपि न लूणकर्णः।
श्रीजैत्रसिंहोऽहित नागसिंहः कल्याणमल्लोऽखिलशत्रुशल्यः।
श्रीराजसिंहस् तनुजोऽस्य राजा, विराजते धर्म-पयस्य गोप्ता।।

८३९. राजा रायसिंघजी बारट संकरनूं सवा कोड़ दीवी जद पांडसर साजनसर दोय गांव तांबापतर दिया बीकानेररा।

८४०. दूहो राजा रायसिंघ कहे—

करमचंद करसो किसूं, अन धन जोड़ अपार।
नवी जग खाटो नहीं, लै जासो की लार।।

८४१. बीकानेर गढ कोट राजा रायसिंघ करायो. अधकोस सहर छै. जूनो बीकानेर. बीकानेर सूरजपोळ बंधा ऊपरै हाथी बे है जैमल पत्तो है. वड अेक. मोटो बारणो छै. बावन बुरज छै. उगवणनूं पोळसूं पड़कोटासूं तीन पोळ हैं. पोळ अेक पश्चिम दिसा छै. बारी अेक उत्तरनूं छै. छत्तीस गज कोट ऊंचो धरतीथी. हाथ पैंताळीस कोट नै गज १४ आडो छै. गज नव कोट दोळी खाई ऊंडी. भींत आंगणो सगळा छव गज छै. कुवा तीन पुरस साठ. पाणी मीठो. पहलां बारै हुता त्यां दोळो कोट कराय मांय लिया. तळाव घड़सीसर सहरथी कोस दोय पाणी सात मास रहै. आठ कुवा सहरकी गिरद. साठ पुरस. पाणी मीठो. बीस नाडियां पाणी मास दोय तथा तीन रहै. सूरसागर पाणी मास छव रहै ।

८४२. लाहोर सम्मन बुरज राजा रायसिंघजी भुरटियारी करायोड़ी आछी है ।

८४३. बीजा हरराजोतनूं रायसिंघ बीकानेरियै सिरोही मांयसूं काढियो जद आठ हजार पीरोजियां दीवी राव सुरताण पेसकसीरी राजा रायसिंघनूं ।

८४४. रायसिंघ कल्याणमलोतरा बेटांरी विगत - दळपत १, सूरसिंघ २, भोपत ३, किसनसिंघ ४ ।

८४५. रायसिंघ कल्याणमलोतरै बेटांरी विगत - दळपत १, सूरसिंघ २, भोपत ३, किसनसिंघ ४ ।

## दळपतसिंघ रायसिंघोत

८४६. संवत १६५९ रा सावण वद १ कुंवर दळपत रायसिंघोत रायसिंघरा रजपूतां कनांसूं नागोर लियो ।

८४७. दळपत रायसिंघोत पकड़ाणो जद बीदासररो धणी दळपतरी चाड जंग कर मुवो ।

८४८. काजी गड़गड़ी चढा'र अजमेररा डेरां दळपत रायसिंघोतनूं मारियो जहांगीररी आग्यासूं ।

८४९. राठ वैराड़ी साथ ले दळपतरी मदत आया हुता ज्यांनूं बीकानेरा उमरावां धमक दे काढ दिया ।

## सूरसिंघ रायसिंघोत

८५०. सूरसिंघ भुटियारी चाकरीमें गाडण चोलो, मीसण चाचो, अेक सीवड़ जुमलै अे तीन जणा चाकरीमें रह्या ।

## करणसिंघ सूरसिंघोत

८५१. संवत १६९९ रा काती वद ११ रवीवार वीकानेररो राजा करण नागोररो राजा अमरसिंघजी आंरी फौजांरै जंग हुवो गांव सीळवै जद भोपत गोपाळदासोतरा बेटा तीन काम आया. अखैराज १, करण २, साहबखान ३ ।

८५२. करण सूरसिंघोतरा बेटांरी विगत - अनोपसिंघ चन्द्रावतांरो भाणेज १, पदमसिंघ हाडांरो भाणेज २, केसरीसिंघ सेखावतांरो भाणेज ३, अजबसिंघ अहाड़ारो भाणेज ४ ।

८५३. करण सूरसिंघोतरा बेटा – अनोपसिंघ चन्द्रावतांरो भाणेज १, पदमसिंघ २, मोहणसिंघ हाडांरा भाणेज ३, केसरीसिंघ सेखावतांरो भाणेज ४, अजबसिंघ अहाड़ांरो भाणेज ५ ।

## अनोपसिंघ करणसिंघोत

८५४. राजा अनोपसिंघ करणसिंघोतरा बेटांरी विगत - सरूपसिंघ कंवरपदै देवलोक हुवो १, सुजाणसिंघ २, अणदसिंघ ३. सुंदरसिंघ ४ ।

## सरूपसिंघ अनोपसिंघोत

८५५. वीकानेर अनोपसिंघजीरी गादी देवळियारो भाणेज सरूपसिंघजी बैठा. छव महीना राज कियो. सीतळासूं मुवा ।

## सुजाणसिंघ अनोपसिंघोत

८५६. पछै अनोपसिंघजीरी गादी सुजाणसिंघजी बैठा. सुजाणसिंघजी अणंदसिंघजी दोनूं कछवाहां नरवदरा भाणेज राजा गजसिंघजीरा दोहिता ।

८५७. अणंदसिंघजी रिणी काका केहरसिंघजीरै खोळै गया ।

## जोरावरसिंघ सुजाणसिंघोत

८५८. जैमलसररो रावत खींवो भाटी, नापासर वेळासररां सांखळा प्रोहित सीवड़ नागोर महाराज वखतसिंघजीसूं मिलिया. आं कनै वीकानेर आयो. आं कयो- वीकानेररा किलामें राजाधिराजरो अमळ कराय देसां, जोरावरसिंघजी वीकानेररो राजा ज्यांनूं सुपनामें औ समाचार श्री करनीजी फुरमाया. जोरावरसिंघजी आठां सांखळांनूं मारिया. प्रोहित भाज गया. खींवो सुंदरो खालो पड़ भागो. वीकानेरसूं चीघड़ारो लोक ताकीदसूं किलामें आय गयो. राजाधिराज देसणोक परांसूं पाछा पधारिया. नागोरनूं वीकानेररो गढ हाथ आयो नहीं ।

८५९. राजा जैसिंघजी जैपुरमें राजा जोरावरसिंघ वीकानेररो धणी जिणनूं फुरमायो-थारै देशमें सुख है या कहीं लालसिंघ दोड़ै है. सेखावतांरो लोकनै वीकानेररो लोक भादरा माथै गयो. लालसिंघनूं पकड़ जैपुर आणियो. चीलरै टोळै चढायो. ईसरीसिंघजी पाट बैठा जद महाराज अभैसिंघजीरा फुरमावणसूं लालसिंघ छूटो।

८६०. राजा जैसिंघजीसूं वीकानेर-पति जोरावरसिंघ सुजाणसिंघोत मिळियो जद भूकरकारो सिरदार कुसळसिंघ जिणसूं मिळ जैसिंघजी फुरमायो-इणांरी जिती बहादुरी सुणी ही उती..................जद हरनाथसिंघ नरूकै दीपसिंघ कुंभाणी अरज किवी-रजपूतरै मूंडै थोड़ी मूंछ हुवै जिकोही काम पड़ियां माठी जणावै. आंरै मूंहड़ै तो बाथ भरी मूंछां है। अै जणावै जिणरो कांइ इचरज है ?

८६१. वीकानेररो राजा जोरावरसिंघजी बणाड़रा डेरा महाराज जैसिंघजीसूं मिळिया जद कुसळसिंघजी भूकरकारा धणी, सांडवारो धणी इंद्रसिंघ, महाजनरा धणीरो भाई छोटो भीमसिंघ - अै सिरदार साथै हुता।

## गजसिंघ अणंदसिंघोत

८६२. वीकानेर राजा गजसिंघ अणंदसिंघोत खंडेळारा भाणेज. कंवर राजसिंघ गजसिंघोतरी बेटी सिरदारकंवर जैपुर राजा प्रथीसिंघजीनूं परणायी. महाराज गजसिंघजी ओ व्यांव आछो कियो।

८६३. गजसिंघजीरी बेटी पनैकंवर बूंदीरा रावराजा विसनसिंघजीनूं परणायी।

८६४. राजा गजसिंघजीरी बहन इंदरकुंवर रावराजा उमेदसिंघजीरा बेटा सिरदार-सिंघजीनूं परणायी।

८६५. वीकानेर प्रिथीसिंघजी परणिया जद बरवाड़ारै राव मान्हेड़ीरै धणी प्रताप-सिंघजी सेखावत डेरा लुटाया।

८६६. चित्रकंवर, विचित्रकंवर, सुखकंवर-अै तीन बेटी वीकानेररा राजारी राणा राजसिंघजीरा कुंवर सिरदारसिंघजी, सुरताणसिंघजी, जैसिंघजीनूं परणायां।

८६७. महाराज गजसिंघजीरै भाई तारासिंघजी अणंदसिंघजीरी जायगा रिणी दाब बैठा. जद मुहतो वखतावरसिंघ फोज ले रिणी गयो कांधळोत लाळसिंघरै हाथ तारासिंघजी रह्या।

८६८. तारासिंघजी महाराज गजसिंघजीरा छोटा भाई रिणी दाब बैठा. मुहतो वखतावरसिंघ महाराजरी विना मरजी रिणी माथै गयो. तारासिंघजी फोज

सामा आया. कह्यो—मोनूं कुण मारसी ? जद कांधळोत लालसिंघ तारासिंघनूं मारिया ।

८६९. तारासिंघजीरी बेटी गजसिंघजी परणायी. उमेदसिंघ रावराजारा बेटा सरदारसिंघजीनूं परणायी ।

## सूरतसिंघोत गजसिंघोत

८७०. नवदुर्गा रा नव मंदिर महाराज सूरतसिंघजी कराया वीकानेर ।

८७१. संवत १८८५ रा चैत सुद ८ वीकानेर सूरतसिंघजी देवलोक हुवा. संवत १८८५ रा चैत सुद १४ उदैपुरमें राणो भीमसिंघजी देवलोक हुवा ।

८७२. वीकानेररी हदमें गांव परमारसररो धणी परमार माधोसिंघ तिणरा भाणेज तीन महाराज सूरतसिंघजीरा कुंवर तीन—रतनसिंघ १, मोतीसिंघ २, लिखमीसिंघ ३ ।

## वीकानेररा राजा काम आया

८७३. लूणकरण वीकावत ढुसियै गाम काम आयो. जैतसी लुणकरणोत काम आयो. रायसिंघ कल्याणमलोत बुरहानपुर देवलोक हुवो. छतरी तापी उपर है. वर्ष तिहत्तररी ऊमर हुई. सूरसिंघ रायसिंघोत दिखणमें सहर आभीरी जठै देवलोक हुवो. राजा करण सूरसिंघोत औरंगाबाद देवलोक हुवो. राजा अनोपसिंघ करनसिंघोत आदूणी देवलोक हुवो. दिखणमें आदूणी अनोपगांवमें छतरी है. पदमसिंघ करणसिंघोत कोकणमें काम आयो ।

## फुटकर

८७४. वीकानेररो राजा मूनरो नाम ले सोभवळीरा नाम कहावै ।

८७५. वीकानेर लक्ष्मीनारायणजी धूहड़जी अै सेव्य साळिग्राम है ।

८७६. वीकानेर राजाजीरै सेवामें करंडमें करनीजीरी मूरती रहै. करनमहलमें सेवा हुवै. पाछो करंड निजसेवामें थापित हुवै ।

८७७. वीकानेर पुस्तकसाळामें अेक देवी विराजै है ।

## कांधलोत राठोड़

८७८. खाटी कांधळजीके बांधी वीका ।

८७९. वीका वीकानेर दमोड़ी कांधळां राठांनूं मार कांधळजी जमी दावी. वीकानेरसूं अस्सी कोस उतराधनूं धमोरो गांव जठै कांधळजी ठाकुराई बांधी ।

८८०. कांधळ रणमलोत हंसार काम आयो ।

८८१. चूरूरा कांधळ वणवीरोत है ।

## वीदावत

८८२. जोधायरणमें साख वहै—

अजीतजी स वरदायी, वसुधा जोधै भली वसायी ।

८८३. अजीत मोहलनूं मार रावजी जोधैजी जमी लिवी जिका वीदाजीनूं दिवी. गांव १७० वीदाहदरा छै, वीदावत द्रोणपुरा कहावै . द्रोणपुरो हमैं सुनो छै ।

८८४. राठोड़ वीदा जोधावतरा बेटांरी विगत–उदैकरण १, हरीचंद २, सहंसारचंद ३, भीमराज ४, भोजराज ५, वैरसल ६, डूंगरसी ७ ।

८८५. वीदा जोधावतरै बेटांरी विगत–उदैकरण १, हरचंद २, भोजराज ३, भींवराज ४, संसारचंद ५, वैरसल ६, डूंगरसी ७ ।

८८६. वीदावत द्रोणपुरा कहावै ।

## जींजणियाळी

८८७. जींजणियाळीरो सिरदार भाटी उदैसिंह रामसिंघोत जिण बोगनी आईरा मिसणांरो भाणेज रतनू राजो मारियो. राजै सगा मायानूं बोगनी आईनै मारियो इण खूनसूं ।

## (जाट)

८८८. जाखाणपट्टीरा गांव वीदावतांरै पटै. जाखड़ जातरा जाट रय्यत ।

८८९. सीहाकोटीरा गांव १४० महाजनका सिरदारकै सीहाक जाट रय्यत ।

८९०. गोदारा जाटांरा गांव १४४ भंडाणरा वीकानेररा राजारै खाळसारा ।

# किसनगढ

## किसनसिंघ उदैसिंघोत

८९१. किसनसिंघ राजा उदैसिंघोत जोधपुर हुंता जद आंरै पटै गांव दुधग्ड़ हुतो ।

८९२. राठोड़ घड़सी बौत मेंवासी हुता ज्यांनूं मार किसनसिंघ उदैसिंघोत धरती ले किसनगढ वसायो ।

८९३. किसनसिंघजी किसनगढ वसायो जद गुदैळाव कनै गांव वसी १, ज्दिर २, मीरांरा मालक मेर. किसनसिंघजी इण जमीरा मालक हुवा जद उवां मेरांसूं संबंध मेट मारवाड़में मुसळमानांसूं संबंध करणा सरू किया. जात माजबी उवांरी है ।

८९४. अजमेर राजा किसनसिंघ उदैसिंघोत काम आयो जद करनसिंघ उदैसिंघोतरो यो राठोड़ करमसेन उग्रसेनोत नागीपीठ सौ घाव लागा ।

रातै पूछ कमो वड रावत,
कल्लै मुख धोळै केवाण ।।

८९५. संवत १६७१ जेठ सुद ८ राजा किसनसिंघजी काम आया ।

८९६. किसननूं छोड नह जाय किरतो ।

८९७. किसनसिंघजी उदैसिंघोत ज्यांनूं सोनगिरै उदै रतनसिंघोत राजसिंघ कूंपावतरै प्रधान मारिया वळू दरि धणी जगनसिंघजी वै सूरसिंघजीसूं मालम किवी ।

८९८. राजा किसनसिंघोत उदैसिंघोतरै बेटा च्यार हुवा-सहसमल १, भारमल २, हरिसिंघ ३, जगमाल ४, भारमलजीरो वंस रह्यो. तीन निरवंस गया ।

८९९. सहसमल १, भारमल २, हरिसिंघ ३, जगनाथ ४-अै च्यार बेटा राजा किसनसिंघरै, सहसमल सात वरस राज कियो ।

९००. हरिसिंघ सहसमल. जगमाल—आंरो वंस रह्यो नहीं ।

## रूपसिंघ भारमलोत

९०१. राठोड़ रूपसिंघ भारमल किसनसिंघोतरो संवत १७१४ धोळपुर राड़ हुई दारा सिकोहरै नैं औरंगजेब मुरादबगसरै जठै काम आयो साहजहांरी तरफ. वडो डील हो ।

९०२. रूपसिंघ भारमलोत पातसाहजी………………सूं जागीर पावै जिणरी विगत—

| | |
|---|---|
| ५०,०००) | परगनो किसनगढ. |
| ८२,५००) | परगनै अरांई, |
| ३५,०००) | सलेमाबाद. |
| २५,०००) | बांधल सींदरी. |
| १८,८४६ ॥) | परगनै अजमेररा गांव. |
| ६८,७५०) | परगनै हसनपुर खोहरी. |
| ५७,५००) | पटी इंदांणांरी परगनै नागोररी. |
| १,८७,५००) | परगनो नैणवाय. |
| ५४,४०३ ॥) | परगनो जीड़ोतो पखळांस. |
| २०,१४७=) | परगनै पींपळाज. |
| २,००,०००) | परगनै मांडळगढ. |
| २,००,०००) | परगनै अकबराबाद. |
| ९,९९,६४७=) | री कुल जागीर |

९०३. सूरसिंघजी हाथां चीरो लियो. बंदोवस्तमें हीज रह्या. वीरसिंघजी ज्यांरै बेटा अमरसिंघजी कीरकेड़ो. छोटा बेटा सूरतसिंघजी………बहादुरसिंघजी किसनगढ राज बांधियो. भाटियांरी सांखलांरी, जोइयांरी मोहेलांरी, राठांरी जमी बीकानेर हेठे दीवी ।

## बहादुरसिंघ

९०४. किसनगढ़रा राजा बहादुरसिंघजी लवाणरा बीकावतांरा भाणेज हुता ।

९०५. हिन्दुस्थानी मुसळमान और मरहठा मुजरो सलाम करता जद बहादुरसिंघजी माथै हाथ लगावता ।

९०६. बहादुरसिंघजीरै नागोरी धमाको खवांमें रहतो. लोहरी मूठ लोह रातै नाळरी तरवार गलडवै रहती. अधोड़ीरो गलडवो रहतो. नव पलांरो मीथो रहतो. दस पलांरो लवायचो रहतो. जाडी पींडियां तांई काछ रहती ।

९०७. महाराज बखतसिंघजी जोधपुर ले सिणगारचौकी विराजिया जद धांधळ कनैसूं चंवर ले बहादुरसिंघजी चंवर करण लागा. देवीसिंहजी चांपै अरज कीवी—बहादुरसिंघजीरी निगाह कीजै. जद राजाधिराज बहादुरसिंघजीरो हाथ पकड़ बहादुरसिंघजीनै बैठाया ।

९०८. गाजूदीनखां नवाबरै सामा कोस महाराज बहादुरसिंघजी पधारिया. किसनगढ दीवाणखानामें गादी माथै गाजूदीनखां बैठो, विछायत माथै बहादुरसिंघजी बैठा. महाराज चंवरी हाथमें लीवी जद गाजूदीनखां पाल दिया ।

९०९. महाराज बहादुरसिंघजी फुरमावता—गाजूदीनखां सरीखो सहूरदार जावनी भासामें प्रवीण दीठो नहीं ।

९१०. संवत १८३८ बहादुरसिंघजी देवलोक हुवा जद विरदसिंघजी चाळीस वरसमें हुता, प्रतापसिंघजी २१ वरसरी वयमें हुता ।

९११. किसनगढ राजा बहादुरसिंघजीरै पांच बेटी—गुलाबकंवर नरवररा राजानूं परणायी १, अखैकुंवर बूंदी अजीतसिंघजीनूं परणायी २, रूपकंवरबाई जेसळमेर रावळ मूळराजजीनूं परणायी ३, बाई अेक उदैपुर राणा अड़सीजीनूं परणायी ४, बाई अेक देवळियै दिवाण सावंतसिंघजीनूं परणायी ५ ।

## विड़दसिंघ

९१२. किसनगढ विरदसिंघजीरै च्यार बेटी हुई—अेक उदैपुर राणा अड़सीजीरै कुंवर हमीरसिंघनूं परणायी १, अेक जेसळमेर रावळ मूळराजजीरा कुंवर रायसिंघजीनूं परणायी २, अेक बरवाड़ै राजा हमीरसिंघजीनूं परणायी ३ ।

११३. किसनगढ़ विरदसिंघ मद पीतो पण मांस खातो नहीं ।

११४. चमाळीसैं विरदसिंघजी विरदावतामैं देवलोक हुवो किसनगढरो राजा ।

## सामंतसिंघ (नागरीदास)

११५. महाराज राजसिंघजी ज्यांरा वडा बेटा सामंतसिंघजी नागरीदासजी कहाणा ।

११६. फतैसिंघजी उण ठिकाणै फतैगढ बांधियो. डूंगरपुरसूं परणीज महीरै तट आय डेरो कियो. उठै देवलोक हुवा. हाडीजी संत कियो ।

## किसनगढरा राजावांरा मोसाळ

११७. किसनगढ मानसिंघजी चूंडावतांरा भाणेज. राजसिंघजी देहचियांरा सीसोदियांरा भाणेज. वहादुरसिंघजी राणावतांरा भाणेज. बिड़दसिंघजी गोडांरा भाणेज. प्रतापसिंघजी सायपुरारा राणावतांरा भाणेज. कल्याणसिंघजी नरवररा धणीरा भाणेज ।

## ईडर

११८. संवत १७८६ रायसिंघजीरो आणंदसिंघजीरो अमल ईडरमें हुयो ।

११९. सरकोटैरो धणी परमार उदैसिंघ बेरा जिणरा हाथरी बरछी महाराज अणंदसिंघजीरै लागी. खेत रहिया ।

१२०. महाराज अणंदसिंघजीरी बेटी उदैकुंवरबाई रावराजा उमेदसिंघजीनै परणायी. रायसिंघजीरी बेटी भानुकुंवरबाई रावराजारा छोटा भाई दीपसिंघ जिणनूं परणायी ।

## आंबझरा

१२१. आंबझरा राठोड़ांरी पीढियां लिखंते—राव गांगो १, राव मालदे २, राम ३, कलो ४, राव जसवंतसिंघ ५, राव जगन्नाथ ६, राव केसरसिंघ ७ ।

१२२. जुजारसिंघ ११; राव सवाईसिंघ १२, राव अजीतसिंघ १३, हमैं आंबझरै राज करै है ।

१२३. केहरीसिंघ जगनाथोत आंबझरारो धणी जैतगर लियो ।

## रतलाम

१२४. रतलाम राजांरी पीढियां लिखंते–उदैसिंघ १, दळपत २, महेसदास ३. रतन ४, छत्रसाल ५, केसरसिंघ ६, मानसिंघ ७, पदमसिंघ ८, परबतसिंघ ९ ।

९२५. राजा दळपतसाहरो भोपतसाह भोजपुर जिणरो नाम पातसाह जहांगीर मुकट-मणि दियो पंच सही हुवो. मुकटमणिरो दुरजणसिंघ साहजादा सूजारै चाकर।

९२६. मेड़तै राड़ हुई जद महेसदास दळपतोत आपरी छाती आगै जगरामजीनूं राख दिखणियां माथै चलाया आ कही–आज काकाजी जगरामजीनूं सारां सिरे करसूं. महेसदासरा घोड़ा वाग उपड़ी जद ओ निसर गजसिंघपुरै आयो।

९२७. महेसदास दळपतोतरै गढ गाढो करणरी, गढमें लड़ मरणरी सदा मनमें रहती।

दूहो—मधकरका जूझारमल, राजड़ जिसा निगेम।
अै पांचूं दळ साहरा. पांचूं पांडव जेम॥

९२८. दळपत उदैसिंघोतरै अै पांच बेटा—महेसदास १, कनीराम २, जुझारसिंघ ३, गजसिघ ४, जसवंतसिंघ ५।

९२९. चहुवाण बळू सामतसी मेहकरणोतरो महेसदास दळपतोतरो चाकर. संवत १६८५ महेसदास मोहनखारै वसियो जद बळू अदो मोहबतखांरो चाकर रहियो. दिखण मेल्यो. हाथ ............ पछै महोबतखा मुवो तद बळू महेसदास दोनूं पातसाहरै चाकर रहिया. महेसदासनूं जाळोर, बळूनूं सांचोर दिराणी।

९३०. रतन महेसदासोतरा बेटा दस—रामसिंघ१, रायसिंघ२, नाहरसिंघ३, करणसिंघ ४, सत्रसाळ ५, उखैसिंघ६, प्रिथीसिंघ७, केहरसिंघ८ सगतसिंघ९, जैतसिंघ१०।

९३१. रतलामरो राजा प्रिथीसिंघजी ज्यांरी बेटी सुखकंवर राणा राजसिंघनूं परणायी।

९३२. भणायरा धणियांरी पीढी—राव मालदे १, चंद्रसेण २, उग्रसेण ३, कर्मसेण ४, स्यामसिंघ ५, उदैभाण ६, केसरीसिंघ ७, तखतसिंघ ८, कंवर वखतसिंघ ९, सालमसिंघ १०, दलेलसिंघ ११, उदैभाण १२, सूरजभाण १३।

## भिणाय, देवळिया, वघेरा

९३३. देवळियारी जोधांरी पीढी लिखतें—राव माल १, चंद्रसेण २, उग्रसेण ३, कर्मसेण४, स्यामसिंघ५, उदैभाण ६, नाहरसिंघ ७, रघुनाथसिंघ८, मोहबतसिंघ९, दुरजणसिंघ १०, सिवदानसिंघ ११, अजीतसिंघ १२, अखैराज १३, कंवर सादूळसिंघ १४।

९३४. वघेरारां सिरदारांरी पीढी—उदैभाण १, नाहरसिंघ २, देवकरण ३, कंवर मालमसिंघ ४, उदैसिंघ ५, कंवर जोरावरसिंघ ६, कुमेरसिंघ ७, रणजीतसिंघ ८।

१३५. मोहवतखान कर्मसेरण उग्रसेरणोतनूं सोजत दीवी. छव महीना अमल कर्मसेरणरो सोजतमें रह्यो ।

१३६. विना वैर राठोड़ धर्मसेरण कर्मसेरण उग्रसेरणोतरो, बूंदीराव सत्रसालरो चाकर, जिरणनूं हाडै बिहारीदास मारियो ।

१३७. रामसिंघ कर्मसेरणोत वडो दातार, वडो भुंजाइयो हुतो. राणा जगतसिंघरैं वास घणा वरस रह्यो. गांव जोजावर घणा गांवांसूं पटै हुवो. देवळियैरो धणी रावत जसवंतसिंघनूं मारियो राणाजीरा कहणासूं ।

१३८. राठोड़ रामसिंघ कर्मसेरण उग्रसेरणोतरो वडो दातार. वडो भुंजाइयां हुतो. राणा जगतसिंघरो चाकर. गांव जोरावर पटै हुतो ।

१३९. इण जगतसिंघ राणारा हुकमसूं देवळियारो धणी रावत जसवंत मारियो. पछै पातसाहजीरैं चाकर रह्यो. पछै वरवाड़ो पायो. पछै संवत १७१३ काती माहे जगनाथ ईडरियो मूवो जद पटै ईडर पायी. संवत १७१४ रा जेठमें धोळपुर काम आयो ।

१४०. रामसिंह कर्मसेरणोत दोय हजारी जात दोय हजार सवार ।

१४१. राठोड़ सेरसिंघ रामसिंघ करमसेरणोतरो जिण संवत १७१६ ईडर पायो. संवत १७१९ ईडरियो गोपीनाथ आयो भीलांनूं ले नै. ईडर घेरो दियो. बुरैं हवाल सेरसिंह धर्मद्वार नीसरियो ।

१४२. रामसिंघ करमसेरणोतरैं पटै रेण भिणाय पातसाह अेक वर सालेर मालेर पटै दियो थो ।

१४३. किसनसिंघरै विसनदास, इंद्रसिंघ अै दोनूं बेटा हुवा. इंद्रसिंघ दारासाहरै काम आयो ।

## पीसांगण

१४४. उदैकरणरो सगतो, सगतारो मनोहरदास सं० १६७२ महाराज सूरजसिंघजी मनोहरदासनूं पटै पीसांगण दीवी ।

१४५. पछै बीकानेरिया राजा सूरसिंघ मनोहरदासनूं मरायो. इण ठांय जोधपुर बीकानेर धणा वध वधियो हो ।

१४६. पीसांगण सुजाणसिंघ केहरसिंघोतरो कुंवर किसनसिंघ बीजैपुररैं धणी गौड़ गरीबदास मारियो वधैरैं. पछै सुजाणसिंघ गरीबदासनूं मार वैर लियो. किसनसिंघरो सुसरो गरीबदास गौड़ ।

९४७. तीनूं गांवांसूं पीसांगण सुजांणसिंघरै पिता केसरीसिंघ अपणायी. केकड़ीरी चमाळीसी सुजांणसिंघ अपणायी ।

९४८. सुजांणसिंघरो पोतो राजसिंघ जिण सपोतरांरा ठिकाणा जूनिया महरु वगैरा केकड़ीरी चमाळीसीमें सुजांणसिंघोत जोधा ज्यांरा मुहड़ा आगै आद खांपरा राठोड़ है—पुनावत, बाळावत, पातावत, सतावत ।

९४९. जोधो राजसिंघ किसनसिंघ सुजांणसिंघोत जिणनूं पातसाह पुर मांडळरो परगणो दियो. जगावतांरो ठिकाणो पीथावसपुर मांडळरो है जगावतां जमने दिवी. राजसिंघ पीथावस आय झगड़ो करता ललुहांणी कोसीथळरा धणियां सहित पीथावसरा धणीनूं मारियो ।

९५०. किसनसिंघ सुजांणसिंघोतरा जूनिया. जुझारसिंघ सुजांणसिंघोतरा पीसांगण आंरै. करणसिंघ सुजांणसिंघोतरा वडी खिहरु ।

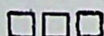
९५१. राजा उदैसिंघ १, माधोसिंघ २, केहरसिंह ३, सुजांणसिंघ ४, किसनसिंघ ५, राजसिंघ ६, सिवसिंघ ७, वखतसिंघ ८, रूपसिंघ ९, हरनाथसिंघ १०, वैरीसाल ११—अै जूनियारा सिरदारांरी पीढियां ।

## मसूदो

९५२. मसूदै परमाल सादूळरै बेटै कुंवर भोपत मोटा राजा उदैसिंघजीरो जिणरो ठावो आदमी हुल मांडो वीकाउत जिणनूं बोली-चाली में वाद वध मारियो ।

## प्रकीर्ण

९५३. आली १, मोहण २, उदैपुर ३—अै तीन ठिकाणा गुजरातमें राठोड़ांरा पातागढ वनै है ।



# [३] गहलोतांरी वातां

९५४. गुजरातमें तिलंगापुर पाटण अठै राजा ग्रहादित्य हुवौ. तिणसूं गहलोत कहाणा।

९५५. गहलोतांरै वायण चुडाय दीप देवी. तिलंगापुर पाटणसूं उठिया।

९५६. चौईस साख गहलोतांरी लिखंते—गहलोत १, मांगळिया २, डाहलिया ३, टीवाणा ४, चंद्रावत ५, सीसोदिया ६, आसावत ७, मोटसीरा ८, मोहल ९, वला १०, आहड़ा ११, केलवा १२, गोदारा १३, तिवड़किया १४, बुटिया १५, पीपाड़ा १६, मगरोपा १७, भाषला १८, धीरणिया १९, गोतम २०, हुल २१, मेर २२, बूटा २३, गुहिल २४।

९५७. मोरी वंस इंद्रसूं प्रगट हुवौ. चित्रांग मोरी चित्तोड़ किलो करायो. सीसोदियै रावळ बापै मोरियां कनैसूं चित्तोड़ लियो जद मोरी भाज सोरठ देसनूं गया।

९५८. राणारी वंसावळी—राणो महप १, राणो महिपाळ २, राणो गुरवी ३, राणो रूपदेव ४, राणो हरसूर ५, राणो नरसूर ६, राणो नगपाळ ७, राणो तेजपाळ ८, राणो भुवनसिंघ ९, राणो भीमसिंघ १०, राणो अजैसी ११, राणो लखमसी १२, राणो अरसी १३, राणो हमीर १४, राणो खेतो १५, राणो लाखो १६, राणो मोकल १७, राणो कुंभो १८, राणो रायमल १९, राणो सांगो २०, राणो उदैसिंघ २१, राणो प्रताप २२, राणो अमरसिंघ २३, राणो करण २४, राणो जगतसिंघ २५, राणो राजसिंघ २६, राणो जैसिंघ २७, राणो अमरसिंघ २८, राणो संग्रामसिंह २९, राणो जगतसिंघ ३०, राणो अरसो ३१, राणो भीमसिंघ ३२।

९५९. गुहादित्य १, विजयादित्य २, केशवादित्य ३, भोगादित्य ४, आसाधरादित्य ५, श्रीदेवादित्य ६, महादेवादित्य ७, गुरुदेवादित्य ८, रावळ बापो ९, रावळ काळभोज १०, रावळ खुमाण ११, रावळ श्रीगोविंद १२, रावळ आळू १३, रावळ सिंघ १४, रावळ सगतकुमार १५, रावळ शालिवाहण १६, रावळ नरवाहण १७, रावळ अंबप्रसाद १८, रावळ श्रीकीरत १९, रावळ करणादित्य २०, रावळ भादो २१, रावळ गोतम २२, रावळ प्रियहंस २३, रावळ जोगराज २४, रावळ भैराड़ू २५, रावळ वरसिंघ २६, रावळ तेजसी २७, रावळ समरसी २८, रावळ रतनसी २९, पछै राणो हुवो थो।

९६०. चांपो चाहड़देरो करण रावळरो देव राणो १, नरू राणो २, राहप राणो ३, हरसूर राणो ४, जसकरण राणो ५, नागपाळ राणो ६, पुण्यपाळ राणो ७,

पीथड़ राणो ८, भुवणसी राणो ९, भीमसी राणो १०, अजैसी राणो ११, लखमसी राणो १२ ।

९६१. सं० ४२० रावळ बापो हुवो. सं० ७३१ राजा भोज हुवो. सं० १२१२ रा सावण वद १२ अदीतवार रावळ जैसै जैसळमेर वसायो. सं० १४८६ राणा-पुर प्रसाद मंडायो. कोट वावड़ी कराया. सं० १४११ रा आसोज वद १३ राव चूंडै गांव चामंड वा चामंडरो देहरो करायो ।

९६२. हारीत रिख वापा रावळनै वर दियो. इकलंगजीरो लिंग प्रगट हुवो. पैंतीस गज वापारो सरीर वधियो ।

९६३. भोगादित्यरो बापो रावळ. वापारो खुमाण रावळ ।

९६४. आणंददे बापा रावळरो बेटो. जिणरा मांगळिया ।

९६५. चित्तोड़रो धणी रतनसेन प्रथम पश्चिमरा समुद्रमें जहाजां बैस दक्षिणरा समुद्रमें सिंघळदीप जठै कष्टसूं पुंहतो. महाकष्टसूं पदमावती लायो ।

९६६. संवत १३५५ राणा रतनसेनरा उमराव गोरो बादळ अलाउद्दीनसूं जंग कर चित्तोड़ काम आया ।

## राणा साखा

९६७. चित्तोड़ भुवणसी राणो कहाणो. पैला चित्तोड़ रावळ कहीजता. भुवणसीरो राणो भीमसी ।

९६८. चित्तोड़ सीसोदियो कहायो जठैसूं चित्तोड़-पति राणा कहीजै.भुवणसीरो भींवसी भींवसीरो तेजसी, तेजसीरो भड़ लखमणसी ।

## हमीर अड़सीहोत

९६९. चित्तोड़ राणो हमीर चंदाणा भोज वणवीरोतरो दोहितो. चंदरावरा चंद्रावत कहावै ।

९७०. सवा पोहर दिन चढ़तो जितै राणां हमीररा माथारा जूड़ा मांहसूं गंगाजळ नीसरतो ।

९७१. हमीररो भाई चंद्रराव. सिरोहीरा रावत वीजड़ पातावतरो दोहितो. चंदरावरा चंद्रावत कहावै ।

९७२. राणा अड़सीरो दोहितो चांद राव अड़सी हेम सिरोही रावत वीजड़ पातावत जिणरो दोहितो चंद्रराव.. राव चंद्रावत ।

## खेतो हमीरोत

९७३. राणो खेतो हमीरोत जाळोर मालदे मूंछाळा सावंतसीहोतरो दोहितो ।

३७४. राणो खेतो जाळोररा धणी चहुवाण मालदे मूंछाळो सावंतसीहोत जिणरो दोहितो।

३७५. राणा खेतारै करमा खातण खवास. जिणरै बेटा तीन हुता—चाचो १, मेरो २, अखैराज ३।

३७६. राणा खेतारै मेदनीमल खातीरी बेटी करमां खातण खवास हुती. जिणरा बेटा चाचो मेरो।

## लाखो खेतावत

३७७. राणो लाखो खेतावत खीची जायळरा धणी धारु आनलोतरो दोहितो. राणो लाखो जायळरा धणी खीची धारु आंदलोतरो दोहितो।

## मोकळ लाखावत

३७८. राणो मोकळ लाखावत मंडोवर चूंडा वीरमदेवोतरो दोहितो. राणो मोकळ राठोड़ मंडोवररो धणी चूंडो वीरमदेओत जिणरो दोहितो।

३७९. नागोरी खानरी सिरकारमें देसमें जिता ही वछेरा हुता उवै राणा मोकळरी नजर हुता, चित्तोड़रै तवेलै बंधीजता. नागोरी खान राणा मोकळरी तावैदारी करतो।

३८०. मोकळरो भाई चूंडो सिरोही सलखा लूंभावतरो दोहितो।

३८१. चूंडो लाखावत सिरोही रावत सलखो लूंभावत जिणरो दोहितो।

## कुंभो मोकळोत

३८२. राणो कुंभो मोकळोत रुण सांखला राणा राजा घड़सीहोतरो दोहितो. राणो कुंभो रूणरो धणी सांखळो राणो राजो घड़सीहोत जिणरो दोहितो।

३८३. पेड़ूरा डूंगर माथै राव रिड़मलजी चाचा मेरानूं मार कुंभानूं चित्तोड़ माथै राणारो टीको दियो।

३८४. राणै कुंभै समसखां दंदानी नागोररो धणी ज़िणरी मदत किवी पनरै लाख रुपया लेनै. नागोरसूं हणुमानजीरी मूरत उठाय कुंभळमेर पधरायी।

३८५. जोगी नरहर रावळ जिणरी दवासूं राणो कुंभो मुवो।

३८६. खीमो मोकळोत वागड़ियो चहुवाण पाता वीसलोतरो दोहित्तो।

३८७. महाराज खीमो मोकळोत वागड़ियो चहुवाण पातो वीसलोत जिणरो दोहितो।

## रायमल कुंभावत

९८८. राणो रायमल कुंभावत अजमेर गौड मोटमराव नरसिंहोत रो दोहितो।

९८९. राणो रायमल अजमेररो धणी गौड मोटमराव नरसीहोत जिणरो दोहितो।

९९०. ऊदो कुंभारो बूंदीरो हाडो राव वैरो वरसिंहोत जिणरो दोहितो।

९९१. ऊदो कुंभारो बूंदीरा राव वैरा वरसिंहोतरो दोहितो।

९९२. राणा रायमलरै बेटा—प्रथीराज १, सांगो २. जैमळ ३, किसनो ४।

९९३. राणो सांगो, प्रथीराज, जैमल तीनूं हळवदरा झाळा जोधा वाघौतरा दोहिता।

९९४. राणा रायमलरो बेटो प्रथीराज उडणो कहाणो. इणरी खवासरै बेटै वणवीर चित्तोड़ राज कियो. उण कनैसूं चित्तोड़ उदैसिंघजी लियो।

९९५. जैमल रायमलोतनूं मार सांगा रायमलोतनूं उबार बीदो जैतमालोत सेवंत्री काम आयो।

९९६. प्रथीराज, जैमळ, सांगो अै तीनूं राणा रायमलरा कंवर नैं साळो काम आया. पछै काठलैरो प्रगनो दबायो काकै सूरजमल खेमावत उगमसी भाटी राणी रूपादेरो गुर।

## सांगो रायमलोत

९९७. राणो सांगो हळवदरो धणी झालो राणो जोधो वाघौत जिणरो दोहितो।

९९८. सं० १५६६ रा जेठ सुद ५ बुध राणो सांगो पाट बैठो।

९९९. सलूंबररो धणी रतनसी, सादड़ीरो राणो अजोजी, डूंगरपुररो रावळ उदैकरणजी, मेड़तिया रतनसीजी, रायमलजी दूदावत इत्यादिक सोकरी काम आया।

१०००. राणो सांगो दस करोड़ी वाजतो. लाख घोड़ा चाकरीमें रहतो।

१००१. सं०१५३८ रा वैसाख वद ८ जनम राणा सांगारो. सं० १५८८ भाद्रवा सुद ११ जनम राणा उदैसिंघरो. सं० १६२८ राम कह्यो।

१००२. राणा सांगानूं कुंवर वाघा सूजावतरी बेटी तीन परणायी. धनबाईरो बेटो रतनसिंघ सं० १५३८ रा वैसाख वद ८ रो जनम सांगारो सांगारी गादी बैठो।

१००३. वाघ सूजावतरी बेटी धनवाई चित्तोड़ राणा सांगानूं परणायी. बाईरै बेटो हुवो रतनसी सं० १५३८ रा वैसाख वद ८ जनम सांगारो।

१००४. हाडो राव सुरजण नरबदोत बूंदीरो धणी जिणरी बेटी सांगो राणो परणियो. हाडांरा भाणेज सांगारै बेटा तीन—विक्रमादित्य १, उदैसिंघ २, भोज ३।

१००५. राणो उदैसिंघ, विक्रमादित्य, राणो भोज तीनूं भाई बूंदीरा नरबद भांडावतरा दोहिता।

## विक्रमाजीत सांगावत

१००६. सं० १५७७ जेठ सुद १२ मांडवगढरै पातसाह चित्तोड़ बादरसाहजी विक्रमपाळ राणा कनांसूं लीवी जद राठोड़ उदैदास मूंजावत सीसोदियो बाघो सूरजमलोत काम आया।

१००७. सं० १५८३ राणा विक्रमादित्य कनांसूं चित्तोड़ लियो पातसाह बहादुरसाह मांडवरै धणी।

## उदैसिंघ सांगावत

१००८. राणो उदैसिंघ बूंदीरो धणी राव नरबद भांडावत जिणरो दोहितो।

१००९. सं० १६२४ पातसाह अकबर चित्तोड़ लियो जद राठोड़ जैमल वीरमदेवोत नै पत्तो सामल काम आया।

१०१०. चित्तोड़ माथै पदमणीरो तळाव, जैमल पत्तैरो तळाव है।

१०११. चित्तोड़ माथै कूकड़ेसररो कुंड अति ऊंडो है. जैमल पत्तै साको कियो जद तोपां सिलहखाना खजाना वगैरै इणमें नाखी।

१०१२. अकबर चित्तोड़ लागो जद चित्तोड़रा किलानूं सुरंग लगाड़ी. सुरंग पाछी फूटी. अकबररो घणो लोक उणसूं जान हुवो।

१०१३. चित्तोड़ ऊपर अकबररै झिलमरै गोळारी फेट लागी।

१०१४. हजार मैंखी दसतो हाथमें पहरियां जैमळजी रातरा तीनूं पहरांरी चोकीमें चित्तोड़में आप फिरता. संग्राम नामा बंदूक अकबररा हाथरी छूटी. गोळी जैमलरै लागी।

१०१५. अकबर चित्तोड़ भेळियो जद पहलां बावन हाथी मधकर दळसिंगार वगैरै गढरा दरवाजानूं चलाया. पहाड़खां वगैरै महावत हाथियां चढिया. हाथिया माथै जंगी हौदा. जंगी हौदामें तमंचा, कड़ाबीण, तीर, कबाण, जाळियां सिपाह बैठा. हाथियांसूं झगड़्या राठोड़ ईसरदास वीरमलोत कीनो निराट आछो झगड़ो कियो।

१०१६. चित्तोड़ भेळियो जद साढ़ै तीन सौ कुआरांरो झांवर हुवो।

१०१७. चित्तोड़ भिळियो जद चाळीस हजार सिपाह अकबर पातसाहरो काम आयो. अठारै हजार लोक राणाजीरो काम आयो. जिणमें आठ हजार सिरकारर ताबेदार नै दस हजार रअय्यत ।

१०१८. दोय हजार लोक गढ मांहलो गढ भिळतां चोजकर निसर गयो. अेक मेवाड़नू मुसळमानरै भेख दूजै मेवाड़ै पकड़ लियो. इण तरह दूजासूं निसरिया ।

१०१९. राणे उदैसिंघरै कंवरांरा मामलांरी विगत—प्रताप पाली सोनगरा अखैराज रणधीरोतरो दोहितो ।

१०२०. उदैसिंघरा बेटांरी विगत—परताप सोनगरीरो. पांच बेटा भटियाणीरा—जगमाळ १, साह २, सगर ३, अगर ४, पंचायण ५. बीजा कंवर—सगतसिह १, रामजी २, कान्ह ३, सादूळ ४, रायसिंह ५, कल्याण ६, रुद्रसिंह ७, नगो ८, जैतसिंघ ९ ।

१०२१. जगमाल १, सगर २, अगर ३, साहजी ४, पंचायण ५, राणा उदैसिंघरा बेटा जैसळमेरर रावळ लूणकरण जिणरा दोहिता ।

१०२२. जगमाल १, सगर २, अगर ३, साहजी ४, पंचायण ५, अै पांचूं जैसळमेर रावळ लूणकरण जैतसिंहोतरा दोहिता ।

१०२३. राणो प्रताप १, सगतो २, सगर ३, अगर ४, जगमाल ५, साहजी ६, पचायण ७, रुद्रसेण ८, नगो ९, कानो १०, जैतसिह ११, सुरताण १२, नेतसी १३, बीरमदे १४, इत्यादीक राणा उदैसिंघरै बेटा ।

## प्रताप उदैसिंघोत

१०२४. राणो प्रताप सोनगरा अखैराज रणधीरोतरो दोहितो ।

१०२५. राणो प्रताप सं० १५९६ रा जेठ सुद ३ जनम. राणा प्रतापरै बेटा—अमरसिंह १, सेखो २, सहसो ३, पूरो ४, मानसिंघ ५, कल्याण ६ ।

१०२६. संवत १६६२ सावण वद ७ कछवाहो मान भगवंतदासोत अकबररी फौज ले आयो. हळदीघाटै राणै प्रताप वेढ कीवी. पातसाहरा उमराव तीन काम आया. राजा रामसाह ग्वालेररो धणी १, रामसाहरो बेटो साळवाहण २, राजा विठळदस ३ ।

१०२७. हळदीघाटी राणा प्रतापरा चाकर काम आया ज्यांरी विगत—कान्ह १, कलो २, दोय भाई प्रतापरा काम आया ।

१०२८. मेड़तियो रामदास जैमलोत जणा ९ सूं काम आयो ।

१०२९. सोनगरो मानसिंह अखैराजोत जणा ११ सूं काम आयो ।

१०३०. राठोड़ साईंदास पचायणोत जैतमल जणा १३ सूं काम आयो. सींधल वागो १, नै जैमल २, चहुवाण दुरगो ३, वागड़ियो ४, मेघो खावड़ियो ५ ।

१०३१. सं० १६३२ पातसाह अकबररै उमराव सहबाजखां गढ कुंभळमेर लियो जद सींधल सूजो सीहावत, सींधल कूंपो भांडावत, सोनगरो भाण अखैराजोत, मुहतो नरवद गढरो सिलैदार, मांगळियो जैतो जैमळ काको नै भतीजो इत्यादीक काम आया ।

१०३२. सं० १६१३ पातसाह अकबररी फौज कुंभळमेर लियो. सींधल कूंपो भांडावत, सींधल सूजो सीहावत, सोनगिरो भाण अखैराजोत काम आया ।

## उदैसिंघरा दूजा बेटा

१०३३. सगतो तोडो सोळंकी प्रथीराज सुन्द्रसेनोतरो दोहितो ।

१०३४. भाण सगतावत मोटा राजारी बेटी राजकंवरबाई परणियो. भाणजीरी बेटी महाराज गजसिंघजी परणिया. जसवंतसिंघजीरै सगो मामो सामसिंह भाणावत ।

१०३५. गोकुळदासरा बेटांरी विगत—सुंदरदास १, जुझारसिंघ २, दूदो ३, अजबसिंघ ४, फतैसिंघ ५, रुघनाथ ६, जगनाथ ७, वीरमदे ८, कल्याणसिंघ ९, हाथीसिंघ १०, हिम्मतसिंघ ११ ।

१०३६. सूंदरदास जुझारसिंघ दोनूं पातसाहरा चाकर ।

१०३७. रुघनाथसिंघ काम आयो रामसिंघ भीम अमरसिंघोतरै आगै ।

१०३८. केसोदास भाणावत मोटा राजारो दोहितो. भाटियाणी सजना नानी हुती. अै केसोदासजी घणा वरस नानी कनै रह्या. गांव सेरेचो मोटा राजारो दियो पटै हुतो ।

१०३९. अचळदास सकतावत रावत कहावै, वेगमरो धणी हुतो. इणनूं राणै अमरसिंघ कह्यो—तूं ही मोनूं दुखदायक सगर ज्यूं ही हैं ।

१०४०. अचळदासरा बेटांरी विगत—नरहरदास १, नारायण २, राणो सगर नारायणदासनूं रावताई दीवी ।

१०४१. वळू सगतावत ऊंटाळै काम आयो, राणा अमरसिंघजीरो उमराव ।

१०४२. भगवानदास सगतावत राणाजी वूढ पटै दीवी ।

१०४३. जोधो सगतावत ।

१०४४. मांडण सगतावत मऊ खीचियांरो चाकर ।

१०४५. संवत १६१६ रा भाद्रवा वद ३ सीसोदिया सगर उदैसिंघोतरो जनम. पातसाह जहांगीर मया कर अजमेर नागोर चित्तोड़ दे राणाई दीवी, वाराहजीरो मंदिर पुष्कर इण करायो ।

१०४६. सगर उदैसिंघोतनूं पातसाह रावताई दे पूरबमें जागीर दीवी, राणै अमरसिंघजी चाकरी कबूल कीवी जद ।

१०४७. सगररा बेटांरी विगत—इंद्रसिंघ १, मानसिंघ २, आसकरण ३, मोहणसिंघ ४, हरीराम ५. इंद्रसिंघ सेखावतांरो भाणेज कुंवरपदै मुवो. मानसिंघ सेखावतांरो भाणेज ।

१०४८. सं० १६३८ माह सुद १४ रो जनम. सगरजीरै पाट रावताई पायी, पूरबमें जागीर पायो ।

१०४९. महोकम मानसिंघोत मानसिंघरै पाट - काबुल उरै पेसोर जठै धारयो छै ।

१०५०. मोहणसिंह कंवरपदै देवलोक हुवो. इणरो बेटो मदनसिंह जिणनूं महोबतखां कह्यो— मैं तोकूं जागीर दूं पिण तेरा काका मानसिंघ वरजै है. आ बात सुण मानसिंघ पेट कटारी खाय मुवो ।

१०५१. खीचीवाड़ै परै उमरी भोदारो अै ठिकाणा सीसोदिया सगर उदैसिंघोतरा छोरुआंरा है ।

१०५२. अगर राणो उदैसिंघजीरो, जिणरो जसवंत पहलां राणा सगररै चाकर हुतो पछै रावळै चाकर रह्यो सं० १६७२ सोजतरो सिणलो गांव पटै हुतो. सं० १६७३ बुरहानपुर छाडियो महोबतखांरै वसियो. सं० १६७२ रावळ वेसियो सोजतरो धवळहरो गांव ११ सूं दियो. पछै महोबतखां कहायो. इण कुमत राखी जद सं १६८० सीख दीवी ।

१०५३. साहजी राणा उदैसिंघरो, जिणरै दुरजणसिंघ कछवाहा राजा वडा जैसिंघजीरो मामो ।

१०५४. साहजीरा बेटांरी विगत—दुरजणसिंघ १, माधोसिंघ २, मथुरादास ३ ।

१०५५. नगो वीकानेरिया कल्याणमल जैतसिंहोतरो दोहितो ।

१०५६. कानो राणा उदैसिंघरो, परमार करमचंदरो भाणेज ।

१०५७. कान्ह मेदड़ेचा चहुवाण नैधण अमरावतरो दोहितो ।

१०५८. रुद्रसिंघ १, जैतसिंघ २, हळवद भाला सजा राजधरोतरो दोहितो ।

२०५९. कानो राणा उदैसिंघरो परमार करमचंदरो भाणेज ।

२०६०. रुद्रसिंघ राणा उदैसिंघरो जिणनूं सुरजण वालीसै मारियो जद नाणवै डावां ले सास छूटो ।

२०६१. सुरताण १, सादूळ २, चंद मेहराजोत खीचीरा दोहिता ।

## राणा प्रताप

२०६२. राणा प्रतापरा कंवरांरा मामला विगत—अमरसिंघ १ पूरबिया परमार मयारखखां असोकमलोतरो दोहितो ।

## अमरसिंघ प्रतापसिंघोत

२०६३. राणो अमरसिंघ पूरबरो परमार मयारखखां असोकमलोत तिणरो दोहितो ।

२०६४. राणो अमरसिंघ पंवांरारो भाणेज. पातसाह जहांगीर अजमेर आयो जद साहजादा खुरमनूं अजमेर मेलियो. साहजादै गोगूंदै तखत करायो. राणो अमरसिंघ गोगूंदै खुरमसूं मिलियो ।

२०६५. राणो अमरसिंघ सं० १६१६ रा चैत सुद ७ जनम. सं० १६६६ उदैपुर पाट बैठो ।

२०६६. सं० १६६६ रा फागण सुद ११ वेढ हुई. नवाव अबदुल्लाखांरै नै राणा अमरसिंघरै. जद इणांरा इता उमराव काम आया—मेड़तियो मुकंददास जैमलोत १, जैतारणियो हरिदास वळू तेजसिंघोतरो २, सीसोदियो दूदो सांगावत ३, झालो भोपत ४ ।

२०६७. सं० १६७१ राणा अमरसिंघजी गोगूंदे राजा सूरसिंघजी नवाब अफजलखांरो वांहसूं खुरमसूं मिलिया. चाकरी कबूल कीवी. जद सगरनूं रावताई दे पूरबमें जागीर पातसाहजी दीवी ।

२०६८. सं० १६७४ रा फागुण सुद २ राणो अमरसिंघ साहजादासूं मिलियो जद साहजादारा दरबारमें मिलिया नै तीन बैठा—राणाजी, राजा सूरजसिंघजी नबाब अफजलखांजी ।

२०६९. राणारा कंवर करणनूं ले खुरम अजमेर आयो. संवत १६७१ रा फागणनें करण जहांगीररै पगां लागो ।

२०७०. सं० १६१६ रा चैत सुद ७ अमरसिंघरो जनम. संवत १६७६ राम कह्यो ।

## राणा प्रतापरा दूजा कंवरांरो

२०७१. सीहो राणा प्रतापरो भोपतसीहोत राणा जगतसिंघरो मेलियो पातसाहजीरी

हजूर रहतो. वडो दातार वडो ठाळवरो सिरदार हुवो. उणरै बेटा केसरीसिंघ ।

१०७२. कचरो वेदळै पुरबिया चहुवाण परवतसिंघ रूपसिंघोतरो दोहितो ।

१०७३. सहसो गोपाळदास तोडै सोळंकी रामचंद प्रथीराजोतरा दोहिता ।

१०७४. पूरो होथी जोधपुर भोजराज राव माल मालदेवोतरा दोहिता ।

१०७५. पूरणमल राणा प्रतापरो जिणनूं हजूरसूं संवत १६६४ मेड़तारो गांव डोभड़े पांचांसूं दीवी. सं० १६६६ गांव ढाही मेड़तारो गांवां पांचांसूं हजूर वगसियो ।

१०७६. कल्याणदास मालपुरै परमार पचायण करमचंदोतरो दोहितो ।

## राणा अमरसिंघरा कंवर

१०७७. राणो अमरसिंघ सं० १६१६ रा चैत सुद ७ जनम. कंवरांरी विगत— करण १, भीम २, सूरजमल ३, वाघ ४, उरजण अपतियो ५ ।

१०७८. राणा अमरसिंघरा कंवरांरा माळरी विगत—करण तुंवर साळवाहण रामसिंहोतरो दोहितो ।

राणो करण तूंवर साळवाहण रामसिंघोत जिणारो दोहितो ।

भीम वीरपुरा अखैराज कान्हावतरो दोहितो. वाघ १, सूरजमल २, हळवदरा झाला मानसिंघ जैतावतरा दोहिता ।

सीसोदियो वाघ राणा अमरसिंघरो संवत १६६५ आगरै रावळासूं सर गांव दूधोड़ गांव २०सूं पटै देता हा पिण इण वात न मानी. वाघरो सबळसिंघ ।

सूरजमल सुजाणसिंघ राणा अमरसिंघरो बेटो डीलायती पटै फूलियो ।

राणा अमरसिंघरो सूरजमल. सूरजमलरो सुजाणसिंघ वडो डील, पटै फूलियो ।

उरजण देवड़ा भानीदास हरराजोतरो दोहितो. सीसोदियो अरजणजी राणा करणरी तरफसूं पातसाहरी चाकरी रहतो राणाजीरो साथ लियां ।

## करण अमरसिंघोत

१०७९. संवत १६४० रा सावण सुद १२ जनम राणा करणरो. संवत १६७६ उदैपुर पाट बैठो. संवत १६८४ फागुणमें देवलोक हुवो ।

## राणा करणरा कंवर

१०८०. राणो करण संवत १६४० रा सावण सुद १२ जनम. बेटांरी विगत— जगतसिंघ १, गरीबदास २, छत्रसिंघ ३ ।

१०८१. राणाकरणरा कंवरांरी विगत—जगतसिंघ महेचा जसवंत कलावतरो दोहितो।

१०८२. महेची जमना कला मेघराजोतरी राणो करण परणियो जिणरो बेटो राणो जगतसिंघ।

१०८३. राणो जगतसिंघ महेचा जसवंत कलावतरो दोहितो।

## जगतसिंघ करणसिंघोत

१०८४. सं० १६९० में राणो जगतसिंघजी देवळियारो धणी रावत जसवंतसिंघ जिणनूं चूक कराय मरायो. राठोड़ रामसिंघ करमसिंघोत मुडासै राणारो भाणेज उमराव दूजा ही राणाजीरै साथै हुता. रावत जसवंतसिंघ राठोड़ सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो।

१०८५. राणो जगतसिंघ करणसिंघोत सं० १६६४ रा भाद्रवा सुद १२ रो जनम. संवत १७०९ काती वदी ४ वार रवि घड़ी ५ पाछलै दिन थकां राम कह्यो।

१०८६. राणियां सत कियो ज्यांरी विगत—छपनीजी राठोड़ी १, राणी वालोतणीजी चहुवाण २, छोटी मेड़तणीजी ३, राणी परमारजी ४, राणी ईडरेची ईडर सत कियो ५, राणी झाली हरदासरी बेटी झालावाड़में सत कियो ६।

१०८७. लालजी वागड़िया चहुवाण जसवंतरो दोहितो।

१०८८. गरीबदास हलवद झाला भोपत जैसावतरो भाणेज।

१०८९. राणो जगतसिंघ संवत १६६४ रा भाद्रवा सुद २ जनम. कंवर—राजसिंघ १, अरसी २।

१०९०. राणा जगतसिंघरा कंवरांरो विगत—राजसिंघ अमरसिंघोत मेड़तिया राजसिंह विसनदासोतरो दोहितो।

## राजसिंघ जगतसिंघोत

१०९१. राणो राजसिंघ सं० १६८६ रा काती वदी १ जनम।

१०९२. संवत १६८६ रा काती वद १ राणा राजसिंघ जगतसिंघोतरो जनम. संवत १७०९ रा माहमें टीकै बैठा।

१०९३. मानजी जती राजविळास नांव रूपक राजसिंघरो बणायो।

१०९४. संवत १७३२ रा माह सुद १५ राणै राजसिंघ राजसागररी प्रतिष्ठा किवी।

१०९५. अेक हजार गाय, छियासी हजार रुपया, च्यार गांव सासण ब्राह्मणांनूं कृष्णार्पण दिया प्रतिष्ठारै दिन।

१०९६. तुळा रूपारी पांच हुई जिणरी विगत—रूपारी तुळा १, राणाजीरी राणी परमारजी किवी. रूपारी तुळा १ ऊदावतजी टूंक तोडारो राजा रामसिंघ भीमरो जिणरी मा नूंतै आया उवां कीवी. रूपारी तुळा १ सोदै बारट केहरीसिंघ खीमराजोत कीवी. रूपारी तुळा १ पुरोहित गरीबदासरै बेटै किवी।

१०९७. सोनारी तुळा दोय—अेक पुरोहित गरीवदास किवी. अेक राणै राजसिंघजी कीवी, आवधां सूधा तुळा बैठा।

१०९८. बूंदीरो रावराजा भावसिंघजी ज्यांरो प्रधान सावंतसी सीनूं तो लै आयो च्यार घोड़ा, २०००) रुपया हाथीरा, ३५००) रुपया रोकड़ टीकारा।

१०९९. राजा रायसिंघ भीम अमरसिंघोतरो जिणरी मा नूंतै आयी. छै घोड़ा निजर किया, २०००) हाथीरा निजर किया।

११००. रामपुरसूं नूंतो आयो घोड़ा च्यार, हाथी अेक सैदरूप, रुपया १५०००) रोकड़ नूंतो।

११०१. हीरै टोकड़ियै राणा राजसिंघजीनूं बहकाय राजसिंघजीरा कुंवर सुरताण-सिंघजी सिरदारसिंघजी राणाजीरा हाथसूं मराया।

११०२. पछै कुंवर भीमसिंघजीनूं राज देणों तेवड्यो नै राणाजीनूं कुंवर जैसिंघजी-नूं चूक तेवड़ायो. साह दयाल नूरपुरीमें हीरारो चाकर राणाजीसूं मालम कीवी. राजसिंघजी कुपित कर व हीरानूं मरायो. हीरो सामधीहो कहीजै है।

११०३. उदैपुरसूं आय राणा राजसिंघरो कंवर औरंगजेबरा पगां लागो. दरगाह आया. जद पातसाह भारी सरपाव मोती दिया, राणानूं सिरपेच जड़ाऊ भेज्यो।

## जैसिंघ राजसिंघोत

११०४. राणा जैसिंघजी घाणेराव पधारिया जद आडावळामें कोठारिया वड़ जठै डेरा किया. रावत केहरसिंघजी केळवाड़ारी स्याहजी साथ हुतो।

## संग्रामसिंघ अमरसिंघोत

११०५. राणो संग्रामसिंघ अमरसिंघोत कोठारियारो राव वखतसिंघजी ज्यांरो भाणेज।

११०६. राघो हरी पागियो दिखणी अड़सीजी फौज सामल हुतो पटैलसूं राड़ हुई जद।

११०७. राणै अड़सीजी कोठारियै डेरा किया. अमरचंद बड़वानूं फुरमाया—विना हांसल चुकायां श्रीजीरै द्वारै रसत मोल गयी उदैपुरसूं सो श्रीजीद्वारासूं

खेचल करणी, जद पीरोजखां चंदर, मलंग वगेरै सिंधी विदा किया – उवै श्रीजीद्वारै रोड़िया. सिंघवी भींवराजजी दरबारसूं श्रीद्वारै हुता. अै चढिया. झगड़ो हुवो. सिंधी मलंग देवड़ा सवाई नोसरा वाळारी गोळी लागी. मुवो. फतै जोधाणनाथरी हुई ।

११०८. राणारी सवारीरो घोड़ो वेराड़ दलेळसिंघ लियो नै छत्र चंवर ही इण लियो ।

११०९. राणारा घोड़ा कनै वहण वाळा चोपदार दोनूं हाथांनूं जोर करी अजीतसिंघ-जीरै माथै सोनारी छड़ीरा टुकड़ा किया. अजीतसिंघजीरै माथो ऊपरसूं जोजरो हुवो ।

१११०. रूपोजी १, जीधोजी २, कीकोजी ३ अै तीन सगा भाई गूजर राणा अड़सी-जीरा धायभाई ।

११११. रूपै धायभाई रूपनारायणरो मंदिर करायो. उदैपुर उरै नदी वहै जिणरी पुळ बंधायी ।

१११२. राणा भींवसिंघरी बेटी देवकुंवर कल्याणसिंघजी परणियो सिवदानसिंघ महाराजारी बेटी सिणगारकुंवर मोतीसिंघजी परणियो ।

१११३. कूंभारी मोती राणा भीमसिंघरै मरजीरी खवास है ।

१११४. मखदूम गुलाम मुहम्मद भीमसिंघजीरै वखत आयो हो उवलारी हो ।

१११५. सं० १८८५ चैत सुद १४ उदैपुर में राणो भीमसिंघजी देवलोक हुवा ।

१११६. पूनारो उकील राणाजीरी तरफसूं पींपलियारो धणी-सगतावत. राणोजी दूसरा वारो सिरपाव देता सो पेसुआनूं कनै जाय देता, पेसवो सामो आय लेतो ।

१११७. राणाजीरै मेवाड़रा परगनारा गांवांरी विगत –

चित्तोड़ गांव ३०१, गोढवाड ३६०, जसावरा गांव ५२, गरवांरा गांव १४०, मदारीरा गांव २००, कुंभळमेररा गांव ७००, देवळियारा गांव १२०, भैंसरोड़गढरा गांव ५००, छपनरा पांच परगनांरा गांव १६०, पटारा गांव ३६० ।

मेछल भीलवाड़ारा गांव परगना दोय उदैसिंघ राणा गमिया अकबर पातसाह चित्तोड़ लियो जद – बूंदी १, रामपुरो २, गांव १५०० रामपुरारा, गांव १००१ बूंदीरा, गांव १३५१ डूंगरपुररा, गांव १३५० बांसवाळारा, गांव ३६० वधनोररा, गांव ८४ वेगमरा, गांव २४० मांडळरा, गांव ३६० भींणेरा, गांव पचास रै पांच पातसाह जहांगीर राणा अमरसिंघनूं

दिया, कुंवर करण अजमेर पातसाहरा पगां लागो, राणो अमरसिंघ गोगूंदै साहजादा खुरमसूं मिलियो जद चाकरी वदळ.......।

१११८. दसरावारा दिनांमें कोठारियारो राव, सादड़ीरो राजा, वेदळैरो राव, सलूंबररो रावत अै च्यार सिरदार ज्यांरै डेरै श्रीदीवाण पधारै।

१११९. उदैपुर चाकरांरी लुगायां राणियांरै पगां लागै नहीं, ओढणारो पल्लो हाथमें लेनै तीन बार हाथ जमी लगाय सलाम करै।

११२०. उदैपुर राणाजी ही चाकरांनूं विदा करै जद बीड़ा दै. राणियां रणवासां चाकरांरी त्रियांनूं बीड़ा दै।

११२१. राणाजी देवलोक हुवै जद पाटवीं कुंवर पछेवड़ा ओढ लै. राणाजीनूं दाग दे पाछा आवै तरै उमराव दरबारमें जद कोठारियैरो राव कुंवर माथानूं पछेवड़ो दूर करै।

११२२. उदैपुर नगर सोमवार चहुवाणांरो चोकी वेदळारो राव नांवै नै पारसोली कोठारियारो राव चौकी आवै. मंगल राणावत चोकी आवै. बुधरै दिन प्रधान कानोड़रो रावत बीजोळियांरो राव और अरग जो चोकी आवै. गुरुवाररै झाला चोकी आवै सादड़ीरो राजा जीम डेरै जावै देलवाड़ो गोगूंदो चौकी रहै. शुक्ररै दिन राठोड़ चोकी आवै. शनीचररै दिन सगता चौकी आवै।

११२३. उदैपुर उमराव राणैजीरै चोकी आवै जिणरी विगत – रवी चूंडावतांरी चोकी, सलूंबररो धणी पांतियै जीम डेरै जावै. बेगम, आंबेट, देवगढ चोकी रहै।

११२४. उदैपुर सोळै उमरावांनूं सात सींकरो बीड़ो दिरीजै. देसनिकाळो दै जिणनूं तीन सींकरो बीड़ो दै।

११२५. उदैपुर आबदारखानो पाणेड़ो कहावै. कपड़ारो कोठार निकांरी ओड़ी कहावै. दवाखाना ओखधरी ओरी कहावै. तंबोळ खानारी ओरी बीड़ा वणै. सिंघळखानारी ओरी ससतर रहै।

## मेवाड़रा सरदार

### बनेड़ो

११२६. बणहड़ारी राजांरी पीढी लिखंते – राणो राजसिंह १, भीमसिंघ २, सूरजमल ३, सुरताणसिंघ ४, सिरदारसिंघ ५, रामसिंघ ६, हमीरसिंघ ७, भीमसिंघ ८।

११२७. वीकानेररा राजारी बेटी रायसिंघजी वणहड़ारो राजा परणियो ।

११२८. रायसिंघजी वणहड़ा कनै राजपुर वसायो. वणहड़ारो राजा रायसिंघ उजेण वावां पड़ियो, मारगमें मुवो ।

११२९. जगमालोत राणावत रतनसोत जोधा अै आठ उमराव वणहड़ासूं अढाई कोस गांव आमणियो जठांरा जोधांरी भोम पैलां वणहड़ामें हुती ।

११३०. ओसवाळ डागळिया खींवसरा वणहड़ै कामेती है ।

११३१. ओसवाळ वरढिया वणहड़ै कामेती है, भंडारी कहावै ।

## झाला

११३२. सादड़ीरो राजा झाला जिणसूं राणोजी राणो लिखै. दूजारा नगारा देवारीमें न वजै छै. इणरो नगारो ईकरको दहबारीसूं जगन्नाथरायजीरा मंदिर तांई वजतो जाय, छत्र चमर ही उडता आवै ।

## वेदळो

११३३. वेदळा धणी राव रामचंदजी जिणनूं राणैजी वीड़ो छै सींकरो दियो. इण वेदळारो पट्टो निजर कियो. राणैजी फुरमायो तंबोळीनूं लावो, सजा कर करो छव सींकारो वीड़ो क्यों वणायो. आ खबर पाय तंबोळीरा राव रामचंदजीरा घोड़ारै सरणै गयो. रावजी तंबोलीरो गुनो माफ करायो ।

११३४. वेदळै आंबा औ पहाड़ सजळ है. सिकार राजनूं उढै घणा है. आरासरी अंबाय कहावै ।

## कोठारियो

११३५. चूंडावत जगै सीधावत चहुवाण ठाकुरनूं वहिन परणाय कोठारियो आपरै पटै हो सो परो दियो, मदारियो आपरै राखियो ।

११३६. चूंडावत जगो सीधावत वागड़में चहुवाण मारियो ।

११३७. सहर सूरतमें राणो प्रताप गोसरे हियो विखामें उमरावां कुंवरां समेत सूरतरा सूबेदारनूं मार घोड़ा चलाया. राणारा हाथरी बरछीसूं सूबेदाररा अंग रही. कोठारियारै राव जायनै आणी. ऊ दिन दसरावारो गाहणां समेत सिरपाव राणोजी कोठारियारा धणीनूं दियो । जिणसूं हर दसराबै राणोजी दसरावारो सिरपाव गहणां समेत कोठारियारा रावनूं वगसै ।

११३८. कोठारियारो धणी कुरब वेदळारा धणीनो दिराणो है राणाजीरा दरबारसूं ।

## सलूंबर

११३९. सलूंबरा रावतांरी पीढी लिखँते—राणो लाखो १, चूंडो २, कांधळ ३, रतनसी ४, सांईदास ५, खंगार ६, किसनो ७, जैतो ८, मानसिंघ ९, रघुनाथसिंघ १०, रतनसी ११, कांधळ १२, केहरसिंघ १३, कुबेरसिंघ १४, भानसिंघ १५, भवानीसिंघ १६, पदमसिंघ १७।

११४०. सिसोदिया सिंघ कांधळ चूंडावतरा बेटा तीन हुवा—जगो १, सुरताण २, महाराजकुंवार गजसिंघजी तोडै कछवाहा जगन्नाथरी बेटी परणिया. तोडा थकां सीतळा नीसरी. वण स्या पड़िया. कंवरजीरै वडो खेद जद भाटी गोइंददास मानावतरो बेटो मोहणदास मर गयो।

११४१. चूंडावत मानसिंघ जैतावतरा रजपूत मानसिंघ मूजावत तेजो बोलियो. राणाजी कनैसूं पटौ लिखाय बंभोरी सारंगदेओतां कनासूं ले लियो. रावत मानसिंघरो अमल बंभोरीमें कियो. ईडररा धणीरा उमराव छपनियो राठोड़ मार छपनड़ी प्रगनो राणाजीरै घरै आणियो।

११४२. गुदोच सेरसिंघरी बहन अभैकंवरबाई सलूंबर रावत भीमसिंघजीनूं परणायी।

## बींजोळियो

११४३. हमैं बीझोळियां राय केसोदास सुभकरणोत है. इणरी बेटी राणा भीमसिंघजीरा कंवर अमरसिंघनूं परणायी उणनै सत कियो।

## देवगढ

११४४. देवगढ़रा रावतांरी पीढियां लिखंते—राणो लाखो १, चूंडो २, कांधळ ३, सिंघ ४, सांगो ५, दूदो ६, ईसर ७, गोकळदास ८, द्वारकादास ९, संग्रामसिंघ १०, जसवंतसिंघ ११, राघोदास १२, अनोपसिंघ १३, गोकळदास १४।

११४५. देवगढरा रावतांरो वडेरो ईसरदास जिणनूं मेर मोटै कीट मारियो हो—

कीट कटारी चालवी, खटकी खूमाणाह।
मोटै ईसर मारियो, डाकी भरडाणाह।

११४६. सांगो सींघोत तळाधूवासरा पीर कनै गयो जद पीर लखमीनाथ बाबाजी घोड़ी दीवी, कटारी दीवी; कह्यो—थारो नांव वधसी देवगढ लखमीनाथरी सासती रहै घोड़ी पायगामें।

११४७. राणोजी घटावळीजीरै मगरै वाघ मारण गया जद सांगै वाघनूं मारियो. अेक हाथ सांगारो जखमी हुवो. राणाजी केळवो दियो।

११४८. पुर मांडळरै पीर जांनै सांगांनूं नगारो दियो. कह्यो—थारा वंसरो मांझी काम आसी तरै फतै हुसी।

११४९. सिरै दुहूं संग्रामरा जसवंत नै जैसिंघ. जसवंत देवगढ, जैसिंघ संग्रामगढ।

## वेगूं

११५०. वेगमरा रावतांरी पीढ़ी लिखंते—राणो लाखो १, चूंडो २, कांधल ३, रतनसी ४, सांईदास ५, खंगार ६, गोइंद ७, मेघ ८, राजसिंघ ९, महासिंघ १०, अनोपसिंघ ११, हरिसिंघ १२, देवसिंघ १३, मेघसिंघ १४, प्रतापसिंघ १५।

११५१. वेगम वाळो चूंडावत वल्लभकुळ-सेवक है द्वारकानाथजीरा मंदिररो।

## देलवाड़ो

११५२. गुदोच सेरसिंघरी बेटी उदैकंवरबाई देलवाड़ै राजा कल्याणसिंघजीनूं परणायी।

## आमेट

११५३. आंबेटरा रावतांरी पीढियां लिखंते—लाखो १, चूंडो २, कांधल ३, सिंघ ४, जगो ५, ………… ६, करण ७, मानसिंघ ८, माधोसिंघ ९, गोवरधनसिंघ १०, दूलैसिंघ ११, प्रथीसिंघ १२, मानसिंघ १३, फतैसिंघ १४, प्रतापसिंघ १५।

## कानोड़

११५४. कानोड़रा रावतांरी पीढी लिखंते—राणो लाखो १, अजो २, सारंगदे ३, जगो ४, नरवद ५, नेतो ६, भाण ७, जगनाथ ८, मानसिंघ ९, महासिंघ १०, सारंगदे ११, प्रथीसिंघ १२, जगतसिंघ १३, जालमसिंघ १४, अजीतसिंघ १५।

## भींडर

११५५. भींडररा महाराजांरी पीढियां लिखंते—राणो उदैसिंघ १, सगतो २, भाण ३, पूरो ४, सबळसिंघ ५, मुहकमसिंघ ६, अमरसिंघ ७, जैतसिंघ ८, उमेदसिंघ ९, कुसाळसिंघ १०, मुहकमसिंघ ११, जोरावरसिंघ १२।

११५६. भींडररा महाराजरी मा बाई राजबाई जे मोटा पली तीने लीकी पातसाहरी दीवी है. दसरावारो डूगलो, गणगोरीरो सिपराव, वलाणो घोड़ो सलूंबरसूं भींडर-महाराज पावैं।

११५७. पानसलरो सगतावत भीडर खोळै आयो है।

११५८. सावररो धणी सगतावत इंद्रसिंघ जिणरो दोहितो वधनोर अखैसिंघ।

११५९. मेड़तिया पदमसिंघ प्रतापसिंघोतनूं उदैपुर हवेली ऊपर राणाजी साथै मेल मरायो. नबेगडीरो सिरदार राणाजीरो उमराव जिण उदैपुरसूं आय काहणारा तळाव माथै डेरा किया. गोठरै मिस कंवर किसनसिंघनूं घाणेरावसूं तेड़ अेकंत ले डेरामें मारियो. चीणो चाकर किसनसिंघरो कूंजा बरदार काम आयो. जातरो डागळियो जिणरी सोराणजीरी मुतसदी कुंभळमेरसूं घाणेराव आयो. राणाजीरो अमल कियो।

११६०. पदमसिंघजीरा कबीला वसी धण ले कूंपावतांरै गया. उणां आछी तरहसूं राखिया।

११६१. मेड़तियो उरजण रायमलोत चित्तोड़ काम आयो जैमलजी ईसरदासजी साथ।

११६२. जैमलरै टीकै सुरताण जिणनूं संवत १६४२ पातसाह अकबर मेड़तो दियो।

११६३. सुरताणरै कईक दिन परगणो मलहारणो पिण रह्यो।

११६४. सीळ भाखरी स्वेत पाखाणरो स्वरूप मेड़तियै दाणीदास गोपाळदास सुरताणरै काबिलरी हदसूं आणी पधरायो।

११६५. जगन्नाथ गोइंददासरो १, सांवळदास गोइंददासरो २, सुंदरदास गोइंददासरो ३, गोइंददास जैमलोत।

११६६. वानसीरा सगतावतां मांहला सगतावत दोय कलावत दोय बला।

११६७. पारसोली मांहेला चहुवाण।

११६८. वीदा जैतमालरो बेटो नैतसी राड़धारासूं मेवाड़ आयो. राणाजी पटो दियो. उणरा हमै केळवै है।

११६९. किसनदास जैतमालोतरै पटै वणेल थी, पछै देसूरी पटै पायी. पछै केळवो पटै पायो।

११७०. सबळसिंघ रामसिंघोत वेदळै राव. केहरीसिंघ रामसिंघोत पारसोली राव।

११७१. अदळ लियो वदळो नकूं राखिज्यो बुधारी।
आो गीत आसिया हरराम उदैभाणोतरो कह्यो है।

११७२. कोटा सुरसा भास्कर सोळंखी प्रतापसिंघ बेटी वीरमदे समेत उदैपुर आयो जद टीकड़ियो तुळछीदास जात सोळंखी राणाजीरै मनीजै. इणरी हवेली जाय प्रतापसिंघ उणांरो होको पियो. इण देसूरी दिरायी।

# गहलोतांरा दूजा राज

## देवलियो-प्रतापगढ़

११७३. नव लाख रुपयांरी पैदास देवळियारा धणीरै हुती ही. डूंगरपुररा धणीरै इती ही बांसवाळारा धणीरै ।

११७४. साहपुरो देवळियो दोय पांख उदैपुररी अै ।

### साहपुरो

११७५. साहपुरारा राजारी पीढियां लिखंते—राणो अमरसिंघ १, सूरजमल २, सुजाणसिंघ ३, दोलतसिंघ ४, भारतसिंघ ५, उमेदसिंघ ६, हमीरसिंघ ७, भोगसिंघ ८ ।

११७६. सायपुरै राजाई भारतसिंघजी पायी ।

११७७. सेरसिंघजी १, सिरदारसिंघजी २, कुसळसिंघजी ३, उमेदसिंघजी ४, जसकरणसिंघजी ५ अै पांच बेटा सहापुरारा राजा भारतसिंघजीरै ।

११७८. साहपुरै उमेदसिंघजी पिता भारतसिंघजीनूं कैद किया हा. साहपुरा राजा उमेदसिंघ पिता भारतसिंघनूं कैद कियो हो सो छोडियो नहीं ।

११७९. पाटवी कंवर उदोतसिंघनूं जहर दे मारियो. उदोतसिंघरा बेटा रणसिंघनूं मारण सिपाही मेलियो. उणरा हाथरो घाव रणसिंघरा मूंडा माथै लागो जद चवदै बरसरो भीमसिंघ रणसिंघरो कंवर जिणरी तरवार चली. ऊ सिपाही मार राखियो बेटा जालमसिंघनूं साहपुरै मालक करणरी उमेदसिंघ विचारी ही ।

११८०. जगमाल उदैसिंघोतरै वंसरा राणावत १, कानावत २, कछवाहा सुरताणोत राजावत ३, राठोड़ चांदावत ४, अै च्यार उमराव साहपुरै ।

११८१. कोठियां धनोप अै चांदावतांरा ठिकाणा साहपुरा हेटै पड़िया ।

११८२. देवळियारा रावतांरी पीढ़ी लिखंते. राणो मोकळ १, खेमो महाराज २, सूरजमल ३, वाघ ४, रायसिंघ ५, वीको ६, तीजो ७, सांखो ८, जसवंतसिंघ ९, हरीसिंघ १०, प्रतापसिंघ ११, प्रथीसिंह १२ गोपाळसिंघ १३, सालमसिंघ १४, सावतसिंघ १५ ।

११८३. देवळियारो धणी रावत कहीजै. गांव सात सौ है. हजार घोड़ांरी साहबी ।

११८४. देवळियारा धणी सीसोदिया ज्यांरै नानाणारी विगत लिखंते—सूरजमल खेमावत सोनगरा रणबीर वणवीरोतरो दोहितो ।

११८५. सूरजमलरा कंवरांरी मामलरी विगत. वाघ १, संसारचंद २, सहसमल ३, रणमल ४, कलो ५, पांचू ६, वीकानेर लूणकरण वीकावतरा दोहिता ।

११८६. रावत सूरजमल खेमावतरै बेटा—वाघ १, किसन २, वीको ३, रावत वाघरै तेजो तेजारै मानो रावत. वरस दोय राज कियो पछै सैद उमरावसूं लड़ाई हुई. मानो रावत काम आयो. इणरै बेटी अेक ही जिका सिरोही राव अखै-राजनूं परणायी. मानारो टीको भाई सीयानै आयो. रावत सीयारो जसवंत ।

११८७. रावत वाघरा कंवरांरा मामलरी विगत—रायसिंघ वागड़ियो चहुवाण वीरसलदे वरसिंघोतरो दोहितो ।

११८८. रावत रायसिंघरा कंवरांरी मामलरी विगत—वीको वेगम हाडा जीतमल देवावतरो दोहितो ।

११८९. रावत वीकारा कंवरांरी मामालरी विगत—तेजमाल छपनिया राठोड़ जैमल जैचंदोतरो दोहितो ।

११९०. किसनसिंघ मेड़तै रायमल दूदावतरो दोहितो ।

११९१. रावत जसवंतसिंघनूं सं० १६९० राणै जगतसिंघ चूक कराय मरायो ।

११९२. राठोड़ रामसिंघ करमसेणोत बीजो ही साथ विदा कियो हो रावत जसवंतसिंघरै साथ बडो बेटो महासिंघ काम आयो ।

११९३. रावत जसवंतसिंघ राठोड़ सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो ।

११९४. संवत १६९० में राणै जगतसिंघ देवळियारा रावत जसवंतसिंघनूं चूक कराय मरायो जद मुदै चूकमें राठोड़ रामसिंघ करमसेणोत और ही उमराव राणाजीरा साथै हुता. रावत जसवंतसिंघ राठोड़ सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो ।

११९५. संवत १६९० में राणै जगतसिंघजी देवळियारो धणी रावत जसवंतसिंघ जिणनूं चूक कराय मरायो. राठोड़ रामसिंघ करमसिंघोत मुडासै राणारो भाणेज उमराव दूजा ही राणाजीरै साथै हुता. रावत जसवंतसिंघ राठोड़ सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो ।

११९६. रावत जसवंतसिंघरो पाटवी कुंवर महासिंघ रावत साथै काम आयो ।

११९७. जसवंतसिंघरो बेटो हरसिंघ जसवंतसिंघरै पाट बै ।

११९८. जसवंतसिंघरी गादी रावत केसरसिंघ ।

११९९. देवळियारा दीवाण सावंतसिंघजीरो कुंवर दीपसिंघजी पहलां भिणाय परणियो हुतो. पछै फतैगढ़ परणियो ।

१२००. देवळियै दीपसिंघ सावंतसिंघोतरो वडो बेटो केसरीसिंघ भिणायरो भाणेज ।

१२०१. दीपसिंघरो दूजो बेटो दळपतसिंघ फतैगढरो भाणेज डूंगरपुर-रावळ जसवंत-सिंघरै खोळै ।

१२०२. देवळियै च्यार सिरायत—रायपुर १, साकधजी २, झातळा ३, धमोतर ४ ।

## डूंगरपुर

१२०३. डूंगरपुर रावळांरी पीढी लिखंते—समरसी १, कालीकान्ह २, पातो ३, गोपीनाथ ४, सोमदास ५, गंगेव ६, उदैकरण ७, प्रथीराज ८, आसकरण ९, सहसमल १०, करमसी ११, पूंजो १२, गिरधर १३, जसवंतसिंघ १४, कुमाणसिंघ १५, रामसिंघ १६, सिवसिंघ १७, बैरीसाळ १८, फतैसिंघ १९ ।

१२०४. डूंगरपुररा रावळांरी वंसावळी—करमसीरो रावळ कानड़दे श्रीमन्नारायणसूं १२९ पीढियां छै ।

१२०५. कानड़देरो परतापसी, परतापसीरो गेपो जिण डूंगरपुर गैबसागर तळाव करायो, गेपारो स्यामदास, स्यामदासरो गांगो, गांगारो उदैसिंघ, उदैसिंघरो प्रथीराज, प्रथीराजरो आसकरण, आसकरणरो सहसमल ।

१२०६. रावळ आसकरण प्रथीराजोत राव मालदेजीरी बेटी पुहपावती बाई परणियो हुतो. जिखामें चंद्रसेण मालदेवोत डूंगरपुर गयो. रावळ आसकरण वडा हीड़ा किया ।

१२०७. डूंगरपुररो धणी रावळ उदैकरणजी सांगा राणारी मदत सीकरी काम आयो. कुंवर जगमाल घावां उपड़ियो. उणरै वंसरा वांसवाळारा रावळ ।

१२०८. चावड़ा गोपाळदासनूं मारियो. पछे प्रतापसी रायमलोत डूंगरपुररा रावळरी सभामें बैठा चावड़ानूं मारियो. पछे राव चंद्रसेणजी विखामें डूंगरपुर गया जद कुंवर आसकरणजीनूं चावड़ा परणाया ।

१२०९. रावळ सहसकरण आसकरणोत डूंगरपुररो धणी जिणरी बेटी महाराज सूर-सिंघजी परणिया. कुंवर सवळसिंघजी सहसमलरा दोहिता ।

१२१०. साढी सतरैसौ गांव सेवाय सगवाड़ी सहरवंटमें आयो डूंगरपुररा रावळरै सगवाड़ा वदळै आडाईरो तळाव वांसवाळारै रावळरै आयो ।

## वांसवाड़ो

१२११. वांसवाळांरा रावळां री पीढी लिखंते—समरसी १, काळीकान्ह २, पातो ३, गोपीनाथ ४, सोमनाथ ५, गंगेव ६, उदैकरण ७, जगमाल ८, जैसिंघ ९,

कल्याणमल १०, अग्रसेण ११, उदैभाण १२, समरसी १७, कुसळसिंघ १४, अजबसिंघ १५, भीमसिंघ १६, बिसनसिंघ १७, प्रथीराज १८, विजय-सिंघ १९।

१२१२. वांसवाळै रात्रत प्रथीसिंघरो रावळ विजैसिंघ, विजैसिंघरो उमेदसिंघ, उमेदसिंघरो भवानीसिंघ हमैं है।

१२१३. वांसवाळै रावळ कुसलसिंघजीरा मोता चाकर राखिया पूणा दो सौ गांव पटै दिया. वागड़िया चहुवाण छांड गया था जद रामोतांरो मुदै ठिकाणो कुसळ-गढरो धणी महीपड़रो राज कहावै है।

१२१४. वांसवाळारो रावळ सिंघ वाहण देवी जिणरी आण काढै।

## गोहिल

१२१५. साळवाहण गोहिलरो बेटो सुद बुद सावलिगारै सासरै पारानगर जोगीरो भेख आयो हुतो।

१२१६. राजपींपळीरो धणी गोहिल भीम जिणरा बेटा अरजुण-हमीर सोमहिया महादेवरी वाहर खूनी अलाउद्दीनसूं जंग करि जाळोर काम आया।

१२१७. यांरो छोटो भाई कलो जिणरै वंसरा रामोत वरसिंहोत मेड़तिया है। ओळी १४ रा राजपींपळा हैं।

१२१८. हमीर-अर्जुणरै साथ दातीवाळरो धणी कोळी वेगरो रात काम आयो-आंटियो वाणियो, रुद्रवो बामण, धूड़ियो भील।

## रामपुरारा चंद्रावत

१२१९. श्रीराम-उपासक चंद्रावत राव महोहकसिंघ अमरसिंघ सुत-अै आखर रामपुरारा रावरी महोरमें।

१२२०. आवड़सूं उठ चंद्रावत रामपुरो जीवनदानोजी भदाणो १, भाट २, खेड़ी ३, मुळेरी ४, पाहेड़ी ५, करडावावण ६, अजैपुरो वगेरा रामपुरारा राव उमराव जांरा ठिकाणा।

## फुटकर

१२२१. गांव दोय सौ गंहलोतांरा दिली-मंडळ में है. राणो नरपतसिंघ उठै हुवो, हमैं अेक राणो वाजै दूजा गहलोत चौधरी वाजै।

# [४] यादवांरी वातां

## भाटी

१२२२. भाटियांरी खांप लिखंते—जेचंद १, जेतुग, २, बुध ३, केलए ४, सरूपसी ५, सीहड़ ६, लेना ७, छीकरए ८, पोहड़े ९, पाहू १०, नहु ११, वारूसी १२, जेतसी १३, हमीर १४, ऊनड़ १५, धुवड़ १६, रायधर १७, राय १८, सामतसी १९, अएगा २०, अड़कमल २१, वरसिंव २२, खीया २३, कैहर २४, अरसुरमोत २५, वारणरासोत २६, तेजमालोत २७, बिहारीदासोत २८, उदैसिघोत २९, मालदेओत ३०, सगतसिंघोत ३१, पचायणोत ३२, देरावरिया ३३, पूगळिया ३४, गुगजी ३५, सोम ३६, मूल ३७, सिधराव ३८, वानर ३९, जेड़ ४०, गोपाळदेओत ४१, हडवा ४२, लूणराव ४३, संभा ४४, सागेजा ४५, कंदल ४६।

१२२३. मेहामल, देवत, सींधत, अै भाटियांरी खांपां है।

१२२४. करनोत, धनराजोत अै दोय धड़ा आय वसियो।

१२२५. नानग छाबहड़ो वरदायी हुवो पोकरण आय वसियो।

१२२६. जैसळमेर पाट बैठा ज्यांरी विगत अनुक्रमसूं-वछू १, म..........२, दुसाझ ३, वीजो ४, जैसळ ५, साळवाहन ६, केल्हए ७, चाचग८, करण ९, लखणसेन१०. पुनपाळ ११, जैतसी १२, मूलराज १३, दूदो १४, घड़सी १५, केहर १६, लखमण १७, वेरसी १८, चाचगसी १९, देवीदास २०, जेतसी २१, लूणकरण २२, मालदे २३, हरराज २४, भीम २५, कल्याणदास २६, मनोहरदास २७; सबळसिंह २८, अमरसिंघ २९, जसवंतसिंघ ३०, जेतसी ३१ अखैसी ३२, मूळराज ३३, गजसिंघ ३४।

१२२७. रावळ जैसल १, बेल्हए २, लूणकरण ३, चाचिग ४, तेजराव ५, रावळ जैतसी ६, मूळराज ७, देवराज ८, रावळ केहर ९, लखमण १०, वैरसी ११, चाचो १२, देईदास १३, जैतसी १४, लूणकरण १५, मालदे १६, हरराज १७, कल्याणमल १८, मनोहरदास १९, रावळ मनोहरदास निरवंस गयो।

१२२८. धरणीधर वराहरी बेटी नाम होरड़ सिंघ देवराजनूं परणायी. धरणीधर वराहरी राणी नाम रवाब टावरी १, वोडाणा २, सिधराव ३, सोळंकी अै च्यार खांपां बीकमपुर राजपूतां मांहे मुख्य है।

१२२९. पहलां भाटियांरी राजधानी लुद्रवै हुती. भाटी साळवाहणरै टीकै भोजदेव बैठो. भारी जैसळ दिल्ली फोजां आणी. भोजदेवनूं मार लुद्रवै धणी हुवो. जैसळ लुद्रवै कोट करावण लागो जद ब्राह्मण नांव इसो अेक सौ बीस वरसरी ऊमरमें तिण जैसळनूं कह्यो - म्हारा खेत कनै रड़ो है, जठै श्रीकृष्ण गदासूं पाणी प्रगट कर पांडवांनूं पायो नै कह्यो कलूमें म्हारो बंस इण ठोड़ रहसी, सो तूं उठै कोट कराय. जेसळ वात मानी. गदासूं कूप कृष्ण कीनो जिण कूप ऊपर सिला हुती सो दूर कीवी और बंधायो. नांव दियो जैसळो कूवो. गढ अठै करायो. गढरो नांव दियो जैसळमेर।

१२३०. जैसळ १, काल्हण २, लूणकरण ३, चाचिग ४, तेजराव ५, बडो रावल जैतसी ६।

१२३१. भाटी जैसळरो कालण. भाटी काल्हणरै बेटा दोय हुवा—लूणकरण १ सीहड़ २, लूणकरणरो चाचिग, चाचिगरो तेजराव, तेजरावरो बडो रावल जैतसी।

१२३२. जैतसी ऊपर दिल्लीरी फौज आयी. बारह बरस विग्रह रह्यो. जैतसी रावळ विग्रहमें मुवो. पछै मूळराज जैतसिंघोत रावळ हुवो।

१२३३. मूळराज रावळरै आगै राणो रतनसी हुवो. आगै जैसळमेर आ मरजाद हुती रावळरा मूंडा आगै अेक राणो रहै।

१२३४. रावळ मूळराज ऊपर तुरकांरी फोज आयी. घेरो गढरै लागो. घेरासूं जैसळमेररा गढरो सामान खूटो जद रावळ मूळराजरो कंवर देवराज और राणा रतनसीरो कंवर घड़सी दोय जणा तो अै नै जणा तीन दूजा जुमलै पांच तुरकांनूं अमान सूंपी. जैसळमेररा गढरा दरवाजा खोल मूळराज रतनसी काम आया

१२३५. मूळराज रतनसीनूं मार तुरक परा गया. जैसळमेररो गढ सूनो पड़ियो जद रावळ मालो जैसळमेर आपणावण आपरी फोज मेली. फोज उठै गयी. सामान भार जिनसां खजानो प्रभातरो गढ माथै चढाय दियो नै राव मालारा भड़ां कह्यो—कपड़ा धोय आपै सांझरा गढ माथे जासां. मोमत्तो मन ओवणरै धंधै लागा।

१२३६. बडा रावळ जैतसीरै बारह वरस घेरो रयो जद भाटी जसहड़रा बेटा पांच दूदो १, तिलोक २ आसकरण ३, सीधण ४, वागण ५, ज्यांनूं जुगतसूं घेरा मांयसूं काढिया हुता. अेक जणो दम खींच मड़ो वणियो हो नै चार जणा

सांचिया के उणरा मांचासूं उपाड़ गढसूं बाहर नीसर बंचिया हुता. उठै पांचू ही साठां जणांसूं गढ माथै चढिया. अै तोला पाहू कनै हुता. तोला पाहू ही आं साथै आयो. गढ रावळ मालारा साथरै हाथ न आयो ।

१२३७. गढ यां पांचां अपणाय लियो. तोला पाहूनूं अै ददै नहीं, तोलो हियांसूं खराई करै. अेक दिन तोलारै तिलोकसी झटकारी दीवी तोलारो माथो कटीज दर पड़ियो. काटियै माथै तोलै पाछो झटको वाह्यो सो थांभो कटाणो, थांभो अजैस है ।

१२३८. जसहडरा बेटां वरस २१ राज कियो. पछै पातसाही फोज आं माथै जैसळमेर आयी. आसकरण तुरकांनूं भेद दियो. गढ भिळियो. दूदै तिलोकसी साको कियो. पांचूं भाई काम आया. गढमें तुरकांरो थाणो बैठो ।

१२३९. देवराज रावळ मूळराजरो बेटो नै घड़सी राणा रतनसीरो बेटो अै दोनूं मूळराज रतनसी काम आवणरै तुरकांनूं सूंपिया सूं अं मोटा होय पातसाहरा ......... सूं नाठा. घड़सी महेवै रावळ माला कनै गयो. रावळ मालारी बहन विमली घड़सी घरमें घाली, रावळ मालै आपरो साथ मेल वीकमपुरमें घड़सीरो अमल करायो ।

१२४०. घड़सी आपरी वसी वीकमपुर राखी, सिंधरा पातसाहरी चाकरी लागो सिंधरा पातसाहसूं जंग हुवो जद घड़सी पहला पातसाहरी असवारीरो सफेद हाथी जिणरी सूंड काटी, सिंधरै पातसाह राजी हुय घड़सीनूं जैसळमेर दियो ।

१२४१. देवराज पातसाहरा....... सूं भाज घाट थर पारकरमें गयो, उठै परणियो, इणांरै बेटा दोय हुवा केहर नै हमीर ।

१२४२. देवराजनूं धाटरै दहइयै मारियो, पछै जैसळमेरसूं रावळ घड़सी केहर-हमीरनूं तेड़णनूं थाट मिनख मेलिया, आप तळैरी हुतो, जसहड़ भाटियां आसकरणरा बेटां घोड़ै सवार घड़सीनूं झटको कियो घड़सीरो माथो दूर पड़ियो, घोड़ो धड़नूं ले गढ माथै गयो, घड़सीरै बेटो नहीं हुवो, रावळ मालारी बहन विमली केहरनै टीको दे घड़सीनूं चूक हुवा पछै नवमै दिन सत कियो ।

१२४३. केहररो रावळ लखमण, लखमणरो वैरसी, वैरसीरो चाचो, चाचारो रावळ देईदास, देईदासरो भीम पछै भीमरो छोटो भाई कल्याणमल रावळ हुवो, कल्याणमलरो रावळ मनहरदास निरवंस गयो ।

१२४४. रावळ चाचानूं परणाय सोढां मारियो हुतो सो देईदास चाचारो चाचारै पाट बैठो सोढानूं मांर बापरो वैर लियो ।

१२४५ रावळ जैतसी देवीदासोतरै राणी भावकदे राठोड़ हाफा वरसिंघोतरी बेटी मेहवै १ ।

१२४६. जैसळमेर रावळ जैतसीरै बेटांरी विगत–लूणकरण १, भींदराज २, जगमल ३, प्रथीराज ४ ।

१२४७. भाटी रावळ लूणकरण भाटी रावळ जैतसी देवीदासोतरो बेटो वाड़मेरांरो भाणेज ।

१२४८. रावळ लूणकरणरै बेटांरी विगत-मालदे १, सिवदास २ ।

१२४९. रावळ मालदे लूणकरणोत सीसोदिया अखैराज कुंभकरणोतरो दोहितो ।
१२५०. रावळ मालदे लूणकरणोत राणी महेची महमादे मेघराज हाफावतरी ।

१२५१. रावळ मालदेरै बेटांरी विगत-हरराज १, खेतसी २, नेतसी ३, सहसमल ४ ।

१२५२. रावळ हरराज जोधपुर राठोड़ नाथो राव सूजारो बेटो जिणरो ओ दोहितो ।

१२५३. खेतसी रावळ मालदेरो बेटो कोटड़ियांरो भाणेज ।

१२५४. खेतसी मालदेवोत राव जैतसी बीकानेरियारो दोहितो. मोटा राजाजीरी बेटी रंभावती परणियो हुतो ।

१२५५. मालदेरो खेतसी बीकानेरिया राव जैतसीरो दोहितो. खेतसीरो दयालदास, दयालदासरो सबळसिंघ, सबळसिंघरो अमरसिंघ, अमरसिंघरो जसवंतसिंघ, जसवंतसिंघरो जगतसिंघ, जगतसिंघरो अखैसिंघ, अखैसिंघरो मूळराज, मूळराजरो गजसिंघ ।

१२५६. रावळ हरराजरै बेटांरी विगत-भींव १, कलो २, सुरताण ३ ।

१२५७. रावळ भीम हरराजरो बेटो जोधपुरा राव मालदेजीरो दोहितो ।

१२५८. संवत १६१८ रा मिगसर वद ११ भाटी भीम हरराजोतरो जनम. संवत १६७० जैसळमेर देवलोक हुवो ।

१२५९. संवत १६५४ पोस वद ६ जहड़ गोपाळदास जैमलोत नै जैसळमेररै भाटियां वेढ हुई. भाटियांरो घोड़ो डोढ हजार हुतो. गोपाळदास रजपूतां पैंतीससूं खेत कर पड़ियो कोटणसूं अधकोस ।

१२६०. रावळ मेघराजरी बेटो महेची वाला रावळ भीमरै राजलोक ।

१२६१. वालां महेची बना मेघराजोतरी रावळ भीमरै राणी ।

१२६२. भीम ऊत गयो. भीम पछै कल्याणमल हरराजोत जैसळमेर रावळ हुवो ।

१२६३. रावळ कल्याणदास हरराजरो बेटो कोटड़ियारो भाणेज ।

१२६४. संवत १६७२ रावळ कल्याणमल अजमेर पातसाह जहांगीररी हजूर आयो हो ।

१२६५. रावळ भीमरै भाई कल्याणमलरी बेटी महाराजकुंवर गजसिंघजीनूं परणायी संवत १६६८ जैसळमेर ।

१२६६. रावळ भींवरै बेटा हुवा नहीं, रावळ कलो हरराजरो जिणरो बेटो मनोहरदास पाट बैठो ।

१२६७. भाखरसी हरराजोत आछो राजपूत हुवो ।

१२६८. रावळ मनोहरदास कल्याणदासरो कोटड़ियांरो भाणेज ।

१२६९. जैसळमेर रावळ मनोहरदास महेवै रावळ दूदा मेघराजोतरो दोहितो ।

१२७०. इणरै मामा महेचो तेजसी दूदावत. जैसळमेर भेळी गोठ कीवी तेजसी. तेजसीरै पुत्र हुवो नहीं ।

१२७१. रावळ मनोहरदास जैसळमेररो धणी जसोळ माथै आयो. जसोळ भिळी जद जसोळियो वीरम काम आयो ।

१२७२. संवत १६९३ रावळ मनोहरदासरी बेटी महाराजकंवर जसवंतसिंघजी परणिया ।

१२७३. रावळ मनोहरदासरै बेटी महाराज जसवंतसिंघजी गजसिंघोत परणिया. पुत्र मनोहरदासरै हुवो नहीं ।

१२७४. संवत १७०७ रावळ मनोहरदास जैसळमेर देवलोक हुवो. भाटी रामचंद टीकै बैठो ।

१२७५. जैसळमेर रावळ मनोहरदास कल्याणदासोत मुवो अपुत्र जयसिंघरो बेटो रामचन्द गादी बैठो जैसळमेर पछै महाराज श्री जसवंतसिंघजी जैसळमेर सबळसिंघनूं ले दिया जद सबळसिंघ रामचन्दनूं डेरो दियो । डरिया भाटी रामचन्दोत है ।

१२७६. रावळ सबळसिंघ दयालदासोत राठोड़ कला रायमलोतरो दोहितो ।

१२७७. रावळ मालदे १, खेतसी २, दयालदास ३, सबळसिंघ ४, अमरसिंघ ५, जसवंतसिंघ ६, जगतसिंह ७, अखैसिंह ८, मूलराज ९, गजसिंघ १० ।

१२७८. रावळ मालदेरो खेतसी जिणरै बेटा च्यार ईसरदास १, दयालदास २, सगतो ३, सामदास ४ ।

१२७९. भाटी दयालदास खेतसीरो बेटो राठोड़ां वीदावतांरो भाणेज ।

१२८०. रावळ दयालदासरो बेटो सबळसिंघ ।

१२८१. संवत १७१० रा भाद्रवामें रावळ सबळसिंघ जैसळमेररै धणी सोढा ईसरदास राणानूं उमरकोट मांहेसूं काढियो. सोढा जोगिंगदेनूं राणो कर उमरकोट वैसाणियो ।

१२८२. जैसळमेर रावळ अखैसिंघ खावड़ियांरो भाणेज इकमायो इणरै भाई जोरावरसिंघ ।

१२८३. रावळ जसवंतसिंघ जैसळमेररो धणी जिणनूं परणायी नगर रावळ भारमल जिणरी बेटी रूपांबाई जिणरै बेटा च्यार हुवा—जगतसिंघ १, सरदारसिंघ २, तेजसिंघ ३, ईसरीसिंघ ४ ।

१२८४. रावळ जसवंतसिंघरो तेजसिंघ, जिण जगतसिंघरी गादी जगतसिंघरो बेटो बुधसिंघ रावळ सगो भतीजो उणनूं गर लातु मारी । आय रावळ होय गादी बैठो निर्जळा इग्यारसरै दिन घड़सीसररी लासमें तेजसिंघरो काको हरीसिंघ अमरसिंघोत जिण पिला लाला नामो परधान जिणनूं मारी. तेजसिंघनूं मारियो—अखैराज जगतसिंहोत जैसळमेररा किलानूं न गयो, ठाणनूं भागो ।

१२८५. जैसळमेर रावळ जगतसिंघरो बेटो अखैसिंघरो वडो भाई बुधसिंघ रावळ हुतो उणनूं मार तेजसी जसवंतसिंघोत मारियो घड़सीसररी पाळ माथै ।

१२८६. संवत १७५१ रा मिगसर वद १४ अखैसिंघजीरो जनम संवत १७८१ रा सा० सुद ८ दिल्ली राजतिलक हुवो ।

१२८७. मम्हैं जाणतै मेलियो, विसहे ऊपर पाव ।
होवो माया कारमी, भवै सांची थाव ।।

इण दूहारी पैली भड़ जैसळमेररै रावळ कही. तीन भड़ां तेमड़ा रावरी कृपासूं साठियारै वीठू वोहाड़ कही. रावळजी सावेरै गया. ठकुराणियां मांह तेड़िया. महलरी देहली अर्तन नाग सोभित कियो. लंबायमान रावळ इणरै माथै पग दियो. उण वेळां भड़ बणायी—मैं जाणतै मेलियो ।

१२८८. सीसोदियो जगमाल राणा उदैसिंघरो दत्ताणी काम आयो जणा १६ सूं लुगायां छव सती हुई ।

१२८९. जैसळमेर अनपूरणारो कोठार रावळ भीम करायो. जनाना महल, गोख हरराज कराया. सूरजपोळ, वाड़ीरा महल रावळ लूणकरण कराया ।

१२९०. मकराणारा पाहणरी मूरत नवी देवी चंडेस्वरी घळाव मूळराजजी जैसळमेर मंदिर नवै पधरायी ।

१२९१. पची धाय नाथीरी जिण जैसळमेर वडा कमठाणा कराया लखमीनाथजीरी दोनूं आंखमें माणक जड़ाया ।

१२९२. रतननाथजीरा कानांरा दरसण जैसळमेर है. रावळजी नित दरसण करै ।

१२९३. चौरासी गांव जैसळमेररा रावळरै पालीवाळांरा है ज्यांरो हासल आवै ।

१२९४. सालमसिंघ मुंहतो जैसळमेर जिणरी मां बीकानेररी हुती. उवा वीकीजी कहीजती ।

१२९५. जैसळमेररा कामदारांरा वापरी महेसराणी त्रिया वायेची कहावै, पोहकरणरी त्रिया पौरणजी कहावै घाटमैं परणीज जैसळमेररा मुहता त्रिया घरां आणै उवा वाटणजी कहावै ।

# जैसळमेररा सिरदार

## वरसलपुर

१२९६. वरसळपुररो भाटी राव मान जिणरी भाणेजी महाराज सूरजसिंघजीरी बेटी गुलावकंवरबाई ।

१२९७. भाटी केलणरा राजमें तुरक जैसळमेररो गढ घेरियो जद भाटी चरढो कोट कूद मांह आयो. जद केलण कह्यो – स्याबास ! म्हारा वानर, भलो आयो. जदसूं चरढो वानर कहाणो ।

१२९८. वानर साळबाहणरो बेटो ।

१२९९. भाटी केलणरै तेरै बेटा जांरी विगत - रणमल १, चाचो २, अको ३, दीपो ४, हरभय ५, भोज ६, वीकम ७, सोहड़ ८, लूणो ९, करन १०, नादो ११, कुमाण १२, धीरो १३ ।

१३००. भाटी केलण केहररो. केहर देहरो. देह मूळराजरो. मूळराज जैतसीरो ।

१३०१. केलण भाटीरा बेटा दोय धीरो १, कुमाण २, मुसळमान हुवा ज्यांरा वंसरा राठ ।

१३०२. गांव बारह माडमें केलणांरा है आधा गांवांमें रणमल केलणोतरा पोतरा है नै आधा गांवमें अक्का केलणोतरा पोता है ।

१३०३. सोमसी भाटी गायांरी वाहर काम आयो. गाय खोसी जद लोक कहै - सोम भाई सोम ।

१३०४. सोम भाटी राठोड़ जैसिंघ जांरा गांव फळोदीरी पट्टीमें आगै घणा हुवा ।

१३०५. भाटी मुलवाणी बीकानेररो गांव खानूसर जठारी सरारो भाटी रावत भदो परणियो. इणमें देवतपणो हुतो ।

१३०६. गांव लाठी जसोड़ांरा पैंतीस गांव ज्यां माँहलो है. पछै रावळजी ले लियो ।

१३०७. सायबखान वाहड़मेरासूं वचन लेय बीकमपुररो राव हरनाथसिंघ मरायो. टुटिया हाथरो किसोईकी ।

१३०८. सं० १६९० भाटी गोपाळदास आसावतरी सांड़ियां नींबरा खारिया कनै चरती चांणरा मैणा ले गया ।

१३०९. माडमें बारह गांव जड़ां भाटियांरा जंडे कहावै. माडमें अड़कमलां भाटियांरा गांव बारह भंभारो कहावै ।

१३१०. गांव पैंतीस माडमें जसोड़ां भाटियांरा; ठरड़ासूं आथमणा खाडाळमें गांव हबूर भाटी ऊनड़ ज्यांरा ।

१३११. चाहड़ू ग्राव छपाळो अै गांव दोय माडमें हमीरा भाटी धीरां सीहड़ां भाटियांरो गाम अेक ब्रह्मसर जठै ब्रह्मकुंड है ।

१३१२. माडमें गांव दोय पाहू भाटी ज्यांरा है ।

१३१३. गांव अेक काछो रूपसियां भाटियांरो है ।

१३१४. सांवत सीहां भाटियांरो गांव अेक कोटड़ी माडमें है ।

१३१५. सोमगांव वगेरै आठ गांव गोगली भाटी ज्यांरा माडमें है ।

१३१६. अेक गांव साहको अणगा भाटियांरो है ।

१३१७. घाणेली १, सूजियो २, दहो ३, अै तीन गांव रायधरां भाटियांरा है ।

१३१८. भीरमदेवोत भाटी ज्यांरै पटै जाणियाणो सराणो हुता. जाणियाणो तेजसिंघ आईदानोत ले लियो. सराणो रुघनाथसिंघ सुजाणसिंघोत ले लियो ।

१३१९. बीकमपुर कनै गांव ढाबरियाळो टावरियां रजपूतांरो है ।

१३२०. देवराज समरोटू अै ठिकाणा वावल खानखानैमें खारखखां भाटियां कनांसूं लिया ।

## जादू

१३२१. जादू राजपूत केईक मुसळमान है. जाटवारो वडेरो पीर हुवो है जिणरो नांव लोड।

## करोली

१३२२. करोलीरो राजा मानपाळजी जादव महराज प्रतापसिंघजीरो सुसरो जैपुर आयो जिण कही अभैकुंवरबाई म्हारी भाणेज है।

## खेजड़लारा भाटी

१३२३. खेजड़लारा सिरदारांरो पीढियां लिखंते—जेसळमेर देवराजरै बेटा दोय हुवा—वडो केहर सो तो रावळ, दूजो हमीर।

१३२४. केहररै बेटा तीन—लखमण १, कलकरण २, केल्हण ३. रावळ केहररे भाई देवराजरो बेटो हमीर, हमीररो लूणकरण, लूणकरणरो सतो।

१३२५. हमीर १, लूणकरण २, सतो ३, अरजुण ४, सांवळ ५, सीहो ६, रायपाल ७, आसो ८, गोपाळदास ९, दयालदास १०, केहरसिंघ ११, सूरसिंह १२, हठीसिंघ १३, किसनसिंघ १४, देईदास १५, जसवंतसिंघ १६, सादूळसिंह १७।

१३२६. भाटी रायपाळ सीहावत राव मालदेजीरै चाकर रहतो. पटै खीवसर, अटवड़ो, खेजड़लो नागोररा गांव इतरा हुता. रावजी चंद्रसेणजीरी चाकरीमें रह्यो रायपाळ।

१३२७. भाटी रायपाळोत राजा भगवानदास कछवाहेरो चाकर।

१३२८. भाटी गोपाळदास आसावत पातसाही चाकर हो सो संवत १६७१ रावळै वसियो. किताईक गांवांसूं दुधोड़ पटै पायी।

१३२९. दयालदास गोपाळदासोत संवत १६७७ रावळै वसियो. डलैवीरो पटो दियो. पछै संवत १६७८ भाद्राजण गांवां २४ सूं परै दिवी पछै जाळोररी हाकमी दिवी।

१३३०. जाळोर हाकम जद दयालदास महेचा रायमल उदैसिंघोतनूं पकड़ रोकियो थो पछै छोडियो. दुधोड़सूं बाहर गुडो दियो हो. उण गुड़ामें दयालदास हो. रायमल मेवाड़सूं महेचा चांदा वाघावतनूं ले दुधोड़ दयालदास माथै आयो. दयालदास माराणो. दयालदासरो वडो डील हो।

१३३१. भाटी दयालदासरा बेटांरी विगत—केसरीसिंघ १, राजसिंघ २, छीतरदास ३, तेजसी ४. भगवानदास ५ ।

१३३२, भगवानदास दयालदास भेळो काम आयो ।

१३३३. छीतरदास पहलां गोपाळदासजीरै वदळै चाकरी करतो संवत १६९२ छाडाणो कर अमरसिंघजीरै गयो. पछै जोधपुर आयो. भाद्राजण राजसिंघ भेळी पटै पायी. पछै राजसिंघ छीतरदासनै मारियो ।

१३३४. केसरीसिंघ दयालदासोत खेजड़लो पटै पायो ।

१३३५. केसरीसिंघरा बेटांरी विगत–हरीसिंघ १, सूरसिंघ २, उदैभाण ३, चतुरभुज ४, दोडांरो भाणेज ५, सुजाणसिंघ ६, हरिसिंघ ७ ।

१३३६. केसरीसिंघ राव रायसिंघोत समरसिंघोतरै चाकर रह्यो .

१३३७. हरिसिंघरै बेटांरी विगत—वीरमदे १, लाखो २, दुरजणसिंघ ३ ।

१३३८. भाटी आसा रायमलोतरा बेटांरी विगत—नारायणदास १, रूपसी १, डूंगसी ३, ठाकुरसी ४, सुरजण ५ ।

१३३९. नराणदास रायमलोतरो कछवाहा राजा मानरै आंबेर चाकर रह्यो ।

१३४०. भाटी रायमल सीहावतरा बेटांरी विगत—जैसो १, राणो २, अखैराज ३, भाखरसी ४, किसनदास ५ ।

१३४१. जैतमाल सीहावतरै काम आयो. छोरू न हुवो ।

१३४२. सावंत उरजणोतरै बेटो आपमल, आपमलरै आल्हण, कूंपो महाराजोतरै चाकर हुवो सो कूंपै साथै काम आयो ।

१३४३. आपमलरो वीरम मोहलांसूं झगड़ो कर काम आयो लाडणू सीहाजीरै वैर ।

१३४४. भारमल सावंतरो ।

## लवेरारा सिरदारांरी पीढियां

१३४५. कलकरण १, जैसो २, आणंद ३, नींबो ४, मान ५, सुरताण ६, रघुनाथ ७, भीम ८, इंद्रभाण ९, साहबखान १०, सुजाणसिंघ ११, अणंदसिंघ १२, दोलतसिंघ १३, जैसिंघ १४, केसरीसिंघ १५, उमेदसिंघ १६ ।

१३४६. भाटी केहररो कलकरण, कलकरणरो जैसो. जैसारै चार बेटा हुवा—अणंद १, जोधो २, भैरूंदास ३, वणवीर ४ ।

१३४७. पहलां लद्रवो भाटियांरो वास हुतो, पछै गोइंददास मानावत आबादान कियो नाम लवेरो प्रसिद्ध हुवो ।

१३४८. भाटी जेहो हड़बू सांखला रो दोहितो ।

१३४९. जैंसाजीरी बेटी लखमीबाई रावजी सूजाजीरी राणी कंवर बाघाजीरी मा ।

१३५०. अणंदरै नींबो, नींबारै मानो, मानारै गोइंददास ।

१३५१. लवेरारा सिरदाररो वडेरो भाटी नींबो जैताजी कूंपाजी साथ समेळ काम आयो।

१३५२. महाराज सूरजसिंघजीरै कंवरपदै ही गोइंददास प्रधान हुता ।

१३५३. संवत १६६३ लवेरो आसोप दोनूं महाराज सूरजसिंघजी गोइंददासजीनूं पटै दिया ।

१३५४. संवत १६७१ रा जेठ सुद ८ अजमेर काम आया ।

१३५५. पतो भादावत वडो डील हो. गोइंददासजी साथ अजमेर काम आयो ।

१३५६. गोइंददासरै बेटो जोगणीदास. पटै गांवां च्यारांसूं गांव वीजवाड़ियो. महाराजा सूरजसिंघजीरो उमराव जिणांनूं राजा मान कछवाहारा चाकररो हाथी मस्त जिणां घोड़ानूं उठाय सूंडसूं दांतांसूं सालियो. जोगणीदास दातांमें पोयोड़ै तीन कटारी हाथीरै कुंभाथल वाही. राम कह्यो संवत १६६८ पातसाहरी फौज दिखणमें आवै जद ।

१३५७. रामसिंघ १, प्रथीराज २, गोइंददास मानावतरा बेटा महेची. पूरांबाईरी कूख उपन्था. पांचवों बेटो वेणीदास गोइंददास मानावतरै ।

१३५८. भाटी नरहरदास गोइंददास मानावतरो सातां गावांसूं डाबर पटै ।

१३५९. ओ हाथी राजा मान राजा सूरजसिंघजीरी निजर कियो. किताईक वरसां पछै ऊ हाथी उदैपुरमें साहजादा खुरमरी निजर सूरजसिंघजी कियो ।

१३६०. भाटी सुरताण मानावतरो मुंहतो केसो जिणनूं गोइंददास मानावत रावळरै वापो संवत १६६८ महाराज सूरजसिंघजी दिखणमें हुता उठासूं वीख सुरताणजी घरै आय केसो मुंहतानूं मारियो. गोयंददासजी सुरताणजीनूं धरती मांहेसूं कढाया ।

१३६१. सुरताणजी नागोर राणा सगररो चाकर रह्यो. सगरजी भीवड़ा दियो. राठोड़ नरसिंघदास कला रायमलोतरो सूरसिंघ सुंदरदास रामसिंघोत आंसूं भावका खानाजंगी हुई. नरसिंघदास सूरदास सुंदरदासनूं मार मुवो सुरताणजी संवत १६६८ रा जेठ सुद ८ ।

१३६२. भाटी रुघनाथ उजैण धावो पाड़ियो जद वुंदेलै भावसिंघ सुखपाळमें घाल उठायो. जतन कियो. किसनो पातो रुघनाथरै साथ धावां पड़ियो हो ।

१३६३. भाटी प्रथीराज गोइंददासोतरी सोढा सोढै भगवानदास लिवी सोढांरी वार झगड़ो कर भाटी सुंदरदास काम आयो ।

१३६४. नरहरदास गोयंददासोत जिणरै पटै डाबर गांवां सातसूं ।

१३६५. वेणीदास गोयंददासोतरै पुरामें है तिणसूं बेटा दोय हुआ – सामसिंघ १, प्रथीराज २ ।

१३६६. भाटी सुंदरदास सुरताणोत काम आयो तिणरो उवाको संवत १७०४ वरसे माह वद ५ हुवो ।

१३६७. नागोररो गांव डेह भाटी सवळदास सुंदरदास सुरताणोतरो सत्ताईस जणांसूं काम आयो. गांव डेह लाडणूंसूं जोधो इंदरभाण केहरसिंघोत माथै आयो जद ।

१३६८. उण हीज दिन सबळसिंघरा रजपूतां जोधा इंद्रभाणनूं मारियो ।

## बीकमकोररा भाटी

१३६९. भाटी सुरताण १, अचळदास २, महेसदास ३, किसोरसिंघ ४, जैतसिंघ ५, गुमानसिंघ ६, हिंदूसिंघ ७, पहाड़सिंघ ८, जुझारसिंघ ९ - अै बीकमकोररा सिरदारांरी पीढियां ।

## बालरवारा भाटी

१३७०. भाटी जैसो १, जोधो २, रामो ३, किसनो ४, कान्ह ५, हरिदास ६, मुकंददास ७, रामसिंघ ८, रणछोड़दास ९, उदैभाण १०, जैतसिंघ ११, रतनसिंघ १२, बूधसिंघ १३, कंवर सादूळसिंघ १४-बालरवारा सिरदारांरी पीढियां ।

## माणकलावरा भाटी

१३७१. भाटी जैसो १, भैरूंदास २, सूरो ३, सांकर ४, डूंगरसी ५, हरदास ६, ईसरदास ७, कूंभो ८, राम ९, जैसिंघ १०, सूरतसिंघ ११, सगतसिंघ १२, रतनसिंघ १३ - अै माणकळावरा भाटी भायां भैरूंदासोतरी पीढियां।

१३७२. राम कूंभावत भाटी गांव रामपुरो वसायो ।

## वालरवो

१३७३. रुघै मुंहते पातांरा विसर वणाया हुता जिणसूं पाता रुघानूं मारियो. वालरवारै सिरदार रुघनाथसिंघ भाटी रुघारा वैरमें पातांनूं मारिया ।

## सरढ

१३७४. रावजी जोधाजीरी वारमें सरढरो धणी जसाभाई भाटी रावत भादो हो. हमैं सरढ वरसिंघां भाटियांरै है ।

## सेत्रावो

१३७५. रावत लूणो सेत्रावारो धणी रावजी जोधाजीरो माहड़ो जिण सारण घोड़ी जोधाजीनूं दिवी.

## गुडो

१३७६. ईसररो ठाकुरसी जिण दुरगदासरी मदतसूं चंवरी पोतरारा किंवाड़ गुडै आणिया, राणाई पायी ।

१३७७. ठाकुरसी १, सायबखान २, भाखरसी ३, मालदे ४, जीयो ५, जैसिंघ ६, ठाकुरसिंघ ७ ।

१३७८. संवत १७४० रो जनम कनीराम रामसिंघोतरो. संवत १८३२ रा जोधपुरमें रामसरण हुवा. वरस तयाणूंरी ऊमर हुई. संवत १८२५ कानीरामजी मनीवज बीकानेरसूं जोधपुर आया ।

१३७९. राठोड़ प्रथीराज प्रभुओत, राठोड़ महेसदास दळपतोत, ऊदावत भीम कल्याणदासोत - यां तीनांनूं अेक सरीखी लिखावट महाराज शिवजीरा खास रुकामें. पछै महेसदासजी जाळोर पायी, गढपती हुवा जिणसूं लिखावट आगै न रही. प्रथीराजरै मनसब घणो हो जिणसूं वचनात् नहीं नै लिखावतू लिखीजतो ।

## जसोल

१३८०. रावळ तेजमाळ भारमलोत फाटा तळाव माथै सातवींसूं जसोळ ठाकुराई कीधी ।

## समा यादव

१३८१. वेळावल समो सिंधमें बडो दातार हुवो ।

१३८२. समांरै जिसी सखावत किणमें ही न हुयी ।

१३८३. वगो वलार भेळा वतळायीजै ।

## जाड़ेचा यादव

१३८४. माहोरमें ......

१३८५. सिकंदर फीरोज फतैखां वगैरा प्रतापीक जाम हुआ. जामां कनासूं भाटी ऊनड़ सिंधां सात ही लिवी. ऊनड़ जाम कहाणा ।

१३८६. जाम ऊनड़ साढा तीन करोड़ रुपियांरो सिंघासण छत्र दे सात ही सिंध सूधा कवी सांवळनूं दिवी ।

१३८७. जाम ऊनड़रा बेटां चावड़ां कनांसूं कच्छ लिवी ।

१३८८. जाडेचा हमीररा बेटा तीन - खंगार १, राहिव २, साहिव ३ ।

१३८९. रावळ जामरै नै राव खंगाररै बडो जंग हुवो है ।

१३९०. झारो सिरहर डूंगरां, कारो वेकाणांह ।
मांझी खेंगो वंकड़ो, नमै न सुरताणांह ।।

१३९१. समहर छूटो सिंघ ज्यूं, बूटो बड़ी बलाय ।
चोखी करि-करि चाकरी, खाग-तणै बळ खाय ।।

१३९२. मुसळमान बूटो चचर राव खंगाररी चाकरीमें रह्यो. पबो, मोकळसी - अै ही राव खंगाररी चाकरीमें रह्या ।

१३९३. राव खंगार हालांनूं कच्छ मांहेसूं काढिया. उवै जाय हालाहर वसिया ।
खाटी राव खंगार, भारमल भुगती धरा ।

१३९४. भारमल दिलीरा पातसाह आगै बाघ मारियो, पातसाह राजी होय मोरवीरो परगणो दियो ।

१३९५. जाडेचांमें साहब थाटरो धणी, खंगार पाटरो धणी ।

१३९६. भुज सहर राव खंगार वसायो ।

१३९७. भुजरा रावांरी पीढी लिखंते - फूलो १, लाखो २, हमीर ३, सूमल ४, लाखो ५, ऊनड़ ६, सिधराज ७, जाम ८, लाखण ९, भीम १०, अमर ११, जेहो १२, हमीर १३, नगराज १४, खंगार १५, भारो १६, मेघ १७, तमायची १८, रायधण १९, पराग, २०, गहडर २१, देसल २२, लाखो २३, गहडर २४, रायधण २५ ।

१३९८. पावर कच्छरो परगनो है ।

१३९९. चवदै चाळा कच्छ चवदै पड़गना है, पड़गनानूं चाळ कहै. कच्छ धरा खावै परा जीतै नगो कोम. आसापुरारो वर हो कच्छनूं कोई जीतसी नहीं ।

## सरवहिया यादव

१४००. सरवहियो नवघण गिरनार-पती जिणरी धाय वहन नाम जायल, अहीरण जात, अति रूपवंती, देवीरो अवतार, घणो त्रित्त ले सिंधमें गयी सोरठ त्रिण-काळ पड़ियां. सिंधरो पातसाह सूमरो जिण जायलनूं घरमें घालणी

विचारी. अै समाचार जायल नवघणनै लिखिया. नव लाख घोड़ांमूं नवघण सिंधमें आयो. नव लाख लोवड़ियाळरी कपासूं सूमरानूं मार सिंध लिवी ।

१४०१. आधो अरब सरवहियै राव खंगार लूणपाळ मिहड़नै दियो ।

१४०२. गिरनार राव खंगार सरवहियो हुवो जिण पचास कोड़ नै नवमी सोरठां महड़ू लूणपाळनूं दिवी. दूजो राव खंगार जाडेचो हुवो जिण भुज वसायो ।

१४०३. जूनागढरो धणी राव खंगार जिणनूं वांवळरी डाळ माथै बैठ छुमण चारण दया पाळण तयार कियो—

हूं जाणूं द्रह वञ्ज्रडी, जिण भाखे जिण लग्ग ।

ओ दूहो सुणाय नै ।

१४०४. राव खंगार गिरनाररो धणी सरवहियो हुवो. कछरो धणी जाडेचो हुवो ।

## कछवाहां

१४०५. कछवाहांरो राज थेटू पूरबमें रोहितासगढ़ जठै. उठासूं नरवर वसिया. नरवरसूं दोसै ठकुराई बांधी. दोसासूं आंबेर. आंबेरसूं जैपुर ।

१४०६. आंबेररा राजांरी पीढ़ियां लिखंते—राजा दूलैराय १, राजा काकिल २, राजा हणुमंतसी ३, राजा महड़४, राजा पजून ५, राजा मलैसी ६, राजा वीजळसी७, राजा राजळ ८, राजा कल्याणसी ९, कुंतल १०, जूणसी ११, उदैकरण १२, वीरसिंघ १३, वणवीर १४, चंद्रसेन १५, प्रिथीराज १६, भारमल १७, भगवंतसिंघ १८, मानसिंघ १९, जगतसिंघ २०, महासिंघ २१, जैसिंघ २२, रामसिंघ २३, किसनसिंघ २४, विसनसिंघ २५, सवाई जैसिंघ २६, माधोसिंघ २७, प्रतापसिंघ २८, जगतसिंघ २९, सवाई जैसिंघ ३० ।

१४०७. राजा उदैकरण कछवाहो आंबेर-पत जिणरै तीन बेटा हुवा—वरसिंघ १, नरसिंघ २, वालो ३. वरसिंघ आंबेररी गादी बैठो जिणरा राजावत. नरसिंघरा नरूका. वालारो मोकळ, मोकळरै सेखो. सेखारा सेखावत ।

१४०८. कछवाहांरी वंसावळी—कुंतल १, जीवणसी २, उधरण ३, चांदणो४, प्रिथिराज ५. राजा प्रिथिराजरा राजावत कहाणा.

१४०९. राजा प्रिथीराजरै बेटा तेरह—भारमल १, रतनसी २, भींव ३, सांगो ४, बळभद्र ५, सुरताण ६, परपात ७, जगमाल ८, रूपसी वैरागर ९, डूंगरसी १० कल्याणमल ११, गोपाळ १२, चत्रभुज १३ ।

१४१०. नाथो गोपाळरो जिणरा नाथावत कहीजै. जगमालरो खंगार तिणरा खंगारोत कहावै ।

१४११. कछवाहा राजा प्रिथीराजरो भींव, भींवरो राजा आसकरण।

१४१२. प्रिथीराजरो राजा भारमल संवत् १६३० सीकर मुवो, सती हुई।

१४१३. राजा भारमलरा बेटा—भगवंतदास १, भगवानदास २, राजा जगनाथ ३, सिलहदी ४, सुंदरदास ५, सादूळ ६।

१४१४. राजा भारमलरा बेटा—छत्रसिंघ १, हिंदूसिंघ २।

१४१५. सूरसिंघ १, माधोसिंघ २, प्रतापसिंघ ३, राजा मान ४, अै राजा भगवंतसिंघरा बेटा।

१४१६. भारमलरो राजा भगवंतदास. भगवंतदासरो राजा मान. राजा मानरै बेटा—जगतसिंघ १, भावसिंघ २, सगतसिंघ ३, दुरजणसिंघ ४, सबळसिह ५, कल्याणसिंघ ६, हिम्मतसिंघ ७, स्यामसिंघ ८।

१४१७. मानसिंघ भगवंतसिंघोत परमार पचायण करमचंदरो दोहितो।

१४१८. कछवाहो राजा मान राव मालदेजीरो रायमल जिणरी बेटी सतभामाबाई परणियो।

१४१९. महाराजा रायसिंघजीरी बेटी अहृजनकंवर जैपुररो राजा मानसिंघ जिणनूं परणायी।

१४२०. कछवाहै राजा मान बांधूगढरा राजा रामसिंघ कनांसूं पेसकसी लीवी नहीं।

१४२१. अटकरो किलो कछवाहै राजा मान करायो अकबररै नवाब।

१४२२, कंवर जगतसिंघ मानसिंघोत कछवाहै खुरासाणियांरै तरवारांरै लोहरी मूठ दूर करायी, काठरी मूठ दिरायी।

१४२३. मान राजा कछवाहो जिणरो बेटो जगतसिहजी जैतारणरो धणी रतनसिंघ खींवा ऊदावतरो दोहितो कुंवर पदै देवलोक हुवो।

१४२४. मानसिंघ भगवंतसिंघोत महासिंघ जग (त) सिंघोत।

१४२५. संवत १६७३ महासिंघजी देवलोक हुवा जद द्योसारो टीको जैसिंघजी पायो, छव वरसरै द्योसो पायो।

१४२६. संवत १६७८ भावसिंघ मानसिंघोत राम कह्यो जद इग्यारै वरसरै वडै जैसिंघ आंबेर पायो।

१४२७. संवत १६७८ राजा भावसिंघ राम कह्यो जद आंबेर जैसिंघ पायो।

१४२८. राजा जैसिंघ महासिंघोत संवत १६६८ जनमियो आसाढ वद १ वार सुक्र संवत १६७३ राजा महासिंघ राम कह्यो जद द्योसारो टीको राजा जैसिंघ पायो, आंबेर राजा भावसिंघ मानसिंघोतरै हुवो।

१४२९. संवत १६६८ रा प्रथम आषाढ वद १ रो जनम कछवाहा राजा वडा जैसिंघरो।

१४३०. मानसिंघ भगवंतसिंघोत. महासिंघ जगतसिंघोत मेड़तिया मघोदासोत जैमलोतरो दोहितो. जैसिंघ महासिंघोत सीसोदिया साहजी उदैसिंहोतरो दोहितो. जैसिंघ विसनसिंघोत खेरवै जोधो कासीदास जिणरो दोहितो।

१४३१. कछवाहै राजा वडै जैसिंघजी दिलीमें जैसिंघपुरो वसायो।

१४३२. आंबेररो राजा जयसिंघ महासिंघोत राजा सूरजसिंघजी उदैसिंघोतरी बेटी मरगावतीबाई परणियो जोधपुरमें।

१४३३. बुरहानपुर हाडा राव रतनरी हवेली कनै डेरा हुवा वडा जैसिंघजीरै मास दोय असमाध रही, पक्षावात हुवो।

१४३४. संवत १७२४ रा आसोज वद ५ बुधवार रात घड़ी ६ पाछली हुती जद सहर बुरहानपुरमें राजा जैसिंघजी राम कह्यो. पक्षाघात हुवो हो, दोय महीना खेद रही।

१४३५. संवत १७२४रा आसोज वद ५ बुधवार रात घड़ी ६ पाछली रही जद राजा कछवाहै वडै जैसिंघ राम कह्यो बुरहानपुरमें।

१४३६. तपती नदीरै माथै मोहणी–संगमरै घाट दाग दिराणो।

१४३७. राजाजीनै दाग पड़ियो तपती नदी ऊपर मोहणी - संगम जठै।

१४३८. हाडा राव रतनरी हवेली कनै डेरो हुतो. राणी अेक राठोड़ वीकावतजी सत कियो. वडारण पातर खवास अै ११ बळी।

१४३९. राणी अेक राठोड़ वीकावत साथ बळी. इग्यारै पातर खवास साथ बळी।

१४४०. राजा जैसिंघ सात हजारी जात सात हजारी अरदुअस्पा सह अस्पा मनसब हो।

१४४१. जैसिंघजी देवलोक हुवा जद आपरै सात हजारी मनसब हो. च्यार हजारी मनसब कुंवर रामसिंघरै हुतो, दोय-हजारी मनसब कुंवर कीरतसिंघरै हुतो।

१४४२. कंवर रामसिंघ जैसिंघोत मनसब च्यार-हजारी जात च्यार हजार असवार

१४४३. कंवर कीरतसिंघ जैसिंघोत मनसब दोय-हजारी जात अठारह सौ सवार।

१४४४. कुल मनसबरा दाम वीस करोड़ इकताळीस लाख ज्यांरा रुपिया इकावन लाख अठाईस हजार।

१४४५. जैसिंघ विसनसिंघोत खैरवै जोधो कासीदास जिणरो दोहितो।

१४४६. संवत १७८८ सवाई जैसिंघ जैपुर वसायो. आंबेर राज करता कछवाहांनूं हजार वर्ष हुआ जठा पछै जैपुर राजधानी ठहरायो।

१४४७. राजा सवाई जैंसिंघजी वैरागणियानूं परणाय मथुरामें, वृंदावनमें वैरागपुरो वसायो ।

१४४८. विवाह करम जान करमादी करतां देख हित राधा वर लेलियानूं व्रंदावन मांहेसूं सवाई जैंसिंघजी काढ दिया हा ।

१४४९. सवाई जैंसिंघ हाडा महाराव भीमसिंघजीनूं भीमड़ो कहतो ।

१४५०. पछै गोपाळसिंघ भदावररो जिणरो वेटो भदोरियो राजा जिण कनै अठारै लाख रुपया ले सतारै गयो ।

१४५१. पछै सवाई जैंसिंघजीरा लिखणसूं बाजेराव उजीण आयो. उजीणरा सोबेदार नागर ब्राह्मण छबीला बहादुर, दया बहादुर ज्यां दोनांनूं मार मालवा सतारा लारै घालियो ।

१४५२. दीपसिंघ कुंभाणी पुसकरजीमें महाराज जैंसिंघजीरै हाथरो संकळपरो जल ले रतनवारो सासण नागल जवत हुवोड़ो वहाल करायो ।

१४५३. गगवाणै राजाधिराजरै नै सवाई जैंसिंघरै राड़ हुई जद सेरसिंघजी कुसळ-सिंघजी राजा जैसिंघजीरै काम आया ।

१४५४. जैंपुररो राजा माधोसिंघजी हाथरी दसही आंगळियांमें वींटियां राखता, आ राणाजीरी चाल ।

१४५५. जिलायरा राजावतजी राम-सरण हुवा. माधोसिंघजी काण करावण आया. राघवसिंघ सभामें नाला मारिया ।

१४५६. तुंवरावाटीरो गांव मांवड़ो मडोली जठै जाटरै जंग हुवो कछवाहांसूं ।

१४५७. धुलारो धणी दलेलसिंघ रथसूं उतरतो हो गोळारी लाग रज-रज हो गयो ।

१४५८. बारै हजार घोड़ो जाटरै कनै हुतो कछवाहांसूं जंग हुवो जद ।

१४५९. संवत १८२४ जाटसूं कछवाहां राड़ कीवी ।

१४६०. मालपुरारो गांव इंदोळी झगड़ो हुवो. लखुआ आगै राजा प्रतापसिंह भागो जैपुररो धणी ।

१४६१. हकीम पैंदरुसजीनूं आगरासूं महाराज जैंसिंघजी आणिया जैपर. वां फिरंगीरो दारू काढियो ।

१४६२. जैंपुररो राजा पाट बैसै जद मैणो तिलक करै.

१४६३. आंबेरमें मुदे मानका केकान केकानरा पोता पारीक पुरोहित कछवाहांरा गुरु है ।

१४६४. जैपुररो राजा सदा रामानुजरो तिलक करै. गोविंद-देवजीरै मंदिर जावै जद माधव संप्रदायरो तिलक करै. गोकुळचंद्रजी १, मदनमोहनजी २, गोकळनाथजी ३, आंरै मंदिर जावै जद वल्लभकुलरो तिलक करै. सिव सक्ती, गणेसरै दरसण जावै जद छव तिलक करै ।

१४६५. वेस्यारी, भांडांरी चौथाई जैपुर राज्यमें लिरीजै. आ रीत जैसिंघजीसूं बंधी. उण चौथाईरो पईसो वार-तिहुवार वेस्यावांनूं दिरीजतो. राजरै हराम हुतो ।

१४६६. आंबेर थाप-उथापरा धणी खंगारोत नाथावत है. सेखावत नरूका नगारारा चाकर है ।

१४६७. आंबेर सात उमराव जिके सातां किलेदार है. किलेदारी उतरै नहीं ।

१४६८. ढूंढाड़में बारहे कोटड़ियां है जिके लिखीजै है. नाथावत १, खंगारोत २, सुरताणोत ३, कल्याणोत ४, कुंभाणी ५, पूरणमलोत ६, बळभद्रोत ७, सिव ब्रह्म-पोता ८, पचारसोत ९, वाकावत १०, भारमलरा ११ ।

१४६९. बांडी नदीरो उगवणो तट तो राजावतांरो, आथमणो सेखावतरांरो ।

१४७०. जैपुररा सारा उमराव जैपुर राजारी खिदमतमें रहै, उणियारै राव राजा रहै ।

१४७१. नगरसूं उठ रावत ईसर गोडोन वसायो ।

१४७२. राजावत संग्रामसिंघरै पांच बेटा हुवा—गजसिंह १, विजैसिंघ २, अणंदसिंघ ३, रूपसिंघ ४, हिम्मतसिंघ ५ ।

१४७३. कछवाहो राजावत फतैसिंघ मूळी कहीजतो. मूळ नक्षत्रमें जनमियो हो तिणसूं. वरवाड़ा वगैरै ठिकाणा राजावत फतैसिंघोत है ।

१४७४. वरवाड़ै राजावत मोहनसिंघोत विक्रमादितजी हुलकर मल्हारावसूं आछो लड़ियो जद महाराज माधोसिंघजी राव पदवी दीवी ।

१४७५. विक्रमादीतरो जवाहिरसिंघ, जवाहरसिंघरो रामसिंघ, रामसिंघरो सलामतसिंघ हमें वरवाड़ै भलो दातार है ।

१४७६. धुलारा राजावत दुरजसिंघोत ।

१४७७. नराणारो धणी खंगारोत भोजराज पातसाही चाकर दिखणमें गढ नळदुर्ग जठै काम आयो ।

१४७८. गीजगढ ठिकाणो ढूंढाड़में चांपा सामसिंघ देवीसिंघोतरो ।

१४७९. खाचरियावासरा सिरदारांरै पहलां रामगढ हो. खाचरियावास ढूंढाड़रो है ।

१४८०. मनोरपुररो धणी सेखावत लूणकरणजी ज्यांरो छोटो भाई रायसलजीनूं अेक गांव दियो. रायसलजी पातसाहरी चाकरी लागा. दिलीरै पातसाह बारह-हजारी मनसब दियो रायसलजीनैं ।

१४८१. सेखावत रायसलजीरै बारा वेटा जिणमें पांच निरवंस गया, सातांरो वंस रह्यो ।

१४८२. गिरधरजी १, भोजराजजी २, लाडखानजी ३, ताजखानजी ४, हमीरमलजी ५, फरसरामजी ६, हररामजी ७—आं सातांरो वंस रह्यो ।

१४८३. निरमलजीरा सेखावत रावजीका वाजै. निरमलजी रावजी कहाणा. सीकर रावजीरा है ।

१४८४. लाडखानजी ताजखानजी अै पातसाहरा दिया नाम है ।

१४८५. खंडेलारो राव सेखावत केहरसिंघजी नवाब अबदुल्लाखांसूं जंग कर काम आयो—जद साथ नव चारण काम आया ज्यांमें दोय बारट, दोय नगरीरा काम आया ।

१४८६. खंडेलै राजा केहरसिंघ अबदुल्लाखां नवाबसूं जंग कर काम आयो. इण साथ नव चारण काम आया.

१४८७. सीकररा धणीरी पीढियां—रायसल १, निरमलराव २, गंगाराम ३, सामराम ४, जसवंतसिंघ ५, दोलतसिंघ ६, सिवसिंघ ७, चांदसिंघ ८, देवीसिंह ९, लिछमणसिंघ १० ।

१४८८. सेखावत सिवसिंघ सीकररो धणी जिण नवाब कनांसूं फतैपुर लियो बीकारो भाणेज सेखावत सादोजी जिणनूं मासीरै धणीं जूंजणूंरै धणी दिवाणजी पुत्र कर राखियो. दिवाणजीरै पुत्र नहीं जिणसूं जूंजणूं सादाजी अपणायी ।

१४८९. सेखावत सिवसिंघ फतैपुर लियो जिण ठाय फतैपुररो नवाब कयामखानी जानी साहब तीन महीना सीकर लड़ियो, सीकर छूटी नहीं.

१४९०. सेखावत सादा महाराज बखतसिंघजीरी तावीतमें रामसिंघजीसूं झगड़ो हुवो जद गांव रियां डेरा सेखावतांनूं खबर आयी—क्यामखानी गुड पाखर फतैपुर आया, मदत करण वेगा आवज्यो, हाल तो म्हे गंतिया छै. जद कुंवर चांदसिंघ सिवसिंघोत नै किसनसिंघ सादावत दोनूं पांच हजार लोक ले चढिया. क्यामखानी भागा. सेखावतां वटका कर वगाय दिया ।

१४९१. तीस हजार सिपाही ले पठाण भोडै चढ़ मुरतजाखां दिलीसूं खिलत ले ढूंढाड़ माथै आयो. सीकररै धणी सेखावत देवीसिंघ भायांनूं साथ ले खाटू

कजियो कियो रिख-पूनपरै दिन. तीन हजार दादूपंथी काम आया. वलारांरो धणी खेतावत काम आयो. देवीसिंहरा भुजरै तीर लागो. मुरतजाखां भागो. पठाण घणा माराणा. फौज लूटी गयी. फतै सेखावत कीवी ।

१४९२. इण चाकरीसूं पचास रुपिया देवीसिंघरी थाळीरा रोजीना जैपुरसूं कर दीना ।

१४९३. सीकर सेखावत सिवसिंघरो बड़ो बेटो समरथसिंघनै अेक बाई जोधांरी भाणेज. बाईनूं साहपुरै उमेदसिंघजीनूं परणायी.

१४९४. कीरतसिंघ १, उमेदसिंघ २, पालीरा चांपावतांरा भाणेज सेखावत सिवसिंघरा कंवर बडा जोरवान ज्यानूं सिवसिंघ मराया समरथसिंघरै हाथ ।

## नरूका

१४९५. पाधरपा पातसाह—औ नरूकांरो विरद ।

१४९६. राजगढ १, प्रतापगढ २, रामगढ ३, लिछमणगढ ४, गोवंदगढ ५, किसनगढ ६, बळदेवगढ ७, पिरोजपुरो ८, गाजीरो थाणो ९, माला खेड़ो १०, अलवर ११—इत्यादिक बावन गढ माचेड़ीरा रावराजारै है ।

१४९७. माचेड़ीरो रावराजा प्रतापसिंघ जैतावतरो भाणेज बारणा वालारो ।

१४९८. रावराजा बखतावरसिंघ माचेड़ीरो पहलां कुचामण परणीज पछै त्रिसिंगिया वडगूजरांरै परणियो ।

१४९९. कछी सिंधरी गायां, कछरी सांढां, पटियाळ ह्यरफरी भैंसियां, घोड़ियां काठियावाड़री, हजारां रावराजा बखतावरसिंघ मंगायी ।

१५००. पथ हरदेव ओजो १, माणक मैथीलनी २ सबळनाथ जोगी ३, पालावत बारट उमेदजी ४—आं च्यारांनूं रावराजा बखतावरसिंघ मानिया ।

१५०१. समरथसिंघ मर गयो. सीकररो धणी नाहरसिंघ समरथसिंघोत जैपुर हुतो जद चांदसिंघ बुधसिंघ वैरीसूं आया. पठाण मसतेखांनूं मार मैसरी चितलागियो जात नांव दीपचंद ,नाहरसिंघरो कामेती जिणनूं मार सीकर लीवी ।

१५०२. मेड़तियो सेरसिंघ लुळवारो धणी जिणरी बेटी साहिबकंवर सिवसिंघजी परणियो, चांदसिंघ, बुधसिंघ दोय बेटा हुवा ।

१५०३. भड़ंचसूं कजियो हुवो जद परसरामजीको उमेदसिंघ और चांदावत भाई जालमसिंघ दोनूं आछा हुवा. सीकर देवीसिंघजी आंनूं दबाआ ।

१५०४. जूंजणूंरा भोजराजोत ज्यां हेटै नव सौ गांव है।

१५०५. खलारै सलार ठिकाणो. गुवाररै जैसिंघ, जैसिंघरो वाको, वाकारो वीरम, वीरमरो रतनो, रतनारो भुजवळ, भुजबळरो साकर, ठिकाणो मांडो।

१५०६. साकररो साडल, साडलरो सांवळ, सांवळरो देईदास. पटै मोडी।

१५०७. सेखावाटीमें करनोतांनूं नींवावत कहै।

१५०८. झटकैरो मारियोड़ो सांकररो जानवर सेखावत न खावै. सूर न खावै. नगारारै झालरी नीळी राखै. ऊंटांरी जुन नीळी राखै. नीला निसाण राखै. सेख बुरहानरी दवासूं मोकळजीरै सेखो हुवो जिणसूं।

१५०९. सौ गांव कासलीरा. तीन सौ गांव फतैपुररा, दोय सौ गांव खंडेलारा, छत्र सौ गांव सीकर हेटै छै।

## टोडा

१५१०. रामसिंघ तोडारो राजा भींव अमरसिंघोतरो, राठोड़ जेतारणिया नराणदास पता डूंगरसिंघोतरो दोहितो—

तोडा-वाळा रसिया ! म्हांरै अमल कियां घर आव।

## पड़िहार

१५११. पड़िहारांरै गोत्रजण देवी।

१५१२. पड़ियार नाहड़राय मंडोवर गढ करायो, पुसकरजी बंधायो।

१५१३. पड़ियारां कनैसूं रायपाळ धूहड़ोत मंडोवर लियो, छूट गयो।

१५१४. अेह न मदची रूपड़ा,
बुध घर पड़ियार।

१५१५. पड़ियार रूपड़ियै राणै अग्यारमी बेटी बुधा भाटीनूं परणायी।

१५१६. पड़ियार राणो रूपड़ियो जिणरै बारै बेटी हुई. गयाजीमें इण कही—बारै ही कन्या बारै रावांनूं परणावसूं. इग्यारै कन्या तो इग्यारै रावांनूं परणायी. बारमी कन्यानूं राव न मिळियो जद भाटी राव केल्हणनूं बारमी बेटी परणायी. उण दिनसूं पड़िहारां भाटियांरै सनमंध हुवो।

१५१७. पड़ियार वेळो बीकाजी साथै गयो बीकानेर, उठै वेळासर गांव वसायो।

१५१८. पड़ियार अेक भाई तबेलारो, दूजो भाई तोपांरो दरोगो जोधपुर।

१५१९. पड़ियार नाहड़राय पूरबसूं आय गजणरो वर पाय मारानूं मारि मारवाड़ लिवी।

## ईंदा पड़िहार

१५२०. ईंदांरी वंसावळी–नाहड़राय १, रूपदे २, मालदे ३, दूलहराव ४, जीवराज ५, भीमो ६, काकू ७, सूर ८ ईंदो ९–ईंदादा ईंदा कहाणा ।

१५२१. ईंदो सूररो बेटो नाहड़रावजी उरै आठ पीढियां हुवो जिणरै वंसरा ईंदा कहावै ।

१५२२. सूअै पड़ियार ईंदारा बेटा गोपाळनै मारियो. गोपाळसर गांव जठै – गोपाळ ईंदारो देवळ है. जाझैरीरो जुहार कहावै ।

१५२३. जाझैरी झगड़ो हुवो, चित्तो वाग ग्रहेह ।
सूजो मांगै झोड़की, भट गोपाळ न देह ।।

१५२४. ईंदो १, वीजळ २, महासिंघ ३, बूटो ४, राणो ५, भीमाळियो ६, टोहो ७, तुरकां कनैसूं मंडोवर रोहै ले दीधो चूंडाजीनूं ।

१५२५. गोगूदे उगूणावत जैतमाल सलखावतरो दोहितो नै रावजी चूंडाजीरो सुसरो ।

१५२६. भीमलियारै बेटै ईंदै टोहै रावजी चूंडाजीनूं मंडोवर ले दियो ।

१५२७. टोहो रावत कहाणो. टोहारो लाखणसी राणो कहाणो ।

१५२८. राणो १, बूटो २, भूमळियो ३, रावत ४, संगरामसी ५, अभूणो ६, जिण उगूणरै संगरामसीहोतनूं रावळ माल टीको दियो – लाखणसी टोहावतरै आठ ही बेटा कपूत हुआ जिणसूं ।

१५२९. राणा बूटावतरो बेटो हरभू, हरभूरो लाखो. वीका जोधावत साथै ईंदावाटीसूं वीकानेर गयो. लाखो १, राजधर २, रूपसी ३, गोगादे ४, दूवो ५– वीकानेर रिया. रामसिंघरै जोधपुर हुतो जद ईंदो दूदो गोगादेओत सीकदार हुतो ।

१५३०. दूदारै बेटो हरदास. वीकानेरसूं छाड जोधपुर चाकर रह्यो. पछै नबाव खानखानै मांग लियो. वडो डील, वडो धरमातमा, वडो पाटाबंध ठाकर हुतो. संवत १६७७ बुरहानपुर राम कह्यो ।

१५३१. कानो राणो उदैसिंघरी परमार करमचंदरो भाणेज ।

१५३२. ईंदा जैतसिंघरै बेटै विजैसिंघ भगू सोढानूं मारियो चारण वणि. पछै. वड़लूरा ऊहड़ांरै परणियो हुतो. सासरै गयो. ऊहड़ां मार नाखियो. जदसूं ईंदांरै ऊहड़ांरै वैर छै ।

१५३३. कलो हरराजोत रायसिंघरै चाकर रह्यो ।

१५३४. कुंभो हरराजोत करीमखांरै चाकर रह्यो सू इणरै साथै काम आयो ।

१५३५. दयालदास हरदासोत अमरसिंघजीरै चाकर रह्यो ।

१५३६. कूकड़ १, केत्रवाळ २, देवळ ३, अै रजपूत पड़ियारियां रजपूतां मांहेसूं निसरिया ।

१५३७. रामचंद देवळां तणो राजा ।

१५३८. लोहियाणै राणो प्रतापसिंघ देवळ, जिणरो रामचंद, रामचंदरो सेरसिंघ, सेरसिंघरो पन्नो. छोटी-मोटी बावन कोटड़ियां सुधामें देवळांरी है ।

## सोळंकी

१५३९. सोळंकियांरै भारदवाज गोत्र, खेत्रज चामुंडा दोय देवी, पहिपाळ पितर, परवर तीन, खिड़ियो चारण, वागड़ियो भाट, कंडारियो ढोली ।

१५४०. सोळंकियांरै कुळदेवी कंटेस्वरी ।

१५४१. वहीचरा देवी अरथ कुक्कटवहणी लोक वहचरा कहै ।

१५४२. सोळंकियांरी साखरी विगत-दारिया १, भाणगोती २, वाघेला ३, लराहा ४, वालणोत ५, वीरपुरा ६, नाथावत ७, वाराह ८, खाजीय ९ – इत्यादिक है ।

१५४३. सोळंकियांरी पीढियां लिखंते—सोळंकियांरी राजधानी अैलणपुर पाटण—गुजरातमें. वागला १, सुकर २, अरजण ३, अजैसिंघ ४, दैपाळ ५, मूळराज गुजरातरो राजा चावड़ो सामंतसी मामो सगो जिणनूं मार भाणेज सोळंकी मूळराज अैलणपूर पाटण लिवी, गुजरातरो राज लियो ।

१५४४. मूळराज १, दोणगिर २, राव वळ ३, भीम ४, करणसिंघ ५, राव जैसिंघ ६, ईनपाळ ७, कीरतपाळ ८, वाळपसाव ९, वहोड़ो १०, गोइंदराज ११, कान्हड़दे १२, मिहला १३ ।

१५४५. आगै गुजरात चावड़ांरै हुती. सावंतसिंह चावड़ो गुजरातरो धणी जिणनूं मार सोळंकी मूळराज गुजरात लिवी. सावंतसिंघरो भाणेज मूळराज ।

१५४६. मूळराज १, चामुंडराव २, वलभराज ३, दुर्लभराज ४, भीमराज ५, कर्णसिंघ ६, राव जैसिंघ ७ ।

१५४७. भीमदेवरो खेमराज, खेमराजरो देवप्रसाद, देवप्रसादरो त्रिभुअणपाळ, त्रिभुअणपाळरो कुमारपाळ ।

१५४८. सिंधराव जैसिंघ भीमदेवरो पोतो करणरो बेटो. इणरै मरजीरो हाथी सिकळस नामै. धजाआंमें कूकड़ारो चिह्न ।

१५४९. आडावळामें लखमीनाथ जोगी तापतो हो. उणरी कृपासूं सोळंकी राजा करणरी राणी कंवळावतीरै पुत्र सिधराव जनमियो ।

१५५०. सिधराव जैसिंघरी मा कजीजर तळाव खणायो, सहर बाबर वसायो, आडावळा नजीक ।

१५५१. जैसिंघरै पुत्र हुवो नहीं जद कुमारपाळ राज पायो ।

१५५२. सो संवत ११९९ रा मगसर वद ४ पुख नखत्र सूरजवार जद अणहलपुर पाटण सोळंकी कुमारपाळ सिधराव जैसिंघरी गादी पायी ।

१५५३. संवत ११९२ कुमारपाळ जनमियो. संवत १२१५ कुमारपाळ राज पायो. संवत १२३९ कुमारपाळ रामसरण हुवो ।

१५५४. दही थळी बारै गांवांसूं त्रिभुअणपाळरै हती . इणरो बेटो कुमारपाळ अठारै देसांरो राज कियो ।

१५५५. सोळंकी कुमारपाळ सात वसनरा परतला करा चढाय अठारै दिसा बाहर काढिया ।

१५५६. कुमारपाळ राज-रखी चवदै चमाळीस जिन मंदिर कराया ।

## वाघेला

१५५७. वाघेला भीलडरा उठियोड़ा है ।

१५५८. पांच पीढी वाघेलां अणहलपूर पाटण राज कियो ।

१५५९. वसतुपाळ तेसठ जंग जीतो. मोजूदीन पातसारी फौज आबूरी घाटीमें कतल कीनी. जद आबूरो धणी परमार धारावरस हुतो ।

१५६०. वसतुपाळ धोळकारा राजा वीरधमळ वाघेलारो मंत्री हुवो ।

१५६१. वाघेला भास-नरेस कहीजै ज्यांरा ठिकाणा पांच—कोठ १, पीथापुर २, गामर ३, साणर ४, गाघांरी ५ ।

१५६२. बांधूगढ राजा रामचंद वीरभाणरो वाघेलो वडो दातार हुवो. च्यार कोड़पसाव एक दिन किया—नरहर महापात्रनूं अेक, भइया मधुसुदन नरहररो पुत्र जिणनूं.........., कलावंत मियां तानसेननूं........ ।

१५६३. बांधूगढरो वाघेलो राजा जैसिंघदेव जिणरी बेटी विजैकंवरबाई राणा भींवसिंघरा कंवर जवानसिंघजी परणिया ।

१५६४. विस्वनाथसिंघ, बलदेवसिंघ, लछमणसिंघ अै तीनूं कंवर जैसिंघदेवरै ।

१५६५. खानजी मोरवाडियो वाघेलो ।

## वालणोत

१५६६. मांडळगढ आगै वालणोतां सोळंकियांरै हुतो ।

## वीरपुरा

१५६७. सोळंकी अणहलपुर पाटणसूं लूणावाड़ा कनै वीरपुर है जठै वसिया जिणसूं वीरपुरा कहाणा ।

१५६८. लवणेस्वररी कृपासूं पांच सै गांवांमें अमल कियो. पावागढरा सुतरासपुररा, रांधणपुररा गांव वीरपुरां दबाया ।

१५६९. वीरपुरांरी बेटी अवस्य पतिसहगवन करै, वर है ।

## नाथावत

१५७०. हाडोतीमें नाथावतां सोळंकियांरो ठावो ठिकाणो पतारां ।

१५७१. हाडोतीमें नाथावतां सोळंकियांरो ठावो ठिकाणो पतारां है. राव राजा वडो मुलायजो राखै है ।

१५७२. तोडै मिहलूं वास कियो. मिहलूं १, दुरजणसाल २, हरराज ३, सुरताण ४, ऊदो ५, बैरो ६, ईसरदास ७, दळपतिराव ८, आणंदराव ९, राव साम १०, वतन तोडड़ीजी ।

१५७३. बहूजी गोड़जी कंवरजी श्रीपिरथीसिंघजीरो राजलोक ज्यांरो नानो राव स्याम ।

१५७४. राव स्यामरो राव महासिंघ जिणांरा बेटांरी विगत—जसवंत १, भींव २, अरजण ३, हरराज ४ ।

१५७५. सोळंकियांरी ख्यात लिखंते. सगरो १, सगरारो देवो २, देवारो त्रिभुवण ३, त्रिभुवणरो भोजो ४, भोजारो पतो ५, पतारो रायमल ६, रायमलरो सावंतसी ७, सावंतसीरो देवराज ८, देवराजरो वीरमदे ९, वीरमदेरो जसवंत १० ।

१५७६. जसवंत वीरमदेओतरै बेटा च्यार--दळपत १, दयालदास २, अचळदास ३, चतरभुज ४ ।

१५७७. सोळंखी रायमल पतारो पाटणथी राणा रायमल कनै आयो मेवाड़ मांहे जद पहलां भोज गांव दियो थो पछै मादड़े सोथा आल्हण अमरानूं मार देसूरी लिवी ।

१५७८. सोळंकी सावंतसी रायमलोतरी बेटी मोटो राजा उदैसिंघजी परणिया. सावंतसीरो दोहितो कुंवर नरहरदास ।

१५७९. सोळंकी वीरमदे देवराजोत राणाजीरो चाकर. पटै देसूरी हुती. अेक वार रावळै चाकर रहतो जद पटै धणालो दियो हो. पछै राणोजी मनाय लियो।

१५८०. वीरमदे सोळंकीरै बेटा आठ हुआ - जसवंत १, आसकरण २, सादूल ३, अखैराज ४, किसनसिंघ ५, भारसिंघ ६, हिंगोळदास ७, वीजो ८।

१५८१. जसवंत बीरमदेवोतरै पटै देसूरी हुती. संवत १७०२ विस हुवै मुवो।

१५८२. जसवंत वीरमदेवोतरै बैटा च्यार - दळपत १, दयालदास २, अचळदास ३, चतुरभुज ४।

१५८३. सोळंकी सादूल वीरमदेवोतनूं मेरां मारियो।

१५८४. सोळंकी किसनसिंघ वीरमदेवोत रावळै चाकर रहतो जद पटै मोसरो दियो हो।

१५८५. किसनसिंघरै बेटा ७ - राजसी १, उरजण २, बळू ३, पीथो ४ राघोदास ५, सूजो, सबळसिंघ ७।

१५८६. राघोदास काम आयो. सबळसिंघ काम आयो।

१५८७. सोळंकी गोपाळदास देवराजोतरै कचरो १, कचरारो रतनो २ जसवंतरै वास।

१५८८. सोळंकी सांवळदासोत देवराजोतरै बेटा दोय-धरमराज १, पचाइण २, पचाइणरै मोहणदास।

१५८९. सोळंकी खेतसी सावंतसिघोतरै राजा सूरजसिंघजी परणिया. कंवर गजसिंघजी। भाटी गोइंददासजी फौज ले गया जद खेतसी सावंतसिघोत राणा अमरसिंघरै काम आयो।

१५९०. सोळंकी सांगो खेतसीरो नै सोळंकी भोपत खेतसीरो. राठोड़ रामसिंघ करमसेणोत बालीसां माथै फौज ले गयो जद भोपत राजा जगतसिंघरै काम आयो।

१५९१. सोळंकी पूरणमल खेतसिंघोत रावळै रहतो. पछै सिरियारी दिवी हुती।

१५९२. सोळंकी वैरसी खेतसिंघोत रावळै चाकर।

१५९३. पूरणमलरै बेटा - हरीदास १, केसोदास २।

१५९४. सोळंकी वैरसीरै बेटा - सूरजमल १, उरजन २।

१५९५. सोळंकी कचरो खेतसीरो. प्रथीराज कचरारो, भलो रजपूत, राणाजीरै चाकर।

१५९६. सोळंकी खान सांवतसिंघोत सो खंभणोर राणा प्रतापरै नै पातसाह अकबररै वेढ हुई जद राणाजीरै काम आयो ।

१५९७. हमीर सांवतसिंघोत सोमेसररो धणी ।

१५९८. हमीररो राणो. कांधल राणारो, भोपत राणारो, मोहणदास राणारो, सहसमल राणारो. महेसदास राणारो, लाखो राणारो, कान्ह राणारो ।

१५९९. दुरजणसाल हमीररो. दुरजणसालरा बेटा - अमरो १, सुंदरदास २, भाण ३, रतनो ४ ।

१६००. सोळंकी सांकर रायमलोत. जैसिंघजी सांकररो. नारायणदास जैसिंघरो ।

१६०१. नारायणदासरा बेटांरी विगत - जगमाल १, मैरां मारियो, जोधो २, भावसिंघ ३, कान्ह ४ पटै जवड़ियां ।

## पंवार

१६०२. परमारांरै यजुरवेद माध्यंदिनी साखा. वसिस्ट गोत्र, धारायसचियाय दीप देवी, मालाहेत पितर, पींपळरी पूजा ।

१६०३. वाकळ १, सचियाय २, सालण ३, कल्याण कुंवर ४, कंपादे ५, जोग ६–अै छव देवी परमारांरा वंसमें हुई ।

१६०४. परमारांरी पैंतीस साख लिखंते-परमार १, पाणीस २, वलसी लोदा ३, धरिया ४, सुर ५, गोहलड़ा ६, सोढा ७, वहिया ८, जेपाळ ९, भाथी १०, ढल ११, कलोळिया १२, सांखला १३, वाला १४, फागुआ १५, कछोटिया १६, टेवल १७, कूकण १८, भाभा १९, छाहड़ २०, काला २१, जागार २२, पीथळिया २३, भायल २४, मोटसी २५, ऊमर २६, कालमुहा २७, दूठा २८, सूवड़ २९, धंध ३०, खेर ३१, डोड ३२, पेल ३३, गूगा ३४, फाबा ३५ ।

१६०५. परमार राजा श्रीहरस जिणरो वडो बेटो मुंज छोटो बेटो सिंधुराजरो भोज ।

१६०६. करनाटकरो राजा तेलपदेव जिण अणालवती बहनरा कहासुं घर घर भीख मंगाय मुंजनूं सूली दियो ।

१६०७. परमार राजा मुंज मंत्रियां वरजतां गोदावरी उलांघि करणाटकरा राजा तेलपदेव माथे गयो. जंगमें तेलपदेव इणनुं पकड़ लियो. भाखसीमें दियो. किताईक वरसां बहन अणालवतीरा कह्यासुं आपरा सहरमें घर-घर भीख मंगाय मुंजनुं सूळी दियो ।

१६०८. रिख कपाट जड़ि गुफामें बैठो हुतो. राजा जाय कह्यो - किंवाड़ खोलो. जद रिखि कह्यो - कुण है ? राजा कह्यो - हूं राजा छूं. जद रिखि कह्यो -

राजा तो इंद्र है. जद भोज कह्यो—किंवाड़ खोलो, हूं दाता छूं. जद रिखि कह्यो—दाता तो करण हुवो. भोज कह्यो—किंवाड़ खोलो, हूं क्षत्रिय छूं. जद रिखि कह्यो—क्षत्रिय तो अर्जुन हुवो. जद भोज कह्यो—खोलो किंवाड़. रिख कह्यो—कुण छै ? भोज कह्यो मिनख छूं. जद रिखि कह्यो—मिनख तो धारापति भोज है. तो हाथ लागा विना खोलियां किंवाड़ खुल जासी. यूं हीज हुवो।

१६०९. सालवीनूं धारारै कोटवाल कहायो—अमुको कवि भोजराज पास आयो सो पावसमें थारै घरे उण कविरो डेरो हुसी. तूं कवि नहीं जिणसूं थारो घर कविनूं दिरीजै. सालवी राजा कनै जाय काव्य सुणाया—

कवयामि वयामि यामि च।

१६१०. आबूरै धणी पाल्हण परमार सरब धातू मांहे भरतरो भरियो थीतंकररो वीख हुतो सू मलाय अचळेसर है. नांदियो भरायो जिण विख घालणरा पापसूं पाल्हणरै कोढ उघड़ियो जीददेवरो नांवो लिख भराय थापित कियो जद कोढ मिटियो.

१६११. राव जगमलरो बेटो मेहाजळ जिणरा बेटांरी विगत—रायमल १, पचायण २, जैतमाल ३, कान्ह ४, करण ५, परबतसिंघ ६, परबतसिंघरो सूजो ७, सूजारो लूणो ८. धीगाणैं रहे।

१६१२. रायमलरो बेटो केसौदास राणाजीरै चाकर।

१६१३. पचायणरो लिखमण जाळोर रहै।

१६१४. कन्हरै केसरीसिंघ।

१६१५. परमार मालदेरो सादूळ जिण सादूळरै बेटो रायसलरा बेटांरी विगत—जुझारसिंघ १, गजसिंघ २, अजबसिंघ ३, बखतसिंघ ४, आणंदसिंघ ५, केसरीसिंघ ६।

१६१६. परमार आणंदसिंघनूं राठोड़ गिरधरसिंघ करमसिंघोत मारियो राणाजीरी धरतीमें।

१६१७. परमार सत्रसाल सादूळरो।

१६१८. परमार कलो मालदेओत जिणरा बेटांरी विगत—रामचंद १, भानीदास २, गोइंददास ३, किसनदास ४, भगवानदास ५, वीठलदास ६, सामदास ७।

१६१९. मालदेरै वडो बेटो कलो।

१६२०. भानीदास कलावतरा बेटांरी विगत—नारायणदास १, नरवद २, अखैसिंघ ३, मेवाड़ मांहे छै, सूरसिंघ चोड़ांरो चाकर देईदास जगरूप मेवाड़ मांहे छै ।

१६२१. परमार आसकरण मालदेरो अऊत गयो ।

१६२२. परमार सुजाणसिंघ मालदेरो. काम आयो कछवाहा मानसूं वेढ हुई जठै ।

१६२३. परमार रावत जैसो पंचायणरो जिणरै ठाकुराई जैतरै हुती, पुत्र किणरै ई हुवो नहीं ।

१६२४. परमार रावत उदैसिंघ पचायणोत जैसा पछै पाट पायो संवत १६५२ रा सावण सुद १ ।

१६२५. रणथंभोर चहुवाण हमीरदेव साको कियो ।

१६२६. परमारांरी ख्यात—रावत सांगो १, उणरो रावत महपो २, उणरो रावत राघो ३, उणरो रावत करमचंद ४, उणरो पचायण ५, राजा कछवाहा मानरो नानो ।

१६२७. संवत १५८९ विक्रमादीतजीसूं चित्तोड़ पळटियो जद जैठ सुदी २ पचायण काम आयो ।

१६२८. पचायणरो रावत मालदे पातसाहसूं छाड राणा उदैसिंघरै वसियो, जाजपुर राणाजी पटै दियो ।

१६२९. सादूळ माळदेरो. सांगो ही माळदेरो जिणरी वेटी सूरजसिंघजी अराई जाय परणिया. इणरी दोहिती आसकंवरवाई ।

१६३०. परमार सादूळ मालदेरो जिण श्रीनगर बसायो. पातसाह जहांगीर अजमेररो सोबो इणनूं दियो. सीसोदियो भीम अमरसिंघोतरा कहणासूं साहजादा खुरमरी आण में वापरा अजमेरय खुरम सामल हुवो ।

१६३१. सादूळरै रायसल. रायसलरै जुझारसिंह श्रीनगररो धणी १, रायसल २ ।

१६३२. श्रीनगररो राजा परवतराज कहावै. आगै लाख पायदळरी ठकुराई हुती—पहाड़में. राजा उमराव सरब झपानमें बैसै. वांसरी करड़ी झपान कहावै. च्यार जणा उपाड़ै ।

१६३३. परमार राजा कलसाह धारा नगरीसूं उठ कमाऊंरो राजा लखमीचंद जिणरी चाकरीमें रह्यो लिखमीचंद लोहबोगढ इणनूं पटै दियो. पछै कलसाहवे फरमावरदार होय कमाऊंरी आधी धरती दबायी, लोहयोगढ अपणायो. गढ़वार कहीजै ।

१६३४. कलसाहरा वंसमें महीपतसाह हुवो जिणरी राणी चहुवाण करणावती जिण पातसाहांरा उमरावां नीजाबतखां पहाड़ां माथै आयो. तुरकांरा नाक काटिया जिणसूं नकटी राणी कहाणी. करणावतीं महीपतसाह मर गयो हो, बेटो छोटो हो, जद करणावती फतैसिंघ........ ।

१६३५. कलसाहसूं चोथी पीढी सहजसाह हुवो जिण श्रीनगर वसायो ।

१६३६. कमाऊंरो राजा गुसांई कहावै ।

१६३७. परमार राजा दूलहराव उजीणसूं उठ भोजपुर वसियो. भोजपुर पटणा उरै कोस पचीस ।

## सांखला

१६३८. परमार चाहड़रावरै घरवासै अपछरा हुती जिणसूं बेटा दोय इणरै हुवा सो दोने बांधवां संख वजायो. जिणांसूं वाघरे वंसरा सांखला कहाणा ।

१६३९. परमार चाहड़देरा बेटा दोय - अेक सोढो, दूजो सांखलो. बेटी मायदे सगत हुई ।

१६४०. तीजी बेटी देवी कल्याणकुंवर अपछरासूं हुई ।

१६४१. रासीसर सांखलो खीमसी रायसलरो बेटो रहै. दहिया जांगळू राज करै. दहियांरो ब्रामण गूजरगोड केसो है जिण दहियांनै कहियो - थे कहो तो हूं जांगळू अमकै ठिकाणै तळाई खिणाऊं. दहियां कह्यो - अमको ठिकाणो तो घोड़ा दौड़ाबारों सराड़ो है, अठै तळाई मत खिणाव जद खीमसी सांखलासूं केसो मिलियो. खीमसी कनैसूं दहिया मराय जांगळू खीमसीरो अमल करायो. पछै केसो केसोतळाई जांगळू खिणायी, रायसलरो खीमसी चरूसूं गाळ गाळ जिण वीठूनूं दोयड़ पसाव दिया, पोळपात थापियो. इणरी बेटी ऊमा गढ गागुरण खीची अचळदासनूं परणायी ।

१६४२. खीमसीरो कंवरसी, कंवरसीरो जैसो, जैसारो मूंजो, मूंजारो ऊदो, ऊदासूं सांखला पतळा पड़िया ।

## सोढा

१६४३. परमार धरापसावरो बेटो आसराव जिणरै वंसरा सोढा पारकरा. दूजो बेटो धरापसावरो दूजणसल जिणरै वंसरा सोढा घाटेचा ।

१६४४. पारकरा सोढा ज्यांरै प्रोळपात मिहड़ू ।

१६४५. सुबेरामें पुरलांरै गांव ७०० है. धणी परमार राणो पदवी राणा रतनसिंघनूं दागड़ियै चहुवाण उदेसिंघ मारियो. गंभीरसिंघरा वैरमें. परमार मदनसिंघनूं राणो कियो ।

१६४६. पारकर राणो चंदण गोईंदरावरो वाघेलांरो भाणेज ।

१६४७. दूहो—

पड़े छवाहड़ पांच सौ,
सोढा वीसा सात ।
अेकण तीतर वासतै,
इण राखी अखियात ।।

१६४८. छवाहड़ांनूं मार पारकरा सोढा मूळी ..........लीधी ।

१६४९. मूळीरै धणी रतन सोढै उवां साथ विया विचै परवत मीसणनै दीनो, पचास लाख नगद, पचास लाख भरणो ।

१६५०. ऊमरकोटरा सोढा पदवी राणा ज्यांरी परियावळी - राणो गांगो चांपारो, पातो गांगारो, चंद्रसेण पातारो, महाराजा सूरजसिंघजी राणा चंद्रसेणरै परणिया हुता, भोजराज चंद्रसेणरो, ईसरदास भोजराजरो संवत १७१० रा भादवामें भाटी रावळ सबळसिंघ ईसरदासने ऊमरकोट मांहिसूं काढियो. सोढा जैसिंघदेनै ऊमरकोट राणो कियो ।

१६५१. गांगो १, मानसिंघ २, जोधो ३, जैसिंघदे ४, राणा गांगारो पड़पोतो जैसिंघदै ।

१६५२. सोढो रतनसी राणा गांगारो जिणरी बेटी भाटी रावळ मनोहरदास परणियो ।

१६५३. सोढो करण राणा चांपारो तिणरो खींवो, खींवारो भाणो, भाणारो मनोहर-दास - पातसाही चाकर, ऊमरकोट परसोरण जठै रहै ।

१६५४. गोडै चांपारै गळै सोढा तणी सरम ।

१६५५. ऊमरकोट सोढा सुरताण ज्यांरो ठिकाणो छाछरो १, फागलियो २ ।

१६५६. सोढा भोजराज ज्यांरा ठिकाणा तीन - छोळ १, खुहडा २, ठिगारी ३ - अै ।

१६५७. सोढा गांगदास ज्यांरा ठिकाणा च्यार - राडरातो कोटू खीपरो मुथूण २, अवरसिया ३ ।

१६५८. सोढांरा ठिकाणा पांच - सुरताण उबुल वार सोढा राम ज्यांरा छै ।

१६५९. अेक दिन घोड़ा सातवीस ऊमरकोट राणै खीमरा चोपड़ा मझ्यानूं दिया तिणसूं रीजी ।

१६६०. वीरवावरा सोढांरी पीढी - कांधल १, कांधलरो राम २, रामरो मनहर ३, मनहररो नोतो ४, नोतारो संतो ५, संतारो वीजो ६, वीजारो मोडो ७, मोडारो पंजो ८ - ओ हमै वीरवावरो सिरदार है ।

१६६१. मनहररो पांचो, पांचारो अजो, अजारो जेहो जिण सताजी कनांसूं गोड़ीजी लिया. विरावाव लिवी ।

१६६२. पछै मोडाजी सताजीरै पोतै जेहाजीनूं जेहाजीरा बेटा दुरगजी हाथीजीनूं मारियो वीरावाव. गोडिया रस माथनूं लिया जगतसिंघ चहुवाणनूं मदत आने ।

१६६३. पछै सोढो तेजमालजी हारो. भतीज सहेत यह राणै सोढा बाकीजीरै सरणै गयो वीरवावसूं निसरनै ।

१६६४. गोड़ीजी इष्ट सोढांरै जिणसूं वीरवाव कोटमें मद-मांस वापरै नहीं. जेहा सोढारो बेटो हाथी गुडै सूरजमल राणारी बेटी परणियो हो. अेक दिन सूरजमलरी बेटी बोली मोनूं म्हारै बाप वाणियानूं परणायी. उण दिनसूं हाथी मद-मांस छानै आपरै महलमें वपरायो. जेहाजी माथै गोड़ीजी कोपिया नै मोडजी खानपुर हुता उठैसूं पत्र दियो. पछै जेहाजीनूं मार मोडजी वीरवाव लियो ।

## भायला पंवार

१६६५. भायल पदमसीरो सजन वडो रजपूत हुवो सींधल चांपारी वहू देवड़ी इणरा घर मांहै पैठी. पछै किताहीक वरसां मांहोमांह लड़ चांपारे हाथ सजन रह्यो, सजनरै हाथ चांपो रह्यो. देवड़ी सती हुई. हाथ वाढ नै चांपारै धड़में नाखियो नै वळी सजनरै साथै ।

१६६६. सिवाणै सजनरा गिर छै. सजनरै रावळ, चहुवाण सिवाणारो राव सातल जिणरो दोहितो. इण अलाउद्दीनसूं मिल सिवाणो मिळायो. पातसाह सिवाणो इणनूं दियो. पछै रावळनूं पातसाह मरायो ।

## चौहाण

१६६७. चहुवाणांरी चोईस साख लिखंते—हाडो १, खीची २, सोनगरो ३, वाली ४, सोभादर ५, चोमालहण ६, गोरवाळ ७, भदोरिया ८, मीरवाण ९, वाकुर १०, चोल ११, थेथा १२, दूंदळोत १३, सेपटा १४, गरावा १५, पवइया १६, पावचो १७, सतवाळ १८, चाभुलेया १९, खेवर २०, चाहिल २१, मोहिल २२, भंडारी २३ वाणियांमें, चीतामेर २४. राठोड़ांरा भाट रामचंद कनै लिखी ।

१६६८. सोनगरां मांहेसूं देवड़ा निसरिया. देवड़ां मांहेसूं बोड़ा निसरिया. वालोत २, चीवा ३, अबीह ४—अै खांपां निसरी ।

१६६९. चहुवाणांरे कुळदेवी श्रबाय है माणकदे चहुवाणनूं साख भरी. तूठी लाखणसीनूं. श्रासापूरी तूठी जदसूं लाखणसीरा श्रासापूरांनूं पूजै है ।

१६७०. संवत१६०८ सांभर चहुवाण माणक हुवो ।

१६७१. संवत ८२२ बीसळदे चहुवाण श्रजमेर पाट बैठो ।

१६७२. वीरपाळ साहरी बेटी गौरज्या विधवा वरस तेरहरी पुसकरजी ऊपर तप करती. नवे वरस च्यार हुवा जद जबरीसुं बीसळदे इणसू रत कियो. गोरज्या वाणियाणीरै पुत्र बीसळदेसूं हुवो. नाव श्रानो. गोरज्यांरा सरापसूं बीसळदे राकस हुवो ।

१६७३. प्रथीराजरा सामंत ज्यांमें दोय सावंत खीची—पीळपींजर १, प्रसंगराव २ ।

१६७४. हम्मीरदेव रणथंभोररा किलामें लड़ै जद हमीरदेवरा उमराव रणमल १, प्रतापसी २, पातल ३, चाहड़दे ४, इत्यादिक श्रलाउद्दीनसूं मिल गढसूं निसर श्रलाउद्दीन कनै श्राया. हमीरदेव काम श्राया. पछै श्रलाउद्दीन श्रांनूं मराय नाखिया ।

१६७५. चोहाण गोगाजीरी मा वाछगदे, पिता जीवराज, घोड़ो नीलो, हरद देवरो ।

१६७६. खीचियाँरै वारठ नाथू, मोठियो ढोली. प्रोहित काथड़ियो, भाट तिलवाडियो, श्रासापूरा देवी ।

१६७७. राघोगढ १, बजरंगगढ २, खिलचीपुरो ३—श्रै खीचीयांरा ठिकाणा ।

१६७८. खिलचीपुररो खीची दिवाण कहीजतो ।
राघोगढरो खीची राजा कहीजतो ।

१६७९. खीचियां ...... पको कोट करायो हो, पछै उवा पथररो पको कोट करायो हो. पाछै उवा पथररो पको कोट फळोधी हमीर नरावत करायो ।

१६८०. खीची थारू जायलसूंमें तीन कोट कराया. खीची गोपाळदास ।

१६८१. मोटा राजारी बेटी जैतसिंघरी बहन परणियो ।

१६८२. खीची सारंगदेरो जींदराव बारूरां वुधांरो भाणेज ।

१६८३. जायल खीची गोरधन वायांरो ब्याव कियो जद चारणांनूं कह्यो—कृपा कर गीत कहो ज्यांमें जायल ठिकाणो वरस गुणचाळीसौ डायजै हाथी दियो इतो वरणन जरूर करसी ।

१६८४. गांगुरणरो धणी खीची भोज जिणरै राणी सकळादे जिणसूं श्रचळदास पुत्र प्रगट हुवो ।

१६८५. खीची अचळदासरी मा सलहदे ।

१६८६. राणा मोकळरो बेटी पोहपावती अचळदास खीचीरो राजलोक ।

१६८७. मांडवरो पातसाह महमूद बेगड़ो माथै आयो जद संवत १४८२ खीची अचळ-दास गढ गागुरण साको कियो ।

१६८८. खीची अचळदास राणी पोहपावती चितोड़रा राणा मोकल लाखावतरी बेटी ।

१६८९. चांपो १, माधो २, सादो ३ - अे चारण अचळदास कनै वेरामें ।

१६९०. गांगो १, तिलोकसी २ - दोय वाणिया अचळदास कनै. राऊ १, सेऊ २ - अै डूंव घेरामें ।

१६९१. पींपाजूके वंसमें, पीपां सम नृप लाल ।
भरम भजावै कै प्रगट, केहरि वुद्धि विसाळ ।।

१६९२. खीची राजा केहरिसिंघ भाखा ग्रंथ सीतारामचरित्र नामा अठारै प्रबंध करि वणायो. रामायणरी कथा है ।

## हाडा चौहाण

१६९३. हाडांरी पीढियां लिखंते - सोमेसर १, प्रथीराज २, जोधो ३, हाडो ४, ब्रह्म-पाळ ५, माणकराव ६, अणखपाळ ७, साधारण ८, विजैपाळ ९, वाघो १०, बूंदी वाघै लिवी. वाघारो देवो ११, केलण १२, केलणनूं तूठो केदार. समरसी १३, पटो १४, हामो १५, वरसिंघ १६, वैरो १७, भांडो १८, नरवद १९, अरजुण २०, सुरजण २१, भोज २२, रतन २३, गोपीनाथ २४, चत्रसाळ २५, भावसिंघ २६, अनिरूधसिंघ २७, बुद्धसिंघ २८, उमेदसिंघ २९, अजीतसिंघ ३०. विसनसिंघ ३१, रामसिंघ ३२ ।

१६९४. हाडांरी वंसावळी लिखंते-चहुवाण राजा सोमेसर १, प्रथीराज २, जोधो ३, हाडो ४, हाडाथी हाडा कहाया. हाडारो ब्रह्मपाल ५, माणकराव ६, अणख-पाळ ७, साधारण ८, विजैपाळ ९, वाघो १०, बूंदी वाघो वसियो. बाघारो देवो ११, केलण १२, समरसी १३, पटो १४, हामो १५, वरसिंघ १६, वैरो १७, भांडो १८, नरवद १९, अरजुण २०, सुरजण २१, भोज २२, रतन २३, गोपीनाथ २४, चत्रसाळ २५, भावसिंध २६, अनरूधसिंघ २७, बुधसिंघ २८, उमेदसिंघ २९, अजीतसिंघ ३०, विसनसिंघ ३१, रामसिंघ ३२ ।

१६९५. राव भांडारा वेटांरी विगत - नरवद १, नराणदास २, सांडो ३, नरसिंघ ४ अै ज्यारूं भाई अेक मायरा ।

१६९६. बूंदी राव भांडारो १, नारायणदास २, सूरजमल ३, प्रथीराज ४. भांडानूं दुख दियो जिणसूं हाडा प्रथीराजनूं गादीसूं दूर कियो ।

१६९७. हाडो राव नरवद भांडावत गोड़ मोटमरावरो दोहितो ।

१६९८. बूंदीराव नरवद भांडवतरा बेटांरी विगत - उरजण १, भीम २, अखैराज ३, पूरो ४, हरराज ५, मोकळ ६, अै छव बेटा नरवदरै बेटी करमावती चितोड़ सांगा राणानूं परणायी ।

१६९९. अै सातूं सूरजमल खेमावतरा दोहिता ।

१७००. बूंदीराव नारायणदासरो बडो भाई नरवद, नरवदरो उरजण ।

१७०१. राव हाडा नाराणदास भांडावत जोधपुर सांवतसी जोधावतरी बेटी खेतूबाई परणियो. खेतूबाईरो बेटो सूरजमल राणा रतनसीनूं मार मुवो ।

१७०२. सूर १, मलो २, - अै दोय सोलंकी, असोकमल परमार चहुवाण पूरबियो पूरणमल अेक पग मांहेसूं सांकळांरो काढणहार राणो रतनसी ४ - इतानूं मार हाडो सूरजमल मुवो ।

भळको लीधो भूखियो,
चाव करै चहुवाण ।
सूजै धनस संभाळियो,
अंत समै अवसाण ।।

१७०३. भूखिय भळको ओ ही त्रियांबियो कहीजतो ।

१७०४. सूरजमल नाराणदासोतरो बेटो प्रथीराज बूंदी राव जिणनूं उथप हाडां अरजण नरवदोतनू. बूंदी राव कियो ।

१७०५. हाडो राव उरजण नरवदोत देवळियो सीसोदियो सूरजमल खीमावत जिणरो दोहितो ।

१७०६. हाडा राव उरजणजीरै बेटांरी विगत - सुरजण १, रामजी २, कांधल ३, अखैराज ४ ।

१७०७. हाडै सांवत सेरसाहरी असवारीरो घोड़ो मैणां कनै चुराय मंगायो. पातसाह खबर पाय हाडोती माथै आयो. सांवत मरण मांडियो. पछै धूंधळीमलजी वर दियो - तूं जाय नै सेरसाहरी फौजमें तरवार चलाय, फौज बिगड़ जासी यूं हीज हुवो. जद सेरसाहरै समररा जैतवार - ओ विरद हुवो सांवतरांनूं ।

१७०८. राव सुरजण उरजणोत गहलोतांरो भाणेज ।

१७०९. संवत १६२५ पातसाह अकबरनूं सुरजण रणथंभोर सूंपवी ।

१७१०. राव सुरजणरा बेटांरी विगत - दूदो १, भोज २, रायमल ३ ।

१७११. दूदो सुरजणोत चांपावत जैसिंघ भैंइंदासोतरो दोहितो. राव सुरजनरै कंवर दूदो वडै डील वडो रजपूत हुतो. उणनूं उणरा झारीवरदार विरामण जिणरै हाथ कंवर भोज सुरजणोत जहर दिरायो. दूदारै बेटो नरहरदास ।

१७१२. बूंदी राव सुरजण जिणरो वडो कंवर दूदो जिणनूं विख दे कंवर भोज मरायो. राव सुरजण उदास रूप कासी गयो. मणकरणकामें सिनान करता देह तजियो ।

१७१३. हाडा कंवर दूदा सुरजणोतनू पातसाह अकबर सिरपाव दियो ।

१७१४. राव भोज सुरजणोत अहाड़ा राव जगमाल उदैसिंघोतरो दोहितो ।

१७१५. संवत १६६० पातसाह अकबररा मा मुयी आगरा मांहे जद सारा राजा-राव भद्र हुवा. राव भोज हाडो नैं राव दुरगो चंद्रावत अै भदर हुवा नहीं ।

१७१६. बूंदी राव भोज वडो अड़पदार सिरदार हुवो. हाथीरो वडो असवार हुतो. पातसाहरा मसत हाथी किणीसूं ही पकड़ीजता नहीं उवां हाथी राव भोज चढतो अकबर ज्यूं ।

१७१७ राव भोज सुरजणोतरा बेटांरी विगत - रतन १, रिदैनारायण २, केसोदास ३, मनोहरदास ४ - अै च्यार बेटा भोज सुरजणोतरा ।

१७१८. राव रतन भोजरो वालोत सोळंकी ज्यांरो भाणेज ।

१७१९. रावराजा रतन राव भोजरो बेटो बूंदी वडो ठाकुर हुतो. साहजादो खुरम पातसाह जहांगीरसूं वागी हुवो जद संवत १६८० साहजादो परवेज नै नबाब महोबतखां बुरहानपुरसूं पूरबनूं रवाना हुवा खुरमनूं हरावण तद बुरहानपुररो सूबो राव रतननूं भोळायो. पंचहजारी मनसब दियो. तदसूं ठाकुराई बूंदीरी वधी. पछे वादसाहजी दिखणमें खानजहां लारै बुरहानपुर गया. संवत १६८७ बालासुर माहे राव रतन रामसरण हुवो ।

१७२०. कंवर गोपीनाथ राव रतनरो कछवाहा भगवानदास भारमलोतरो दोहितो ।

१७२१. कंवर गोपीनाथ राव रतनरो राव बैठां राम कह्यो. राव सत्रसाल गोपी-नाथोत राव रतन आप बैठां इणनूं रावाई दिवी. पातसाह बूंदीरो टीको सत्रसालनूं दियो राव रतनरी अरजसूं संवत १६६३. राव सत्रसालरा बेटांरी विगत ।

१७२२. कंवर गोपीनाथरै बेटा - सत्रसाल १, राजसिंघ २, इंदरसाल ३, महोकम ४, महासिंघ ५, वैरीसाल ६, सूरजी ७, केसरीसिंघ ८, स्यामसिंघ ९, काकील काम आया।

१७२३. राव चत्रसाल गोपीनाथोत सुनेर सोळंकियां भिलै ज्यांरो दोहितो।

१७२४. बूंदीरो धणी हाडो चतरसाल गोपीनाथोत संवत १६६२रा आसोज सुद १५ जनम. संवत १७१४ जेठ सुद ८ आगरासूं नजदीक धोलपुर वेढ हुई साहजादा दारासाहरै नै औरंगजेबरै जद दारासाह साथै हुतो. राव चत्रसाल औरंगजेबसूं लड़ काम आयो।

१७२५. छव सतियां हुई राणियां. खवासां ३४ सती हुई. चत्रसालरी राजलोकां वांसे रही ज्यांरी विगत - जादम भारथसिंघरी मा १, सीसोदणी बहूजो हाडीजीरी मा २, कछवाही भगवंतसिंहजीरी मा ३।

१७२६. हाडो भारथसिंघ चत्रसालोत चत्रसाल साथै काम आयो।

१७२७. बूंदी रावराजा चत्रसालजीरो करायोड़ो महल चत्रमहल कहावै।

१७२८. सत्रसालरा बेटांरी विगत - भावसिंघ १, भींव २, भगवंतसित ३, भारथसिंघ ४, भावसिंघ राठोड़ांरो भाणेज, भगवंतसिंघ नरूकांरो भाणेज, भारथसिंघ यादवांरो भाणेज।

१७२९. बूंदीरो धणी रावराजा सत्रसालजी ज्यांरी बेटी कल्याणबाई महाराज जसवंतसिंघजी परणिया सासरारो नांव जसवंतदेजी ज्यां कल्याणसागर तळाव करायो. नांव श्रीमाळियांरो नाड़ (?) दियो।

१७३०. बूंदी रावराजा भावसिंघ राणा जगतसिंघरो दोहितो।

१७३१. रावराजा भावसिंघ चत्रसालोत राठोड़ दळपत राजा उदैसिंघ सालदेवोतरो जिणरो दोहितो।

१७३२. बूंदी अजे रावराजा भावसिंघजीरी आण कहीजै।

१७३३. रावराजा बुधसिंघ अनरूधसिंघोत नाथावत सोळंकी ज्यांरो भाणेज।

१७३४. रावराजा उमेदसिंघजी १, दीपसिंघजी २, दीपकंवरबाई ३ - तीनूं वेगमरा धणीरा भाणेज।

१७३५. रावराजा उमेदसिंघ बुधसिंघोत वेगमरा चूंडावतांरो भाणेज।

१७३६. रावराजा उमेदसिंघजी जोधपुर परणिया आया जद चवदा दिन नोलक रह्या. दिन पांच फतैमहलमें रह्या. दिन ११ तळेटी रह्या।

१७३७. ईसरीसिंघजी पाट बैठा जद हाडा रावराजा उमेदसिंघजी बूंदीनें अमल कर जैपुररो नायब नारायणराव जिणसूं जंग कियो. पैली जैपुररी फौज भागी पछै उणियारारै रावराजा सिरदारसिंघजी घोड़ारी वाग उपाड़ी. उमेदसिंघ रावराजारो लोक काम आयो. पग हाडांरा छूटा. घोड़ो ·········रावराजा उमेदसिंघजीरो काम आयो ।

१७३८. उमेदसिंघजी तेरै घोड़ांसूं इंदरगढ़ गया. देवीसिंघ इंदरगढ़रो धणी सत्रु वहे निवड़ियो. बूंदी अपणाय देवीरी पूजारै मिस कबीला सहित इणनूं उमेदसिंघ मारियो ।

१७३९. दिखा मांहे रावराजा उमेदसिंघजी हा जद ईडरिया राठोड़ां डोळो मेलियो. ओ पैलो व्यांव उमेदसिंघजी कियो ।

१७४०. श्री जी उमेदसिंघजी देसूरी सैल करण पधारता जद भमरा वा कीपलारी कावड़ां जळेब वैती गांवरा डावड़ा मांगता ज्यांनै कीपला भमरा दिरीजता ।

१७४१. सिलामयीरो नै गोविंददेवजीरो दरसण कुंवर उमेदसिंघजी जैपुर पधारिया. महाराज प्रतापसिंघजी सामा पधारिया. सनान कर अपसमें होय गोविंद-देवजीरो दरसण कियो. फूल ठाकुरजीनूं चढावण श्री जी वागमें गया, साथ महाराजा प्रतापसिंघजी. जद श्रीजी आंकोड़ियासूं व्रक्षरी डाळ नमायी, फूल प्रतापसिंघजी वीण लिया. जद श्रीजी बोलिया कयांहीक दिनां फल भुगतियो वीणतो प्रतापसिंघजी कह्यो—म्हारै तो आप ईसरीसिंघजी माधोसिंघजीरै ठिकाणै हौ ।

१७४२. कापणरो महाराजा दीपसिंघजी जिकांरी बेटी प्रतापसिंघजी परणिया. श्रीजीरै भतीजी. जिणसूं मिलण श्रीजी जैपुररा रावळामें पधारिया. प्रतापसिंघ-जीरी राणियां सरबनै उमदा पौसाक दीवी. सारी राणियां श्रीजीरो दरसण कियो. छोटा भाईरी बेटीरै माथै हाथ फेरियो ।

१७४३. प्रतापसिंघजी श्रीजीरै डेरै आय कह्यो—आप कहो तो कोटा-बूंदी माथै फौज ले हूं आपरै संग चालूं. श्रीजी कह्यो— इण कामसूं तो म्हारा धोळांमें धूळ पड़ै, दोनूं ठिकाणां दोनूं म्हारा पोता है जिकां माथै कांई कोप करूं ?

१७४४. पूरखरा तीरथ कर श्रीजी बूंदी पधारिया जद केदारनाथजी कनै आपरा डेरा. उठांसूं प्यादल थकां कांधै गंगाजळरी कावड़ लिवी,. पगांमें खड़ाऊं, हाथमें आसो. सरब परिगह सहित रंगनाथजीरै मंदिर पधारिया. रंगनाथजीनूं गंगा-जळ चढावणनूं ।

१७४५. श्रीजी साहब देव पूजता श्रा निसचै नहीं, श्रांरै मुख इस्ट कुण देवता है ? अेक दिन रंगनाथजीनूं श्रीजी पुसप चढावे है, पोतो रावराजा छानो थको लारै ऊभो. जद दुरगारो मंत्र पढ नै श्रीजी तुळसी-दल रंगनाथजीनूं चढायो. पछै देखै तो पोतो ऊभो है. जद फुरमाया—भगतियानें मंत्र सुणियो कांई ? श्रां श्ररज किवी—सुणियो. श्राप फुरमाया—विखामें मैं श्रो इस्ट धारण कियो हो, पांचूंही देव अेक करि जाणां छां ।

१७४६. उमेदसिंघजीरै श्राठ राणियां हुई ।

१७४७. रावराजा उमेदसिंघजीरा कंवर श्रजीतसिंघजी, बहादुरसिंघजी दोनूं रामरो धणी ऊदावत केसरीसिंघजी जिणरा भाणेज ।

१७४८. श्रजीतसिंघजी वहादुरसिंघजी दोनूं रावराजा उमेदसिंघजीरा बेटा रामरा ऊदावत केसरीसिंघजीरा भाणेज ।

१७४९. बळवंतसिंघजी वहादुरसिंघजीरो बेटो केसोरायजी पाटण कोटा वाळां चूक कर मारियो ।

१७५०. उमेदसिंघजीरै बेटा सिरदारसिंघजी, रायसिंघजी ईडररा धणी जिणरा दोहिता ।

१७५१. रावराजा श्रजीतसिंघ उमेदसिंघोत वांसवाळारा रावळरो दोहितो ।

१७५२. हाडै रावराजा श्रजीतसिंघ श्रड़सी राणानूं मारियो सो प्रसंग लिखंते. लालस पोरदान कह्यो हुई सर चेलो श्रल्लारो बारटनूं ।

१७५३. श्रजीतसिंघजीरी वूहरे यी बरछी दे मारियो सू राणारी पीठ फोड़ छाती फोड़ घोड़ाका घेरै श्राणी. बरछी लागा राणो बोलियो कीका लागां. जद कीकै धायभाई श्रजीतसिंघजी माथै तरवार चलायी. श्रजीतसिंघजीरो कमरबंधो कट चीलगत कट श्रजीतसिंघजीरै पसवाड़ारै खाणी ।

१७५४. श्रजीतसिंघजीरी तरवारसूं कीकारा घोड़ारो पग कटाणो ।

१७५५. रावराजा पदवी श्रजीतसिंघजी तीन वरस भोगवी. पछै रामसरण हुवा ।

१७५६. रावराजा विसनसिंघ वांसवाळारा रावळरो दोहितो ।

१७५७. रावराजा रामसिंघ विसनसिंघोत किसनगढरा राजा प्रतापसिंघ बहादुरसिंघोतरो दोहितो ।

१७५८. हाडो हालू हरराजरो श्रांरै रजपूत हुवो ।

१७५९. बूंदी डावी मिसल नाथावतां सोळंकियांरी . जीवणी मिसल हाडांरी ।

१७६०. बूंदी मीरांजी जागतो पीर है. राव घणी मानता राखै. जिणसूं बूंदीरा राव आगै सूर खावता. विखामें श्रीजी सूर खायो जिणसूं हमै बूंदी राव सूर खावै है।

१७६१. हाडो राव बूंदी तखत बैठो सो दारू न पीवै, भाई बेटा दारू पीवै।

१७६२. सधूर बूंदी कनै स्थान जठै अदंकिता देवी विराजै है।

१७६३. आगै बूंदीरा रावराजा नवाब दरियाखांरा नगारा खोस लिया. अेकरो नांव वैरीसाल, दूजा नगारारो नांव रणजीत. केसरिया निसाण उण नवाबरो लियो जदसूं बूंदी केसरिया निसाण रहे है।

१७६४. बूंदी तळहटीरा महलां विवाहादिक महोत्सव हुवै।

१७६५. कोटारा महारावांरी पीढियां लिखंते—राव रतन १, माधोसिंघ २, मुकुंदसिंघ ३, किसोरसिंघ ४, रामसिंघ ५, भीमसिंघ ६, दुरजणसाल ७, चत्रसाल ८, अजीतसिंघ ९, गुमानसिंघ १०, उमेदसिंघ ११, किसोरसिंघ १२।

१७६६. कोटारा महारावरी पीढि लिखंते—राव रतन १, माधोसिंघ २, मुकंदसिंघ ३, किसोरसिंघ ४, रामसिंघ ५, भीवसिंघ ६, दुरजणसाल ७, सत्रसाल ८, अजीतसिंह ९, गुमानसिंघ १०, उमेदसिंघ ११, किसोरसिंघ १२।

१७६७. माधोसिंघ राव रतनरो रावजी बैठां पातसाहरी चाकरी लागी. रावजी काळ कियो जद कोटो. पलाइतो पातसाहजी दियो. संवत १६५६रा जेठ वद ३ जनम।

१७६८. राव माधोसिंघरा बेटांरी विगत—मुकंदसिंघ १, मोवणसिंघ २, जुझारसिंघ ३, राम ४, सूरसिंघ ५, राणो उमेदसिंघ ६, उदैपुर वसायो, उदैसागर तळाव करायो. संवत १६२८रा फागुण १५ राम कह्यो राणै उमेदसिंघ।

१७६९. हाडो मोवणसिंघ माधोसिंघोत जिणरा बेटा पांच कछवाहां मारिया।

१७७०. महा बूंदी हेटेसूं कोटा हेटै महाराव जीवसिंघजी घालियो।

१७७१. इण तरै महाराज अजीतसिंघजी कोटै रावराजा दुरजणसिंघजीरी गादी कोटे महाराव हुवो।

१७७२. चत्रसालजीरो बेटो न हुवो जद चत्रसालजीरी गादी चत्रसालजीरो भाई गुमानसिंघजी बैठो।

१७७३. महाराजकंवार फतैसिंघजी.जोधपुरसूं पधार कोटै गुमानसिंघजी महारावरी बेटी परणिया. महाराव त्याग आछो चारणां-भाटांनूं दियो. घणा घोड़ा सिरपाव दिया. जस लियो।

१७७४. रामदत्त नैं विजैमाएक दोनूं हाथी कोटारा महाराव गुमानसिंघजीरा लड़िया।

१७७५. अजीतसिंघजीरो तीजो बैटो सरूपसिंघजी अणतै रह्यो।

१७७६. धधवाड़िया भोपतरामनूं कोटारै माहरावजी कोटासूं तीन कोस गांव कोटड़ी, तीन हजार घरांरी वसती, उना तांबापतर कर दिवी. कोटारा राजमें जालमसिंघ पहला भोपतराम मुसाहिब हुतो।

१७७७. दिखणियांरी फौजसूं जंगमें भागो सायद भोपड़ो गूवरा तोड़ भागो।

## सोनगरा

१७७८. चहुवाण कान्हड़दे सांवतसिंघरो बेटो जिण संवत १३६८ वैसाख सुद ६ गुरुवार जाळोरगढ़ साको कियो।

१७७९. संवत १३५६ सोनगिरै कान्हड़दे साको कियो जाळोर अलाउदीन लियो जद।

१७८०. सांचोर १, थिराद २, काकरणधर ३, वाराही ४. कछ ५, गेहड़ी ६, ऊमरकोट ७, वीकमपुर ८, जेसळमेर ९, वधनोर १०, पारकर ११, पूगळ १२, मारोठ १३, साळकोट १४, जांगळू १५, जाजासहर १६. सारण १७, हांसेर १८, वावरो १९, सोजत २०, डोडियाळ २१, रीणक २२, काछेल २३, त्रिसींगड़ो २४, आबू २५, भीलड़ी २६, सिवाणो २७, तारंगो २८, राड़द्रह २९, सूंधो ३०, मेहवो ३१, भाद्राजण ३२, मंडोवर ३३, सूराचंद ३४— इत्यादिक ठिकाणांसूं कान्हड़दे भड़ तेड़ाया।

१७८१. सोनगरा कान्हड़देसूं जाळोररा महाजनां अरज कीवी. रामो साफड़ियो बोलियो—मूंग चोखा जव काठा गेहूं साठ वरस तांई हूं पूरीस. जैतसी दोसी कहै—कपड़ा साठ वरस हूं पूरीस. भोळै साह कह्यो—असी वरस तेल हूं पूरीस. मोलहण साह वोलियो—तीस वरस ईंधण हूं पूरीस. भीमैसाह कह्यो—म्हारै इतो गुळ है, अठारै वरस तांई ढीकली गुळरा हीज गोळा चलावो. सादूसाह कहै--म्हारै दहीरा पहल भरियां है।

१७८२. जाळोररो गढ दहियै वीकै भेळायो अलाउदीनरा नायबांसूं मिलनै।

१७८३. सोनगरा कान्हड़देरै भड़—भाई मालदे १, बेटो वीरमदे २, जैत वाघेलो ३, जैत देवड़ो ४, लूणकरण माल्हण ५, सोभित देवड़ो ६, अजैसी ७, सहजपाळ ८—इत्यादिक।

१७८४. वीरमदे वांसै सुण काज, अउठ दिहाड़ां कीधो राज।
......... ............................................................॥

जँ सुकलीण साहसी, मुवां न मूकै माण ।
मसतक उपराठो हुग्रो, तणो जिसलहू ग्राण ।।
अेक ग्रसंभव सुण लियो, जळ तिरिया परवाण ।
मुवां ग्रपूठो सिर फिरयो, दूजो अेह परमाण ।।

१७८५. कान्हड़देरै भाई मालदे, मालदेरो अंबराजा, अंबराजारो खेमसी, खेमसीरो ग्रखैराजसूं खत्री हुवो ।

१७८६. सिवाणै पहाड़री डांग ऊपर गढ चढतां जीवणी तरफ गढरो नव चोकियांरो गोख त्रिकळस कहीजै. जूनी ख्यातांमें ग्रलाउदीन ग्रायो जद चहुवाण सात त्रिकळस ग्राम बैठो हुरकणिग्रांरो नाच करायो हो ।

१७८७. सोनगरांरी वंसावळी – चाचगदेरो सांवतसी, सांवतसीरो मालदे, मालदेरो वणवीर, वणवीररो रणधीर, रणधीररो लोलो, लोला नै राव रिड़मलजी जेसळमेरसूं ग्राण वाई परगणा पटै पाली दिवी ।

१७८८. चाचगदे १, सांवतसी २, मालदे ३, वणवीर ४, रणधीर ५, लोलो ६, सतो ७, खींवो ८, रणधीर ९, ग्रखैराज १० राव मालदेजीरै काम ग्रायो सूर पातसाहसूं जंग कियो जैताजी कूंपाजी सामल समेळरै खेत ।

## मानसिंघ अखैराजोतरो वंस

१७८९. मानसिंघ ग्रखैराजरो राव चंदरसेणजीरा विखामें राणा प्रतापरै गयो हो. पातसाही फौजांसूं हळदीघाटी राणारै वेढ हुई संवत १६६३ जद मानसिंघ राणारै काम ग्रायो ।

१७९०. राम मानदेवोत संवत १६२१ चैत वद ४ हसनकुलीखांनूं पाली माथै ले ग्रायो जद मानसिंघ ग्रखैराजोत राणाजीरै गयो ।

१७९१. जसवंत मानसिंघोत वडो सिरदार हुवो. मोटै राजा राणाजीरासूं ग्राणियो संवत १६२७ गांवां २७ सूं पाली पटै दिवी ।

१७९२. पालीरो गांव देईखेड़ो मांगळियो धनराजरै पटै. इण ठाय ग्रहमदावादमें जसवंतजी मोटा - राजाजीसूं ग्ररज करायी जद हजूर फरमायो - इण गांवरै बदळै दूजो गांव देसी. ग्रा वात सुण संवत १६६५ राणाजीरै गया. उठै हीज राम कह्यो ।

१७९३. सोनगरो जगनाथ जसवंतोत संवत १६७७ राणाजीरासूं ग्रायो जद गांव मिणियारी विसीनूं दिवी. पछै गांव ११ पटै जगनाथजीनै दिया. मणियारीसूं सवाय दिया ।

१७९४. दळपत जगनाथोत, भोजराज जगनाथोत ।

१७९५. भाखरसी जसवंतरो १, वाघो जसवंतरो २, माधोसिंघ जसवंतरो ३, सोनगरो स्यामसिंघ जसवंतरो ४, रामचंद्र जसवंतरो ।

१७९६. राजसिंघ जसवंतोत राणाजीरासूं आय जोधपुर चाकर रह्यो जद संवत १६६६ गुदोचरा पटारो गांव कुड़नी दिवी ।

१७९७. संवत १६७९ सिवाणारो गांव निवाई सोनगरा भाखरसी जसवंतोतरै पटै हुई ।

## भाण अखैराजोतरो वंस

१७९८. संवत १६३३ अकबररो उमराव सहबाजखां कुंभळमेर लियो जद सोनगरो भाण अखैराजोत काम आयो राणा उदैसिंघरो ।

१७९९. मोटा-राजा सोनगरा भाण अखैराजोतरी बेटी परणिया हुता सो मोटा-राजा साथ बळी ।

१८००. सोनगरो नारायणदास भाणरो पहलां पातसाही चाकर हुतो. पछै मोटा-राजाजी कनै आयो जद संवत १६४१ भाद्राजण पटै दिवी ।

१८०१. सोनगरो नारायणदासजी राणाजीरै चाकर गांव खोड़ पटै जद जाळोररो साथ खोड़ माथै आयो. नारायणदासजी निसरिया. तुरकां वसी बंद किवी जद बंदमें चतरभुज नमियो. वंदसूं छूट दिन पाय महोब्बतखांरै चाकर रह्यो. पछै महोबतखांरासूं छूट पातसाही चाकर हुवो. पूरवमें जागीर पायी ।

१८०२. मोटा-राजा संवत १६४५ सिरोही माथै पधारिया जदै राव सुरताण कागद मेल नाराणदासजीनूं बुलाया. नाराणदासजी राणाजीरै गया. खोड़ पायी. उठै हीज राम-सरण हुवा ।

१८०३. सोनगरो सांवत नाराणदासरो. भीम सांवतसिंघोत राणाजीरै काम आयो ।

१८०४. प्रताप १, सुजाणसिंघ २, अरजुण ३ - अैही सांवतसिंघरा बेटा ।

१८०५. सोनगरो सातल नाराणदासोत रावळै चाकर संवत १६८६ भाद्राजण गांव २१ सूं पटै पायी. पछै संवत १६८३ नवसरो गांव १० सूं दियो. पछै संवत १६८८ बुरहानपुररा डेरा छाड गयो ।

१८०६. जैतसी सातलरो १, सूरसिंघ सातलरो २, जैसिंघ सातलरो ३ ।

१८०७. सोनगरो किसनसिंघ सातलोत ।

१८०८. सोनगरो मालदे नाराणदासोत, नाराणदास भाणोत ।

१८०९. सोनगरो चतुरभुज नाराणदासोत ।

१८१०. पातसाह साहजहांरै हिंदू चाळीस मनसबदार ज्यांमें सोनगरै चतरभुज नाराणदासोत ही गिणीजै है ।

१८११. चतुरभुजरै गरीबदास ।

१८१२. सोनगरो प्रथीराज नाराणदासोत रावळै चाकर. संवत १६७८ गुदोचरा पटारो गांव अंदळां पटै. संवत १६८९ कुरनो गुदोचरो गांव ४ सूं पटै पायो ।

१८१३. सोनगरो केसोदास भाणोत ।

१८१४. माधोदास केसोदासोत भलो राजपूत हुवो. संवत १६९४ रावळाथी गांव भंवराणी गांवां १० सूं दिवी हुती. इणरा चाकर जैमल मुंहणोत खानाजंगी किवी जद भंवराणी छोड़ संवत १६८८ मोहबतखांरै वसियो. पछै अमर-सिंघजीरै. पछै राजा जैसिंघरै वसियो माधोदास ।

१८१५. सोनगरो कल्याणदास भाण अखैराजोतरो ।

## उदैसिंघ अखैराजोतरो वंस

१८१६. सोनगरो उदैसिंघ अखैराजोत. जिणरै सगतसिंघ, सगतसिंघरै मुकनदास हुवो. संवत १६८४ गांव दामण जाळोररो पटै पायो ।

१८१७. सोनगरो सूरजमल उदैसिंघ अखैराजोतरो जिण संवत १६५७ पालीरो पटो भाई सगतसिंघ उदैसिंघोत सामल पायो ।

१८१८. सोनगरो देवीदास सूरजमलोत. वणवीर सूरजमलोत ।

## भोजराज अखैराजोतरो वंस

१८१९. सोनगरो भोजराज अखैराजोत कूंपाजीरै वास थो सो कूंपाजी साथ काम आयो ।

१८२०. भोजराज अखैराजोत कूंपाजीरै वास हुतो सो कूंपाजीरै साथ काम आयो ।

१८२१. सोनगरा अखैराज रणधीरोतरो भोजराज, भोजराजरो सिंघ, सिंघरो जसवंत राजा दळपत रायसिंघोतरै काम आयो भटनेर ।

१८२२. भोजराजरो सिंघ, सिंघरो जसवंत भटनेर दळपत रायसिंघोतरै काम आयो ।

## जैमल अखैराजोतरो वंस

१८२३. सोनगरो जैमल अखैराजोत वीकानेर चाकर रह्यो ।

१८२४. जैमलरो अचळदास, अचळदासरो केसोदास. जाटुअै मारियो ।

१८२५. वळभद्र १, पिराग २, अनरूध ३ - अै ही अचळदासरा ।

१८२६. सोनगरो सारंगदे जैमलोत. सारंगदेरो नरहरदास ।

## रतन अखैराजोतरो वंस

१८२७. रतनसी अखैराजोत. कानो रतनसीरो ।

## देवड़ा

१८२८. सोनगरा महणसीरै घरवासै देवी रहै. उणरै पुत्र हुवो नांव देवो. देवरा वंसरा देवड़ा कहाणा ।

१८२९. महणसी रावरै दूजा च्यार बेटा हुवा ज्यांरी विगत - बालोजी १ जिणरा बालोत, चीवो महणसीरो २ जिणरा चीबा है, महणसीरो अभो ३ उणरा अभा, बोड़ो महणसीरो ४ तिणरा बोड़ा - अै च्यारू बेटा ।

१८३०. सिरोहीरा रावांरी वंसावळी - कीतू १, समरसी २, महणसी ३, पतो ४, वीजड़ ५, लूंभो ६, सलखो ७, रिड़मल ८, सोभो ९, सैसमल १०, राव लखो ११, ऊदो १२, रणधीर १३, भाण १४, सुरताण १५, राजसिंघ, उदैसिंघ, चत्रसाल, मानसिंघ, जगतसिंघ, वैरीसाल, हमै सिवसिंघ ।

१८३१. कीतू १, समरसी २, पतो ३, वीजड़ ४, लूंभो ५, सलख ६, रणमल ७, सोभो ८, सहसमल ९. राव लाखो १०, ऊदो ११, रणधीर १२, भाण १३, सुरताण १४, राजसिंघ १५, अखैराज १६, उदैसिंघ १७, सत्रसाल १८, मानसिंघ १९, जगतसिंघ २०, वैरीसाल २१, सिवसिंघ २२ ।

१८३२. देवड़ांरी पीढियां लिखंते - संवत १२१६ माह वद ११ परमारां कनासूं देवड़ै कीतू आबू लियो ।

१८३३. संवत १५८९ राव सहसमल सिरोही वसायी. सीहनूं मार वसायी जिणसूं सीहरोही नांव दियो.. आगै देवड़ा ईडररी चाकरी करता ।

१८३४. सिरोहीरो धणी आगै ईडररी चाकरी करतो ।

१८३५. लाखोराव १, राव जगमाल २, रतनसी ३, गोपाळदास ४, केसोदास ५ ।

१८३६. केसोदासरो नरहरदास जिण-कुल खानत देवड़ा राम भेळी राव अखैराज मरायो ।

१८३७. कुंवररा चाक्रमें हरीदास नरहरदासोत, चांपो प्रिथीराजोत सामल रै ।

१८३८. जगमाल १, हमीर २, सांकर ३, मांडण ४, ऊदो ५ - अै पांचूं राव लाखारा बेटा ।

१८३९. जगमाल १, हमीर २, साकर ३, माडण ४, ऊदो ५—सिरोहीरा..........
राव लखारै ।

१८४०. देवड़ो हमीर राव लाखैंरो जिण राव जगमाल कनासूं आध बटाय लियो.
हमीरनूं जगमाल मारियो ।

१८४१. हमीर अपुत्र हुवो ।

१८४२. देवड़ारै अेक अखैराज उडणो घणा भील मारिया. घणा भोमियांरी धरती
लिवी. धरतीयांरा सरापसूं मुवो ।

१८४३. उडणो अखैराज राव मालदेरो मामो ।

१८४४. अखैराजरै पाट दूदो अखैराजोत जिणनूं ऊदै रायसिंघोत भतीजै मारियो.
दूदो कहिय कसानीयो हो ।

१८४५. संवत १५७५रा पोस सुद ८ रो जनम रायसिंघ अखैराजोतरो. इणरी गादी
उदैसिंघ बैठो संवत १६१६रा चैत वद ६ नै ।

१८४६. राव उदैसिंघ, रायसिंघ अखैराजोतरो रावजी गांगाजीरी बेटी चंपाबाई
जिणरो बेटो. ओ मुवां मानसिंघ दूदा अखैराजोतरो सिरोही राव हुवो ।

१८४७. संवत १६२०रै आसोज सुद ११ पेट दूख उदैसिंघ मुवो. सिरोहीमें ।

१८४८. देवड़ो वीजो १, हरराज २, दूदो ३, तेजसी ४, आल्हण ५, भीवो ६, गजो ७,
झाझो ८, डूंगर ९, रावत सहसमल १०, सोभो ११ ।

१८४९. डीकरी देवो आथो कलो मार राव मानसिंघनूं मारियो. मानसिंघ मरतै वीजा
हरराजोतनूं कयो—सुरताण भाणरानूं राव कियो ।

१८५०. मानसिंघ पछै राव कलो सिरोहीरो धणी हुवो. राव सुरताण देवड़ै वीजै गांव
कालंदरी राड़ किवी. कलानै कुंभळमेरीमें हराय नै काढ दियो. वीजै राव
सुरताणनूं रावाईरो टीको दियो ।

१८५१. संवत १६४१ गांव नोसरा गांव २२ सूं मोटो राजा दियो ।

१८५२. संवत १६६६ मोटै राजाजीनूं परणाया. संवत १६६७ सूरजसिंघजीनूं मथुरा-
जीमें परणाया राव कलै संवत १६६१ भाद्राजण राम कह्यो ।

१८५३. भाणरो सुरताण गांव पमैरा जठांसूं आण देवड़ै वीजै हरराजोत सिरोही
राव कियो. भाणरो सुरताण पामैरासूं आण वीजै हरराजोत सिरोही राव
कियो ।

१८५४. राजा रायसिंघ बीकानेरियै राव सुरताणरा कहणासूं देवडा वीजा हरराजोनूं

सिरोही मांहेसूं काढ दियो. पछे वीजो जगमाल उदैसिंघोतसूं मिलियो. जगमालजी पातसाह कनांसूं सारी सिरोही ही लिखाय दिवी ।

१८५५. संवत १६४६ मोटा राजा पातसाही चाकर जामबेग जिणनूं साथै ले वीजा हरराजोतनूं साथै ले राव सुरताण ऊपर गया, राव रायसिंघजीरो वैर वालण ।

१८५६. वीजाजी आपरा साथसूं आबूरी गाळमें गया. राव सुरताणरै साथरा मारिया।

१८५७. राव सुरताण संवत १६६७ रा असाढ वद ८ रामसरण हुवो नै राणी ७ रजपूत ५ साथै बळिया ।

१८५८. राव सुरताणरी गादी राजसिंघ ।

१८५९. देवड़ो भैरव समरारो वडो रजपूत हुवो ।

१८६०. महादेवजी जातानूं राव राजसिंघरी वारमें देवड़ा प्रथीराज सूजावतरा भाई भतीजा मारियो ।

१८६१. राव सुरताणरो बेटो सूरसिंघ जिणनूं राव कियो. अहमदावादसूं दिखणरै मुहिम पधारतां महाराज सूरजसिंघजी सिरोही पधारिया. संवत १६६९ जद सुरताणरी गादी राव रायसिंघ हुतो जिणनूं काढ दियो ।

१८६२. पछै राव रायसिंघजी सिरोही लीवी. सूरजसिंघनूं देस मांयसूं काढ दियो। संवत १६७२ रावळासूं भाद्राजण पटै दिवी गांव २५ सूं संवत १६७५ राव सूरसिंघजी भाद्राजण रामसरण हुवो ।

१८६३. सूरसिंघरै बेटो सबळसिंघ गांवां २४ सूं भाद्राजण पटै पायी पछै संवत १६७७ भाद्राजण छूटी जद सबळसिंघ राव अखैराजरै चाकर रह्यो. गांव काछोली दियो ।

१८६४. जगमालरो अखैराज उडणो राजसिंघरो अखैराज पाडरो कहाणो ।

१८६५. सिरोही राव अखैराजरो कंवर उदैभाण, महगसिधा राठोड़ांरो भाणेज जिण रावनूं पकड़ कैद कियो ।

१८६६. कंवर उदैभाण गांव मंठाड़ थाणो हुतो उठै रजपूतांनूं लालच दे आपरै अधीन किया. मुदै ठाकुर पांच— डूंगरोत रांमो भैरवोत १, डूंगरोत ठाकुरसी भैरावत २. डूंगरोत उगरो जसवंत वीजावतरो ३, राजसी चीवो ४, उदैसिंघ दूदाणी ५, वीजा ही डूंगरोत सौ, चीबा सौ, देवळ वाघेला जेठुआ भेळा. सीसोदियो साहिबखान, महेसदास गोपाळदासोत. आधाइक मालणसूं आनै अवसी भेळा हुआ नहीं. कंवर उदैभाण मंठाड़सूं चढ राणकदाड़ै डेरा किया.

रावनूं लिखियो - भीलवाड़ा माथै जाऊं छूं, सोर सीसो मेलावसी. राव मेलियो. पछै हजार सवारांसूं चढिया. संवत १७२० पोस वद १२ घड़ी अेक रात पाछली थकां सिरोही आयो. रामा भैरवोतरो पोतरो साथ रामारो मेलियोड़ो. सारा जिणसां लियां थकां सिरोही पोळमें बैठा, हड़वड़ाट सुण जाळीमें मूंढो काढ रावजी पूछियो - साथ किणरो ? जद नारखान परबतोत बोलियो - साथ कंवर उदैभाणजीरो है. राव कह्यो. अठी कठी जावो हो ? परबतोत कह्यो – कंवरजीरा हुकमसूं आवां हां, राव कह्यो - लालै म्हासूं आ विचारी, कोई रामजीनै सदै सोदै. नाहरखान कह्यो - रामजीरो पोतरो साथै है. सारो साथ महलरै चौगिर्द फिरियो. महलरै नीसरणी लागोड़ी राव ऊंची खैंच लिवी. महलरा किंवाड़ आडा जड़िया जिणसूं रावनूं मार सकिया नहीं. पछै रावरा सारा माणस उण घरमें घालिया. राव आडो ताळो जड़ियो ऊपर महोर छाप दिवी. कंवर उदैसिंघनूं दूजा महलमें कैद कियो. सूतो हो जठै हीज ताळो दे महोरछाप किवी. पछै रामजी तिरवाड़ी, भगोतीदास पटणी हुजदार हुता सो यांनूं कैद किया, आपरी तरफरा नव हुजदार खड़ा किया. रावजी सत दिन धान न खायो. उदैभाण विचारियो - रामो भैरवोत रावनूं मरण न दै जिणसूं कैदमें हीज बैठा राखणो. ठोड़ ठोड़ कागद लिखिया ज्यांमें लिखियो - जमीमें भोमिया. ग्रासियां धंध मचायो, रावजी देसरी निगै राखै नहीं, जिणसूं पांचां ठाकुरां मोनूं चांटी भोळायी है सो हूं करुं छूं. पछै संवत १७२० रा माह बद ८ टीकारो महोरत हुतो सो रामो टीको होण दियो नहीं. यूं करतां महीनो डोढ वतीत हुवो जद राणाजीनूं चूक तेवड़ियो. घोड़ा पांच ठाकुरांनूं दिया नै कह्यो जण पीठनूं हजार रुपिया देसूं राम भैरवोतनूं, साहबखान परवतसिंघोतनूं, ठाकुरसी चीबानूं, उदैसिंघनूं उगरानूं साठ सिरपाव दूजांनूं दिया. आढो रुपो, आढो भीमराज दुरसावतरो, आसियो सुरताण मेघराजरो, चांचाळो देदो - अै चारण च्यार ज्यांनूं सिरपाव दियो, भाट सहसमलनूं सिरपाव दियो. सारा ही सलाम किवी. हसमरो डोढो रातब कियो. रोज रुपिया ३००) भुंजाईरा लागै. सिसोदिया नाहरखान दुरजणसालोतनूं घोड़ो-सिरपाव दे मठाड़ थाणै मेलियो ।

१८६७. सीसोदियो साहबखान परबतोतनूं राणैजीरा सारा समाचार लिखिया जद घोड़ो सिरपाव पाछा फेर पिंडवड़ै गयो. देवल वाघानै घोड़ो - सिरपाव दिया, नगारांरी जोड़ी दिवी, डूमाणी गांव वधारै दियो. जद रामो भैरवोत वेराजी हुवो - मो बरोबर देवळरो समाधान कियो. ठोड़ - ठोड़रा कागद रामाजीनूं आया - रावजीनूं बाहर काढो. रामाजीरी ठकुराणी राड़धरी

जिणरी रावजीनूं कह्यो - रावजीनूं बाहर काढो. जद रामो भैरवोत सिरोही आयो माह सुद ११ कंवर उदैभाण दारू पी नै जिण महलमें सूतो हो उण महलरै तालो जड़ राव कनै रामो आयो. जद राव जाणियो मोनूं मारण आयो. जद राव पेट मारण कटारी काढी. जद रावरै राणी वाघेली अणमानैती तिण कह्यो – यूं कांई करो हो, रामो थांनै मारसी तो हूं रामानूं मारसूं . जद रामो हथियार छोड़ जाय रावरै पगां लागो . कंवर उदैसिंघ छूटो . दूजा ही रावरी तरफरा कैदसूं छूटा . कंवर उदैभाणनूं कैद कियो. दूसरा उदैभाणरा चाकर मांय हुता जिणनूं अटकिया -- उगरो जसवंतोत १, ईसरदास नींबावत २, सीसोदियो नाहरखान परबतसिंघोत ३, सीसोदियो नाहरखान दुरजणसालोत ४, मोहणदास मैरावत ५, माधो राजसीरो ६, जैसिंघदे नाराणोत ७. अै दिन सात कैदमें रह्या. कंवर उदैभाण च्यार दिन जीमियो नहीं. सातवें दिन राव कंवर उदैसिंघनूं विदा कियो. इण जाय कंवर उदैभाणनूं मारियो. उदैभाणरा बेटा दोय मारिया. अेक सीसोदिणी सुजाणसिंघ सूरजमलोत राणा अमरसिंघरो पोतो तिणरी बेटी जिणरै पेटरो कंवर कल्याणसिंघ वर छवरो उदैभाणरो बेटो उदैसिंघ मरायो, दूजो बेटो उदैभाणरो च्यार मासरो जिणनूं उदैसिंघ मारियो. पछै सीसोदणीनूं राणैजी बुलाय लीधी. अखैराजरी गादी उदैसिंघ सिरोही धणी हुवो सो आबू माथै मुवो संवत १७३२ रा आसाढ़ सुद ११ ।

१८६८. सिरोही डावी मिसल राणावतांरी, जीवणी देवड़ांरी देवड़ांमें सिरै पाडीवरो धणी, उण हेटै कळंदरी, उण हेटै प्रभूजीरा गाँवरो धणी, नेजावाळरो धणी बैसै ।

१८६९. तेजावत १, सांगावत २, प्रथीराजोत ३, कलावत - इत्यादिक देवड़ा लाखावतांरी खांपां है ।

१८७०. रणधीर देवड़ो जिणरै बेटा तीन - भाण १, सूजो २, प्रताप ३ ।

१८७१. संवत १६३० देवड़ो लाखावत सूजो रणधीरोत प्रथीराजरो पिता जिणनूं डेरै बैठानूं देवड़ै वीजै हरराजोत मारियो ।

१८७२. देवड़ो प्रथीराज सूजावत वखेला पराणियो हुतो जिणसूं सिरोहीरा राव छाडणो कर वेच लेनापर हुयो. राव अखैराज देवड़ा जीवराजसीनूं महल प्रथीराजनूं चूक करायो ।

१८७३. चांदे अखैराज राव कनै सिरोहीरो आध लियो ।

१८७४. रणधीर १, पतो २, तेजो ३, मेघराज ४ ।

१८७५. मेघराजनूं राव अखैराज राम सांईदासोत भेळो मारियो. मेघराजरा भटाणै ।

१८७६. मेघराज सीसोदियो परबतसिंघरो जंवाई ।

१८७७. देवड़ा मेघराजरा बेटांरी विगत—नाटो १, भाखरसी २, डूंगरसी ३, नरहरदास ४. नाटानूं राम देवड़ारै बेटै मारियो. भाखरसी चांदा प्रथीराजोत कनै छै, नरहरदासनूं राव भटाणो दियो ।

१८७८. राव लाखो १. जगमाल २. मेहाजळ ३, कलो ४, पतो ५, हरिदास ६ ।

१८७९. देवड़ो मेहाजळ राव जगमालरो भाखर माथै अखैगढ जठै रह्यो. राव मानसिंघ मेहाजळनूं मरायो. मानसिंघ मुवो जद कलो मेवाजळरो सिरोही राव हुतो. काळंदरी वेढ कर विजैजी राव सुरताण कलासूं भाजियो ।

१८८०. मेहाजळरा बेटांरी विगत—कलो १, रायसल २, पचायण ३, जैतमाल ४, परबत ५ ।

१८८१. देवड़ा मेहाजळ जगमालोतरा बेटांरी विगत—राव कलो १, परबतसिंघ २, जैतमाल ३, रायसल ४ ।

१८८२. लखावत राव कलो मेहाजळोत देवड़ो जिणरा बेटांरी विगत—पातो १, आसकरण २, महेसदास ३ ।

१८८३. पातारा वीसळपुर आसकरणरा वांकली नै कोटड़ै, महेसदासरा अेके गांवमें है. कोरटो जुआचार है ।

१८८४. देवड़ा पता कला मेहाजळोतरै बालीसांनूं मार वीसळपुर लियो ।

१८८५. देवड़ो डूंगर १, रुदो २, नरसिंघ ३. सिखरो ४, भैंरव ५, रामो ६ ।

१८८६. डूंगर १, रुदो २, हरराज ३, वीजो ४, रामसिंघ ५ ।

१८८७. हरराज रूदावतरा बेटांरी विगत—वीजो १, लूणो २, मानो ३, अजैसी ४, वणवीर ५, धनो ६, जैमल ७ ।

१८८८. देवड़ा हरराजरा बेटांरी विगत—वीजो १, वणवीर २, धनो ३, अजैसी ४, भगवानीदास ५, मानो ६, लूणो ७ ।

१८८९. देवड़ा वीजारा बेटांरी विगत—रामसिंघ १, अमरो २, जसवंत ३, भोजराज ४ ।

१८९०. वीजैजी महाराणा जद जाम वेगरा भाईरै लहोडा लागा राव चंद्रसेणरी बेटी जामवंतीबाई बीजाजी लारै बळी ।

१८९१. वीजारा वेटांरी विगत—भोजराज १, खींवराज २, रामसिंघ ३, जसवंत ४. अमर ५ ।

१८९२. देवड़ो केसोदास खींवराज वीजावतरो राव राजसिंघ साथै माराणो ।

१८९३. अमरावत १, वीजावत २, सूरावत ३, सिखरावत ४, मैरावत ५, कुंभावत ६ - अै खांपां देवड़ा डूंगरोतांरी सिरोहीमें ।

१८९४. रहवाड़ै अमरावत डूंगरोत है ।

१८९५. उथपण माचाळ वगेरै ठिकाणा डूंगरोतां मेरावतांरा है ।

१८९६. रामपुरासूं तीन कोस वररायो ठिकाणो देवड़ारो मालमराव वाजै अै देवड़ा सामंतसीहोत हैं. चंद्रावतांरा चाकर ।

१८९७. राव पातसाह कनै गयो जद देसमें लूणा हरराजोतनूं राख गयो हो. कटार मारी. अकबर राव सुरताणसूं कहायो—लूणानूं मार नाखजे. राव सुरताण सिरोही महलांमें लूणा हरराजोतनूं मारियो. मानो हरराजोत ही लूणा साथै माराणो.

१८९८. लूणारो महेस, महेसरो भोपत ।

१८९९. मानारो सादूळराव रायसिंघ साथै काम आयो. राव मया घणी राखतो ।

१९००. सादूळरो ईसरदास ।

१९०१. वणवीर हरराजोत राव सूरसिंह सुरताणोतरै काम आयो ।

१९०२. धनो जैमल माहो-मांहरी वेढमें माराणा ।

१९०३. देवड़ो डूंगर १, रुदो २, नरसिंघ ३, सिखरो ४, भैरव ५, रामो ६ ।

१९०४. डूंगर १, रुदो २, नरसिंघ ३, सूरो ४, सावंतसी ५, जसवंत ६, करण ७ ।

१९०५. देवड़ा सूरा नरसिंघोतरा बेटा तीन—सांवतसी १, तोगो २, पतो ३, वगड़ीरा धणी जैतावत वैरसल प्रथीराजोतरा वचनसूं हटे मोटै राजा मारिया आप सिरोही ऊपर पधारिया तरै ।

१९०६. संवत १६४४ मोटो राजा सिरोही माथै गयो जद देवड़ो सावंतसी सूरावत, पतो सूरावत, देवड़ो तोगो सूरावत, राड़धरो हमीर कुंभावत, राड़धरो वीदो सिखरावत, नेतो चीबो - अै मारिया ।

१९०७. आबू मत कर और तोपां, देखें फौजां डाणै ।
जब लग ऊभो पातड़ो, तब लग मूंछां ताणै ।।
ओ दूहो पता सूरावतरो है ।

१९०८. नरसिंघ देवड़ारो बेटो कूंभो, कूंभारो मेगळ जिण देवड़ा वणवीरनूं बांहदे आण मारियो ।

१९०९. डूंगर १, रुदो २, नरसिंघ ३, सूरो ४, कलो ५, मेरादो ६, ठाकुरसी ७ ।

## चीबा देवड़ा

१९१०. चींबो १, खीमो २, जैतसी ३, दूदो ४, उदैसिंघ ५. देवड़ा चींवारा बेटांरी विगत - खेतसी १, खींवो २, रूपो ३, राजसी ४ ।

१९११. चीबा चहुआण भीले सिरोही गांव महेसर जिणरो धणी चीबो खीमो जिण लखावत देवड़ा कलानूं सिरोही रावाई दे गादी बैसाणियो ।

१९१२. खीमारो जैतो, जैतारो करमसी राव अखैराजरो उमराव. करमसीरा बेटा दोय - गोयंददास नैं भगवानदास ।

## निरवाण देवड़ा

१९१३. देवड़ो निरवाण जिणरै वंसरा निरवाण कहावै ।
कुकारसी डाहलियां कनैसूं खंडेलो लियो ।

## वागड़िया देवड़ा

१९१४. सिरोहीमें अेक खांप देवड़ा वागड़िया कहीजै ।

१९१५. देवड़ो केसरसिंघ वैजनाथोत सिरोहीरै गांव फळवद हुवो. बडो सतपुरस. इणरै रसोलो चाकर हो ।

## बोडा चहुआण

१९१६. बोड़ो चहुवाण, बोड़ारो लाखो, लाखारो बीकलदे, वीकलदेरो महीपाल, महीपालरो करमो, करमारो वीजो, वीजारा बेटांरी विगत – वाघो १, वैरसाल २, सीहो ३ ।

१९१७. वाघा वीजावतरी बेटी फूलांबाई महाराज सूरजमली परणियां ।

१९१८. संवत १६७४ गांवां १० सूं गांव सवाणो नाराणदास वाघावतनूं महाराजा दियो ।

१९१९. नाराणदासरै बेटा दोय-केसरीसिंघ नै कल्याणदास, राव रतन महेसदासोत जाळोररो धणी हुवो जद कल्याणदास कनांसूं सवाणो खोस लियो ।

१९२०. हरीदास कल्याणदासोत सिरोही राव अखैराजरै चाकर रह्यो

१९२१. चहुवाणां के काल वार रजपूतांनै मार दोय सौ पैंतीस गांवांसूं वाव लिवी ।

१९२२. चहुवाण बीकमसी राणुआ जातरा रजपूत मार पांच सौ सत्ताईस गांवांसूं सूराचंद लियो ।

१९२३. चहुवाण हाफो वीकमसी सगा भाई. हाफै कालवांनूं मार साचोर लिवी. वीकमसी राणुवांनूं मार सूराचंद लिवी ।

१९२४. भीनमाळ चहुवाण भिलै लाखणसीरा वंसमें है ।

## राणा नींबावतरो वंस

१९२५. चहुवाण राणो नींबावत राव मालदेजीरै चाकर रह्यो. सिवाणारो गांव समदरड़ी पटै पायो ।

१९२६. राणारै वडो बेटो लूणो बडो रजपूत हुवो. १८९० चहुवाण मांडण राणावत ।

१९२७. चहुवाण मेहकरण राणावत दळपत उदैसिंघोतरो नानो तुरकाणीमें काम आयो ।

१९२८. चहुवाण महकरण राणावतरा बेटांरी विगत - सिखरो १, देवीदास २, रायसल ३, रतनसी ४, रावत ५, सावंतसी ६ ।

१९२९. दळपत उदैसिंघोतरो सगो मामो सावंतसी ।

१९३०. चहुवाण सिखरो महकरणोत महाराज गजसिंघजीरो सुसरो ।

१९३१. सिखरा महकरणोतरा बेटांरी विगत - दयालदास १, रामसिंघ ।

१९३२. पीपरली चहुवाण देईदास महकरणोतरा हैं ।

१९३३. चहुवाण सावंतसी महकरणोतरा बेटांरी विगत - सादूळ १, गोपाळदास २, बळू ३, अचळदास ४, भींव ५, कलो ६, अजो ७ ।

१९३४. सादूळ महोवतखानरै चाकर. दिखणमें काम आयो, गोपाळदास दोलतखान आगै दोलतावाद काम आयो ।

१९३५. भींव जुझारसिंघ दळपतोत आगै काम आयो ।

१९३६. बळू सामतसीहोतरा तीन बेटा – नरहरदास १, सहसमल २, वेणीदास ३ - आं तीनांरै वंसरा सांचोररै परगनै चहुवाण हैं ।

१९३७. सांचोरीमें बळू सांवतसिंघोतरा बेटा तीन ज्यांरी तड़ां तीन - नरहरदासोत १, सहसमलोत २, वेणीदासोत ३ ।

१९३८. ईडरमें चहुवाण फतैसिंघोत है - देईदास १, फतैसिंघ २, प्रथीराज ३, दयालदास ४ ।

१९३९. कागनड़ै चहुवाण भोजराज दयालदासोतरा है ।

१९४०. चहुवाण जैसिंघरो भैरूंदास, भैरूंदासरो जांजण, रावजी मालदेवजीरै चाकर पहोकरण रहतो. देवराजोतसूं वेढ हुई जठै काम आयो ।

## तेजसी वरजांगोतरो वंस

१९४१. वरजांग १, तेजसी २, प्रथूराव ३, वाघो ४, सिंघो ५, वणवीर ६, सूजो ७, रामो ८ ।

१९४२. राव बेगड़ो बरजांग, बरजांगरो तेजसी, तेजसीरो प्रथमराव, प्रथमरै रावजी सूजोजी परणिया. सेखोजी, देईदासजी प्रथम रावजीरा दोहिता ।

१९४३. प्रथूरावरो वाघो जिण कोढणाबाटीमें वाघावास गांव वसायो वाघारै सिंघो, सिंघारै वणवीर, वणवीररै मोटो राजा परणियो ।

१९४४. वणवीररो सूजो, सूजारो रामो वडो सीकाई वडो रजपूत हुवो. थोभरी खारड़ी पटै रही ।

१९४५. चहुवाण अजो प्रथूरावरो बेटो, देईदासजीरो मामो. चित्तोड़ भिळता देईदासजीरै काम आयो ।

## वागड़िया चहुवाण

१९४६. सरणो देवी कुळदेवी वागड़िया चहुवाणांरै ।

१९४७. कांलो भीमसिंघजी ईडर परणीजण जावै जठै महीरै घाट जान आयी. वागड़िया प्रण मांडियो. उण घाटानूं छोड दूजै घाटं जान उतरी.

१९४८. मही नदीरो अेक घाट वागड़िया चहुवाण तोलक है उण घाट माथै वागड़िया काम आया ज्यांरी छत्रियां है ।

१०४९. राकसिया चहुवाण लवेरै भाटियांरै पेटसूं ठावा आदमी है ।

१९५०. दूहो—

रिपु भगतणरो रांडियो, जाजक रिपु सी जाण ।
कोयलरो रिपु कागलो, चारण रिपु चहुवाण ।।

अै पूरबिया चहुवाण ।

## चावडा

१९५१. चावड़ा जादवांमें मिलै सुणीजै है ।

१९५२. अणहल ग्वाळैरा कहणासूं वनमें वनराज चावड़ै नगर वसायो. नांव अणहलपुरो पटण. मुसळमान पीरान पटण कहै ।

१९५३. चावडांरा ठिकाणा च्यार-माणसा १, वरोहीडो २, लाकरोड़ो ३, वसी ४ ।

१९५४. चावड़ो रावळ आसो जिणरी लुगाई बाघेरी उघळ नै राव मालदेजीरो बेटो गोपाळदासजी हेडर जाय रह्या जिणरा घरमें बैठी ।

## तुंवर

१९५५. तुंवर चंद्रवंसी ज्यांरी साख नव - जनवारीग्रट १, चांद २, लवो ३, डाणा ४, कळपा ५, भमर ६ - इत्यादिक ।

१९५६. यजुरवेद माध्यंदिनी साखा, पंच प्रवर यग्योपवीतरा, व्याघ्रपद गोत्र, चील कुळदेवी खेजड़ी सहित आसोज सुद ८ रै दिन पूजीजै तुंवरारै ।

१९५७. खतान जातरो ढाढी, सीवोरो जातरो भाट, श्रीमाळ जातरो पुरोहित तुंवरारै ।

१९५८. दिलीमंडळमें तुंवरांरी चौरासी है. गांव दोयसौ गहलोतांरा दिलीमंडळमें है. राणो नरपतसिंघ उठै हुवो. हमै अेक राणो वाजै, दूजा गहलोत चौधरी वाजै ।

## अरजुणवंसी

१९५९. डूंगरपीठामें नूरपुर सहर है उठारो राजा चंद्रवंसी है. अरजुणरा वंसमें. निसाण झंडामें कपिरो चिह्न मांडीजै ।

## कठोछ

१९६०. चंद्रवंसी सुसर्मा राजा जिणनूं पांडव पकड़ियो. आ कथा महाभारतमें है. सुसर्मारा वंसज खत्री कठोछ कहावै है. ज्वाळाजीरो राजा कठोछ है ।

१९६१. संसारचंद कठोछ ज्वाळाजीरो राजा जिणरा निसाण झंडामें त्रिसूळरो चिह्न मंडित हुवै ।

१९६२. सहंसारचंदरी गादी सहंसारचंदरो बेटो अनिरुधचंद्र हमे है ।

## झाला (मकवाणा)

१९६३. मारकंडे मुखर वंसमें हुवा जिणसूं मकुआणा कहाणा ।

१९६४. उत्तरमें कुंतळपुर जठै राज कियो किताईक पीढी. उठांसूं उठ करांटा ठिकाणो जठै राज कियो. पछै केहर मकुआणो गुजरातमें आयो. केहर देहर पाळवण गूजरखंड आया आसापद है ।

१९६५. वांकानेररो धणी झालो राजा कहावै. धांगधड़ झालो महाराणो कहावै. नींबड़ी वढवाणरो धणी झालो ठाकुर कहावै ।

१९६६. हेम झालारै राजधानी धांगधड़ो हहेल वदनी ।

१९६७. झाला जालमसिंघरो दादो माधोसिंघ झालावाड़में वढवाण ठिकाणो है जठासूं सावर सगतावतां कनै आयो. सावररै धणी मोडी नांवै गांव दियो. सायद-
मोडी माधोसिंघरी, वतै न ऊजड़ थाय ।

१९६८. छोटी धांगड़ मुहरा सगतावत ज्यांरो भाणेज झालो जालमसिंघ ।

१९६९. पछै कोटारा महारावजीनूं बेटी परणायी. कोटै नानतो ठिकाणो पटै पायो. सायद—

माधो अटक न ऊतरै, माधो कटक न जाय ।
बेटी साटै वेगड़ो, घर बैठो घर खाय ।।

१९७०. झालो जालमसिंघ कोटासूं जाय राणा अड़सीजीरै चाकर रह्यो. जद सगतावतांरो ठिकाणो गांव चीताखेड़ो पटै पायो ।

१९७१. उजैण मांह राडसूं झालो जालमसिंघ भागो. मैदपुरमें दिखणियां पकड़ियो. पछै ईगाळियै त्रंवकजी छोडाय कोटै पोंचतो कियो ।

१९७२. वढवाणंरा धणीरै बेटो हुवो. नाम जालमसिंघ दियो. आ वात सुण राजा जालमसिंघ कोटै वेराजी हुवो—मो बैठां जालमसिंघ कंवररो नांव वढवाण दिरायो सो अनुचित काम कियो ।

१९७३. बड़वो मुसलमान जिणरी बेटी झालै जालमसिंघ खवास किवी. वा जवारण कहावती. उणरो बेटो गोरधनदास ।

## हुल

१९७४. हुलसार. हुलसाररै सीमाल, सीमालरै वाघल, वाघलरै जैतसी, जैतसीरै हरो, हरारै गैनो, गैनारै मेलो, मेलारै सिखरो, सिखरारै कीतो, कीतारै करण, करणरै भादो, भादारै पतो, पतारै केसोदास ।

१९७५. हुलसार १, सीमाल २, वाघुल ३, जैतो ४, हरो ५, गैनो ६, मैलो ७, सिखरो ८, कीतो ९, करण १०, भादो ११, पतो १२, केसोदास १३ ।

१९७६. हुल करण कीताउत बडी वेढमें काम आयो ।

## गोड

१९७७. गोडांरै कुलदेवी नारायणी केळमें विराजै है. केळा गोड न खावै, केळारा पानरा दोनांमें जीमै नहीं ।

१९७८. लाखण गोड भाट हुवो जिणरै वंशरा लाखणोत भाट गोडांरा व्रतेसरी ।

१९७९. करसाण जातरो ढोली गोडांरो व्रतेसरी ।

१९८०. ढाकासूं गोड राज बावनजी कछ राज दुवारका गया. पाछा आवतां पुसकरजी कनै दहियांनूं मारियो. प्रथीराज चहुवांण बहन परणायी. दिली प्रथीराज गयो जद अजमेर गोडांनूं दे गयो ।

१९८१. कुंतल आंब न चक्खिया, थिरराज कटाया ।
आंब काटि आंबेररा, मारोठ मंगाया ।।
थिरराज गोड मारोठ हुवो ।

# प्रकीर्णक राजपूत वंश

## बालीसा

१९८२. हाथी, सूजो मूजो, तोगो, रणभू—अै बालीसांमें ठावा हुवा. खीमरो बालीसो नामजादीक हुवो ।

## वाला

१९८३. वालै धवचै पहलां कुतबखाननूं मारि पछै पुरदलखांनूं सिवाणचीमें मारियो ।

१९८४. धवेचा दासारै भाखरसी हुवो दहियांरो भाणेज जिणनूं पातसाह अकबर सांचोर सिवाणो अै ठिकाणा दिया ।

१९८५. अेभल वालो पड़वाज घोड़ै चढि सेवड़ां मेह हिरणांरा सींगड़ां बंधो जिको छुडावण गयो ।

१९८६. काबांरो पड़गनो लूखो कहावै सताईस गांवांरो. आंबातरी काबांरो दत्त सांवळांरो गांव. सांवळ काबांरो बारट ।

## बुंदेला

१९८७. राजा हरदेस बुंदेलै वंसीधर कनांसूं उदारा लड़णरा दूहा कराय रामचंद्रिकामें धराया. केसोदासरा वणायोड़ा नहीं है ।

## कासी

१९८८. कासीरो राजा बळवंडसिंघ तगो, जिणरी मूंछ माथै कागदी नींबू ठैरतो ।

१९८९. बळवंडसिंघ सूजा वुधोलारी सभामें गयो. सूजा वुधोलो बोलियो—वनसीनद. बळवंडसिंघ समझियो नहीं. मुनसी बोलियो नवाब फरमावै है बैठो. बळवंडसिंघ बैठो. उण दिनसूं फारसी पढणी सरू किवी. किताईक वरसां फारसी बोलण लागो बळवंडसिंघ ।

१९९०. वरान राजा कासीरो धणी नित्य पांच जवनांरै गळै कराय, उवांरी छाती माथै पग धर पछै जमी माथै पग धरतो. जवनां काळपीरै खेत वराननूं

हटायो कासीरा कोटमें घालियो पछै पीरां हल्लो कियो कासीरो कोट भेळण जद वरानरी तिरियां दासियां नगन कांगर माथै चढी. पीरांरै सनमुख हुई. पीरां पीठ फेरी. कासीरो किलो पड़ियो. जमी भेळो हुवो. वरान परियह सहत दटि मुवो. कासीरी वसती विगड़ गयी।

## तिरहुत

१९९१. बारै पुसकर तिरोहितमें राजा सिवसिंघ वणायो. जळ तळजीरी हुवो. तळाव घोड़ा दोड अेक कोसरी गिरदमें वणायो उणमें कमळा नदी आय पड़ी।

१९९२. तिरोहितरै राजा सिवसिंघ अैराकी घोड़ारै अेड लगायी, ताजणारी दिवी, डोर काढी. घोड़ो सिवसिंघनूं ले भागो सो आज आवसी।

## नेपाल

१९९३. गणेसप्रसाद, भैरूंप्रसाद, विष्णुप्रसाद इत्यादिक हाथियांरा नाम नेपाळरै राजारै।

नेपाळ माथै चीणरो लसकर आयो हो जिणरो पार नहीं हुतो—नेपाळरा कहै।

## मुसळमान रजपूत

१९९४. परमार १, पड़िहार २, खींची ३, तुंवर ४, सोळंकी ५, भट्टा ६, सम्मा ७, जोइया ८, दहिया ९, मोहिल १०, जंभा ११, चहुवाण १२—इत्यादिक रजपूत मुसळमानांमें है. वरसिंघ भाटी मुसलमान हुवा ज्यांरा घर पूगळमें है।

१९९५. जैतमाल राठोड़ मुसळमान हुवा ज्यांरा घर छै-सात नागोरमें है।

१९९६. वाघेलो वेट दहियो देसोत दीठो नहीं।

## जाट

१९९७. कछवाहांसूं जंग कर जाट जवारसिंघ अठारै दिन अलवर रह्यो. जद अलवर जाटरै हुगी।

## मराठा

१९९८. दिखण डभोळथी सुरत खुसकीरै राह कोस १३० तठी सिवा दिखणीरो चाकर नैमूजी जादोराय तीन हजार असवार पांच हजार पाळा ले साथै नै संवत १७२० रा माह वद ५ सूरत मारी. पांच दिन रह नै गांव लूंटियो, बाळियो. पचास लाखरी मता ले गयो. केईक अधकी कहै छै।

१९९९. विलंदां अंगरेजियांरी कोठी वची. अै संभ ऊभा रह्या ।

२०००. गांव वुदड़ादे सौं बाळियो. पातसाही थाणादार हुतो जिण कोट पकड़ियो सो पातसाहजी दूर कियो. पातसाहजी फुरमाया—च्यार लाख रुपया लगाय सूरत दोळो कोट करावणो. अेक वरसरी जगात वोपारियांनूं माफ किवी ।

२००१. बालाजी पंडितरो बेटो पेसवो वाजेराव. पिंगळिया जातरो मरहटो छत्रपतीरै पेसवो हो वाजेराव पहला ।

२००२. कोकणरै नै गुजरातरै विच डाभाड़ांरो अमल हुतो ।

२००३. त्रंबकजी डाभाड़ानूं वाजेराव पेसवो मारियो ।

२००४. त्रंबकजी डाभाड़ानूं वाजेराव पेसवो मारियो. हैदराबादरो नवाब आपरै माथासूं पाग उतार दिवी. कह्यो—हमारा दस्तार भाई त्रंबकरावकूं मारा जिणकूं मार मैं पाग बांधूंगा पछै वाजेराव नवाबसूं मिलियो है. नबाबनूं राजी कियो जद नबाब कह्यो—मांग, तूठो. इण कह्यो—पाग बांध लीजै. नवाव पाग बांध लिवी ।

२००५. साहू राजारो नव बाजेराव सवा लाख रावत ले वंगालै गयो. सरजंगनूं भजायो, पछै लखणेऊरो नबाव मनसूरअली वसोण कनै अढार लाख रुपया पेसकसीरा लिया ।

२००६. पूनै दिखसु आनि बाजेरावरै तीन बेटा हुवा—नानो १, भाऊ २, रुघनाथराव ३ ।

२००७. नानारो बेटो वडो विसवासराव काका भाऊ साथै गिलजांरी राड़में काम आयो ।

२००८. संवत १७७२ छठ बुधवार दिखणी भाऊ माराणो. अहमदसाह दोजथी जीतो ।

२००९. अजमेररो सूबैदार संताजी बावळियो दिखणी भाऊरा जंगसूं कंगालरै भेख किसनगढ छतरीमें आय बैठो हो. माळी कनांसूं मूळा मांग खाधा ।

२०१०. पेसवा नानारी गादी नानारो छोटो बेटो माधोराव बैठो ।

२०११. पेसवा माधोरावरी गादी माधोरावरो बेटो नारायणराव बैठो ।

२०१२. पेसवा नारायणरावरी गादी नारायणरावरो गरभावास छोटो माधोराव बैठो ।

२०१३. नानो फड़नवीस रात-दिनमें दोय घड़ीरी नींद लेतो ।

२०१४. दोनूं पेसवांका उमराव अम्रतरावजी कासी रहै, वाजेरावजी विठूर रहै ।

२०१५. मानकरी उमराव सवा सै पेसवांरै हुता.

२०१६. उभाड़ गायकुहाड़ां जोड़ैज हुता ।

२०१७. नागपुरका भोंसळा श्रीवंतका दिया हुआ मुलकमें मुहम मालकी करै. गायकवाड़ ही अैसे सींधिया हुलकर पेसवांरा अमलमें सर्वत्र मुहम मालकी करै ।

२०१८. नागपुररा धणी वडा रघूजी, ज्यांरै तीन बेटा हुवा—जानूजी १, मूंधाजी २, सोबाजी ३ ।

२०१९. मूधाजीरा बेटा तीन—रघूजी १, चिमना बापूजी २, मानिया बापूजी ३ ।

२०२०. रघूजीनूं जानूंजी खोळै लिया. जानूजीरी राणी दरियाबाई ।

२०२१. सोबोजी खोळो उथामणनै फोज ले आया जंगमें मूधाजीरै हाथरो घमाको लूटो. हाथी चढिया महावत नूरमोहमदरा कह्यासूं सोबाजीरै गोळी लागी. हाथीरै होदै खेत रहिया ।

२०२२. लालध्धारो घोड़ो, नगीनो हाथी नागपुररा राजारी मरजीसूं हुवा ।

२०२३. दस हजार घोड़ो सासतो नागपुर तबेलै हुतो ।

२०२४. सिंधिया दिखणी सांवतांरा पायपोस वरदार नै हुलकर सांवतांरा उमराव है ।

२०२५. सिंधियारो सेस - कुळ कहावै. झंडामें सरपरो चिह्न है आंरै ।

२०२६. सिंधिया मानाजी फाकड़ा वडा बहादुर हुता. टीपूरी नोकरी करी. करणाटकसूं दरब रोजगारको जबरीसूं दिखणमें लाया ।

२०२७. मानाजी फाकड़रा बेटा अंगदराव फाकड़ा धाड़ा किया. सिरजीत रावरा मारणमें सामल हुता. गुजरातमें गया, उठै हीज मुवा. अणंदराव फाकड़ारा बेटा मुकंदराव हमै दोलतरावजीरै खोळै गादीनसीन हुवा ।

२०२८. कनेर खेड़ासूं उठ चमार गूंदो सिंधिया अपणायो. चमार गूदारो नांव श्रीगूदो प्रसिध दायो कियो ।

२०२९. दिखणमें किनेरखेड़ी उतन सिंधियारी. जयाजी, जोत्याजी, दत्याजी तीनूं राणोजीरा बेटा. राणोजी जनकूजीरा, जनकूजी दत्याजीरा ।

२०३०. जयाजीरै लुगाई सखूबाई, जोत्याजीरै लुगाई सगुणाबाई, दत्याजीरै लुगाई भागीरथीबाई ।

२०३१. सिंधिया जमांयांनूं लोक आपो कहै ।

२०३२. दोलतरायरी वायकू वायजांबाई, सरजैरावरी बेटी, हींदूरावरी बहन. दूजी वायकू रुकमाबाई ।

२०३३. सिंधिया राणोजीरै खवासरो बेटो पटेल माधजी केदारजी. सिंधियारी लुगाई मेणाबाई जिणसूं पुत्र प्रगट हुवो दोलतराय।

२०३४. माधजी पटेळरी त्रिया पारवतीबाई जिण दोलतरावसूं जंग कियो।

२०३५. भाऊगरदी हुई जद पटेल माधजीरो पग कटाणो. पठाण राणैखां आपरै घोड़ै चढाय ले निसरियो. पूनै गयां पछै पटेळ बडो भाग पायो।

२०३६. दिखणी जगू बापूजी ओ दादोजी लखू ओ दादो किसनजी गोपाल भाऊरायजी पटैल राणोजी बांयठाण वगेरै माधजी पटैलरै ठावा आदमी हुता।

२०३७. हुळकर मलारराव दिखणमें बेटीरो व्याव कियो जद भेळपरै तावै बुलायोड़ां व्याव ऊपर बूंदीसूं उमेदसिंघजी रावराजा दिखणमें गया हुता।

२०३८. संवत १८२३ रा वैसाख वद ११ मलारराव मुवो।

२०३९. धनगर नराणराव वारगळरी बेटी गोतमांबाईनै विलाड़ै दिवाण गोहणदासरी बेटी ननूबाई दोनूं हुलकर मलाररावरी त्रियां सत कियो।

२०४०. हुलकर मलाररावरी लुगाई गोतमांबाई. बेटी बेटो खांडेराव भरतपुररा जाटां मारियो. खांडेरावरै अहल्यासूं पुत्र भालेराव पुत्र हुवो. महा नीच उण मुवां तकूजी खोळै आया।

२०४१. अहल्यारै मूकताबाई बेटो फणसियानूं परणायी।

२०४२. अहल्यारी बेटी ऊदाबाई फणसियानूं परणायी हुती।

२०४३. कासीराय १, मलारराय २—दोय बेटा तकूजी हुलकररै।

२०४४. माधबारो बेटो बापू हुलकर।

२०४५. संताबारो बेटो भीखाजी।

२०४६. तकूजीरी तिरियारो नांव रुकमाबाई।

२०४७. तकूजीवा १, माधजीबा २, संताजीवा ३—अै तीन सगा भाई।

२०४८. पाटणकर आभाजीराव बडो उमराव हुवो है. पेसवांरै उठणरो कुरब हुतो।

२०४९. गढमंडळांमें गूडरो राज हुतो सो दिखणियां खोसियो।

२०५०. सोलापुररो राजा ढेढ है सो वेडर कहावै. हमै हैदराबादरै नबाब सोलापुर ले लियो।

## पिंडारा

२०५१. पिंडारा करणाटकरा कदीमसूं पछै करणाटकसूं आया. सांवतांरै चाकर रह्या. आं हिंदुसथान माथै हुलकरांनूं विदा किया जद पिंडारा तईनात कियां. जदसूं हुलकरांरा चाकर ठैरिया पिंडारा।

२०५२. पिंडारांरी बाईस ढाल हुलकररै तावीतमें हुती. खरड़ारी राड़में हैदराबादियानूं लूंटी पिंडारा धनाढ्य हुवा. ।

## सिख

२०५३. गुरु नानगरै बहन हुई नानगी ।

२०५४. चमार तेगबहादुररै सामल माराणो, उणरा सिख रैदास कहावै. रैदास गुरदे पास ।

२०५५. मिरासी नाम मरदानो तेगबहादुररै साथ माराणो, जिणरा मिरासी मरदानारा पंथरा सिख रबाबी है. सिख हजारीरो माल उणानूं देवै ।

२०५६. चंडाळ तेगबहादुररै साथ काम आयो. उणरा सिख रंगरेटा कहावै. रंगरेटा गुरुदा बेटा ।

२०५७. लाहोररो राजा सिख रणजीतसिंघ जिणरै दोय कंपू तिलंगांरा, अेक कंपू गोरखियांरो, अेक कंपू हिंदुस्तानियांरो, जुमले च्यार कंपू ।

२०५८. सिखांरी हाल दस लाख बंदूक है ।

२०५९. सिख मसीतमें ग्रंथसाहब पधराय मसीतनूं मसूगढ कहै. सेवापंथी सिख दयावंत विसेस हुवै, सबकी सेवा करै, दुखीकी विसेस सेवा करै. भीख न मांगै बडी वट नै आजीवका करै ।

२०६०. गुरु नानकरा भेखमें अकाली हरामजादा हुवै ।

२०६१. सिख सिखनूं कहै - मुंडितका विसवास न करणा ।

२०६२. सिख चक्रवर्ती हुसी - ग्रंथ साहब कहै है ।

२०६३. सिखांरै ग्रंथसाहबमें कहै हे-चवदै सौ वरस ताईं सिखरो प्रताप वधतो करसी ।

२०६४. चवदै सौ वरस सिखांरो राज रहसी - यूं सुणीजै है ।

## जोगी

२०६५. द्वादस गुरू, द्वादस शिष्य, जुमलै चौबीस कापाळिक हुवा है ।

२०६६. उगरभैरव कापाळकर नै शंकराचार्यरै विवाद हुवो है ।

२०६७. जोगी गरीबनाथ सिववाड़ी आयो. भांगढ़भूतड़ थका रहै. कहै हमीर पतरपुरो जिणकूं सिववाड़ोका राज दे ।

२०६८. अेक दिन चांपै पेटियो गरीबनाथजीनूं दियो. आं कह्यो तूं सिहवाड़ीरो मालक हुसी. आ वात सुण रणधीर सिववाड़ी मांहेसूं चांपानै काढ दियो. ओ नगर जाय रावळ वीदारी चाकरीमें रह्यो ।

२०६९. जोगी गरीबनाथजी सोव आसण बांधियो चांपा दूदावतरी वारमें. नागुड़दो भांडरवे गरीबनाथजीरा जोगी है ।

२०७०. गोरख टीलासूं पीर नदीनाथजी अखंड वस्ती अटकरै तट वारै तट जठै आण आसण बांधो. सवा लख हिंदू आंरा सेवक है. अटकसूं किलासूं मखंड नजदीक है ।

२०७१. मखंडा नवीनाथजी गादी पीर सीतळनाथजी. सीतळनाथजीरा चेला हुसियारनाथजी जोधपुर आया संवत १८८५ रा सावण सुद १२ ।

२०७२. मखंडा सीतळनाथजी पीर कहता - जोगी हमारे वरसमें अेक बार आवै सो हमेसा गुरूनै वरसमें दोय वार आवै सो हमारो गुरुभाई ।

२०७३. संवत १८८४रा आसोज सुद १५ आयसजी महाराज श्री लाडूनाथजी महामंदिर हाथी पचीस दिया. ज्यांरी विगत - हाथी १ भांडियावासरा आसिया वांकीदासनूं दियो, हाथी १ मूंदियाड़रा बारट अनाड़सिंघनूं दियो, हाथी १ कोटड़ारा वणसूर भैरानूं दियो, हाथी १ लोलावसरा बारट गोकळदासनूं दियो, हाथी १ मोरटउंकारा वारट चालगदाननूं दियो, हाथी १ भदोरारा सांदू गिरवरदाननै दियो, हाथी १ कंबाळियारा खड़िया जालानूं दियो, हाथी १ मिहरूरा महियारिया नंदलालनूं दियो, हाथी १ मथाणियारा वारट बगसीरामनूं दियो, हाथी १ खुरलारा सुरताणिया वीजानूं दियो, हाथी १ धड़ोईरा रतनू केहरानूं दियो, हाथी १ खारावाररा बोगसा सुरतानूं दियो, हाथी १ कसूंवलारा बारट सिवदासनूं दियो, हाथी १ धबूकड़ारा गूंगा उदैरामनूं दियो, हाथी एक भोजग मनोहरदास जोधपुररो जिणनूं दियो, हाथी १ जोधपुररा भाटनूं दियो, हाथी १ जोगियांरा भाटनूं दियो ।

२०७४. नाटेस्वर पंथरा जोगेस्वर संतोखनाथजी अंजा भादारो कोढ गमायो ।

२०७५. राजेन्द्रगिरजीरो चेलो उमरावगिरि, उमरावगिरिरो बेटो रूपगिरि खिताब दिलावरजंग, रूपगिरिरो बेटो रामलालगिरि ।

२०७६. कोटै उत्तमगिरजीरा विसणूगिरजी, वखतगिर दोयां चेलां भंडारो आछो कियो आं लारै ।

२०७७. विसणूगिरिरै चेलो दयागिरि. वखतगिरिरो चेलो गैवगिरि ।

२०७८. सूळी घोड़ी कठपींजरो नागोर आग्या करि प्रभातगिरजी दूर करायो ।

२०७९. सन्यासी धूणीगिरि धूणीनाथ कहायो. वीकानेर सूरतसिंघजी आंनूं गुरु कर मानिया ।

२०८०. चितोड़ माथै रावत भीमसिंघजी जद अां आगै समीचा खेड़ारा संध्यागिरिजी मनीजता ।

## वैरागी

२०८१. पूरवमें मकसूदाबाद चंद्रकाणै रामावतांरा वडा असतळ है. दोय सैं वैरागी सासता रहै. वडा सदावर्त दिरीजै है ।

२०८२. पूरबमें पढै वैरागी टकसाळी कहावै, अपडे अड़वंगी कहावै ।

२०८३. वरधमान, अरणघटा अां दोनां ठिकाणां नींबावतांरा वडा असतळ है, वडा सदावर्त दिरीजै है ।

२०८४. झालांरो वांकानेर जठे वूबावतांरो ठाकुरदुवारो है ।

२०८५. कवीर संवत पनरासैमें हुवो. दादू पहलां सौ वरसां. पातसाह सिकंदरनू परचो दियो. सिद्धपुरादिक ठिकाणा नेमीस्वर विहारादिक जिन-मंदिर संप्रति कराया गजधर, अस्वधर, नरधर मंडित. जोतिसियां अरज किवी—आपरी आयु सौ वरसरी है सौ वरसरा छत्तीस हजार दिन हुवा. छत्तीस हजार जिन-मंदिर संप्रति कराया. मातारा उपदेससूं आपरी ऊमररा दिनां जिता जिन-मंदिर कराया, जुमलै सवा लाख जिन-मंदिर कराया राजा संप्रतिः नवासी हजार जिन-मंदिररो जीर्णोद्धार करायो. सगती राजा परमार कलौ भरत क्षेत्र राती क्षेत्र जीतो. सिंध सौवीर देसरो राजा उदई नाम. सो साधू हुवो जैनी ।

## जैन साधु

२०८६. हीरविजय सूरि तपगछमें श्रीपूज, जिनचंद्रसूरि खरतरगछमें श्रीपूज़, अेक समेमें हुवा. अकबरनूं परचा दिया ।

२०८७. विद्या खरतरांरै विसेस, धन तपांरै विसेस ।

२०८८. तपागछमें तेरै बैसणा है, खरतगछमें इग्यारै बैसणा है ।

२०८९. विजयदेवसूरिरा वंसरो श्रीपूज जिणरा जती तपांमें घणा है. उण पछै विजयाणंद सूरिरा वंसरा श्रीपूजरै जती घणा है ।

२०९०. तपगछरो जती जांनविजै महाराज अजीतसिंघजीरै विद्यागुर ।

२०९१. ग्यानविजै तपगछरो जती महाराज अजीतसिंघजीरै विद्यागुरू. पळासणी पटै हुती. उणरै सारा चेला कपूत हुवा ।

२०९२. ग्यानविजै अजीतसिंघरो गुरू, जिणरो चेलो वीरमविजै, घरमें त्रिया घाली ही. उणरी बेटी फळोधीरा मथेण श्रीचंदनूं परणायी ।

२०९३. हीरविजै जिनमतरो टीपणो वरतियो हो. पछै संवत १८४१ रै वरस नागोरी लूंकांरा गछरा श्रीपूज हरखचंद जिनमतरा टीपणारो वरतारो कियो ।

२०९४. कछ देसमें कच्छी ओसवाळ कक्खसूरी किया. उवै हमै आधाईक आंचळियामें वसै है, आधाईक तपांमें वसै है ।

२०९५. बीकानेरमें सात सौ घर खरतरगछरा स्रावकांरा है ।

२०९६. जिनदत्तसूरि परचा घणा दिया देवानुग्रहात् ।

२०९७. जिनदत्तसूरिरो पोतोचेलो जिनकुसळसूरि. दादागुरू पोतोचेलो दोनूं दादाजी कहावै ।

२०९८. रूपो-रंगो गुरु भाई. रूपारा वडा खरतरा, रंगारा रंगविजया ।

२०९९. खरतरो जीवण जती अेक महाराज अभैसिंघजी आगै मनीजतो. चुगली घणी करतो. चेला इणरै कपूत हुवा ।

## ओसवाळ

२१००. रतनप्रभ सूरि पछै कंवळैगछ कक्खसूरि हुवा ज्यां बहतर गोत्र ओसवाळ किया वाघरेचा, वाघसार इत्यादीक ।

२१०१. कवळैगछ रतनप्रभसूरी गांव ओसियामें अठारै गोत्र ओसवाळ किया—तातेड़ १, वापणा २, करणावट ३, वलह ४, मोराक ५, कुळहट ६, विरट ७, लोहड़े साजने ८, श्रीश्रीमाळ ९, श्रेष्ठ १०, संचेती ११, आदित्यनाग १२ इत्यादिक ।

२१०२. श्रेष्ठ गोत्र साखा—वैद्य १, विरट गोत्र साखा भुरट २, बहल गोत्र साखा चोरड़िया ४ ।

२१०३. साह भैंसो मांडूगढ, हमीर लालाढो इलवर तजारै. सुराणो सोम सैंभर, लोढा रामो भैरव दोनूं भाई आगरै, कोठारी रणधीर मेड़तै, मुहणोत जैमल जाळोर, कोठारी आसकरण मेड़तै, परबत लूणियो जाळोर, कांकरियो वालो कुंभळमेर, रतनसी गांधी जाळोर, मलकसी विहारी आगरै, थिरो भंडसाळी जेसळमेर, बछावत करमचंद सगरामोत बीकानेर, कावड़ियो भाभो भारमलोत उदैपुर—अै आछा दाता हुवा ।

२१०४. जगदेव परमाररो बेटो मधुदेव, मधुदेवरो सुर जिणसूं श्रीपूज धरमघोसाचार्य वाणियो कियो. सुररै वंसरा सुराणा कहाणा ।

२१०५. संवत १११५ सुराणा नागोर वसिया ।

२१०६. नागोररै सुराणै सहदेव चूहड़मलोत लाख रूपिया आपरा घरसूं राजमें भर मुहणोत नैणसी सुंदरदासरा छोरू कबीला कैदसूं कढाया ।

२१०७. नागोररो सुराणो पूंजो, पूंजारो कुंजो, कुंजारो सतीदास, सतीदासरी बेटी सुराणी जिणरी सगाई दुगड़ांरै किवी ही. उवा कंवारी हीज बीकानेररै गांव मोरखाणै जमीमें प्रवेस कर गयी. इणरो वडो देवळ है - मूरखाणै इणनूं सुराणा दुगड़ दोनूं पूजै है।

२१०८. खाटूरो परमार खींवसी जतीरा उपदेससूं वाणियो हुवो. उणरै वंसरा खींवसरा. वीसळपुर अेकण. जोधपुररा अेकणरा उदैपुर राणाजीरा कामेती है।

२१०९. पूगळियो मुहतो फळोधी राव हमीररो कामेती राव हमीररी सभामें बैठो. रणरै बेटो हुवो जद वधाई दिवी. उण वेळा भैरवी बोली. रावजी पूगळिया मुंहतानूं कह्यो - इणरो नाम कोचर दीजो, इणरो धणो परवार वधसी, ओ भागधारी हुसी, यूं हीज कियो. कोचर मुंहतारा हमै मारवाड़में तीन सै घर है।

२११०. अेक जगड़ू वधमानरो, दूजो जगड़ू सोलावत हुवो।

२१११. विमळसा उदै भाणरो पोरवाळ।

२११२. वस्तुपाळ, तेजपाळ, मालदे, लूणा - च्यारूं आसराजरा बेटा।

२११३. वस्तुपाळ तेजपाळ देलवाड़ै जिणमंदिर करायो. जिणनूं अठारै करोड़ रुपिया लागा।

२११४. आबू माथै गांव देलवाड़ो विमळसाह जिनमंदिर करायो. जिणनूं नव किरोड़ नै किताईक लाख रुपिया लागा है।

२११५. खरवै तपरो बेटो भैंसोसाह आभानगरी हुवो।

२११६. मांडूरो नाम आभानगरी है।

२११७. भैंसोसाह जातरो गंधइयो हो जिण संवत ९८८.......... ।

२११८. अणलपुर पाटणमें गुजरातरा वाणियानूं बैंक छकिया।

२११९. रायमल वैद मुंहतो सोजत हुवो. वीरमदेजीरै काम आयो. सिर पड़ियां जूझियो कवंध हुय वेटानूं मारियो. सायर —

मुंहता मांटी मारका, घररा गणै न पारका।

२१२०. पतो वैद मुंहतो सिवाणै कला रायमलोतरै काम आयो।

२१२१. वैद मुंहतो पतो अजावत सिवाणै कलाजीरै काम आयो. सायर-

पड़ियै सिर दाथो पातो कुंमट गिरवर।

२१२२. पता वैद मुंहतारै नराणदास ।

२१२३. पळसी वैद मुंहतो महाराजकुमार गजसिंघजी जाळोर लियो जद विहारियांरै काम आयो ।

२१२४. संवत १६८५ (?) करमचंद डोसी सैत्रुंजयरो जीरणोद्धार कियो उदैपुरवासी ।

२१२५. मुहणोत नैणसी जाळोर आमल जद बाड़मेररो कामदार कुमो जिणरी बेटीरी सगाई नैणसीजीसूं किवी. नैणसी परणीजणनै गयो, खांडो बाडमेर मेलियो. कमो मूसळ खड़ग सामो मेलियो. डावड़ी औरठै परणायी. जिण कारणसूं नैणसी वाड़मेर हृदवाट मेलियो वाड़मेर ग्रोळरै कगाररै काठरा किंवाड़ हुता जिके आण जाळोर गढरी पोळ चढाया. सायर --

वाहड़मेर जुगां लग डूवो, कमला - तणी कमाई ।

२१२६. मुहणोत सुंदरदास जैमलोत गांव कवळै सींधल सीधलांरा आदमी कट पांच सै जणा मारिया. पचीस सती हुई. वडो राहचक हुवो ।

२१२७. गांव सूजासररो वाणियो जात भंडसाळी करणीरै दरसण आयो इणरो रंग भूरो हुतो. आप फरमायो - आव म्हारा भूरिया ! जदसूं उणरो नांव भूरो प्रसिद्ध हुवो. भूरारै वंसरा भूरा कहावै. देसणोकमें माताजीरा खजानांरी कुंचियां आं कनै रहै छै ।

२१२८. जगनाथ १, रायमल २ - अै दोय बेटा लूणा गोरावतरा ।

२१२९. भंडारी जगनाथजीरा बेटा दोय - अेक जीवराज, दूजो हेमराज ।

२१३०. चतुरभुज भंडारी जीवराजोत है ।

२१३१. गंगारामजी नै बछराजोत भंडारी - अै हेमराजोत ।

२१३२. सिवाणै भंडारी मेघराज रावडैरांरी पीढियां लिखंते - लूणो १, जगनाथ २, हेमराज ३, बछराज ४, खींवराज ५, जुझारमल ६, मेघराज ७, जीवमल ८ ।

२१३३. मेड़तारो लूणियो तिलोकचंद जिण रुपिया तीन हजार आपरा घरसूं दिखणियांनूं दे नै पुरोहित हरजीवण, भंडारी सोभाचंद नै मुहणोत ग्यानमल, मुंहता बांकीदास वगेरै जोधपुररा मुसद्दी आगरै ओळिया हुता ज्यांनूं छुडाया ।

२१३४. भंडारी भगवानदास रायमलोत वीठळदासरो पिता खैराडू राड़ सईदासूं हुई जठै काम आयो ।

२१३५. साहजी सय्यद पटैलरै मुखतार हो जिणरो बेटो मोहमद मीरखां दिली फिरंगीरी सिरकारसूं पांच सौ रुपिया महीनांरा - महीनै पावै. सिकल अकल आछी है ।

२१३६. सींघोजी वाघोजी दोनूं भाई मारवाड़में आया. सींघोजीरै पारसजी नै चांपसीजी दोय बेटा ।

२१३७. पदमोजी राणोजी. भैरूंजी, सोभोजी दोनूं पदमाजीरा ।

२१३८. सुखमालजी १, रायमलजी २, रिड़मलजी ३, प्रतापमलजी ४, प्रिथीमलजी ५, नथमलजी ६, सुखमलजीरा ।

२१३९. प्रिथीमलजीरा बेटा दोय—विजैमलजी १, ................ ।

२१४०. सींघोजी १, पारसजी २, पदमोजी ३, सोभोजी ४, सुखमलजी ५, प्रिथीमलजी ६, विजैमलजी ७, तखतमलजी ८, धीरजमलजी ९, तिलोकमलजी १०, सुमेरमलजी ११ ।

२१४१. भीमराजोत चांपसीजीरा. जोरावरमलोत राणाजीरा ।

२१४२. फतैचंदजीरा रायमलोत पींपाड़रा सिंघवी ।

२१४३. चैत वद ९ सिंघवी धनराज चलियो. चैत सुद ९ सिंघवी भीमराज चलियो ।

२१४४. वनो वाघनेर हालाकूंडी इत्यादिक ठिकाणां सिंधमें ओसवाळ रहै है ।

## सरावगी

२१४५. जैपुर सरावगी मनीराम टूंकियो वडो धनाढ्य रहै. दोलतरामरा लसकरसूं बांधियो ।

## ब्राह्मण

२१४६. सुध द्राविड़ पंचधा—वडम द्राविड़ १, अकड़तिमड़ द्राविड़ २, वृहच्चरण द्राविड़ ३, अष्ट सहस्र द्राविड़ ४ इत्यादि ।

२१४७. श्रीमाळी ब्राह्मण ज्यांरा चवदै गोत्र चौरासी अवटंक है. श्रीमाळियां अणहल्लपुर पाटणसूं आणि भीनमाळ सोळंकियांनूं वसाया ।

२१४८. श्रीमाळियांरै च्यार फेरा वींद-वींदणी साथ परणै जिण दिन फिरै. दूजै दिन कसाररा लाडूरा कवा सात वींद-वींदणीरा मुखमें दियै, इता ही कवा वींदणी वींदरा मुखमें देवै छै. वींदणीनूं कळायां माथा लेनै च्यार फेरा फिरै ।

२१४९. किणहीक सहरमें पांच जणा श्रीमाळी श्रीमाळियांरी पंचायती करता. उवै देवाजोगसूं पांचूं ही सरीरपात हुवा. किताईक वरसां मांहोमांह मतो कियो--

पंचायती कियांनूं आपांनूं घणा वरस हुवा सो हमैं निहचो करो, पंचायती करणी आपैं भूला क न भूला. इत्तीमें अेक ब्राह्मण विनती किवी—आज म्हारै घर आरोगजो. जद आं कह्यो—थारी मा डाकण है जिणसूं थारै घर न जीमां. जद उण कही—इण बातरी मोनूं प्रतीत नहीं. आं कही तूं जागतो सोय बोरावजे, आ थारो रातरै समै मूंडो सूंघसी ।

२१५०. त्रिवेदी १, चतुर्वेदी २, जैठी ३, धीरेजा ४—इत्यादिक खट मोढ ।

२१५१. नेड़ियाभू पीपरलो पीथराई—अै पलीवाळांरा गांव तैमड़ा कनै है ।

२१५२. पलीवाळ जाट धाम नाम तोतो जिण बीकमपुररी हदमें गांव बाप वसायो. तोतारा बेटांरी विगत—भवड़ो १, लखो २, वेहरो ३, मेधो ४—बापमें मेधड़ासर तळाव करायो ।

२१५३ कनोजियांमें व्यास पदवी नहीं, सरवरिया व्यास कहावै है ।

२१५४. गौतम-गोत्री ओमाळी गर्ग-गोत्री पोहकरणा ।

२१५५. महेस्वरियांरी साढी सात जातरी विरत पोकरणा छोगाणियांरै है हाल तक ।

२१५६. व्यास तेजो, गंगो, तिलोकसी तीनूं सगा भाई. तेजारो तापी, गांगारो गिरधर, तिलोकरो कछरो ।

२१५७. गंगाराम-सुतेनाऽयं द्विजेन हरिशर्मणा ।
कृतस् तार्क्ष-पुराणस्य सारोद्धार-समुच्चयः ।।

२१५८. गंगारामरो बेटो पारीक हरदेव ज्यांरा वंसमें प्राणनाथ बीकानेर दरबारमें कथा करै हमैं ।

२१५९. हरजीजी, हरदेवजी सगा भाई. मेड़तै लोकमणजी आंरै कड़ूबै भाई-भतीज लागै ।

२१६०. डंडी श्रीधर चितोड़ा नागररो दूध हुतो ।

२१६१. पारख गोकळ मोढ जातरो वाणियो हो. गुजरातरा सेठ खुसालचंद अभयादासरो गुमासतो. दोलतराय आगै कुलकुलां ।

२१६२. भागरा जातरा रैवारी खारोड़ा हुवा. उवारै हाथ देवळजीरा खजानांरी कूंचियां रहती ।

२१६३. मारोतरा जातरा, मलिक खिताब, सगा भाई दोय ललू १, जगता २ वडा धनाढय मुलतानमें हुवा ज्यां खत्रियांरै बहन बेटीरो नातो होण दियो नहीं, पातसाही [illegible] ।

२१६४. नाहर डैंररा भील सिंदूररी आड कियां, कमरे गूघरमाळा वांधियां बैस नै पगां धुणांमें पाल तीर चलावै. झगड़ै गाढा अलवाणा पगां अेक वैत च्यार आंगळ भाळ तीररी, अढाई आंगळ भोई ।

२१६५. पहाड़में नीवार जात हिंदू भैंसो मार खावै है. नीबारांनूं मार नैं सिसोदियां नैपाळ लियो ।

२१६६. धनगरांरी जातां लिखंते - हुलकरी १, वारगल २, वाघ ३, बाघमारिया ४, ढमढेरिया ५, भागवत ६, सैनगिया ७, खोळिया ८, गाडला ९, धोरापत १०, खटकिया ११, इत्यादिक गाडरी धनगर कहीजै ।

## चारण

२१६७. दागल १, गोलमा २, मीसण ३, - अै तीनूं भाई है ।

२१६८. टापरिया १, मिहड़ २, केसरिया ३.- तीनूं मकुआणां मांहेसूं निसरिया. मांहेमांहे संबंध हुवो छै ।

२१६९. रोहड़ियांरी बारै साखा - रोहड़िया १, घूना २, कुरड़िया ३, पाथेड़ ४, धीरण ५, सांवळ ६, मीकस ७, कळहट ८, हांहणिया ९, वीठू १०, भाणू ११, गूंगा १२ ।

२१७०. महियारियांमें सुंदरबाई बैलाई कहावै. कदीमसूं कुळदेवी जाणराव सांदुवांरै महमाय वरदेवी छै ।

२१७१. पहलां नरूका मुजरो करै, पछै आढा सुभराज करै ।

२१७२. सोरठिया वडा चारण है सासणांरा धणी ।

२१७३. बारट ईसर सूरावत, सूरो दीतावत ।

२१७४. सींचाणो १, हाफा २, वीरवद्रका ३, राजपीपळा ४, कुहाटिया ५, इत्यादीक ईसर पोतांरा गांव हालाहारमें ।

२१७५. सांदू गोयंद १ राव गांगाजीरै काम आयो ।

२१७६. सांदू चांगारो गोयंद, गोयंदरो ऊदो, ऊदारो मालो, मालारै च्यार बेटा हुवा- जसवंत १, सांवतसी २, ईसरदास ३, आसकरण ४ ।

२१७७. लाडणू परै गांव जोगलियै सामोरांरो वास जठारै सामोर महेसदास महाराज गजसिंघनूं राजी कियो ।

२१७८. इणारो भतीज हेमो गणेसदासरो बेटो जिण जोबनेर जाय महाकाळीरो वर पायो, [illegible] गजसिंघजीनूं रिझाया ।

२१७९. भीमराजरा वंसमें आसिया हरराम उदैभाणोत हुवो ।

२१८०. गांव जोगलियारो सामोर महेसदास जिण महाराज गजसिंघजीनूं जीभ दिखाड़ी. महाराज सामोरांरी जातसूं ऊदावत हुवा. महेसदासरो भतीजो हेमो, गणेसदासरो बेटो जोबनेर जाळपादेवीरी क्रिपासूं विद्यावान हुवो. भाखा चत्र रूपग महाराजरो बणायो ।

२१८१. बेलारो अमरो, अमरारो राणो, राणारो सूरो, सूरारो करमसी, करमसीरो वैरो नै कांधल, कांधलरै भीमराज जिण दारोली नै जीतावास दोय सांसण पाया ।

२१८२. बैलो १, अमरो २, राणो ३, सूरो ४, करमसी ५, कांधल ६, भीमराज ७, अखैरज ८, उदैभाण ९, हरराम १० जीतावत हुवो ।

२१८३. भारमल १, सादूळ २, जगमाल ३, किसनो ४, कमो ५ - पांच बेटा आंढा दुरसारै हुवा ।

२१८४. भारमालरा गांव पेसुवै १, जगमालरा गांव झारवां २, सादूलरा गांव लुगीमे, किसनारा गांव पांचटियैं, रायपुरियैं ।

२१८५. भारमल दुरसावतरै च्यार बेटा हुवा - रूपजी १, भीमजी २, नंदोजी ३, चंदोजी ४, दडी डोढी रूपजीरी चालक नै चरोमढ रूपजीरो डोढीमें ।

२१८६. बरायळ १, हींगोळो २, लासोळ ३, पांचेटियो ४ - च्यार गांव किसनै दुरसावत पाया. किसनारै बेटा दोय - महेसदास १, मेघराज २, बरायळ, हींगोळो मेघराजरै रह्या. पांचेटियैं ।

२१८७. पसायत गाडणारी बेटी नाम मेली आढानूं परणायी. मेलीरो सावकुत बेटो हो जिणनूं मार पसायतरा बेटां आढांरी जमी अपणाय गांडणां वसायी दाय कनै ।

२१८८. लालस पीरदानरी वहन नाम कामळ. उवा गांव खारड़ै महेवामें बारट कुंभानूं परणायी हुती. वडो धन हुतो. लालसजी कहाणी. वडा लाहा लीधा ।

२१८९. संवत १७८४ जेठमें राणै अजैसी सोदा वारूनूं प्रोळपात कियो चितोड़ ।

२१९०. महपैरा धधवाड़ियै धधवाड़ासूं चितोड़ जाय सांगा राणानूं रिझाय गांव ढोकळियो लियो संवत १५५३ सासण पायो ।

२१९१. मूळीरै धणी सोढै रतन ऊंगा - आंथवियां ताईं मीसण परबतनूं कोड़पसाव दियो. पचास लाख नगद, पचास लाखरो भरणो नै लाख रुपियांरो माल नवैनगर वाई सोमैनूं मेलियो ।

२१९२. गांव राड़द्रहरो दुगहदो महिरेळण रायपाळ धूहड़ियारो दत्त चंद पायो ।

२१९३. महाबड निकस काछेलांनूं कूंपै मलीनाथोत दियो ।

२१९४. कपार तळाव मंडावेर काछेलांरो वीत जीवण सादू कूंपैजी खिणायो ।

२१९५. राणै परताप लखा बारटनूं गांव मनसुग्रो दियो ।

२१९६. कवियो गंगादास रूपसिंघोत गांव वासणीसूं उठ गोड़ वीठळदासजी क्रनांसूं गांव कुंभारियो तांबापत्र दियो ।

२१९७. रावत बळू नगर हुवो जिण देवानूं गांव मुडरवळो दियो ।

२१९८. गांव धूधाउर रावत खीमकरण जैतमालोत रोहड़िया कान्हनूं दीनो ।

२१९९. गांव बोर रावत खीमकरण जैतमालोत चारण कूंपानूं दियो ।

२२००. गांव पड़गनै वड़गांव सासण चारणांनूं गांव कुहाड़ी ग्रासिया दला सोभावतनूं देवड़ै रामै मेघराजोत दियो ।

२२०१. गांव डोडवाड़ियो संवत १६९१ देवड़ै चतुरै चारण पता जोधावतनूं दियो ।

२२०२. गांव जालहेड़ो देवड़ा राव मानसिंघ, दूदा, ग्रखैराजोत, जगमोतरो दत चारण त्रिभवणनूं ।

२२०३. गांव पुळियो राव सुरताण भाणरै दियो ।

२२०४. महियारिया लिखमीदासनूं रावजी माधोसिंघजी चोईस गांवांसूं तुणपुर दियो ।

२२०५. कोटारै राव माधोसिंघ चौईस गांवांसूं तुणपुर लखमीदास महियारियानूं दियो ।

२२०६. मीसण ईसरदासनूं गांव बाटासूं हीरणां कंवरपदै भोज दिवी हाडावां नेग दियो ।

२२०७. ठीकरियो मिहडू बळूनूं रावराजा चत्रसालजी दियो ।

२२०८. नीलराहड़ो कविया गंगादासजीरै पटै हुतो सो श्रीजी उमेदसिंघजी मिहड़वांनूं दियो ।

२२०९. बारा गांवसूं गांव हिरणां मीसण ईसरदासनूं दियो भोज कंवरपदै. बूंदीरा नेग दिया ।

२२१०. कवियो गंगादास रूपसिंघोत वासणीसूं उठ गौड़ वीठळदासनूं रिझाय गांव कुंभारियो मालपुरारो सासण पायो ।

२२११. इणनूं गांव मोरटहूको राजा भोज सासण दियो. नीलहड़ो पटै दियो ।

२२१२. सेसपुरी बांधी वतबां–ग्रै नूंदोरा रावराजारा दियोड़ा गांव सुरंलिया भावूनूं ।

२२१३. मीसणनूं सासण खंडेला खड़ीसो अेक, पुरा घोड़ा दो बूंदीरी हईन गांव हरियाणा हाडांरो दियोड़ो।

२२१४. चावड़ पूजै वनरलोत सासण देवरा हरण दियो।

२२१५. राव खंगार कछमें तुंबेरांनूं साठ सासण दिया।

२२१६. मोटैरो १, सेंग्रावड़ो २, पीपार गुडो ३, माणको ४— इत्यादिक गांव कलहरांरा धाणाधारमें विहारियांरा दियोड़ा।

२२१७. हरभमरो पातल, पातलरो दासो, दासारो भाखरसी जिण गांव आगड़ाऊओ रोहड़ियांनूं दियो।

२२१८. दूदा जोधावत कनै बारट पातो महराजोत खोरीसूं गयो जद चारणवास दूदैजी पाताजीनूं दियो।

२२१९. नागोररो गांव डैहरवो सूंडायचांनूं राणै सगर उदैसिंघोत दियो।

२२२०. सरवाड़रै परगनै गांव गुंदाळी भादानूं परमारां दियो।

२२२१. सेखावत मनोहरपुररै राव पालावत बारट गिरधरदासनै गोविदपुरो दियो. भूधरदासनूं हणमतियो दियो, केसवदासजीनूं किसनपुरो दियो, वनमाळीदासजीनूं कल्याणपुरो दियो।

२२२२. कछवाहै रूपसी वैरागर कविया अलूजीनूं गांव जसराणो सासण कर दियो. सो मारोठरा गेडां जसराणो बैंताळीस जबत राखियो. पछै मेड़तिया रुघनाथसिंघजीनूं मारोठ पटै हुई जद रुघनाथसिंघजी जसराणो कवियानूं दियो।

२२२३. मकराणारो धणी कछरो करमचंदोत जिण चौरासी गांवरी चौथाई चारण, भाटां, बामणांनूं दिया।

२२२४. हरळायां वधाउड़ै घोड़ारणियै दासोड़ी भोजा रतनू है।

२२२५. मीसण अणंदनूं धायलजी पोळपात कियो।

## भाट

२२२६. राजोरा भाटानूं सुरताणपुरो वेदळारा रावरो दियोड़ो है, सुरजणियावास राणाजीरो दियोड़ो है।

२२२७. टाक जातरा भाट ज्यां मांहे पाळूपोता सेखावतांरा ताटीसेवी।

२२२८. टाक विष्णुदासोत राजावतांरा ताटीसेवी. टाक काळू करमसीरा नरूकांरा ताटीसेवी।

## प्रकीर्णक

२२२९. अेक सौ तुरी अेकै दिवस सूरै सपलाण दिया. मेवाड़रो गांव आंदोळो जठै गलूड़ियो सूरो नगराज हांसावतरो जिण भोजगांनूं सौ घोड़ा अेक दिन दिया ।

२२३०. मंगतो ओसवाळ ओसवाळांरो है जिको बीकानेरमें भ्यारियो कहावै ।

२२३१. अतक ओसवाळ आगे भालर बजावै. उवै ओसवाळ उवानूं पुष्परो दै ।

## मुसलमान

२२३२. नजूमियां अगाऊ नजूमरी किताबांमें लिखियो हो—आखर जमानारो पैगंबर सुतर सवार होसी ।

२२३३. सो मुहम्मद हुवो. मक्कासूं कुरेसी तीन सै तेरह मुहम्मदरै साथ मदीनै आया. उवे शेख मुहजर कहाया ।

२२३४. अगाऊ नजूमियां किताबमें लिखियो हो इत्ता वरसां आखर पैगंबर जनमसी, सुतुर सवार होसी ।

२२३५. नबियांमें सुतर सवार महमद हुवो ।

२२३६. नजूमिया प्रमुख मेछा ज्यांरो वचन है—आसमानरी जवरी देखो मसूरान्न खावा वाळो, ओठो दूध पीवा वाळो अरबरो आदमी आपरी किवी किताबरो जहानमें मत चलावण लागो ।

२२३७. मौलवी इग्यारै कबीलां सहित महमद साथै मदीनै आय वसिया ।

२२३८. तीहामा गांवरो वासी महमद पैगंबर मक्कासूं महमदरै साथ आया मदीनै उवै सेख मुहाजर. मदीनारा सेख अनसारी कहावै महमदरी उमत ।

२२३९. मदीनारा सेख अनसारी कहावै ।

२२४०. दुहुं कुतुब आसमानरा आधार है—नजूमी कहै ।

२२४१. जवनांरा नजूममें कहै है—आसमानरो बारमो है सो बुरज खरबूजा है लकीर ज्यूं यूं आसमानरै बुरज है रासरो नांव बुरज जावन्या ।

२२४२. मुसलमानरै किताबांमें लिखे है—अंगरेजांरै आगै रूमरो पातसाह भाजि हिलबमें जावसी, पछै इमाम महदी हुसी, कित्ताहीक वरस पातसाही करसी, पछै अंगरेजांरै हाथ ओ सहीद. पछै कयामत हुसी ।

२२४३. मक्कारो नाम अरबीमें अेसरब ।

२२४४. मदीनारो नाम बतहा ।

२२४५. मुहमद मुवां पछै छटै महीनै खातून जन्नत हुई।

२२४६. मुरकब सैपुर कैबरांरी लड़ाईमें महमदरै आयो हो सो महमद मुवां पछै घास दाणो पाणी तज तीजै दिन मुवो।

२२४७. अलीरा खुदा न मे दानम. अज खुदा जदो न मे दानम।

२२४८. अहमद महमूद अै दोय नाम पेकंबररा फरेस्ता पढै. महमद ओ नाम पैगंबररो जमी ऊपररा लोक पढै।

२२४९. फार कलीता ओ महमदरो नांव तोरेतमें है, याजुन माजुन ओ नांव महमदरो अंजीलमें है।

२२५०. मैंहम नबीनै वडै पीर किणनूं ही सराप न दियो. मुहम्मद ईसम, अबुल वासुम लकब, मुस्तफा खिताव।

२२५१. सूरत नूर १, सूरत फिजर २, सूरत इखलास ३, सूरत तुलबर ४ इत्यादीक सूरतां कुरानमें है।

२२५२. कुरानमें खुदा कहै है—बोल महमद खुदा १, खुदा किसीसे पैदा हुवा नहीं २, खुदासूं कोई पैदा हुवा नहीं ३, जात जमातसूं पाक खुदा ४।

२२५३. कुरानमें कहै है—रोजा राखै, नमाज पढै, नित खुदारो जिकर करै सो खुदा कहै, म्हारो वंदो।

२२५४. कुरानमें कहै है—मुसलमानरी त्रिया विधवा हुवां पछै मनमें आवै तो च्यार महीना दसां दिनां पछै अन्य पुरससूं निका करै, दूसरण नहीं।

२२५५. सेख, मुगल, पठाण—आं तीन खांपांरै आ रीत है—कुराणरी अग्या मुजब पितारो चाळीसो कर अवृद्धा मातानूं पुत्र जाय कहै—म्हारो पिता थारो भरतार मर गयो उण माथै ईमान राख तूं बैठी रहै तो भलां ही, नहीं तो थारा मनमें आवै जिणसूं निका कर. पछै उणरी मातारै मनमें आवै ज्यूं करै।

२२५६. अळी जीवतां खातून जनमतां मर गयी जिणसूं सईदांरै आ रीत नहीं।

२२५७. मुसळमानांरै कहै है कितावमें—पुरख आपरी त्रियासूं भोग करै गुदा तरफ तो उणसूं कियो निका सो टूट जावै।

२२५८. यवनरै चाळीस हाथ कपड़ो चाहीजै अतक सरीरमें. जनाजा कहै अतक-रथीनूं यवन।

२२५९. ईदुलजुहा बकरीदरो नाम. ईदुलफितर रोजा ईदरो नाम।

२२६०. चित्र लिखणो, मूरत बणावणी मुसळमानांरै मनै है।

२२६१. यमनरा पातसाहरी बेटी परीजादी, बलकिस नाम, जिणनूं पातसाह सुलेमान परणियो ।

२२६२. बलकिसरी भुवारी नजर घणी दूर पहुंचती. ऊंची जायगा माथै बैठी निगा राखती, कित्ताईक कोसां नजर पहोंचती. पर चकरी खबर देती. अेक समै सत्रुवां वृक्ष काटि हाथमें ले लिया. इण देखि भाई पात जिणांनूं कह्यो- वृक्षांरो लसकर आवै हैं. उण वात न मानी. पर चक्र सहरमें आयो. फतै पाय ऊभो. बलकिसरी भुआनूं पकड़ी. पूछियो - इत्ती रोसनी चसमरी किण कारणसूं. इण कह्यो – पहलां म्हारी मा आंखांमें सुरमो घालियो जिणसूं दूर नजर दौड़ै. सत्रुवां इणरी आंखां काढि निगै कीवी. आंखांरै हेटै सुरमारो दळ जमियोड़ो हो ।

२२६३. याकूत जजीरामें आदमनूं खुदा पैदा किया. उठै गेहूं पैदा कियो. उठासूं काढि सरनदीप जजीरामें आदमनूं राखिग्रो ।

२२६४. याकूत जजीरामें रूमरा पातसाहरो अमल है. आगै तुरंगांरी वढी आफत हुती इण जजीरामें ।

२२६५. अथ यवनांरा तीर्थ लिखंते - मक्को १, मदीनो २, करबलो ३, बगदाद ४, स्थान जफ ५, काजमैन ६, मसहद ७, रुकनावाद ८, वैतुलमुकद्दस ९, तखत रबुल आलमीन १०, कोहनूंर ११, दमिस्क १२, कोहे लुबनान १३ ।

२२६६. अथ नवी पीरां प्रमुख यवनांरो प्रसंग दोलतावादरो जामें पीर जरजरी जर वकस १, दोलतावादरै किलामें पीर साकड़े सुलतान २, औरंगाबादमें पीर बुरहानुद्दीन ३, अेलचपुरमें पीर रहमान सादुला ४, गिड़दमें पीर बाबा फरीद ५, अलवरमें पीर ईमानसाह ६, वासममें पीर दावलसाह दरियाई ७, हैदरावादमें मुरतजा अली ८, मिरचमें पीर मीदासमत्ता ९, पूनामें सेख सलाउद्दीन १०, पूनामें बुरहानसाह ११, वीजापुरमें पीर अमीनुद्दीन आला १२, नजरवागमें पीर आमानसाह १३ ।

२२६७. गोरा १, कलंदर २, कुतब ३, अबदाल ४ - इत्यादीक अवलियांरा भेद है ।

२२६८. अउलियांकी करामात पैअंबरकी मोज जो कहावै लात मन्नात उजाती तीनूं वोत मकामें होती ।

२२६९. नासीरुद्दीन चिराक दिहलवी दिली अवलिया हुवा है ।

२२७०. सुरतांन तारकीन कुतुब साहिब दोनूं मुरीद खाजा मुईनउद्दीनरा ।

२२७१. नागोर हीरावाड़ीरी पौसाळामें हमीनुद्दीन रह्या तिण जतींरा भेखमें ऊमर पूरी करी. इणनूं दफनायो हमीनुद्दीन नागोरी ।

२२७२. सेख हमीदुद्दीन रेहानी १, सेख हमीदुद्दीन खोही २, सेख हमीदुद्दीन खालिस ३, सेख हमीदुद्दीन मुबैलिस ४, सेख हमीदुद्दीन कांसालेस ५ - यां हमीदांरी रैलत नागोरमें हुई. सेख हमीदुद्दीन नागोरीरी रैलत दिलीमें हुई. जवन कहै सातूं हमीदांरी रेलत नागोरमें होती तो नागोर खुर्द मक्को होय जातो।

२२७३. खाजाजीरै चौरासी सागिर्द ज्यां मांह तरकीनजी गिणीजै सारांसूं छोटा।

२२७४. खाजैजी सुलतान, सुलतान तारकीन कहि वतळाया. अरथ पातसाह त्यागियूंका।

२२७५. खाजैजी जमात सहित नमाजमें रजू होते जद तारकीनजी इमाम होते नमाज गुजरा सरबां दवा मांगि ऊंचो जोवते जद अरसको कांगरो सारांकै नजर आवतो. ओ भेद पाय खाजैजी सुलतान तारकीननूं कह्यो - तुम हमको ठगे सो हमकूं आपका सागिर्द न किया आप हमारे सागिर्द होय. ने फेर कह्यो - तुमारी औलादकै अर हमारी औलादकै परसपर परणीजणा परणावणा होहिगा।

२२७६. खाजाजीरा पोता नै खाजाजीरा मुजावर सारा सीया होय गया हमैं आगै च्यार वारी हुता।

२२७७. गुजरातमें तुरकिया बोहरा सारा सीया है. मुसळमान कहै - सीयांरै मुकर दोलत होय, सुन्नी फतैनसीब होय।

२२७८. इलवरस्याई रसूलस्यारी गादी हिनीफस्या, हिनोफस्यारी गादी फिदाहसन, फिदाहसनसूं खलता कीवी रावराजा बखतावरसिंघ।

२२७९. पातसाह लोदी वहलोलखां जिण मुलतानमें मोलवी सेख यूसफनूं बेटी परणाय दिवी नै कह्यो - धन्य भाग म्हारी बेटीरो जिणरै इसो विद्यावान भरतार।

२२८०. सिंधमें लकारी सइयदांरी मानता विसेस है।

२२८१. अमान हजरत अधासफूं लखनऊरो नबाब विसेस मानै।

## महदी

२२८२. पूरबमें जीवणपुर सहर जठै महदी हुवो नवीग्रत महमद ऊपर खतम हुई. व वलायत महदी ऊपर खतम हुई।

२२८३. महदवी कहै - कुराणमें आयत है महमदकी रैलतसूं नव सै पांच वरसां महदी दावो करसी।

२२८४. किताबमें महदी कहै - जिण दुनियामें महमदनूं भेजियो उणरो भेजियोड़ो हूं ही दुनियामें आयो हूं।

२२८५. नवाज गुजारनै हाथ पसारै नहीं महदवी ।

२२८६. रमजानरी सत्ताईसवीं तारीख सारी तारीखांमें उत्तम मानै ।

२२८७. दूजा मुसळमान सारा महीनांरी सत्ताईसवीं तारीख उत्तम गिणै ।

२२८८ महदी नावमें बैठा तरीरै राह किणही विलायतनूं जावै. इणरा मुरीद नाव बैठा. किताईक कोस गया नाव दरियावमें डोलण लागी. नावमें बैठा जिका धूजिया महदी कह्यो—यूनस पैगंबरनूं मच्छी सात दिनां पेटमें राखियो, पछै खुदारी आग्या उगळ दियो, मोनूं निवाजस हुई नहीं. जद वही हुई—महदीरो तोनूं दीदार होसी. इण वचननूं सांचो करण खुदा नावनूं ऊंची करै है, मच्छी जळ मांहेसूं परवत परिमित सरीर जाहिर कियो है सो मोनूं देखो जलमें लीन होय जासी, नाव डुलती रह ज्यासी. यूंहीज हुवो ।

२२८९. महदीरी औलादसूं आल बहोत है. महदीरै वंसरा पीरजादां कनै महदवियांरा दिनरी किताब है ।

२२९०. पठाण महदवी विसेस है ।

२२९१. कुराणरा हदीसरा सरारी विद्वत मेटण महदी जनमियो—महदवी कहै ।

२२९२. महदवी दरवेसांरो थान दायरो कहावै, तकियो कहावै नहीं ।

२२९३. गुजरातमें महदवी घणा रहै. दिखणमें घणा रामराजारा देसमें. देसमें महदवी है ।

२२९४. कपड़ा वगेरै चीजांरो व्यापार ज्यादा करै ।

२२९५. रातरो भजन विसेस करै. ईरानी तूरानी गैरमहदी कहै महदवियांनूं ।

२२९६. हैदराबादरा नबाबरै कानड़ी वेगम. उणरो गुरु मौलवी महदवियां मारियो. चंदूलाल हैदराबाद मांहेसूं लोक चढायो. महदवियांरो गांव चतुर गुडा माथै गयो. महदी मारिया गया. लाखां रुपियांरी दोलत लुटाणी ।

## पठाण

२२९७. वनी इसराइल यूसुफरो भाई जिणरै वंसरा पठाण—पठाणरी जात लिखंते—रूरी १, सरवानी २, किरबानी ३, लोदी ४, बाबर ५, गिलजी ६, मीराजी ७, तोपा ८, करमली ९, करली १०, लंगा ११, मोहा १२, अमालजई १३. ईसपजई १४, महमदंजई १५, बारकजई १६, सदोजई १७, कमालजई १८, दबाजई १९, कांकड़जई २०, तोआजई २१, उसतरानी २२, समानी २३, गोरी २४, खिलजी २५, आकोज २६. उमरबेल २७, आफरीदी २८. खट्टक २९, बंगस ३०, नूरजई ३१, लोहानी ३२, बाबी ३३,

विहारी ३४, पणी ३५, गजफूर ३६. तरनी ३७, मुसाखेल ३८, बुदैलवार ३९, दिलाजाक ४०।

२२९८. अेक समै हसनवसरी १, वीबीरा बिया २, सेखसकी कबंलकी ३, माजिक-दीनार ४— च्यारू अवलियांरो मिलबो हुवो हो।

२२९९. पणी पठाणांरी बावन खेळ है।

२३००. पणी सेरसाहरै बखतरो है. विलायतसूं हिंदमें आया।

२३०१. पणी नागड़ भाई है।

## सीदी

२३०२. अंबर कंवर अयाज रयाज वगेरै सीदियांरा नाम है।

२३०३. अयांजनूं केई कहै सीदी. केई कहै कसमीररा राजारो कंवर, खूबसूरत।

## ख्वाजैजादा

२३०४. कासमीररा उठियोड़ा मुसळमान ख्वाजैजादा कहावै।

## तुरकांरी जात

२३०५. उजमक १, किलमाक २, कजलवास ३, ताजी ४, चंगेजखानी ५, हस्तर-खानी ६, सीरानी ७, ऊब ८, मुगल ९, चिकता १०, गुरगानी ११, सुबतगी १२।

## अलाउद्दीन खिलची

२३०६. अलाउद्दीन कहो—गोड १, चोळ २, गाजणो ३, कनोज ४, मरहट ५, पलाड़ ६, सिंध सपादल ७, गूजर ८, सोरठ ९, माळवो १०, चंदेरी ११, मांडव १२, सारंगपुर १३, रणथंभोर १४, चितोड़ १५, नागोर १६, मणिपुर १७, मथुरा १८, अंतरवेद १९. काकपुर २०, भुजपुर २१, उड़ीसो २२, हिंदुसथान २३, जाळंधर २४, कसमीर २५, कामरू २६, हिमाचळ २७, खुरासाण २८, ठठा २९, मुलताण ३०, चीण ३१, भोट ३२ तिलंग ३३, बंग ३४, विदरभ ३५—इत्यादिक ठिकाणा अलाउद्दीन जीतो।

२३०७. तुरकां बतै हिंदुआं गमियां न जाय २० बतै हुत।

२३०८. रळियो भायल आगेवाण होय भीनमाल माथै अलाउद्दीनरी फोज ले गयो. पैंताळीस हजार श्रीमाळियांरा घर धनाढ्य चहुवाणांरी वणायी ब्रह्मपुरी।

२३०९. देवगिरिरै राजा रामदे बेटी दिवी अलाउद्दीननूं।

२३१०. अलाउद्दीन गिलची लोक खिलची कहै।

## तैमूर

२३११. अमीर तिहमूर वलख सहरमें पाट बैठो ।

२३१२. अमीर तिहमूररो बेटो मीरांसाह साहजादो थको मुवो ।

२३१३. जात मुगल बरलास नख चकता गोरगा ।

## बाबर

२३१४. हिंदरो पातसाह लोदी इब्राहीम, सुलतान सिकंदररो बेटो, सुलतान बहलोलरो पोतो, जिणनूं बाबर मारियो ।

२३१५. सुलतान इब्राहीम दाना वजीरनूं मारियो. अनहरखां काकानूं उदास कियो, कोल तोड़न लागो, झूठ बोलण लागो, दारू पियै थो, पर स्त्रियांसूं गवन करतो, जगतनूं बेराजी कियो. बाबर जिसी आफत इब्राहीम माथै आयी ।

२३१६. पांच हजार बरकंदार, बारै हजार सवार उजबक मुगलांरा साथ ले काबुलसूं पाणीपत आयो. उठै ही सुलतान इब्राहीम आयो. सात हजार पठाणांसूं खेत पड़ियो सुलतान इब्राहीम. फतै बाबररी हुई ।

२३१७. बीकानेर, सिरोही, मेड़तो, गागुरण, बूंदी, भीलवाड़ो, आंबेर, मेवाड़, माळवो, रायसेण, चंदेरियारा ठिकाणांरा मालक, अजमेररा जमीदार, मेवाड़रो लोक......सूं सांगै सीकरी बाबरसूं जंग कियो. जोधपुररो धणी साथ नहीं हुतो जिणसूं फतै हुई नहीं सांगा राणारी. सुलतान इब्राहीमरो साहजादो, डूंगरपुररो रावळ - अै पिण सांगा राणा कनै हुता ।

२३१८. सेरसाह तमाम पठाणांसूं अेको कर विहार देसमें फिसाद किवी. दिलीरो राह बंद कियो. हुमायूं अै समाचार सुण चाकरांरी सलाह लोपी, बरसातमें सेरसाहसूं जंग करण चालियो. सेरसाह जंग करि जणनै खिस गयो. पछै पाछली रात प्रभातरो पाछड़ो ऊपर आय पड़ियो. हुमायूं संभाय सकियो नहीं. कवीला छोड़ भागो. नीठ लांघि नीठ बचियो. घणो लोग नदीमें डूब मुवो ।

२३१९. माळवा-गुजरातमें, बंगालमें पहलै हुमायूंरो अमल हो गयो हो. गुजरातरा थाणा छोड़ हुमायूंरो भाई मिरजा असकरी जाय सेरसाहसूं मिळियो ।

२३२०. हुमायूं दिली आयो. भायांरी फूटसूं नै सेरसाहरा डरसू सिंधमें गयो. भाई इणरो लाहोर पातसाह होय बैठो ।

२३२१. सेरसाह दिली आय पातसाह हुवो. पछै लाहोर गयो. लारै घर माहसूं हुमायूंरा भायांन काढ दिया. सिंध मुलतानां ई जबत किवी ।

२३२२. हुमायूं सिंधसूं राव मालदेजीरो बुलायो फळोधी विराई आयो. बात दगा भरी देखी. उमरकोटनूं गयो. पछै सिंध लांघि ईरानमें इसपाहन गयो ।

२३२३. ईरानरै पातसाह खंधार गजनी काबुलमें बदखसां हुमायूंरो अमल कराय दियो ।

२३२४. गुजरात घग्र विरा सौ देस लड़ि - लड़ि लिया सेरसाह ।

२३२५. कालिंजररै गढ लागो सेरसाह. उरड़ आघो गयो. गढ मांहलां हल्लारै वखत सोररा होका उपरसूं नाखिया- नीचै सोर हुतो सू आंरा पड़नासूं भभकियो. सोरसूं बळ सेरसाह मुवो ।

२३२६. सेरसाह सांचो, सीळवंत, आदिल, नेक, नीतवंत, खबरदार अवलियो रैतरो पीहर, सिपाहरो मित्र, चाकरां ऊपर मिहरबान वडो पातसाह हुवो ।

२३२७. पाट इसलामसाह बैठो. वडो पातसाह हुवो. सो देस वारे पजवनमें रह्या. इण मुवां इणरै पाट इणरो बेटो गढ गवालेर बैठो. पछै इण डावड़ारो मामो सेरसाहरो भतीज नै जमाई सो इसलामसाहरा बेटानूं मार गादी बैठो जिणसूं दिली, लाहोरमें सेरसाहरा भतीजजंवाई पातसाह होय बैठा. पूरबरा ठोड़-ठोड़ जुदा-जुदा पठाण आप मतै हुवा. जद पातसाह हुमायूं सोळै वरसरो विखो काढ दिली ऊपर आयो. सिकंदरसाह जंग करण आयो. सो जंगमें घणा पठाण मराय भागो ।

२३२८. हुमायूं दिली आय तखत बैठो. कितोईक कनलो देस जवत कियो. सिकंदर-साह लाहोररा पहाड़ांमें पैठो. इण ऊपर साहजादो अकबर नै बहरामखां हुवा. जाय लाहोर लिवी. पहाड़ां ऊपर चलाया. उण समै पातसाह हुमायू दिली पुराणीरा कोटरी मैड़ीसूं पड़ि मुवो. आ खबर लाहोर पहोंची. कला-नोरमें अकबर तखत बैठो ।

२३२९. दिलीमें सूबै उमराव हुमायूंरा हुता ।

२३३०. गवाळेर मवारजसाह अदली पातसाह हुतो. तिणरै सारो चलण वाणिया हेम ढूसररो हुतो. तिको वडो दातार, जूझार सिरदार हुतो. तिण वडी-वडी लड़ायां करी. पठाण जेर किया. मवारजसाह दुखी हुतो जिणसूं वडो सामान करि दळ बळ करि हेमू ढूसर दिली ऊपर आयो ।

२३३१. दिलीसूं अकबररा उमराव दळ ले हेमु सामा आया. युद्ध हुवो. आखर हेमू जीतो. अकबररा उमराव हुमायूंरी लोथ ले, पातसाहरा कबीला ले, अकबररी तरफ चालिया. हेमू दिलीमें अमल कियो. मवारजसाहरै पूत नहीं हो नै आप चाकर नहीं हुतो जिणसूं हेमू ढूसर दिली तखत बैठो. राजा विक्रमाजीत कहायो. सो खिताब पायो ।

२३३२. आ खबर पाय अकबर आगै फोज मेली दिली तरफ बहरामखांरी सलाह उंदी. अकबर पाछै आवै. हेमूनूं खबर हुई. उण समै हेमू कनै पचास हजार सवार, वीस हजार पाळा, हजार हाथी, हजार गाडी तोपखानारी ।

२३३३. अकबरनूं दूर जाणि मसलत चूंकि तोपखानो अकबररी फोज सामो पहलां वहीर कियो सो तोपखानो दिलीसूं तीन कोस पाणीपत पांथो. हेमू चढणरी त्यारी करतो हो. उण समै अकबररी फोजरा हरोळ हलकार करि अजाणिया तोपखाना माथै आय पड़िया. लोक तोपखानो छोड़ भागो ।

२३३४. पातसाह अकबर आपरी जणणीनूं कांध दियो हो ।

२३३५. सिपहसालार खानखानारो खिताब ।

२३३६. सिपहसालार ओ खिताब खानखानानै अकबर दियो ।

२३३७. मुमारज नाम पहलवानरो है. मुमारजुद्दीनखां खानखानारो खिताब है ।

२३३८. अैतजादुलमुलक खिताब खानखनारो. अतभुजरी अैतजाद कहावै ।

२३३९. उम्दतुलमुलक राजा टोडरमलरो खिताव ।

२३४०. संवत ९९० पातसाह अकबर फिरंगरा पातसाह कनै सय्यद मुजपफरनूं वकील मेलियो, खत लिख दीनो, तोरात अंजील जबूर आं कितावांरो तरजुमो मंगायो ।

२३४१. सिपहसालार खानखानारो खिताब मुमारज पहलवान मुमारजुद्दीन खान-खानारो नाम ।

२३४२. वीरबल माराणो जद पातसाह अकबर कसमीर हुता. खानखां गुजरातमें हुता. खानखांनूं खत इनायत कियो अकबर जिणमें लिखियो—म्हारी सभानूं नजर लागी जिणसूं म्हारी सभारी जेब वीरबल माराणो. हूं वीरबलरी लोथ कांधै ले वाळतो तो उणरी चाकरीसूं उरिण होतो. खुदा-तालारी कृपासूं वीरबल मोनूं मिळियो हो. म्हारा दिल मांहली बात बाहर आणतो दारु ज्यूं. म्हारा सुखनबाण संवारणनूं खुरासाण होतो. वीरबल जीव तन रुप मांगियोड़ो पड़ त्यजने दो अधल पड़दा मोनूं हमै सामो कनैसूं निवाजस पायां करो हूं तोसूं फायदा लेबो बरु हमेसा खुदारी महरसूं. म्हारी नजर तो माथै पड़ै. म्हारा जलाल महलरो तूं थंभ है. वीरबलरो जीव तन रूप मांगियोड़ो पड़दो त्यज अधल पड़दामें दाखल हुवो ।

२३४३. पेसवा असगर खिताब है ।

२३४४. वड़ी फोज जैस जावन्यां ।

२३४५. खानखानारी अरज कसमीर आयी. गुजरातरो मालक मुजफ्फर गुजराती चाळीस हजार सवारांरो धणी जंगमें पकड़ कैद कियो है. सेख इब्राहीमखां सीकर वाळनू अठं मेलसी सो ओ सूबो उणनू भोळायनै हूं दिखण माथै जाऊं ।

२३४६. च्यार गुजरातरा उमराव ज्यांनू मैं वचन दिया है सो उवांनू नवाजस कीजै. जाम खंगार १, ऊदो २, जगन्नाथ ३, साहिमखां ४. आप दिखणरा हाथी मंगाया सो दुरस्त पिण प्रतीत वाळा हाथी - महावत अठै मेलजे साथ हाथी मेल देसूं ।

२३४७. पातसाह अकबर वेराजी हुवो, खानखानासूं जद खानाखान राव कल्याणरै सरणै वीकानेर आयो हुतो ।

२३४८. अकबर कसमीरमें जद खबर मक्कारी हज करण मुसळमान जाता हा हिंदसूं ज्यांनू बलोचां लुंटिया. आ वात सुणतां ही अकबर नाक सळ घालियो तीरै मार वफादार राजा बीरबल बलोचां माथै विदा होतो हुवो ।

२३४९. नीराह १, विजो २ वगेरै च्यार ठिकाणा जबर बलोचांरा वडा पहाड़ांरा वेरमें राजा वीरवल फोज ले गयो. पहाड़ांरा घाटा भांजिया. बलोचांनू मारिया. पकड़िया, गांव लूटियो. फौज धनसूं अभरी हुई फतै कर पाछी वली. बलोच पहाड़ां चढिया. घाटा बंद किया. मारगमें खाड़ा खणिया. फोज ले वीरवल घाटांमें आयो जद तीर, गोळी, गोफणांसूं पत्थर बलोच लावता हुवा. भाठारी लाग वीरवल मुवो. सिपाह वेसुमार माराणो. आ वात सुण अकबर राजा टोडरमलनूं जैस दे नै विदा कियो. इण बलोचांरो देस ले लियो. बलोचांरा ठिकाणा तोड़िया ।

२३५०. तिरीह १, विजोर २, किकली ३, दंतोर ४—अै च्यार ठिकाणा बलोचांरा जैस वडी फोज, तीराह, तरवारां, आछी घड़ीजै है ।

२३५१. मिरजो सरफुद्दीन अलवर किलेदार हुतो, अकवररो उमराव. आंबेररा राजारा भाईबेटा दोय सरफुद्दीन पकड़िया ।

२३५२. द्योसारा डेरां भगोतसिंघजी, जैमलजी, जगमालजी, आसकरणजी वगेरै सात कछवाहा पातसाह अकबररा पगां लागा ।

२३५३. माहम नंगा नामा अकबररी धाय जिणरी मारफत सैभररा डेरां कछवाहां अकवरनूं डोळो दियो ।

२३५४. दोय वडी नोवत, दोय वडी देग रकवाई घड़ियाल, सोनारी पीलसोज, रुपारा [illegible] भेट किया ।

२३५५. जोरागढ अकबररा उमरावां लियो जद राजा वीरसिंघ गढपतीरी राणी कळावती भली तरै गढ भिलतां काम आयी. आऊ गढ हमै नागपुर हेटै है ।

२३५६. पातसाह अकबररै बारह सूबा हुता ।

२३५७. भारतरो तरजुमो फारसीमें अकबर करायो. नाम रजबनामो. रसायणरा सोनारी लाखां मोहरां अकबर पड़ाय अेक ही ओरियामें राखी हुती, आखर,-वंत दान सारु. अकबर अकसमात मर गयो. जहांगीर बागी थको प्रयागमें हुतो. मोहरां धरी हीज रही.

धरे धराये रह गये, चौकुंटे अर गोळ ।

२३५८. अकबर कुटवाळांनू लिखियो - लुगाईनू घोड़ा माथै चढण मत दीजो ।

२३५९. विन घगरो नगरो गये, अकबर साह जलाल ।
लाल कहै इक तालम, भये विराणे माल ।।

२३६०. संवत १६७८ साहजादा खुरम भींव सीसोदियानू मेड़तो दिरायो ।

२३६१. राजा ईदो राड संवत १६९१ काती सुदमें भीम परवेजसू मोहबतखांसू जंग कर काम आयो खुरम आगै ।

२३६२. भींवरै कुंवर किसनसिंघ- मेड़तै रामसरण हुवो ।

२३६३. संवत १६८३ परवेज बुरहानपुर मुवो ।

२३६४. दसहजारी दारासिकोह. नवहजारी साहसुजो, नवहजारी ओरंगजेब. पांच-हजारी मुरादबकस ।

२३६५. साहजादा दारासिकोहरो बेटो सुलेमान सिकोह ।

२३६६. हरिवंसरो, योगवासिस्टरो, सिंहासणबत्तीसी वररुचि कृत जिणरो फारसीमें तरजुमो दारासिकोह करायो. नाम गुलपसां. ग्रन्थ राजावळी मिस्र विद्याधर कृत, ग्रन्थ राजतरंगिणी पंडित रुघनाथ कृत फारसीमें तरजुमो दारासिकोह करायो ।

२३६७. श्रीमत भागवतरो ही फारसीमें तरजुमो दारासिकोह करायो. राणा रतनसेनरो नै पदमावतीरो अहवाल फारसीमें करायो दारासिकोह. नाम किताबरो रतनसेन-पदमावती ।

२३६८. भिदारियै राजा ओरंगजेबनू चांबळ पगार वतायी. उणरा चांबळ उतरि धोळ-पुर आ ओरंगजेब जंग कियो साहजहांरी फोजसू ।

२३६९. धोळपुररा झगड़ामें गोळासू पजि हाथी भागो, चांबळमें पैठो. ओरंगजेबरो साहजादो जहांदारसाह हुतो सो चांबळरा पाणीमें डूब मुवो ।

२३७०. गुमा बीवी नोरंगजेबरै मरजीरी बेगम हुती ।

२३७१. संवत १६७३ रा फागुण सुद १ ओरंगजेब फोत हुवो ।

२३७२. नादिरसाहरो वकील दिली- हो उण नादिरसाहुनूं लिखियो - वेगा पधारिजे मारगमें कांटो भाटो है नहीं ।

२३७३. नादर पातसाहनूं महमदसाह मिरजा कहतो. महमदसाहनूं नादरसाह मिरजो कहतो ।

२३७४. ईरानियां धन वास्तै दिलीरी जायगावां अति ऊंडी खणी, जमीरा हाड काढ लिया हा ।

२३७५. अहमदसाह दुरानी लाल किलामें विलायती याकूबखांनूं राखियो. पातसाह अलीगोहर जद पूरब में हुतो. याकूबखां कनै पनरै हजार सिपाह हुतो ।

२३७६. साहआलम नाम अलीगोहररो है ।

२३७७. दिलीरा हिंदुवांनूं लाल किला मांहली जायगावां पातसाही वाग, याकूबखां दिखाया, जस लियो ।

२३७८. ईब्राहीमखां और मल्हारराव हुलकर भाऊ सामल न हुवा. अजी तै अहमद-साह अबदाली भाऊसुं जंग न कियो ।

२३७९. दोयसै तोपां बारह हजार गारदां इबराहीमखां तालकै हुती ।

२३८०. च्यार दस्ता साह कनै हुता. जुमलै चाळीस हजार असवार साह कनै हुता ।

२३८१. हाफिज रहमतखां नजीमखां रूहेलो, अहमदखां बंगस लंगड़ा बावनहजारी सुजा बुधोलो इत्यादिकां मिल भाऊसूं झगड़ा किया. फतै न पायी. अहमदसाह अबदाली मदत आया. जब न जीता ।

२३८२. दिलीसूं नजदीक साहरी फौजसूं दिखणियांरै जंग हुवो. साहबसिंघ १, दत्ता २, काम आया. जनकू भरतपुर आयो. पेसवानूं अरज लिखी - म्हारी मदत कीजै नहीं तो साह दिखण माथै कमरबंधी करसी ।

२३८३. आ वात सुणनै पेसवै विस्वासरायनूं नै भाऊनूं हिंदुसथान माथै वड़ी फोज दे विदा किया. दिखणसूं दिली आया. जुमा मसजिद ऊपर इबराहीमखां गारदी तोपां चढायी. लाल कोटमें गोळा पड़ण लागा. याकूबखां मरहटांरी बांह लेने लाल किला बारै निसरियो. लाल किलामें भाऊरो अमल हुवो. भाऊ दिखणी नारूसंकरनूं लाल किलामें राखियो ।

२३८४. दिली लाल किलामें खास दिवाणरी छत सोनारी हुती. उवा नादिरसाह लेगो. आम दिवाणरी छत रूपारी भाऊ ले लीवी ।

२३८५. भाऊ दिली निगमबोधरा घाट ऊपर यग्य करायो. देवीरी आग्या हुई—हमैं भाऊ पाछो दिखणनूं परो जावैं, दूजैं महीनैं आय साहसूं जंग करैं तो भाऊरी फतैं हुवैं. विरामणां ओ व्रत्तांत्त भाऊनूं सुणायो. भाऊ न मानियो।

२३८६. साहरी फोज भाऊ माथै आयी. भाऊ विसवासराय सामा मोरचा मांडिया. वहरामखां गारदी आराबो दागियो. अहमदसाहरो लोग गोळांसूं घणो खेत पड़ियो. खंधारियांरै भाजणरी ताकीद ही. इतैं सुतरनाळरो गोळो लाग विसवासराय हाथीरा होदामें मुवो. आ खबर पाय भाऊ विसवासरायरै मोरचै जावणनूं हाथीसूं उतरियो. लोकां जाणियो भाऊरै ही सुतरनाळरो गोळो लागो. खंधारियां घोड़ा उठाया. भाऊ काम आयो. दिखणी घणा माराणा. भाऊरी कतल भाऊ—गरदी कहाणी।

## [ पातसाहां, वजीरां, नबाबांरा प्रसंग ]

### सिंध

२३८७. सिंधरो मिर्यां नूरमहम्मद जिणरो नाम स्याहकुली नादरसा दियो।

२३८८. अखैंराज १, हदैंराम २, जगतसिंघ ३, अभजी ४, सेरसिंघजी ५, महमद ६, अलीपास सिंधमें आयो सरासूं नूरमहमदरो वडेरो।

२३८९. आंरै मुहमदस्या इनायत फकीरैंनूं मारनैं झोक नामैं ठिकाणो लियो।

२३९०. स्या इनायतनूं लोग इनायतुल्ला कहै. ओ बारह सय्यदांरो मुरसद हो।

२३९१. पैगंबररो काको मीर हमजा जिणरी औलादमें बलोच है।

२३९२. मीर बहरामरो बेटो मीर बीजड़, दूजो मीर सोभदार. सोभदाररो बेटो परमीर फतैंअली बीजड़री बेटी परणियो।

२३९३. इलायरो धणी मांडणोत हरनाथसिंघ १, करणरो धणी पातो मोहकमसिंघ २. लाडणूरो धणी गैनू सांखलो ३, धीरो सहलोत ४, मथाणियारै बारट जोगीदास—आं पांचां खुदाबादमें मीर बीजड़नैं मारियो।

२३९४. बीजड़रो बेटो मीर अबदल्ला, सोभदाररी बेटी परणियो. अबदल्लारो मीर गुलाम, सोहराबरै परणियो।

२३९५. मीर सोहराबनूं फतैंअली मिलबानूं तेड़ियो—इण चूक तेवड़नै फतैंअली कनैं आवण लागो सोराब जद बैंरी फतैंअलीरी मा सोराबनूं कहायो—मीर बीजड़नूं चूक हुवानूं किता वरस हुवा तोनूं याद है कै नहीं? अै समाचार सुण पाछो सोराब वावड़ियो फतैंअलीसूं मिळियो नहीं।

२३९६. सोराव फकीर कहावै. कागदांमें फकीर लिखीजै है. जईफ है. कड़प करावै नहीं. सलूकरी किताबां सुणै है, आदल सखी जिणसूं ।

२३९७. सोरावरै च्यार भाई, पांचवो आप. अेक भाई मीर सोरावरो ऊमरकोट काम आयो हो. मीर सोरावरा मुलकसूं दिखण हैदराबाद आथमणो सिंधुरो दरिया पंचनद मिल हुवो जिकै उत्तर दाऊद-पोहरा, पूरब जैसळमेर ।

## पालणपुर

२३९८. हयातखांर बंसरा विहारी पालणपुररा धणीं ।

२३९९. पालणपुररो दीवाण कमालुद्दीखां, जिणरै बेटो पीरोजखां. पीरोजखांरो करमखां पातर-जादो पालणपुर दीवाण हुवो जिण धजवाड़िया दुवारकादासनूं खासो घोड़ो दियो गुजरात पधारतां अभैसिंघजीरा डेरा पालणपुर जद ।

२४००. दीवाण पीरोजखांरै वडो बेटो फतैखां पालणपुर दीवाण हुवो ।

## नागौर

२४०१. सन ७८५ समसखां विजदुलमुलकरो बेटो गुजरातसूं नागोर आय मालक हुवो ।

## कालपी

२४०२. काळपी मुसळमान काम आया ज्यांरी चौरासी गुमटी है ।

२४०३. जवन कहै—पांच पीर जो काळपी जुझनै मरता तो काळपी मक्को हुतो ।

## लखनऊ

२४०४. लखनऊरो नवाब गाजूरदी हैदर जहांपना कहावै. सात करोड़ रुपियांरो मुलक लखनऊ हेटै हुतो. आधो मुलक अंगरेजां अपणाय लियो. साढी तीन क्रोड़रो मुलक वजीररै रहतो ।

२४०५. हस्तरजाखां हैद्ररवेगखां आसद्दोलारै मुखतार हुता. तासीन १, अपरीन २, डलयास—तीन खोजा मनीजता आसउद्दोलारै ।

## हैदराबाद

२४०६. हैदरावादरा नवावरै नव क्रोड़रो मुलक हो. क्रोड़ रुपियांरो मुलक अंगरेजां लीओ. आठ क्रोड़ रुपियांरी पैदासरो मुलक हैदरावादरा नवाबरै है ।

२४०७. बहराई छत्र हैंसारी नागपुर हेटै ही, दस हैंसारी हैदरावाद हेटै हुती. हमै सारी हैदरावाद हेटै है ।

२४०८. हैदराबाद मीर आलम तीन लाख रुपिया लगाय भारी तळाव करायो. सहरमें जळरो पुर हो गयो ।

२४०९. कनकरी १, अेळचपुर २ पठाणांरै पटै है. हैदराबादरा नवाबरा दियोड़ा ।

२४१०. हैदराबाद मीर आलम वजीर हो. उणरो भाई मीरसाह टीपूरो वजीर हुवो ।

२४११. घोड़ोर, परेड़ी, आसरे - अै किला हैदराबादरा नवाब कनांसूं सतारारै धणी लिया ।

## टीपू

२४१२. टीपू आपरा देसरो धन परायै देस जावण देतो नहीं. सिपाह वगेरा इणरा अमलमें हीज रहता ।

## [ फिरंगी ]

२४१३. अंग्रेज १, पुर्तगीज २, विलंदेज ३, फरासीस ४, फिरंगी ५, डीगमार ६, गुरजी ७, इस्काटलैंड ८, जरमनी ९, चिलवी १०, कुतबी ११, उरंसी १२- अै बारै टोपी निसारांरी ।

२४१४. चीणा पटणरा नवाबनूं अंगरेज किंग करनाटक कहता- पछै उणरो राज खोस लियो ।

२४१५. आगै सूरतमें च्यारांरो अमल हुतो. नवाबरो १, अंगरेजरो २, गायकवाडरो ३, पेसवारो ४ ।

२४१६. पटैल गवालेर तोड़ियो जद पापन साहब फिरंगी पटैलसूं जंग कियो ।

२४१७. अंगरेज कपतान मिस्टर आन स्काट साहब नै वगलरामरै मोलवियां दोनूं मिल हफत अकलीम किताब बणायी जिणमें कहै है कितोक जमी झंडा हेटै, कि पहाड़ हेटै, कि बरफ हेटै, कि खारमय, कि आंधारा मांहे, कि जळ हेटै, कि बळियोड़ी हैं ।

२४१८. पूरबमें गंगारै तट किलकंत्रासूं बारह कोस उलंदे जांच चौड़ो सहर वसायो. फरासीसां फरासडांगो सहर वसायो. दोनूं सहरां अधकोस वीच है ।

२४१९. पहलां लालमंडी सहर हो गंगारै तट. महा काळी देवी विराजै जठै सहर कलकत्तो अंगरेजां बसायो ।

२४२०. मेघडालन साहब नीमचरी छावणी मुवो ।

२४२१. मिसटर मटकलबरो छोटो भाई तामस मटकलब ।

२४२२. इफ अवरगेस नाम गवर जेलरो, व्यासजी जिणसूं मिळिया ।

२४२३. फरांसीस मरियमनूं मानै, अंगरेज ईसानूं मानै. फरांसीस कहै जमीसूं आछी वसत प्रगट हुई. उण वसतरी तारीफ नहीं, जमीरी तारीफ है।

२४२४. अंगरेज कहै सीपसूं मोती प्रगट हुवै. सीपनूं चीर मोती लोक लियै तैरी ऊपर काड्या पवन ऊपर है. इणनूं पायदार मत जाणो. मांस खाणो ईसे किताबमें कह्यो है नहीं नै थें सरब जंतुआंरो मांस खावो सो क्यों? ओ प्रश्न कियो. अंगरेज उत्तर दियो - कासमीरियांरै धरमरी कितावांमें त्रियांरै माथै पाग बांधणो न कही है, पिण कासमीरमें सरदी बोहत, इण कारणसूं प्रथम अेक ओरत पाग बांधी, पछै देखादेखीसूं सारी कासमीरणियां पाग बांधी, हमै देसांतरमें रहै जिकेही कासमीरणियां पाग बांधै है, परंपरा ठैराई, यूं फिरंग में सरदी बोहत जिणसूं हकीमां मांस खाणो अंगीकार कियो, अब देसांतरमें ही फिरंगी मांस खावै है।

२४२५. अंगरेज अेक अजमेर छावणी हुतो व्यापारी सो महा भूठो हो. अेक चाकूरै मोलरा पचास रुपिया कहतो. दूजा चाकुवां जिसा उणरै चाकू हुता।

२४२६. अेक कुत्तारा मोलरा हजार रुपिया करतो ओ अंगरेज. दो सै रुपिया तो घणा जणां धामिया हुता।

२४२७. जैपुर अंगरेज रहतो असटरजी जिणरो अेक हाथ टीपूरी राड़में गोळांसूं वढ गयो हो।

२४२८. अंगरेज कहै-छोटा मछनूं मोटा मछ गिळ जावै, छोटा मछनूं क्या सुख हुवा।

२४२९. फिरंगमें डूक पदसूं वडो पद किणरो है।

२४३०. तुरमनामो अंगरेजांरै वाजो हुवै।

२४३१. वाजा जितरा फिरंगमें इता वाजा और विलायतमें नहीं।

२४३२. अंगरेज हुंडीनूं बिल कहै।

२४३३. अंगरेजांरै बीबी मेम साहब कहावै।

२४३४. फिरंगण बीबी मुतसद्दी अंगरेजनूं अंगीकार न करै, जंगी अंगरेजनूं अंगीकार करै।

## [ प्राचीन इतिहासरी वातां ]

### नंद

२४३५. पाटलीपुत्र पुरै राजा नवनंद हुवो (? हुवा) ज्यांरी लक्ष्मी दानाभावात् गंगा तीरे पीत पाखाण हुई अजूं है ।

२४३६. जैनरा ग्रंथांमें कहै है नव ही नंद श्रेणकरा वंसमें जनमिया ।

२४३७. राजा नंदरा ठावा आदमियां वनमें पाटळा व्रखरी डाळ बैठा पंखी नीळ टांच. जिणरा मुखमें विना उद्दम कियां लटां पड़ै, जिका देखिया हा. विचारियो— अठै सहर वसावजै तो इण सहररा लोकनूं आपहीनूं रजक मिळै. पछै सहर [वसायो], पटणो कहै. मुसळमान अजीमाबाद कहै ।

### विक्रमादित्य

२४३८. विक्रमार्कनूं अगनी वेताळ दोय सोनारा पोरसा दिया था जिणसूं जगन अन्हण (?) कियो हो ।

२४३९. विक्रमार्क सहज दानविधि. आरतियानूं हजार, जिणनूं बतळावै उणनूं दस हजार, वाणी सुण हंसै तिणनूं लाख, जिणरी विक्रम तारीफ फुरमावै उणनूं क्रोड़ सोनइया दिरीजै ।

२४४०. गळीयें पड़ियो अन्नकण जिणनूं गजसूं उतरि बिक्रम माथै मेलियो जद अन्न— धिष्ठानको लक्ष्मी वर दियो. तेण वरेण माळवै दुर्भिक्ष्याभाव ।

२४४१. सू गळीमें पड़ियो धानकण गजसूं उतरियो विक्रम माथै धरियो. धान देवतारो वर हुवो. माळवामें दुकाळ पड़े नहीं ।

२४४२. विक्रमादित्यनूं राजा साळवाहण मारियो, कठैईक लिखै—समुद्रपाळ जोगी, जिण मारियो. केई कहै विक्रमार्कनूं साळवाहण मारियो. कोई कहै समुद्रपाळ जोगी मारियो ।

## [ धार्मिक वातां ]

### वैदिक धर्म

२४४३. गंगाजीरै वाहण कूर्म, जमनाजीरै वाहण मच्छ ।

२४४४. नैमखार मिश्रमें सर्व तीरथ आया, पुसकर प्रयाग न आया. अेक गुर, अेक राजा, तीरथांरो जिणसूं ।

२४४५. अरबुदवासी भील मरि नळ हुयो, भीलणी मरि दमयंती हुई, सन्यासी मरि हंस हुवो ।

२४४६. राजा सागर पुत्रांसूं धापो नहीं ।

२४४७. रामचंद्र दस हजार वरस राज किया ।

२४४८. पुराण लिखै है—आंनै ग्यानवापीरो जळ आगला जुगांमें कासीमें लोक पीवता आंमें ग्यानलिंग प्रगटी. लोक त्रिभंग हो जातो ।

२४४९. पुराणमें कळपांतर मानै, पूरव मीमांसामें होणहार मानै. वेदांतमें ईश्वरेच्छा मानै ।

२४५०. वेदांतमें बावन मत है ज्यामें अद्वैतवाद प्रबळ है ।

२४५१. अद्वैतवादी चक्रवर्ती कहावै ।

२४५२. सोयंगकार यथा सोयं देवदत्त ।

२४५३. नैयायिक भनित मानै सब्दनूं ।

२४५४. सेयं दीपज्वाळा स्मद स्यात् दीसै न तु वास्तव ।

२४५५. मीमांसक वैयाकरण सब्दनूं नित्य मानै ।

२४५६. न्यायरा प्राचीन पंडितोंरा मतमें नै आधुनिक पंडितांरा मतमें फरक है ।

२४५७. दक्षिणात्यांका न्याय, मैथिलूंका न्याय, बंगालियूंका न्यायमें कहीं-कहीं फरक है ।

२४५८. वनमें आठ वरसरो खोड़ो ब्रामणरो डावड़ो आयो. उण समै सिबिकारूढ समाज समेत कुमारळ भट्ट उण वनमें आय निसरिया, इण डावड़ासूं पूछियो गांव अठासूं नेड़ो है कै दूर है ? जद ओ बोलियो—हूं बालक छूं, खोड़ो छूं, बकरियां वित्त है, दिन किंचित आय रह्यो हैं, गांव अति नेड़ो है जिणसूं अजे वनमें खड़ो छूं अकलसूं लोक ईश्वरनैं जाणै है, मोनूं वनमें खड़ो देख गांव अति नेड़ो जाण लेणो. इण डावड़ानूं कनै राख पढाय भट्ट प्रभाकर नाम दियो इणरो कुमारळ भट्ट ।

२४५९. कबीर संवत पनरासैमें हुवो, दादू पहलां सौ वरसां पातसाह सिकंदरनूं परचो दियो ।

## जैन-धर्म

२४६०. जिनागममें कहै है—सैत्रुंजा ऊपर दस कोड़ मुनिराज काती सुद १५ सीधा ।

२४६१. सारी तीरथांमै आमाक श्रेष्ठ तीरथ है ।

२४६२. जिन प्रतिमा जिन सरावी, कही जिनागम मांहि ।
ये जाकै दूखन लगै, वंदनीय सो नांहि ।

२४६३. धुलेव रिखभदेव केसरियानाथ कहावै. सोळ जणा फरासी पंखारा चाकर है ।
२४६४. दोय जणा दोय पंखा फरासी सासता धुलेव रिखभदेवजीरै चलायवो करै ।
२४६५. वीइंद्रिया त्रीइंद्रिया प्राणी कहावै ।
२४६६. पंचेंद्रिया जीव कहावै ।
२४६७. नख: भूत कहावै. अन्ध सत्व कहावै ।
२४६८. अेक घड़ीरी साठ पळ, पळरा साठ उपपळ जिन मते ।
२४६९. अेक वरसरा तीन सै चौपन दिन मानै जिनमते ।
२४७०. जिनमते पांच वरसरो जुग मानै ।
२४७१. भरत चक्रवर्ती आपरी हाथरी मूंदरीरा माणकमें आदीस्वररी प्रतिमा खुदायी नाम उणरो माणिक्य स्वामी. दक्षिण देसमें कुलापाक नगरी जठै अज्यूं विराजै. सुवर्णद्रव्य पुरुष प्रसादात् विक्रक जगत अनृण कियो ।
२४७२. सैणक मरतां पुत्र माथै कोप कियो जिणसूं पहली नरक गयो. चौरासी हजार वरस नरक में रहसी ।
२४७३. घर आगण आयो उठै ।
श्री सैणक महाराज ।।
२४७४. राजा संप्रति माळवेस्वर हुवो ।
२४७५. सोलै हजार मुगटबंध राजा सेवा करता संप्रतिरी ।
२४७६. सवा क्रोड़ जिनबिंब कराया राजा संप्रति ।

# ( भौगोलिक वातां )

## राजस्थान

२४७७. जोधपुर ईदगाह दिखण तरफ है, उत्तरनूं पहाड़ जिणसूं ।
२४७८. मंडोवरमें भैरूं विराजै है ।
२४७९. परमार भंवसेन राजारी बेटी सेजळदेवी हुती सोजतमें सेजळरै नामै सोजत सहर वसियो हो ।
२४८०. लाडणू डाहळियां रजपूत वसायो. डाहळियां पछै जोहिया मालक हुवा. जोइयां कनांसूं मोहिलां, मोहिलां कनांसूं रावजी मालदेवजी लाडणू ठिकाणो लियो ।
२४८१. वड़ला जातरा जाटां ओ गांव वसायो जिणसूं वड़लू नाम प्रगट हुवो ।
२४८२. वड़लू पहाड़ीरी गुफामें भूतेस्वर विराजै है, नंदवाणा व्रामण सेवा करै है ।
२४८३. मेड़तै चतुर्भुजजीरा मंदिर कनै मंदिररा कोट मांहे सोनगरो सूरजमलजी पूजीजै है. चतुर्भुजजीरै भोग लागोड़ो थाळ सूरजमलजीरै भोग लागै, पछै ओ थाळ ठाकुरजीरा रसोवड़ा दाखल हुवै ।

२४८४. गुडामें सोनार ठगांरा संगसूं ठग-विद्या करै है।

२४८५. गुडारो ठग महमदियो करणाटक माहेसूं साडी तीन मण सोनो लायो हुतो. सोजतरा डेरां वडा महाराजरै पगां लागो. अस्सी मोहरां नजर किवी. गुडा छोड बांतै वसियो. आठवारा सिरदार सिवसिंघजीनूं मनवार किवी हुती।

२४८६. थेटू ठगांरा घर बगड़ीमें हुता. जैतावत सूरजमल बगड़ीसूं गुडां वसियो जद ठगांरा घर साथै ले गयो।

२४८७. बगड़ीसूं ठग देवगढ़ जाय वसिया. घर इग्यारै सिरयारी जाय वसिया।

२४८८. गांव धारवी कोटड़ारो है।

२४८९. आगै ठठारो मारग कोटड़ा होय निसरतो. लाखांरो माल वहतो. दाण कोटड़ारा धणीरै घणो आवतो।

२४९०. आगै बापड़ाऊ नामै गांव हुतो ऊण जायगां नवो बाहड़मेर वसियो. दोय कुवा तीस पुरस. घणो पाणी, मीठो. पूठनूं भाखर छै. भाखर निरूखो छै. जूनो बाहड़मेर जठै पहाड़ है गढ छै भाखररै आधोफरै. भाखररी गिरद वाई कोस पररै छै. भाखरमें गढमें कुवा, तळाव, झरणा, वावड़ी घणा छै. भाखर निपट संझाड़ो छै. थोहर, बोर गूंदी, गांगड़ी, लोकस, गूगळ निपट सझाड़ो छै।

२४९१. वाहड़मेरथी पचीस कोस बाळेतो, पचीस कोस नींबळो, तीस कोस ऊमरकोट, वाहड़मेरथी कोस छत्र विसाळो, तीस पुरस, मीठो पाणी अणो।

२४९२. कोटड़ो गढसूं भाखरी ऊपरै कुवा गढमें छै, तीस पुरस. मीठो घणो पाणी. अेक कुवो गांवमें है।

२४९३. फळोधी किरड़ारो जोहड़ जठै नाना प्रकाररी सुगंध आवै. लोक कहै इणमें पोसता रहै है।

२४९४. वाळारा पाणीसूं महेवा में गेहूं हुवै ज्यां गेहूंवारी साखमें पाणीरो हासल हाथी बाळीसै लियो वैड़ारो धणी।

२४९५. भूरीघाट ऊपर पाबूजीरो थान है. अठै माडरो नै मालाणीरो कांकड़ है।

२४९६. गुडा हेटै बाड़मेर केईक गांव सूराचंदरा, केईक सोढां दाबिया।

२४९७. सूराचंदरा गांव २७ सासण, ५०० सूराचंदरा धणीरै. सूराचंदरा गांव पांच सौ सत्ताईस।

२४९८. डूंगराठरसूं अधकोस ऊपरै ठिकाणो जोधो है. उठै मधु राज करता, ओ मधुरो राजसथान हो. हमै जोधो सूनो है।

२४९९. बीकमपुर कनै लूडीरो हैडर कहीजै है. ऊ विक्रमादित्य गायां, भैंसां, सांढां, छाळियांसूं भिळायो, आपरो प्रण राख लियो।

२५००. सिवाणै गढ सीह लंको है, सरापियल जायगा है. ओ किलो कड़तोड़ो है जिणसूं राजवियांरै रहण योग्य नहीं ।

२५०१. सिवाणारो खेड़ो पहलां पोरवाळा वसायो. मुसळमानांरा वासमें सोनाणारा पत्थररो जिनमंदिर नै आथूणो भाखरी हेटै सिवाणारो सिंदूरियो पत्थर जिण रचित पारसनाथरो मंदिर, जुमलै दोनूं जिनमंदिर सिवाणै ।

२५०२. गाधो तेरारोप छाड परा गया. पछै जाळोरीरो गांव वाघरो जठासूं वाघरेचा ओसवाळ आय सिवाणै वसिया ।

२५०३. भीनमाल नगर रतन महेसदासोतरै समै स्वप्न देनै श्री वराहजी प्रथी बाहर आया ।

२५०४. जुंजाळासूं गुसाईंजी सेघाळै प्रगटिया. भाखर माथै मंदिर है सेखलासूं खिरजां प्रगटिया. मीठो नेवज चढै. भैंसा चढै गुसांईजीनूं गुसांईजी घोड़े असवार रहै. आ मूरत देवळमें गोगादे गुसांईजीनूं पूजै ।

२५०५. जेसळमेरसूं खाडाळ पश्चिमनूं है ।

२५०६. खाडाळसूं आथमणा वरूरा मंदिर है. कुत्ता घणा राखै. गायां भैंसा, सांढियांरी वार चढै जद डोर मांहसूं कुत्ता काढ देवै. कुत्ता दौड आपड़नै धाड़ैतांरा घोड़ा ज्यांरा अंडकोस पकड़ लै. पछै घोड़ा चढिया मैहर आवै. वारू परै वनमें अेक जाळ है. उण जाळ कनै वारूरा भाटियांरै नै वारूरा मैहरांरै सत वड़ा झगड़ा हुवा है, सैकड़ां मानस माराणा है ।

२५०७. ऊंटड़िया महादेवसूं बारह-बारह कोस चौतरफ हर वरस सुगाळ रहै ।

२५०८. बीकानेरीमें कोडमदेसर तळाब है, गांव नहीं है ।

२५०९. कांकरोळीरा गुसांईजी ज्यांरा सेवक आंनूं पूजै, और गुसांईजीरा बाळकनूं न पूजै, हरिरायजीरै घररा सेवक हरिरायजीरै वंसरा गुसांई ज्यांनूं पूजै, दूजा गुसांइयांनूं न पूजै. गोकुळेसजीरा सेवकही इण हीज प्रकाररा है ।

२५१०. उदैपुर आथमणो पीछोळो है, उगवणै सहर वसै है. पीछोळारी पाळ रड़ो है, माटी नहीं है. रड़ा माथै राणाजीरा महल है ।

२५११. कलाळियो पीछोळारो अेक देस ।

२५१२. जगमंदिर जगनिवास पीछोळै में रड़ो जिण ऊपर राणै जगतसिंघजी कराया ।

२५१३. राणोजी जगमिंदरां जावै. सारी असवारीरो लोक चटकमां मोरचां पीछोळामें हुंगै. पीछोळारो पाणी सहर पीवै ।

२५१४. उदैपुर माछळारै आकार छोटो डूंगर है—उत्तरनूं पूंछ दिखणनूं मूंडो. ऊ माछलो मगरो कहावै ।

२५१५. दधेरै वराहजीरो मंदिर वेगमरै धणी रावत वडै मेघ करायो ।

२५१६. भीलवाड़ो मेवाड़रो जठारा भील माथारा केस झुलियां झगड़ो करै, पीठ लारै ऊभी भीलड़ियां बोलै—धीरो पाखरिया !

२५१७. मेवाड़ी गांव दूधुवो जठै वालो वघेरामें रावत मेरो ।

२५१८. तोड़ासूं च्यार कोस पहाड़ ऊपर वनासरा दरहद्दवाळ नाडी ऊपर सिसोदिया रायसिंघ भीम अमरसिंघोतरै महल कराया, गांव वसियो जिणरो नांव राजमहल ।

२५१९. ईदावाटीमें धूतांबर गांव चीमड़ विराजै खांडो देवळ. वडो देवळ है ।

२५२०. ईदावाटीमें गांव डूगर माता दुगाय भाखरमें विराजै है हाल तक ।

२५२१. ज़ांगळी नामे भील राठोड़ राजानूं बेटी परणाय आबू दियो. राठोड़ कनांसूं आंवू गोहिलां लियो. दोय सै वरस गोहिलांरै रही. गोहिलां कनांसूं परमारां लियो. परमारां कनांसूं प्रीतू देवड़ै लियो ।

२५२२. अंबायजी अेक सिरोहियो दरवाजो है ।

२५२३. अंबावजीरी सेवा करै उदंबर जातरा बांमण ।

२५२४. दांतारा धणीरी दुकानं अंबायजीरा पगां है. अतादिक वस्तु यात्री उण दुकानसूं खरीदै ।

## मालवा

२५२५. मालवै सहर रुणीजो जठै देवड़ा मोकळोतरो राज है, भोजकराव वाजै आ मांडवारा पातसाहरा चाकर हुता ।

## गुजरात

२५२६. गुजरात में वडा-वडा तळाव है ।

२५२७. हंडियारो घाट १, मंडोळोररो घाट २, सतवासरो घाट ३, मरदानारो घाट ४, घोड़ा घाट ५, इत्यादिक त्याहीरा घाट है ?

२५२८. अंवारो पेड़, महुवारो पेड़, रायणरो पेड़, आमलीरो पेड़, गुजरातमें करसणी थीत गिणै ।

२५२९. गुजरातमें गरबो गावै—वेगळो रहे वरणागिया रे. वरणागियो रसियो ।

२५३०. महतारी गरबारी तुक अेक बार कहै, दूजी त्रियां दोय बार कहै ।

२५३१. गुजरातमें रोवणनूं रड़नो कहै ।

२५३२. गुजराती काकानै काचा कहै ।

२५३३. गुजराती आपरी त्रियारो जार होण आवै विणनूं कहै—च्यार रुपिया आलसै तो अमांनी अेर दोय सेर सोनो पहर तुमारे पास आवसै, रुपिआमें दोय सेर सोनो घलावसै नहीं ?

२५३४. कुणवी गुजरातमें हाड मांडै, मनोती करै, करसण करै, सालवी पणो करै, छेसाई पणो करै ।

२५३५. गुजरातमें पालीसू को बंदर कहावै ।

२५३६. डंड, मुंड, अर डाम - द्वारकानाथरी यात्रारो वर्णन ।

२५३७. कोरी न नाल मुल द्वारका ।

२५३८. वेचराजीरा चरणां कूकड़ा है ज्यांनू मिन्नी न मारै ।

२५३९. पावानी पटराणी भवानी काळिकारै लोग गरवा रियै ।

२५४०. डभोईरो भलो तळाव है. तेलरो भलो तळाव है. बड़नगर, वीसळनगर वडा तळाव है ।

२५४१. डभोई सहरी पंच महालांमें है ।

२५४२. नांदोल राउपींपळा अेक घर है ।

२५४३. राधणपुररो परगणो वढियार कहिय. आबूरो पाणी वढियारमें लावै इण पाणीसूं गेहूं चणा सेवज हुवै अर वढियारमें आबूरा पाणीरो हासल लियो राव अखैराज भालो पाण ।

२५४४. आलीराजपूर १, उदैपुर २, वारियो ३ - अै ठिकाणा चहुवाणांरा गुजरातमें ।

२५४५. आली मोहण राठोड़ांरा ठिकाणा आं ठिकाणांसूं नजदीक है ।

२५४६. संवत १७१९ भावनगर वसियो ।

२५४७. गुजरातजी नटवरजी वाळा व्रजरायजीरा पुत्र व्रजभूखणजीरै खोळै. व्रजभूखणजी गुजरातमें काकोजी कहावै ।

२५४८. नीमाणियांसूं व्रजभूखणजी, व्रजरायजी, रुघनाथजी पालणपुर सेरखां दीवाण भूतड़ी गांवमें खोसिया ।

२५४९. गोरखमढी प्यारनाथजीरा घरमें बांसणी गिरनारी है ।

२५५०. पाटणमें वैजनाथ बाबू वड़ो धनवान है, वल्लभकुलरो सेवक है ।

२५५१. रेलत कूंचरो नाम लुणावड़ा कनै वीरपुर वसती है. जठै हाजी मोहमद दरियाईरी वडी दरगा है. हजारां ज्यारतनूं आवै है ।

२५५२. नवसारी १, घणदेवी २ - अै परगना कोंकण सूरत विचै-ज्यांमें लारला दिनां गायकवाड़रो अमल हुतो ।

२५५३. मही वडी नदियांमें गिणीजै है ।

२५५४. अैमदावाद बांभियांरो बंधायोड़ो काकरियो तळाव वडो सरोवर है ।

२५५५. अैमदावाद [illegible] दरवाजा है, [illegible] दरवाजा [illegible] है ।

२५५६. मायपुररो, खेड़ारो, अैमदावादरो दिली-दरवाजो, वडो दरियो दरवाजो, समतोड़ियो दरवाजो, कळूपुररो दरवाजो - इत्यादीक चवदै दरवाजा अैमदावादरा है ।

२५५७. अैमदावादरा आठ दरवाजां साबमरती नदी वहै है. अैमदावाद जुमै-महजीतरो वडो कमठो है ।

२५५८. ममोई दरवाजो, वरियारो दरवाजो इत्यादीक चवदै दरवाजा सूरतरा है ।

२५५९. वरिया परिया दोय वडा सहर हैं सूरत कनै ।

२५६०. हमैं मांडवै रजपूतांरो राज है ।

२५६१. ईडररी हदमें सांवळियै भील सांवळियो सहर वसायो ।

## दक्षिण

२५६२. गुजरातसूं दिखण ऊंची है ।

२५६३. पंडरपुरमें प्रथम परचाधारी नामदे छीपो हुवो ।

२५६४. कोंकणम खानदेसमें वगलाणांनूं वांगलाण कहै ।

२५६५. देव पूजामें ही विरामण तमाखू वांटियोड़ी सरब दिखणरा विरामण तमाखू सूंघै ।

२५६६. मूळा १, मोठा २ - अै दोय नदी पूना हेटै वहै है ।

२५६७. दिखणमें भीम नदी भीम संकरी कहावै ।

२५६८. कृष्ण वेणी कृष्णा कहावै ।

२५६९. दक्षिणमें वेदारण तीरथ है ।

२५७०. इकांबरेस्वर पृथवीरा लिंग १, जंबुकेस्वर जळ-लिंग २, त्रिण मळय वहे-लिंग ३, काळास्थि वायु-लिंग ४, चिदंवरेस्वर आकासलिंग ५, चिदंवरेस्वर द्वितीय नाम सभापती ।

२५७१. कावेरीरै तट पांच वडा सिवरा थान है - पंचनद १, कुंभको २, मध्यार्जुन ३ मायुर ४, स्वेतारण्य ५ ।

२५७२. वाळार्क १, सिंघार्क २, तरुणा ३, वाघार्क ४, सिंघार्क पिंगळस्वामी कहै ।

२५७३. अेक सिंघलदीपमें कुवो है. उणमें नर-नारी झांकै जद मांहेसूं कांकरा चालिया आवै जाणजे कोई मनुस्य मांहेसूं कांकरा चलावै है ।

२५७४. हैदरावादमें गुजरातियांरो पुरो कारवान कहावै. कैई गुजराती वणिक जैनी, कैई वैसनव है. केसोमदनूं कोड़ीमल वगेरे ठावा आदमी हुता ।

२५७५. मसीरुलमुलक उमरतुल उमरात्र असतु जहां प्रमुख छाईस मसीरुलमुलकनूं हैदरावाद नगरमें [illegible]

२५७६. मोहार बंधार बराड़रा सूबा मांहे छै, लारला बरसां बंधाररो धणी गोड भीमेस्वरजी ज्यांरी बेटी वेगमरा धणीरो छोटो भाई सकतसिंघजी परणियो।

२५७७. नर्मदारो अेक देस धारा-क्षेत्र है जठै वाणनाथ सिव नीसरै है, रेवाकंकर।

२५७८. नर्मदा मांहेसूं नीसरी कावेरी जिका कुंवा कहावै पुराणमें।

२५७९. हुसगाबाद हंडिया गाम सत वास प्रमुखांके थाटू लसकर उतरते है।

## सिंध

२५८०. सिंधमें माथैलो मैहरांरो वतन है।

२५८१. मीर वाह, नसीर वाह, कनूर वाह, बहराम वाह, इत्यादीक वाह सिंधमें है।

२५८२. मुराद गंज वाह चलायो सो मुराद वाह कहायो सिंधमें।

२५८३. मुराद गंजो वेवै भव जद फकीरणीनूं इण कह्यो—हमकूं दवा कीजै. इण कह्यो घोड़ा सिंघाररो मालक हुसी. फेर कह्यो—दवा करो. इण कह्यो फीरोज जंग हुसी, इण कह्यो—फेर दवा करो. जद फकीरणी कह्यो—फांसीसू थारी मोत हुसी।

२५८४. खैरपुर मीर सोराब वसायो।

२५८५. खुदावादनूं महमद वसायो।

## पंजाब

२५८६. बहावळपुरसूं आवी मुलक सरू हुवा कसमीर तांई. सीसमरा वृक्ष उठै बहोत घणा छाया है।

२५८७. वगपुर १, हंसपुर २, सामपुर ३, मुलतानपुर ४—अै च्यार नाम च्यार जुगरा है मुलतानरा।

२५८८. मुलतानरा किलारै च्यार दरवाजा है—रेड़ी १, सीरवी दूजो २, खिदरी तीजो ३, दे चौथो ४।

२५८९. केसोपुरी मुलतानी जैमल बंट आवादानी।

२५९०. केसोपुरी मुलतानी जीवतां मुलतानमें समाध लिवी रामतीरथ है जठै।

२५९१. पीर वहावुलहकरो रोजो मुलतानरा किलामें. पीर साह कुल आलमरो ही रोजो मुल्तानरा किलामें है।

२५९२. मुलतानरा किला मांहसूं रणजीतसिंघरै हाथ धन घणो आयो।

## दिली

२५९३. दिलीमें राजा आरपुरो, लालपुरो, जसवंतपुरो, जैसिंघपुरो, वीठलपुरो इत्यादीक।

२५९४. दिली सहर मैना बाहर पठाणांरी करायोड़ी ईदगा है, साहजीरी करायोड़ी ईदगा है, महम्मदसाहरी करायोड़ी ईदगा है, दिलीसूं दिखण तरफ. जुमलै तीन ईदगा. हदीसमें कही है ईदगा सहर उत्तर तरफ करावणी. दिली ईदगा दिखण दिस है. उत्तर दिस जमना आयी जिण कारणसूं ।

२५९५. लाट समसुद्दीन मुतसल दरगाह कुतुबसाह. मुतसल, समीप ।

२५९६. सुई प्रमुख सजातीय बारह वसतां मिलियोड़ी दरजन कहावै दिलीमें ।

२५९७. दिलीनूं आगरैरा रणवासमें जोगमायारो थान हुतो पका कुंडमें. सिवलिंग जिसी संभ उठाऊ जोगमायारो सरूप है ।

## पूरब

२५९८. फतैपुर पातसाह अकबर वसायो ।

२५९९. मय दाणवरो वसायोड़ो मंकान, मेरट ।

२६००. गणमुकतेस्वरनूं गढमुकतेस्वर लोक कहै ।

२६०१. काळपीरा बावन पुरा है ।

२६०२. व्रंदावन हेटै जमना सोभा घणी दे, गंगा कासी हेटै सोभा घणी दे ।

२६०३. तिल भंडेस्वरी १, सूल टंकेस्वर २, प्रयाग राजेस्वर ३, अै तीन सिव प्रयाग वट कनै है ।

२६०४. संध्यावट हेटै हणूमान पौढै है, वडी मूरत है ।

२६०५. वेणीमाधव प्रमुख चवदै माधव है प्रयागे ।

२६०६. सरस्वतीकूपरो जळ लाल है प्रयागे ।

२६०७. लोपा मुद्रा दोय देवी प्रयागे ।

२६०८. मणिकर्णिकेस्वर सिव मणिकर्णिका विसै ।

२६०९. कर्दमेस्वर सिवकास्यां ।

२६१०. दुर्गेस्वर सिवकास्यां ।

२६११. केदारेस्वर कास्यां ।

२६१२. कुमार राज विनायक कासी समीपे कपिळ समीप ।

२६१३. कासीमें उदैपुररा राणारी करायोड़ी जायगा खालसैपुरो बाजै है ।

२६१४. बूंदी रावजीरा करायोड़ा महल कासीमें राजमंदिर कहावै. हाडांरो बगीची कासीमें है ।

२६१५. कासीमें कछवाहै मान महल करायो, उवै मानमंदिर कहावै ।

२६१६. सेहरसाह जवन पूरवमें जवनेंद्र हुवो जिणरा आतंकसूं कासी सूनी हुई । ब्रिरामण विस्वेस्वररो लिंग जमी ऊंडी खिण भंडार दियो. पाछै किताईक वरसां दिखणनूं [illegible] देसमें [illegible] भट्ट बेटा नारायणभट्ट सहित

स-कुटुम्ब कासी आय वसियो. जवनरी कन्यानूं जवख लागो हुतो सो नारायण भट्ट काढ दियो. जवनेंद्रनूं रिझाय इण कासी वसावणरो आरंभ कियो. कासी-वासी जमीदार कासी तेड़िया. कह्यो - सारा अठै आय वसो, जवनेंद्र आपोरी रछ्पाल करसी. पछै कासीमें वस्ती होण लागी. डूंब परंपरासूं कासीमें वसै है. उवै कासी उजाड़ हुवांही कासीमें रह्या. उवांरा कहणासूं विस्वनाथरो लिंग बाहर थापवा जमी देखी. सिवलिंग नहीं पायो. जद कासी-वासी तीन दिन अनसन ले बैठा. सिव सप्रेम आज्ञा किवी-ऊ लिंग कैलास गया और रैवास कर आणि उठै स्थापित करो. यूं-हीं-ज कियो।

२६१७. वैद्यनाथ सिव वैजनाथ कहावै।

२६१८. झूलनारो उत्सव ठाकुररो बंगाली विसेस करै. हजारां रुपिया खरच करै।

२६१९. जलापानात् अेक वा दोनूं चरण असब-गळ-स्थूळ हुवै बंगालियांरै।

## विलायत

२६२०. कंधार खुरासाणरी हदमें है, काबुल हिंदरी हदमें है।

२६२१. विलायतमें खातून जन्नतरो नाम आंख मींचनै लेवै।

२६२२. कमरकोहसूं नील नदी चालै. मगरबमें होय, जंगवारमें होय, मिसरमें होय, रूमरा समुद्रमें मिलै।

२६२३. अमरीके वरसन नवी दुनियारो नाम है।

२६२४. नवी दुनियामें उत्तरनूं अंगरेज हैं, दिखणनूं इसपेन है।

## विविध स्थानांरी प्रसिद्ध वस्तुवां

२६२५. कुटिया लखनऊको, गटा कनोजको, पेड़ा मथुराको ओळा सिकंदराका अदभुत हुवै है।

२६२६. अभ्रक कपूर लोबान कृष्णागुरु प्रमुख यवनांरै देसासूं हिन्दमें आवे।

२६२७. कांसी पीतळ प्रमुख धातु मारवाड़सूं सिंधमें जावै।

२६२८. वीकानेररा जोहड़री घोड़ियां हमेसा जंगळमें चरै हिरणियां ज्यूं।

२६२९. जेसळमेर भूरो पत्थर सावटू कहावै नै भूरै पत्थरमें धोळासा चाढा हुवै सो वीछियो कहावै. खरळ वीछियारी आछी हुवै।

२६३०. जैसळमेर वाड़ीरो वाग जठै मिसरी नामै आंबो है. घणा मोठा मोटा आंवा लागै. केतकी इण वागमें है।

२६३१. वीकमपुररी हदमें सुगनी आछा है, उठै गायांरो राब जिसो दूध है।

२६३२. कछमें चितराणा अंगियारा ऊंट आछा हुवै है ।

२६३३. सिंधरी तमाखू नव सेर विकै १) री, जठै माळवण सेर विकै ।

२६३४. आंबा मुळतान आछा हुवै ।

२६३५. गुजरातमें चंद्रकळा साड़ी उमदा हुवै. धनवंतांरी त्रियां ओढै ।

२६३६. पावागढरो पाखाण गुजरातमें है. इण पत्थर सिवाय और खाणरो पत्थर नहीं ।

२६३७. सूंघणी तमाखू पूनै अति चोखी हुवै है. पांच रुपियां सेर विकै ।

२६३८. काफरी बंदूकां दुरपलारी दिखणमें बोह मोली ठावा बहादुरां कनै पावै ।

२६३९. पांच सेर घास पांच सेर दाणो उजबकांरो घोड़ो आठ पहरमें खावै अेकमें सौ कोस जावै ।

२६४०. मरकब यवन देसां वाहण हुवै सो नित सौ कोस जावै. घोड़ासूं ही मजबूत हुवै है. रुमयोड़ो कान, आवाज गधांरै सरीसी ।

## प्रसिद्ध गीत

२६४१. ब्रह्म-मूहूर्त्त समै लाखो फूलाणी गवीजै. दोय घड़ी दिन चढियां धनासरीमें बाघो कोटड़ियो, तीसरै पोर सामैरीमें रिड़मल, रालरो सोढो महंदरो गीत गवीजै ।

२६४२. दोय घड़ी रात लारली रहै सो ब्रह्म-मुहूर्त्त. इण वेळा विभास वेळावळमें लाखो फूलाणी गवीजै-अह लाखो सु विहाण ।

२६४३. दोय घड़ी दिन चढियां धनासरीमें कोटड़ियो गवीजै ।

२६४४. सामहरीमें दुपहरी पछै रिड़मल गवीजै ।

२६४५. जेही माबत जनमियो, लाखणसी सोनल्ल । गांगणियाणी जेहीरै माबत बेटो हुवो. लाखो फूलाणी सोनल अपछुरारी कूख जनमियो ।

२६४६. पच्छमरा गांवां वींद चंवरीसूं परणीज उतरै जद, चारणांरै रीत है, लाखो फूलाणी गवीजै, रुपियो गायक पावै. ऊ लाखाणीरो रुपियो कहावै ।

## प्रसिद्ध व्यक्ति और वस्तु

२६४७. जाम तमाईचीं नूरी गवीजै, हीर-रांझो गवीजै, पनो ससुई गवीजै, मिहर-सोहणी गवीजै, मूमल महंदरो गवीजै, मारवी ऊमर गवीजै सिंधमें ।

२६४८. नूरी मीर बहररी बेटी, जाम तमाइची घरमें घाली. हीर-रांझारा गीत जोग कहावै. [illegible] कहावै ।

२६४९. विरामणरै बेटी हुई. जोतिसियां कह्यो इणरो पत मळेछ हुसी. जद सिंदूकमें घाल दरियामें बहाय दिवी. आगै धोबी वडो धनवान हो. उण पाळ मोटी किवी. नाव ससुई दियो. केचमें बलोचांमें जातहोत वंसमें पनो होत हुवो, जिण केचसूं आण ससुई परणी ।

२६५०. भैंसारो चराबा वाळो मिहर कहावै सिंधमें मिहरसूं सनेह हुवो सोहणीरै ।

घड़ो भागो तो घोलियो, भग्गो जान घड़ीह ।
उणो मझा अमी चवै, कर दरियाव दड़ीह ।।

२६५१. जैसळमेर परै मूमलरी मेड़ी है—काकनै ऊपर मूमल, सूमल, सहजां अै तीन बहनां है ।

## प्रसिद्ध गढ़

२६५२. आमेर १, गवाळेर २, चितोड़ ३, चांपानेर ४, भांभेर ५, मांडव ६, सार्ल्हैर ७, मार्ल्हैर—अै वडा गढ है ।

२६५३. चहुवाणां सातल सोमरै घर जनम हुवो गढ सिवाणैरो ।

२६५४. जाळोर सोनगरा कान्हड़दे घर जनम हुवो ।

२६५५. रणथंभोर चहुवाण हठीला हमीररै घर जनम लियो ।

२६५६. चितोड़ राणा अड़सीरै घर जनम हुवो ।

२६५७. सिहोर गोहिलांरै घर जनम हुवो ।

२६५८. जेसळमेर दूदा तिलोकरै घर जनम हुवो ।

२६५९. गांगुरण खीची अचलदासरै घर जनम हुवो ।

२६६०. अकबर चितोड़ लियो जद राणारै घर जनम हुवो ।

२६६१. सिवाणो कला रायमलोतरै घर जनम हुवो ।

## प्रसिद्ध हाथी-घोड़ा

२६६२. श्रीकलस हाथी सिधराव जैसिंघरै, दळवादळ आसफुदोलारै, श्रीप्रसाद नैपालरा राजारै जसतिलक उदयपुर, फतै मुमारख जोधपुर—अै हाथी वडा कारणीक हुवा ।

२६६३. पाबूरै घोड़ी काळवी, बहलिमांरै पीवळी, दूदा जसहड़ोतरै रीमी, सांगणरै वैरवोर, भोजरै बोळी, वीरमरै समाध, वैरसी रायपाळोतरै ताजण, वालणरावरै हिरणी—इत्यादिक अग्यारै घोड़ी जग-जाहर हुयी ।

## प्रसिद्ध राजा, बादसा, मंत्री आदि

२६६४. हैदराबाद मसीरुलमुलक १, नागपुर देवजी बापू २, पूनै सखाराम बापू ३ -अै तीनूं वडे मंत्री भये हैं ।

२६६५. सितारो १, मलैबार २, हैदरावाद ३, श्रीरंगपट्टण ४—अै च्यार राज श्रीसैं छक हुता लारला वरसां ।

२६६६. श्री रंगमें टीपू, सितारै भोंसळो राजा, मलैबार रामराजा, हैदरावादमें वर्तमान हजरत मुंडा पातसाह नबाब ।

२६६७. आसामरो मालक १ नैपाळ पती २ रणजीतसिंघ लाहोर—पती ३—अै हिंद अहद अकलीममें वडे जोर हैं ।

२६६८. इण जमानांमें चीणरा पातसाहरो नै असतंबोलरा पातसाहरो वडो जोर है. लसकर खजानो जर रुपियांरो पातसाह असतंबोलरो मालक ।

## मुसलमान

२६६९. साह अब्बास ईरानरो पातसाह १, अबदुल्ला उजबक तूरानरो पातसाह २, अकबर हिंदरो पातसाह—तीनूं अेक वक्तमें हुवा ।

२६७०. ख्वाजा हाफिज, अत्तार फरीदुद्दीन, मौलाना रूमी वगैरै अेक सदीमें हुवा ।

२६७१. सतरंजरी रामत, केसांरो कळप, पंचाख्यान ग्रन्थ—अै नौसेरवारै वकत तीन चीजां हिंदसूं ईरानमें गयी ।

## प्रसिद्ध कवि और लेखक

२६७२. काळीदास नामै पंडित तीन हुवा है. अेक काळीदास विक्रम आगै, दूजो भोज आगै, तीजो काळीदास वळे हुवो है ।

२६७३. कविरमरु: कविरमरु: ।

२६७४. उत्तरराम चरित्र नाटक राजा भोज व भवभूती दूना मिले कियो ।

२६७५. पुरसोतमदेव पुरसोतमपुरीरो राजा जिण नवा सिलोक बणायनै गीतगोविंदरी अस्टपदियांरै अंत धरिया, च्यार सौ सिलोक भागवतरा अध्यायरै आदि अंत धरिया ।

२६७६. अब्दुरहमान जामी मसनवी ऊपर टीका किवी ।

२६७७. खड़यै तेजसी भोपतोत सुजाण-रासो बणायो है जिणमें सुजाणसिंघजीरा परवाड़ा है ।

## इतिहास

२६७८. तवारीख साहबुद्दीनी, तवारीख नासिरुद्दीनी, तवारीख अलाउद्दीनी, तवारीख फीरोजसाही, तवारीख अफगानी ।

२६७९. तैमूरनामो, जफरनामो, तैमूररी तवारीख है ।

२६८०. तवारीख अकबरसाही, अकबर-नामो, तबकात-अकबरी, इकबालनामो जहांगीर, जहांगीरनामो, जहांगीर आप बणायो, तवारीख साहजहानी, तवारीख

आलमगीरी, तवारीख कासमीरी, तवारीख बहादुरसाही, जिणमें गुर्जरेस, मालवेस, सिंधुपति, मुलतानपति, दिखणरा पातसाह ज्यांरो हाल है ।

२६८१. इतिहास पुराणाभ्यां वेदार्थ-निर्णयो भवति ।

## विविध

२६८२. सौ सुरंगामें अेक सपूत नैं सौ कुमेतांमें अेक कपूत ।

२६८३. सुरंग रंग पायदार है ।

२६८४. सुर्ख १, सफेद २, रंग दोनूं ही होय सो करड़ो रंग कहावै ।

२६८५. स्याह चमर, स्वेत चमर, स्याह-स्वेत चमर हुवै है ।

२६८६. सुरह गायरी ग्रीवा इण गायसूं लांबी हुवै. वैळै ही लांबी छै सुरह गाय इण गायसूं. १३ लाख चमर प्रमुख देसांसूं हिंदमें आवै है ।

२६८७. धनेरियो पंछी कबूतर जिसो हुवै. लाल पग हुवै, पांखां लांबी हुवै, दिनरो दिखायी न देवै, रातरो बोलै, सबदबेधी बंदूक चीड़नतूं मारै, उणरी पांखवां, उणरो मांस वा रुधिररो चींथरो पाणीमें उकाळ त्रियानूं पायां सूवा-रोग हरै ।

२६८८. विहारी, गूदड़ियो, कागदी तीन जातरा नींबू ।

२६८९. हींगमें, किसतूरीमें मेळ हुवै इसो और चीजमें न हुवै ।

२६९०. राळनूं रायाल कहै यवन. रायाळनूं गाळै जद सोमलरी वास आवै धुंवामें. रायाळ घाले वडो जतन आंखियांरो राखनै सोनार ।

## फुटकर वातां

२६९१. ईसवर निरंकुस है, चाहै स करै ।

२६९२. खुदा इरादो करै अेक चीजको, पैदा करै असबाव उसको ।

२६९३. खुदा तालारी पातसाही वे जवाल है ।

२६९४. अैतजादुल मुलक ।

२६९५. ईस्वरमें सतसाधन फोड़ा मिल जावणो ओ काम आछो नहीं ।

२६९६. पंच वकारसूं पंडित पूज्य होय - सुवपु करि, वित्त करि, वाणी करि, विद्या करि, विनय करि ।

२६९७. जाहल इलम विन सोभै नहीं, पातसाह अदल विन सोभै नहीं ।

२६९८. असील विद थकोही लोगांरी अदब वजावै, कमीना आडै दिनही अदब वजावै नहीं ।

२६९९. पातसाह कह्यो आलैकम सलाम आंधै साह !

उण कह्यो - आलैकम, पातसाह !
वजीर कह्यो - आंधै फ़कीर !
इण कह्यो - कहो, वजीर !
काजी कह्यो - अंधे राजी !
उण कह्यो - काजी !

२७००. थाढ़ो पाणी पीनै खुदारी सुकरगुजारी न करै जिणनूं परलोकमें खुदा सजा दै ।

२७०१. पोसाक, धन, पुत्र, त्रिया दुनिया नहीं है, खुदानूं न जाणनो आ दुनियां है ।

२७०२. बलकी घोड़ै न चढणो, वासतो न पहरणो, मैंदारी रोटी न खाणी, जवन कहै तीन चीजां अै अंगीकार कियां बंदो मौत वीसर जावै ।

२७०३. सूरज यूं न कहै मैं सूरज नूं जगत उणनूं सूरज कहिनै वांदै है ।

२७०४. आपमें दूसण हुवै सो दूसण ओरमें काढ़ियां बंदो निरदूसण हुवै नहीं ।

२७०५. तूं बडाई न पावै जित्तै वडांरी ठोड़ बैस मत ।

२७०६. उठ मत. जो उठनै चालै तो सनै सने चाल । अेक पग हेटै हजार जीव जावै है ।

२७०७. बाकरो कहै में कांटा खाधा जिणरो गळो करीजै है, सदा खीर खांड खावै ज्यांरो कांई हाल होसी ?

२७०८. न दखल होहिगा विच बहिस्त बहिस्त कै दयूस ।

२७०९. जहान तव कामो फलक यार बाद जहां आफरीन त निगाह दार बाद ।

२७१०. हकीम सिकंदरनूं कहै गुपत्दान दै, असमानसूं आवै जिका आफत गुपत-दानरा पुण्य प्रभावात मिटै ।

२७११. गुपतदानसूं खुदा प्रसन होय ।

२७१२. स्व वस रंकपण ही भलो, नहिं पर बस रंगरोळ
वर पोतानी पातळी, नहीं परायो घोळ ।।

२७१३. सोगात पत्र मेलणो, जाय मिलणो, तारीफ करणी, मदत करणी प्रगट मैत्री ।

२७१४. दिलसूं भलो चाहिवो, दिलरी प्रीत - गुप्त मैत्री ।

२७१५. आपरो नहीं जिणनूं आपरो मित्र जाणनो आ नादानगी है. कुळक्षयकार कुळांगार कहावै ।

२७१६. बहादुरी, सखावत, आदली - अै तीन गुण अवस्य पातसाहमें चाहिजै ।

२७१७. नेक सिरदार ज्यांनूं लाजम है आप जिसा आदमी कनै राखै ।

२७१८. राजा पातसाह कनै खुसामद गोय अवस्य रहै, आं कनांसूं खुसामदगोय दूर होणरो उपाय ही नहीं—अबुलफजल कहै ।

२७१९. मालिकनूं लाजिम है चाकर चाकरीसें वेपरवाह हो जाय इत्तो चाकरांनूं न देणो ।

२७२०. कुलीन, क्रितग्य, साधु, कार्यार्थीसूं सामोपाय करणो ।

२७२१. नृपरो भ्रत्य हुवै, बांधव हुवै, अंतःपुरचारी सेनापति हुवै वो जिणसूं दामोपाय करणो ।

२७२२. वित्रादीव व्यसनी होय ज्यांसूं दामोपाय करणो ।

२७२३. भय उपजाय भेद उपाय करणो ।

२७२४. रणमाल सो राजासूं रूसैं ।
राजा सो रणमाल विधूंसैं ।।

२७२५. नीत—सास्त्ररो रहस्य अेक पादमें कह्यो—लाभादल्पतरो व्यय ।

२७२६. दुनिया मकररूप है मकरसूं वस होती है ।

२७२७. तूं बिना वतळायां सभामें बोलै है सो दांतवसोलैसूं सुखन मोतीनूं फोड़ै है ।

२७२८. ईखरा करसण सिवाय करसण नहीं, हाथरा वणज सिवाय वणज नहीं ।

२७२९. सुंदर तो दाता नहीं, दाता तो नहिं सूर ।
सैद फतामें तीन गुण, सुंदर, दाता सूर ।।

२७३०. अेकसो वरस जीवै सो बाणूं क्रोड़ सांस लेवै ।

२७३१. गीतायां 'पंडिताः समदर्शिनः' न तु 'सम-वर्त्तिनः' ।

२७३२. मुरगी आण मुरगा खाव ।

२७३३. मीर बहर मुहाणो नै माछी माही फरोस— अै नांव कीररा सिंधमें ।

२७३४. लसणियारो नांव अैनुलहीर है, अैनुलहूर नहीं ।

२७३५. सिकम पेटनूं कहै फारसीमें ।

२७३६. खुर्द छोटानूं कहै, कलां वडानूं कहै ।

२७३७. खिलवत गोसै वैसणो ।

२७३८. जिलवत चोडै वैसणो ।

२७३९. निक्कार धिक्कार अेक अरथ हे ।

२७४०. देवदत्तस्य गुरोः कुलं देवदत्तगुरु कुलम् ।

२७४१. पाणीपतरा मारगमें अेक सिपाह राहजनांरै हाथ मारियो गयो । सो लारला वरसां बोलतो—अे सिपाह सिरोही तलवार मत राखज्यो, राखै तो दोय राख. इणनूं सिरोही [illegible] जाणीजै है ।

## वात, दूहा, श्लोक आदि

२७४२. गीत—

वीरा रस तणो न भावै वरणण,
  नह भावै मोनूं जस—गीत।
गरज नहीं म्हांरै गीतांरी,
  गढवा! काय सुणावै गीत?

मोद मचै कर चढियां माया,
  माथा-पच नह मोद मचै।
रच थारा घरकांरा रूपग,
  रूपग म्हांरा काय रचै?

खोटी हुवै, किसूं गुण खोलै,
  गांठ बांधियां राख गुण।
वणियो तूं कायबरो वकता,
  कायब-स्रोता अठै कुण?

आखर बावन करे अेकठा,
  तै कागळ लिख कीना त्यार।
लापरपणो कियो तो लड़सूं,
  चिड़सूं दियूं न कोडी च्यार।

२७४३. फूलां! थारो फूलियै, वळोवळी जस वाग।
तूं सिध पुरख महंत तै, भारथिया सिर भाग॥

२७४४. डाढो डाढाळाह, चांपा चहराड़ी नहीं।
की तिल-तिल काळाह, दुजड़ा मुहड़ै देदउत॥

२७४५. तूटै नीर तळावड़ा, खूटै आकां खीर।
भाणू वन पावै भुटो, नगियो पालर नीर॥

२७४६. भोजनं देहि, राजेंद्र! घृतशाकसमन्वितम्।
माहिषं च शरच्चंद्रचंद्रिकाधवलं दधि॥

२७४७. धिक् धिक् शक्रजिता प्रबोधितवता, किं कुंभकर्णेन वा।

२७४८. पंचाशत्पंचवर्षाणि सप्तमासान् दिनत्रयम्।
भोजराजेन भोक्तव्यं ................................ ॥

## शेष रयोड़ी, अस्पष्ट और अधूरी वातां

२७४९. सायजादो अेक डोळीसूं आयो, जिणनूं तीन सलाम कर कतुह सेरा विछायत माथै बैठा ।

२७५०. अेक कागद वांच आप फुरमायो-ठाकुरजी दाढी वाळांरो मूंडो नहीं दिखावै ।

२७५१. गुजराती नटणी उमेदी जिणरी जात बड़गूजर दे उमट अचळसिंघ घरमें घाली ।

२७५२. गुजरांरी नटणी उमेदीनूं उमट अचळसिंघ खवास किवी. जात बड़गूजर दिवी ।

२७५३. झामर राड़ हुई जद सूरजमलजी हरीसिंघजी खाटूरो धणी, वातांरो धणी इत्यादिक पहोर दिन चढियां काम आय गया. सेख वगैर समसत ताप खाय रह गया. फेर जंग कीधो नहीं ।

२७५४. झामर राड़ हुई जद सारा सिरदारांरी असवारीमें देसी घोड़ा हुता. उवां खता किवी ।

२७५५. रणमल वीलवै हुवो खावड़िया वीलवो छोड़ गराव वसिया ।

२७५६. रेवांसागररै सनान जातां पीपळा दसरावांरो प्रवन्ध दीठो जिणसूं आने भाई भावनगर दसरावारो वडो उच्छत्र ठैरायो. चारणां-भाटांरो समाधान आछी विध है ।

२७५७. बहेड़ारा धणी राणावत ज्यांरी वंसावळी लिखंते-१ राणो प्रतापसिंघ, २ चतुर भुज, ३ महासिंघ ४ रामसिंघ, ५ अनोपसिंघ, ६ सिरदारसिंघ, ७ उदैसिंघ, ८ वीरमदे, ९ विसनसिंघ, १० दौलतसिंघ ११ हेम राणो धणी है ।

२७५८. संवत १५११ वैसाख वदीमें नीम दिराणी ।

२७५९. जफर यार फीरोज जंग ।

२७६०. वारू भुटो नगो ।

२७६१. सीरांजी लुंझा परीरूहा ।

२७६२. सैफ सूं घोट तरवार ।

२७६३. हदीक तुलई कालीम ।

२७६४. रतंवती गदला मेछ गुंजरैं गतं तत्रैव मृतं ।

२७६५. भीवसिंघ कह्यो—प्रतापसिंघजीरे हथाहरी बेटीरा महाडो व आनै कुळकी पड़दायतरो रथ खड़ावसूं ।

२७६६. धीराजी बेटो सिवसिंघ सहर जूनागढरा नबावरो हाल देवेजी गुडळवारधो लियो गोपालजी कामेतीरी सलाड़ी ।

२७६७. नवमा नंद नाईसूं घर वस रहियो. पछै न रहियो ।

२७६८. लिज महासतीरी कोर दरोतरा लोक थळरा सोवै पांग पर मुख कोई विख-धर बता न करै ।

२७६९. काळाउवा ब्रड़ तळाई जठै पोळ माथै चूंडोजीरो करेहे सी अजू पुलके ले नहीं ।

२७७०. नेमसुख खवासनुं रुको राजा अजबेसादूळ दियो जिणमें अति निर्लज्ज समाचार,

२७७१. सांडा सोढारा मूसा मालारा ।

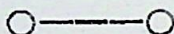
२७७२. आपो आपी जद बोड़ां जाळोर भेळायो ।

२७७३. सूजो मूजो हाथी तोगो वाजीसांमें सपूत हुवो ।

२७७४. जीवणसिंघ पाहाड़ दिली राज कियो ।

२७७५. गांव नजीणरी बेटी राणी रूपांदे वाजां परमारां भिळै. नदी गोमती रार्णं ।

२७७६. बखतावरसिंघ वडारो भाई रामसिंह ।



मुद्रक : राज्य केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर

मुद्रक : राज्य केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर